'वे नाम' सुरती धारा

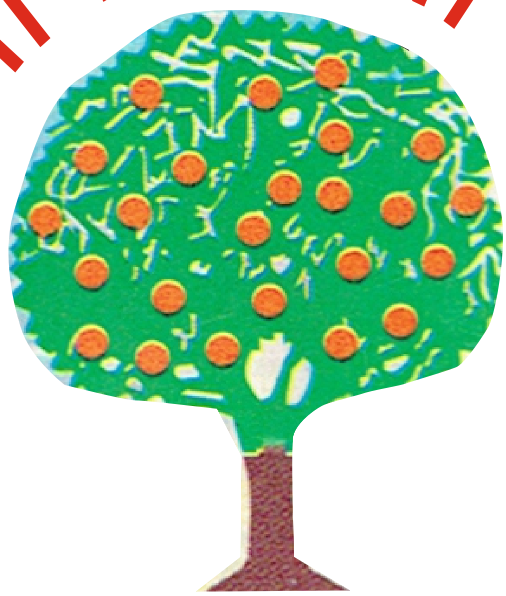

(आत्मन कोष)

'वे नाम' सुरती धारा

'वे नाम' पास दो वस्तुऐं, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम।।

(दोनों दात सत्तपुरूष जी द्वारा साहिब सत्तगुरू ''वे नाम परमहँस जी'' को प्रदत्त की गई)

सत्तपुरूष जी ने आज तक किसी भी प्रलयः काल में किसी भी संत सतगुरू परमहँस जी को दो बार सत्त सुरति दात कभी भी प्रदान नहीं की, सत्त सुरति दात साहिब सत्तपुरूष जी से दो बार ग्रहण करने वाले संत सतगुरू ''वे नाम परमहँस जी'' इस धरा पर एक मात्र संत हुऐ हैं।

Copies All Right reserved

'वे नाम' सुरती धारा आश्रम

15—गार्डन एवेन्यू तालाब तिल्लो, जम्मू
जम्मू व कश्मीर, भारत — 180002

'वे नाम' सुरती धारा

जो वस्तु 'वे नाम' सतगुरू परमहंस साहिब पास प्यारो।
साहिब सतपुरूष सूं पाई महान रे।
सतपुरूष की सुरति सूं आई प्यारो।
सुरति सूं पकड़ी जान रे।
साहिब जी सार सब्द, सुरत सब्द दो जान महान रे।।

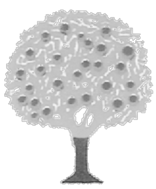
(आत्मन कोष)

'वे नाम' सुरती धारा

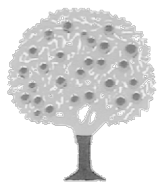
(आत्मन कोष)

वे नाम पास दो वस्तुऐं, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम।।

पँच सदी पहले साहिब कबीर ने, पाई सार दात सतपुरूष सूं।
सन् 2012 निजधाम से होकर, 'वे नाम' पाई दौ बार दात सतपुरूष सूं।।

सार सब्द और सुरत सब्द की दात, सतपुरूष सूं।
ब्रह्मण्ड में ऐसी कृपा संत पे देखी ना सुनी, सतपुरूष सूं।।

मिलो सेवादार, सत्तगुरू परमहँस 'वे नाम' सूं।
जिन पाई दौ बार दात, सत्तपुरूष साहिबन सूं।
जानो सहज मार्ग भृँगा मत्त, 'वे नाम' सेवादार सूं।
सत्त सत्त और सत्त बताऊँ, कुछ ना पाऊँ ना मांगू आप सूं।।

साहिब सत्तपुरूष जी ने आज तक किसी भी प्रलयः काल में किसी भी संत सत्तगुरू परमहँस जी को दौ बार 'सार सब्द–सुरत दात' कभी भी प्रदान नहीं की, दौ बार सत्त सुरति दात साहिब सत्तपुरूष जी से सुरति द्वारा ग्रहण करने वाले एक मात्र संत सत्तगुरू "वे नाम परमहँस जी" वर्तमान काल में इस धरा पर विद्यमान हैं।

वे नाम सुरति धारा   सतगुरू सत्तनाम सत्त साहिब जी

सतगुरू सतनाम   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत ग्रंथों की सूची

क्रः	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022

अग़ामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1 अनुराग़ साग़र

2 साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें

3 साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम'

विषय सूची

क्रः	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	खर अक्षर निःअक्षर	1
2	वासनात्मिक प्रेम से आध्यात्मिक प्रेम की ओर	86
3	सहज से अंर्तमुखि	116
4	पंच शब्द पंच तत्व	133
5	आहार से शुद्धत्ता और पतन	135
6	सात चक्रों की महिमां	157
7	दस वायुओं की महत्वता	179
8	तन तजने का भेद	252
9	अनिल पक्षी	295
10	अल्प मुक्ति से पार मोक्ष द्वार	303
11	संत मत्त की महिमां	308

सतगुरू सत्तनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

'वे नाम सुरति धारा' सुरति संदेश रूपांतरण शब्दों में

प्यारी हंस आत्मांओ,

अति हर्ष का विषय है कि हम सभी हंसों (आत्मांओं) के प्यारे परमपिता ''साहिब सत्तपुरूष जी'' जिन के हम सुरति अंश हैं के आर्शीवाद और कृपा से मुझे आप सभी से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। अनंत काल युगों–युगों से पूर्व जब सृष्टि् रचने का भाव उनके सुरति पुण्झ में उपझा होगा, और फिर इसे कैसे अमल में लाया गया होगा, ऐसे अनगिनत भाव हम सभी के अंदर भी पनपते रहते हैं, सदियों से ये जिज्ञासा हमारे अंदर एक कौतूहल पैदा करती रही है कि ये सृष्टि् कैसे रची गई, क्युं रची गई और कौन इसके रचियता हैं अर्थात इस सृष्टि् सहित ब्रह्मण्ड रचना का मूल स्त्रोत्र क्या है ? जब कुछ भी नहीं था तो क्या था आदि आदि ? इस सब का भेद अगर कोई समूचे संसार को दे पाया है तो वह केवल और केवल एकमात्र संपूर्ण संत परमहंस 'साहिब कबीर जी' ही हुऐ हैं जिन्हें ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सर्वप्रथम अपनी सुरति ऊर्जा से ओत–प्रोत 'सत्त दात' देकर इस धरती पर जगत जीवों के कल्याण अर्थात एक औंकार कालपुरूष की कैद से मुक्त करके पूर्ण मोक्ष दिलाने और अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये इस त्रिलोकि संसार जगत में भेजा था।

उनके ईलावा इस समूचे जगत में जब से सृष्टि् बनी है इस दास ('वे नाम') के अतिरिक्त और कोई भी ऐसा नहीं है जिसे स्वयं ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सुरति द्वारा सीधे 'सार नाम दात' दी हो और वो भी दौ–दौ बार । और यही भेद समूचे जगत के समक्ष प्रकट करने के लिये दास ''साहिब सतपुरूष जी'' के आदेश अनुसार 22 मार्च, 2012 से निरंतर साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान कर रहा है। एक बात सर्वदा ज्ञात रहे, सहज सत्त मार्ग के अनेकों संत सतगुरू इस धरा पर हुऐ जिन्होंने अपने प्रारम्भिक भक्ति काल में निरंकार भगवन की महिमां का गुणगान किया। परन्तु कुछ काल उपरांत सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरूओं से दीक्षा दात ग्रहण करने के उपरांत मोक्ष प्राप्त किया। इन महान संतों सतगुरूओं में प्रमुख साहिब रविदास जी, बाबा नानक जी, साहिब दादू दयाल जी, दरिया साहिब जी, साहिब तुलसीदास हाथरस जी, साहिब ब्रह्मानंद जी, साहिब पल्टु जी तथा इनके ईलावा भी अन्य कंई संतों ने सहज मार्ग पथ पर चल कर मोक्ष को प्राप्त किया। परन्तु एक बार मोक्ष प्राप्त कर लेने के उपरांत इनमें से कोई भी संत सतगुरू ''साहिब सतपुरूष जी'' की महिमां का गुणगान करने के लिये पुनः इस धरा पर नहीं भेजे गये। 'संत कबीर साहिब जी' के बाद छेः सदियों के उपरांत दास को ''सतपुरूष साहिब जी'' ने उनकी महिमां गुणगान व प्रायः लुप्त हो चुकी सत्त सत्ता की पुनः स्थापना के लिये इस धरा पर भेजा। सहज भक्ति मार्ग के पथ पर चल कर कैसे जीवात्मां इस मृत्युलोक संसार से मुक्त होकर अपने निजघर सतलोक वापिस जाये व त्रिलोकिनाथ कालपुरूष के मन रूपी मोह

माया जाल से छुटकारा पाये, इस पर अपने सुरति अमृत प्रवचनों के द्वारा 'वे नाम सुरती धारा' का प्रवाह बहे जा रहा है जो अभी भी निरंतर जारी है।

और इस प्रयास में अभी तक दास की सुरति द्वारा साहिब सतपुरूष महिमां और उनकी प्रीत से ओत–प्रोत कंई भजनों, काव्यों और अनगिनत दोहों से भरे ग्रंथ रचे जा चुके हैं और साथ ही साथ इन सब की महिमां यू–टयूब चैनल 'वे नाम सुरति धारा' व अन्य माध्यामों द्वारा भी गाई जा रही है जहां पर हज़ारों–हज़ारों प्रवचनों व गायन की श्रृंखला केवल और केवल 'सहज भक्ति मार्ग' पर चल कर 'सत्त का भेद' व सत्ता जो इस संसार में कहीं लुप्त सा ही हो गया था उसे फिर से दास द्वारा ''साहिब सतपुरूष जी'' स्थापित कर रहे हैं क्योंकि सत्त की सत्ता को कौन मिटा सकता है ! इस उपलक्ष्य में दास द्वारा जो दोहों के रूप में साहिब वाणी गाई और रची जा रही है उसका बड़ा सुन्दर वर्णन सभी ग्रंथों में 'वे नाम सुरति धारा' के प्रवाह में समूचे जगत को प्राप्त हो रहा है। ये दास खुद कुछ भी नहीं लिख रहा, जो कुछ भी लिखा व रचा जा रहा है वह ''मेरे साहिब सतपुरूष जी'' ही की कृपा से हो रहा है उन्हीं का तदरूप बन कर दास इस संसार को जगाने की चेष्टा मात्र कर रहा है, इसलिये मेरी वाणी मेरी ना होकर केवल और केवल हमारे प्यारे परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' की ही सुरति धारा है जो दोहों और प्रवचनों के रूप में मुझ 'दास' द्वारा जगत जीवों की ओर प्रवाहित हो रही है व कलमबद्ध हो रही है। यूं तो सुरति भेद सुरति द्वारा ही ग्रहण किये जा सकते हैं परन्तु जगत जीवों के कल्याण के लिये 'दास' ''साहिब सतपुरूष जी'' के सत्त सुरति अमृतमयी प्रवाह को शब्दों में रूपांतरण करके सभी जीवों के समकक्ष अर्पण कर रहा है ताकि उनकी चेतन सुरति से सभी जीव चेतना प्राप्त करके मोक्ष अर्थात अपने मूल सतलोक में जा समायें और इस आवागमण के चक्कर से सदा के लिये मुक्त हो जायें।

'सुरति और सार दात' के संदेश से भरपूर ये दोहों और भजनों से भरे ग्रंथ उसी भेद को उजागर कर रहे हैं जिस भेद को पाकर जिज्ञासुजन इस दुर्लभ मानस जीवन के एकमात्र लक्ष्य 'पूर्ण मोक्ष' को प्राप्त कर सकता है, और किस विधि से ये सब संभव हो पाता है आईये इस महान ग्रंथ **''वे नाम सुरति धारा''** को आत्मसात करके इसके भावार्थ को समझें और प्रतिदिन इन दोहों के अंदर छिपे रहस्यों को समझ कर अपने जीवन में उतार कर इस दुर्लभ जीवन को सार्थक करें और निराकार काल भगवन से छूटकर अपने परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' के धाम हंसा निजघर अमरपुर सतलोक वापिस लौट चलें और अपने निज मूल **'सत्त'** में समा जायें।

सभी हंसात्माओं के मोक्ष हेतु प्रयासरत,

'वे नाम' परमहंस

–0–

अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है। मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है । आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

भूमिका

''वे नाम परमहंस जी'' कह रहे हैं, जो दात मैं जग जीवों को दे रहा हूं, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को 'सार सब्द', अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है। सत्तपुरूष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला 'सार सब्द' सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । उनके दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वंय सतपुरूष जी व चार महां संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर 'हंसा' को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरूष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरूष जी से सुरति सूं गोष्टि्ठयां होती रहीं जिनमें वो सतपुरूष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्मांओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरूष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, ''रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना'' को समझते हो । मैनें बड़े श्रद्धा भाव युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रीयतम को पाना है। वह आनंदित मुद्रा में मन्द मन्द मुस्कान लिए हुए सतज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरूष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिमय हो गई । सतपुरूष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं 'सार सब्द' उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी। उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस 'सार सब्द' को ग्रहण किया। यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरू का दिया हुआ ही सब्द होता है, सतपुरूष जी से सर्व प्रथम 'सार सब्द' साहिब कबीर जी को ही मिला था। इस दास को ही केवल दो बार 'सार सब्द' सीधे सतपुरूष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरूष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है। सतपुरूष जी के द्वारा बार बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और सतपुरूष सत्ता की महिमां का बखान कर रहा है। ये ग्ददी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सतपुरूष जी ने ही प्रदान की ।

प्रस्तावना

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि् रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही। इतनी ढेर सारी मान्यतांए, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों, शास्त्रों, उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्यमान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मांनंद जी, संत मीरांबाई जी और बाबा नानक जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मोक्ष दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक़्ति अर्थात मोक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू परमहँसों की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहँस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब ''श्री वे नाम परमहँस जी'' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू परमहँस जी के चरणों में समर्पित किया है।

✍

संत 'वे नाम परमहँस जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू परमहँस जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मोक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

कर्ता पुरख

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :—

'' ना मैं कर्त्ता — ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया — सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं — साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें — उनकी मोज है
जो भी होता — सब अच्छा होत है
साहिब ही करन — करावनहार
हम तो केवल दासा — उनके सेवादार
वो ही तारनहार — करावे भव से पार
वे नाम भी तो — उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार — उन्हीं से कर लो प्यार''

—0—

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

–0–

ग्रंथ सारणी

नोट :–

साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ 'साहिब जी के सफरनामें', 'अल्प मुक़्ति से पूर्ण मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर', गीता अमृत सार, 'वे नाम सुरति धारा' व अनुराग़ साग़र प्रमुख हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं और इसके साथ–साथ पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत मार्ग की भक्ति महिमां से भरपूर ग्रंथ 'अमर साग़र', 'परमहंस सुरति महिमां' और सुरति अमृत से ओत प्रोत 'साहिब सतगुरू परमहंस जी' द्वारा रचित भजनों की तीन पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी भाषा में भी एक अदभुत ग्रंथ ''मोक्ष का भेद **(Secret of Permanent Liberation)**'' पूर्वतः ही प्रकाशित कीये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य और भी ग्रंथों की रचना अग़ामी काल में शीघ्र ही की जानी हैं।

कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये तथा उनसे ''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित इन नवीन ग्रंथों को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

—0—

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी		सत्त साहिब जी		सत्त साहिब

’वे नाम’ सुरति धारा

खर, अक्षर और निःअक्षर

1 क्षर में फंसा हर जीव जगत में, अक्षर में योगी साध।
निःअक्षर सतगुरू सूं कोई पावे, ता सूं उतरो भव पार।
यह भेद ’वे नाम’ सतगुरू देते हैं, संग में कराते भव पार।।

2 अक्षर भेद मूल ना जाना, क्षर सूं जान संसार।
निःअक्षर मोक्ष दात है प्यारो, करावे भव सागर सूं पार।
यह भेद ’वे नाम’ जी देते हैं, बिन यत्न करावें भव पार।।

3 प्यारो बैठो ’वे नाम’ अमर जहाज में, पल में गये समुन्दर तीर।
हर जागा जीव जगत का, कहे सुरति से निःअक्षर धार।
यह भेद ’वे नाम’ जी देते हैं, संग में कराते भव पार।।

4 सार नाम सुरत नाम मूल नाम प्यारो, सत्यपुरूष की सुरति धार।
तीन लोक वासा नहीं, चौथे लोक की सुरति धार।
निःअक्षर अमर सब्द को पाओ, ता सूं पहुंचो अमरलोक दरबार।।

5 सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया ’वे नाम’ प्यारे ने
सत्य पुरूष को पाने वाले ने, निज घर को जाने वाले ने।
यह भेद ’वे नाम’ जी देते हैं, साहिब भेद दिया ’वे नाम’ जाननहारे ने।।

6 क्षर अक्षर सूं काल जाल ना छूटे, जन्म मृत्यु का जाल।
निःअक्षर अमर सब्द को पाओ, काटे तीन लोक का जाल।
यह भेद ’वे नाम’ जी देते हैं, अमर सब्द काटे मन माया जाल।।

7 परमहंस 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, जिन का सत्यलोक अमरपुर वास।
''वे नाम'' सब्द सुमिरत अमृत रस चाखो, बुझाऐं हर हंसा की प्यास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द जगाये मोक्ष की प्यास।।

8 जैसे बादल गगन में तैरते, चारों ओर बिन हाथ और पांव।
ऐसे संत सम्राट 'वे नाम' हैं, जित देखों तित पाओ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दरस सुरति सूं पाओ।।

9 संत कबीर साहिब जगत में आये, सब के प्यारे होये।
सब्द सवरूपी सुरति धरत, हर सुरति जगवत सोये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में जागे बिरला कोये।।

10 मेरे सत्यपुरूष जो तुम चाहो, सो ही मैं बोलूं गाऊं।
तुमरी सुरति सार सब्द में, कर्म धर्म तज हर पल ध्याऊं।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष सुरति गुण गाऊं।।

11 दर्शन केवल पूर्ण सतगुरू के, सुमिरन का सच्चा 'वे नाम'।
श्रद्धा रसरी प्रीत को, ताई से सुमिरो 'वे नाम'।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्रद्धा प्रेम से सिमरो सब्द ''वे नाम''।।

12 विश्वास भरोसा प्रीत की रसरी, सुरति इस का पांव।
जो चले इस पांव से, जा पहुंचे सच्चे गांव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं जाओ अपने गांव।।

13 सुरति छुड़वे मन माया जाल सूं, प्रेम सुरति ध्यान।
प्रेम सत्त संदेश ले आवे, प्रेम सूं सब्द ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति प्रेम सूं ध्यायो सब्द ''वे नाम''।।

14 प्रेम पुजारी जो बने, सतगुरू 'वे नाम' चरणन ध्यान।
सुरति में हर पल संग रहे, जा पहुंचे निजघर निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं।।

15 सब्द सुरति स्वांसा एक करो, दस पवन सात सुरति चलें संग साथ।
सुरति उपझी मन माया संग छूटा, खोलता अष्टम द्वार एक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति खोले अष्टम द्वार एक साथ।।

16 सार नाम जान बड़ राम सूं, तारे लाखों जीव।
तीन राम सूं निराकार हैं, चौथे राम सूं पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन ढंग सूं निजघर लेते हैं।।

17 सतगुरू महिमां अपार है, मत करो चतुराई।
कपट चोरी विनाष करे, रहे अंधा या कौड़ी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन ढंग से निज घर ले लेते हैं।।

18 सार सब्द सुरत सब्द चौथे लोक का, भूल केन्द्र ले जान।
सुरति निरति मेल सूं केन्द्र, सतगुरू 'वे नाम' सूं ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से पाओ निजधाम।।

19 ''वे नाम'' सब्द सुरति लागी, आशा तृष्णा बुद्धि वश ले जान।
''सार नाम'' दात जब 'वे नाम' देत हैं, मन माया संग छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निजघर ले जान।।

20 बड़े भाग्य मनुष्य तन पायो, सत्य धर्म की होई पहचान।
'वे नाम' सुरति सूं, हंसा रूप को मिली पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द करावे निज की पहचान।।

21 जन्म एक नहीं जन्म अनेकों, बिन ''वे नाम'' दात बने ना बात।
यह भेद 'वे नाम' परमहंस जी देते हैं, निज संग निजघर ले जात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से बने हर बात।।

22 मन सूं चार पाप नर कर रहा, क्रौध ईर्ष्या मान और छल।
इन चारों को करने के लिये, बिन आत्म होता ना हल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन आत्म मन निठल्ला निष्फल।।

क सब घट साहिबन वासा है, खाली घट ना कोये।
बलिहारी वो घट प्यारो, जा घट प्रगट होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर घट साहिबन वासा होये।।

23 जब सुरति सब्द सूं जाग गई, मन माया का छूटा संग।
चेतन सुरति सूं आत्म चेतन होई, सुरति सब्द एक संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सब्द हर जीव संग।।

24 अब 'वे नाम' में सत्यपुरूष स्वयं, भगत हो उठे।
अब सुरति सब्द चेतन हुआ, एक नृत्य गति उठे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से नर जाग उठे।।

25 मन की वृति संकल्प है, निर्णय करना बुद्धि का काम।
चित्त में याद की शक्ति प्यारो, क्रिया करना अहंकार का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्म करना मन का काम।।

26 चारों सब कुछ देखते, अंदर की आंख का काम।
पाप पुण्य भी देखते, यह सब मन का प्यारो काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पाप पुण्य मन का प्यारो काम।।

27 काम क्रौध मन का खेल हैं, आत्म ये जाने ना।
छल कपट मन की रीत प्यारो, आत्म का यह सब ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग भरमावे आत्म जाने ना।।

28 काया का भेद अथा प्यारो, तीन लोक का भेद।
कोई कोई जाने भेद को, बिन सतगुरू मिले ना भेद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' देते चौथे लोक का भेद।।

29 तीन लोक में जो कुछ बाहर, सो तन अंदर जान।
जो कुछ सांईस ने किया, मन बुद्धि की उपझ ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सारा ब्रह्मण्ड निज भीतर जान।।

30 मन ही औंकार तुम जानो, तोहि रहा भ्रमाई।
हम सब हंसा अमर लोक के प्यारे, पड़े काल वश आई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा पड़ा काल वश आई।।

31 आत्म की सच्ची भूल प्यारो, तन को ही जाना अपना अंग।
आत्म हंसा रूप प्यारो, सत्यपुरूष का सच्चा अंग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष का हंसा निज अंग।।

32 ज्यों तिज से मिलता तेल, चकमक से आग प्यारो।
तैसे ही सुरति हृदय में, सत्यपुरूष का सच्चा अंग प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष का हंसा निज अंग प्यारो।।

33 मन तरंग आत्म भ्रमावे, तन मन जाना निज रूप।
लाखों जन्म का जोड़ है, आत्म भूली निज रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन वश आत्म भूली निज रूप।।

34 तीन लोक का औंकार मन ही राजा, आप ही सृजनहारा ले जान।
चौथे सच्चे लोक का भेद, 'वे नाम' ही सच्चे सतगुरू लें जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक जाननहारा 'वे नाम' लें जान।।

35 सतगुरू महिमां अपार है, मत करो तुम चतुराई।
कपट चोरी विनाश करें, रहे अंधा कोढ़ी मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पाप कर्मन से जीव दुखदाई।।

36 ''सार नाम'' दात से एक ऊर्जा, हर पल पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती ले जान।
मन माया का जब संग छूटे, तब आत्मां हंसा होई ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम सूं आत्म चेतन ले जान।।

37 काम क्रौध मद लोभ, मन के अंग तूं ले जान।
कथा तन क्या मन क्या अंतःकरण जान एक समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में काया भी मन अंग समान।।

38 आत्म का मन माया सूं लेन ना देन, हर नर ले जान।
यह सब सतगुरू सब्द से, जब सब्द सुरति एक ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सुरति अति महान।।

39 ''वे नाम'' सब्द सार नाम चार लोक का, मूल केन्द्र ले जान।
दर्शन केवल पूर्ण संत के, सुमिरन को सच्चा नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक निज संग लेते हैं।।

40 कर्म धर्म सब झूठ है प्यारो, मन तरंग तूं जान।
सत्य नाम जाने बिना, निज की ना होत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग नर भूला निज पहचान।।

41 मस्तिष्क बुद्धि मन का मंत्री, सुषुम्ना में करो स्थान।
मन पल पल तरंगें भेजता, आत्म की तोड़ी कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन ने आत्म सुरति की तौड़ी कमान।।

42 सुरति शक्ति ''वे नाम'' सब्द संग, करती हंसा को पार।
नाव 'वे नाम' दात है, सुषुम्ना चेतन सूं पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं पार।।

43 सुरति को मन सूं दूर कर, सुषुम्ना को चेतन का काम।
हर पल सुरति संग सब्द के, स्वांसा संग सुरत कमल जाने का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांसा संग सब्द ले चले सुरत कमल धाम।।

44 कहना सुनना देखना, अक्षर के अंग तूं जान।
गुप्त निःअक्षर सुरति में, चेतन सुरति महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सब्द की महिमां महान।।

45 काग़ से हंसा करे प्यारो, निःअक्षर सब्द की महिमां महान।
''वे नाम'' सतगुरू को दात है दीन्हीं, सत्यपुरूष की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां अजर अमर जान।।

46 ''वे नाम'' सार सुरत नाम चार लोक का, मूल केंद्र ले जान।
दर्शन केवल पूर्ण सतगुरू के, सुमिरन को ''वे नाम'' ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सतपुरूष ले जान।।

47 'वे नाम' सीढ़ी सूं उतरे, ''सार सब्द'' सूं छूटा संग।
ताको औंकार का संग कैसा, अमरलोक सूं छूटा संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग नर का अमरलोक सूं छूटा संग।।

48 'वे नाम' से एक को जान ले, तो सब जाना सच्चा ज्ञान।
जे सच्चा साहिब ना जानिया, तो सब जाना जान अजान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चौथे लोक की महिमां महान।।

49 सतगुरू संगत में आवही, सतगुरू दर्शन करि जाहिं।
कहें 'वे नाम' तां साधक को, तीन लोक डर नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध को तीन डर नाहिं।।

50 चांद और चकौर की रीत से, प्यारो करो तुम ध्यान।
पल ही पल 'वे नाम' सूं, चले सुरति का बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द चेतन सुरति बाण।।

51 हर पल जग में जग है मर रहा, मरने का भेद ना जाना कोये।
ऐसी मरनी कोई प्यारा साधक मुआ, भोर ना मरना होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरतिवान जन्म मरन सूं मुक्त होये।।

52 'वे नाम' आत्म चेतना, चरणों में धरो ध्यान।
उन में धुन लगने से, चेतन हो आत्म ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से आत्म चेतन जान।।

53 जब नर को सब प्यारे लगते, आत्म को जागा जान।
सुरति से देख और सुन, सार सब्द में धरा ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति से ''वे नाम'' सब्द धरो ध्यान।।

54 धुन का ही जग खेल प्यारो, धुन से दुख महान।
धुन को सुरति रूप दे डालो, सत्त प्रेम की अमृत वर्षा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत आनंद अमृत वर्षा महान।।

55 रोना हंसा खेल सब मन का, आत्म का लेन ना देन प्यारो।
आत्म सुरति प्रेम की ज्योति, बिन ''वे नाम'' दात प्रेम कहां प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं ''वे नाम'' दात पाओ प्यारो।।

56 फनि सूं मणि ज्यों बिछड़े, जल सूं बिछड़े मीन।
ऐसी प्रीत जब 'वे नाम' सतगुरू सूं, मोक्ष की बाजे बीण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति अमर प्रेम ध्यान।।

57 'वे नाम' बाण जा को लग जाऐ, जीव पल में जाग जान।
लाख कहें समझावे सतगुरू, मूर्ख कबहु नहीं लेता ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूर्ख ना जाने सतगुरू महिमां महान।।

58 'वे नाम' सुरति पाते ही, मन की टूटे कमान।
बिसरे भूख प्यास आशा तृष्णा को, सुरति चेतन से काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति से बने काम महान।।

59 ''वे नाम'' दात काग पलट हंसा कर देना, 'नाम' सत्यपुरूष दिया महान।
'वे नाम' सतगुरू की अनमोल दात है दीनी, आतम से हंसा करे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द आत्म हंसा करे महान।।

60 क्षार सूं सब संसार है, अक्षर से गुरू की महिमां महान।
निःअक्षर मूल दात सुरति संग, सतगुरू पास दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू देते मोक्ष दात महान।।

61 'वे नाम' जगत में कोई ना मिलया, मुझ सूं बुरा कहां।
माला का हर फूल प्यारा, बिन जोड़े माला कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निज घर ले लेते हैं।।

62 यह जग एक माला समान प्यारो, एक से आये अनेक जहां।
मन माया का जाल कैसे कटे, सतगुरू 'वे नाम' बिना बात बने कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्द बात बने कहां।।

63 हंसा की सुरति योग से, अमरपुर निजघर जाने की राह।
आत्म से मन माया का जाना, ''सार सब्द'' से हंसा बनने की राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से पाओ अमरपुर की राह।।

64 भौगी जन अनहद धुनों को कहते प्रकाशता की सच्ची राह।
भंवर गुफ़ा से उठत है यह, सब्द नहीं शब्द लोक तक रहा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं।।

65 कोई अंदर से कोई बाहर से, जग में हर कोई भटका जान।
पूर्ण सतगुरू जब मिलें, पूर्ण मोक्ष का मिले ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' से मिले मोक्ष दात का दान।।

66 नर उत्तम श्रेष्ठ जीव जगत में, मन मोक्ष का मिले ज्ञान।
बिन जाने खेल हो कैसे, मन माया आत्म संग छूटे ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग आत्म जाने ना।।

67 पीर पैगंबर कुतुब औलिया, मन आत्म रहस्य को जाने ना।
आत्म का अंधकार में वासा, आत्म निज को पहचाने ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग नर निज को पहचाने ना।।

68 कहन सुनन देखन, सब खर अक्षर में जान।
गुप्त निःअक्षर सुरति से पाये, सुरति चेतन होई तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सूं आत्म चेतन तूं जान।।

69 असंभूत ब्रह्म निःअक्षर रूप हंसों का घर, माया ब्रह्मण्ड प्रकट नहीं।
जग संभूत ब्रह्म है जानता, अक्षर बिंदु निःअक्षर नहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर बिन्दु निःअक्षर नाहिं।।

70 अमरपुर जाने पर, हर हंसा पाता सौलहं सूर्य संग प्रकाश।
अधर दीप संग सतगुरू के, पाये सब्दातीत प्रकाश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जग में सब्द ज्योति प्रकाश।।

71 सत्यपुरूष का एक रोम प्यारो, लाखों सूर्यों का प्रकाश संग साथ।
सच्ची महिमां सत्यपुरूष की प्यारो, कोई कैसे करे विश्वास सुरति साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष ही प्रेम विश्वास जगायें साथ।।

72 मूल ध्यान सदगुरू रूप हे, पूजा पल पल संतन चरण।
'वे नाम'' सार सब्द सुरत सब्द हैं, सुरति संग पवन प्राण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति संग पवन प्राण।।

73 लोचन चातक समान जब, स्वाति बूंद पर सुरति ध्याण।
सब्द शब्द को काटता, क्षर अक्षर सूं टूटा ध्याण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक सूं करते पार।।

74 सब्दे भरोसा सब्दे आस, सब्दे प्रकटें सतगुरू 'वे नाम' आप।
सुरति निरति मेल सूं, आत्म सब्द से हंसा आप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से हंसा आप।।

75 स्वांस स्वांस सब्द में सुरति ध्याण, सब्द सुरति स्वांसा संग साथ।
जो कुछ प्रकटे सो अभी, 'वे नाम' सतगुरू हर पल संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सुरति हर पल संग साथ।।

76 जानो जीव तबहि जग जागा, जब प्रेम विराग सुरति धारा संग साथ।
'वे नाम' चरणन धरो, प्रेम जोत का जागे साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम चेतन सुरति धार जागे साथ।।

77 मेरे साहिब बड़े सतगुरू, दीन बंधु उर अंतरयामी।
क्षर अक्षर का भेद मिटाई, निःअक्षर में पूर्ण सुरति समाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर में चेतन सुरति समाई।।

78 सत्त असत्त असली नकली, अक्षर क्षर का भेद प्यारो।
क्षर अक्षर तो मन के अंग, निःअक्षर सुरति ही सच्चा भेद प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर जगत–निःअक्षर सतलोक प्यारो।।

79 विवेक ना जागे मन कहां भागे, सार नाम सुरति नाम का बाण महान।
भव सागर से कैसे तरे, जब तक ना 'वे नाम' हाथ कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू देवें चेतन सुरति दान।।

80 ''वे नाम'' सतगुरू हैं कमान, सब्द करें बाण का काम।
तूं प्रेम की जोत जगाये रख, मन की पल में टूटे कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं छूटें मन मान।।

81 'वे नाम' और सत्यपुरूष एक ही जानिये, दोनों में भेद तनिक मत जान।
लाली ज्यों छिपी मेंहदी में प्यारो, फूल में बास समाना लो जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष 'वे नाम' दौ सब्द ईक जान।।

82 तीर्थ व्रत और चारों धाम से, पाप पुण्य उरझाना प्यारो।
बिना मेहर ''वे नाम'' दात के, कर्मों का बंधन न्यारा प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीर्थ व्रत पाप पुण्य मन तरंग प्यारो।।

83 ''वे नाम'' सब्द से रोम रोम में, प्रकाशे निर्मल सुरति ज्ञान।
कहें 'वे नाम' सतगुरू करो, हर पल स्थिर सुरति ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सुरति से धरो ध्यान।।

84 ''सार सब्द'' सुरति दृढ़ता लावे, भजन सुमिरण सुरति सूं प्यारो।
काम क्रौध मद लोभ विनाषा, झूठ ''वे नाम'' सब्द अंकुश प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करे मन वश प्यारो।।

85 ''वे नाम'' सब्द जात वरण कुल मेटि के, प्रकटाये मुक्ति अटूट।
चले हंसा निजघर अपने, अब काल कैसे पकड़े खूट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं मिटे मन लूट।।

86 मृतक जानो जग जीव सब, जे जन संग नहीं प्रीत।
वैराग प्रेम का अंग प्यारो, प्रेम ही सूं त्याग और प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वैराग़ जगाये साहिब सूं प्रीत।।

87 सब्द सुमिरण सूं प्रेम जागता, मन माया का छूटे संग।
सतगुरू सत्यपुरूष अब हैं संग, सुरति निरति डौर एक संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू साहिब दौ नाम ईक संग।।

88 ''वे नाम'' सब्द सूं पाया रंग अपार, सब्द सूं जुड़ी सुरति की तार।
मान सरोवर जा के प्यारो, मन मान की टूटे पतवार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति पतवार सूं मन माया पार।।

89 यह ग्रंथ सब सुनें सुनावें, सच्चे प्रेम भक्ति की राह।
जो ज्ञानी सो बुझे ज्ञान, प्रेम रस पाने की जब चाह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग नर ना चले प्रेम भक्ति की राह।।

90 ''वे नाम'' सुरति धारा यह ग्रंथ, सकल ज्ञान भंडार।
सुनत पढ़त अमर पद पावहीं, कहे 'वे नाम' विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निज घर ले लेते हैं।।

91 निज सब्द सत्य है जानिया, तंह पाखंड विनास।
बिन सत्य पहुंचे नहीं, सत्य अमर लोक निज देश।
वह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग निज घर ले लेते हैं।।

92 निःअक्षर सब्द निज पावही, मिटि जान सकल अंदेश।
निःअक्षर दात जाने बिना, घटही में परदेस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सब्द में सतलोक संदेस।।

93 ज्ञान भेद किस सूं लेहिये, मन मी बात किस सूं कहिये।
बिन सतगुरू को भेद बतावे, किहि विधि मन का संशय जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू मन का संशय ना जाये।।

94 ज्ञाणी ध्यानी भेद जाने नहीं, बहु करें अभिमान।
जिन प्यारो भेद है जानया, उन सूं छूटा मन मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द भेदी का छूटे माया अज्ञान।।

95 मृत्युलोक में पाखंड है धर्मा, कैसे जीव होये निहःभरमा।
सतगुरू 'वे नाम' आ ज्ञान सुनाया, ता से जीव का छूटा भरमा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मिटाये सब भरमा।।

96 प्यारो जे सत्यपुरूष एको जानिया, तो सब ही जाना जान।
'वे नाम' से एक ना जानिया, तीन लोक का सब जाना जान अजान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब चेतन सुरति सर्व ज्ञान।।

97 प्यारो जिसका पूर्व लिखया, पल में पावे ''वे नाम'' सब्द की दात।
औंकार भी संग साथ दें, मान लें 'वे नाम' सतगुरू की सच्ची बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जन्म जन्म की भक्ति से मिले ''वे नाम'' दात।।

98 सदगुरू 'वे नाम' सच्चे रंगरेज, मेरी सुरति चुनारिया रंग डारी।
मन मान का रंग छुड़ाई के, अपनी पारस सुरति से सुरति रंग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू रंगरेज़ रंगे चेतन सुरति रंग।।

99 गर्भ में मन भाव कहां, जब क्षर अक्षर नहीं साथ।
औंकार कहां से प्रकटें, जब पूर्ण सामर्थ सुरति का संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर माया का संग साथ।।

100 नर पावे हंसा रूप को, जब पारस सुरति संग साथ।
आठों पहर सुरति स्वांसा सब्द संग, विश्वास भरौसा जब साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पारस सुरति विश्वास भरौसा संग साथ।।

101 परमार्थ के कारणे, सत्यपुरूष चुना 'वे नाम' रूप।
सार सुरत नाम बिना, कैसे जाने सत्य पुरूष रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जानो साहिबन रूप।।

102 जाका गुरू गृहि प्यारो, चेला कैसे ना गृहि होये।
माया का कीचड़ धौवते, दाग़ ना छूटे कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू नर कामी होये।।

103 अक्षर शब्द सूं सतगुरू वाणी महिमां, निःअक्षर बाण वहां।
निःअक्षर अमर दात प्यारो, क्षर अक्षर का काम कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर तीन लोक निःअक्षर चौथा जहां।।

104 पढ़ी गुढ़ी किया बहुत कुछ, संशय रहा संग साथ।
मन से चल रहा संसार है, सच्ची सुरति का छूटा साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संशय और सुरति का ना कोई साथ।।

105 निःअक्षर भेद एक सतपुरूष पासा, बिन मिले पावे ना एक।
अगम अगोचर सोई जानिये, सतपुरूष कृपा पावे जो एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष जानो एक।।

106 निःअक्षर पार ना पायो कोई, निःअक्षर भेद अनामी।
कहिये अगम अगोचर सोई, कोई विरला भेद ले जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणी सब्द भेद ले जानी।।

107 ''वे नाम'' सब्द तीन लोक से न्यारा, सुरति में रहे समाई।
आदिनाम की अदभुत महिमां, सुरति निरति मिले बात बन जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' दरस सूं साध चेतन हो जाई।।

108 क्षर अक्षर से पार है प्यारे, सत्यपुरूष सुरति सब्द स्वरूप।
सुरति चेतन सदगुरू चेतन सुरति सूं, सुरत कमल में साहिबन अनूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन सुरति अनूप।।

109 सत्य सब्द को जानी कर, औंकार शब्द देह बहाये।
तीर्थ व्रत जप तप नहीं, 'वे नाम' चरण समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति में 'वे नाम' समायें।।

110 पढ़ा सुना सीखा सभी, मिटा ना संसै मूल।
क्षर अक्षर मन अंग हैं प्यारो, ताहिं से दुख का मूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सब्द निःअक्षर मोक्ष का मूल।।

111 सारी दुनियं का, क्षर अक्षर में वासा ले जान।
निःअक्षर का भेद जाने नहीं, 'वे नाम' सूं पाओ सब्द दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अक्षर में निःअक्षर दात जब महिमां जान महान।।

112 गुप्त नाम बिन सतगुरू नांहि, साहिबन सूं दात पावे सतगुरू लखावे।
पूरा सतगुरू जब अमरपुर जावे, सत्यपुरूष सूं अमर दात पा जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात पावे सतगुरू कहलावे।।

113 सतगुरू दया ते निःअक्षर पाई, निःअक्षर ते हंसा घर जाई।
अक्षर मूल सब्द लो गई, बिन अक्षर सब जाये बिगोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक भेद जाने कोई कोई।।

114 प्रीत रीत क्षर अक्षर सब अर्थ का, जान मान के ही सब काम।
कहें 'वे नाम' सुरतिवान परमार्थी, ''वे नाम'' सब्द से बनें सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज पहचान से बनें सब काम।।

115 सार सब्द 'वे नाम' सतगुरू पासा, क्षर अक्षर से न्यारा।
निःअक्षर सब्द दात प्यारो, बनाये सतगुरू का बच्चा प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पक्का सच्चा भगत सतगुरू का न्यारा।।

116 सतगुरू सत्संग में अक्षर निःअक्षर की चेतना, सुरति धारा बहती रे।
प्रेम विरह विराग़ में पवन, सुरति सब्द एक कर डाल रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महांचेतन सुरति संग सुरति डाल रे।।

117 निजधाम से सब्द जो आवे, सतगुरू सुरति में आ समावे।
निःअक्षर वे बोले नांहि, सो निःअक्षर सब्द कहलावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द निःअक्षर कहलावे।।

118 क्षर अक्षर संग तज प्यारे, सुरति में धारो निःअक्षर नाम।
निज घर का भेद सब्द में, सच्चे साहिबन का घर निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हम सब अंश साहिबन महान।।

119 ऋषि मुणि पीर पैगंबर प्यारो, जान ना पाये 'वे नाम'।
पोथियों में बात ना प्यारो, पोथियों से पार 'वे नाम'।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जन्म मरन चक्कर छुड़ावे 'वे नाम'।।

120 ऊँ अतः सोंह सोंह जपे हर प्राणी, निःअक्षर सब्द का भेद ना जानी।
निर्भय मुक्ति दात प्यारो, ''वे नाम'' सब्द दात ना जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सतगुरू 'वे नाम' ही जानी।।

121 कहें 'वे नाम' पुकार के, तज दे वाणी व्योवहार।
निःअक्षर सब्द दात जाने बिना, करे जीव हंसा सा कैसे व्योवहार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निःअक्षर सब्द करे जीव हंसा महान।।

122 नाम निःअक्षर सत्यलोक से आई, आप निःअक्षर में रहत समाई।
निःअक्षर साधक का करै निवेरा, 'वे नाम' सतगुरू संग निजघर जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' दात निजघर ले जाई।।

123 ''वे नाम'' सब्द में रहनी जो अपनावे, सतगुरू प्रताप सूं भवसागर तरि जावे।
निःअक्षर सब्द में जब सुरति वासा, माया तज निजघर चली जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जो जागे ता की सुरति भी जग जावे।।

छेः तन की महिमां

124 त्रिकाल में छेः योगेश्वर, शिव विष्णू ब्रह्मां महान।
व्यास दत्तात्रेय गोरख नाथ, सभी जान महान।
यह भी मन का खेल प्यारो, पूर्ण भ्रम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, योगेश्वर भी मन से मुक्त ना जान।।

125 वे ही साधक 'वे नाम' का प्यारा, काम क्रौध से होये न्यारा।
''वे नाम'' सब्द में सुरति राखे, जा पहुंचे साहिबन दरबारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से पहुंचो साहिबन दरबारा।।

126 हंसा ''वे नाम'' सब्द अधिकारा, सत्यपुरूष हर पल करे सम्हारा।
''वे नाम'' सब्द में सुरति धारा, कर्म बंधन से जान न्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द जोत कर्मण बंधन से पारा।।

127 भक्ति कामियों का संग कैसे करे, जो मन ईन्द्रियों के साथ।
सतगुरू पारस दात क्या करे, जब आत्म का छूटा साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पारस दात छुड़ाये वासना का साथ।।

128 स्थूल तन नाशवान प्यारो, चौदहं ईन्द्रियों का काम ले जान।
भौतिक दिव्य शक्तियां, हर एक के संग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म शक्तियां हर नर संग ले जान।।

129 सूक्ष्म तन निंद्रा की स्वपन अवस्था में, प्राप्त होता ले जान।
लिंग देही भी जान इसे, मन संग लोक लोकांतर की सेल महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन संग जीव चौरासी में फंसा ले जान।।

130 स्थूल तन और सूक्ष्म तन में, भाव एक सा ले जान।
दुख सुख में भेद ना लागे, आभास एक सा जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागो तो पाओ भेद महान।।

131 कारण तीसरा तन प्यारो, कहीं भी ब्रह्माण्डों की सैल करने में सक्षम ले जान।
संग किसी स्थान अवस्था का, प्यारो इस में भेद पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुरिया अवस्था में स्वर्ग की सैल महान।।

132 कारण तन से अतीत की बातें, भविष्य की कल्पनाओं का भेद ले जान।
इस तन में प्यारो, देखने चलने रोकने याद रखने का भेद ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुरिया शरीर में स्मरण शक्ति तीव्र ले जान।।

133 स्थूल सूक्ष्म दोनों से परे, सहज योग की महिमां जान।
धुनों को साहिब अंश मत जान प्यारे, मन माया का काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जाप अजपा अनहद का मरना ले जान।।

134 चौथा तन महां कारण प्यारो, यह अति निराला अदभुत तन महान।
मन मीन पपील चाल दे, कराये ब्रह्माण्डों की सैल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुरिया चौथी अवस्था अति महान।।

135 चौथे तन में प्यारो, मन से अति अनुभूतियां पाना महान।
ध्यान पूरी एकाग्रता में, तीन तन का छुटकारा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चौथे तन में पूर्ण एकाग्रता ले जान।।

136 चौथे तन महां कारण में प्यारो, श्वेत रंग के सूर्य दर्शन महान ले जान।
इस अवस्था में प्यारो, कुछ सुरति का संग भी साथ ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुरिया अवस्था महांकारण कहलाती ले जान।।

137 पांचवां तन ज्ञान देहि प्यारो, ध्याणी ब्रह्मनिष्ठ ले जान।
अहं ब्रह्मस्मि अनिल हक, अवस्था महान पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्ञान देहि तन 94 प्रतिशत मन छूटा ले जान।।

138 विश्वामित्र वसिष्ठ मुणि अवस्था पाई, शब्द औंकार ध्यान की महिमां ले जान।
सुन्न के सारे लोक लुकान्तरों की, योगी सैल करें महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महां योगियों ने ये अवस्था पाई महान।।

139 मरण मारण सम्मोहन शक्तियां, पांचवें तन ज्ञान देहि में पाना ले जान।
तन मन से पार प्यारो, निज को देखना महान काम ले जान।
मैं हूं सुन रहा चल बोल रहा, विष से अमृत पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्ञान देहि समस्त ऋद्धि सिद्धियों का स्वामी ले जान।।

140 छटवां तन विज्ञान देहि प्यारो, अत्यंत तीव्रगामी शरीर पाना ले जान।
सुन्न महांसुन्न की यात्रायें, देहि से परे महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विज्ञान देहि में 99 प्रतिशत मन मिटा ले जान।।

141 ईक प्रतिशत मन संग हंसा के, आत्म अति चेतन ले जान।
इतना कम मन भी, जानो संग महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन निर्जीव नाहिं ये है शक्तिमान।।

142 सुर नर मुणि जन और तीन देवता, जानें ना सुरति भेद।
ऊंचा महल साहिबन का प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू जाने भेद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सतगुरू जाने भेद।।

143 जीव काम क्रौध मोह माया के, बंधनों से बंधा ले जान।
बिन साहिबन नाम छूटे नांहि, काल का किया सब जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में काल का किया सब जान।।

144 यह देहि अति सूक्ष्म सागर, चट्टान के अंदर से पारा ले जान।
सभी संत इस देहि की महिमां का, ब्ख़ान करें महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महां योगेश्वर अवस्था का ब्ख़ान करें महान।।

145 आत्म से हंसा होना प्यारो, सार सुरत नाम बिन मत जान।
अभी कच्चा सूक्ष्म देहि में, सुख और दुख के बीच ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन नामे जग दुख में डूबा ले जान।।

146 सतगुरू 'वे नाम' चरणन में समर्पित होना, दुख सुख से पार होना ले जान।
अपनी अपनी गरज को त्यागे, पावे 'वे नाम' से सच्चा नाम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू बांटें मोक्षदायी सब्द ''वे नाम''।।

147 अपनी अपनी गर्ज़ में प्यारो, हर कोई खोया बीच संसार।
धरो अरज़ी 'वे नाम' सतगुरू आगे, चलो उनकी मर्ज़ी आधार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कोई बिरला लेवे सतगुरू सुरति धार।।

148 जब लग आत्म नाता देहि सूं, तब लग दुखी संसार।
जग से तोड़ ''वे नाम'' से जोड़, पाओ सुख सुरति की धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म आनंदमयी देह सहे सुख दुख धार।।

149 मन से हर एक को है खेलना, 'वे नाम' के हो कर खेल।
कच्ची सरसों पेल के, खली भया ना तेल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं छूटे मन का कपटी खेल।।

150 यह संसार कमावे खावे और सोवे, 'वे नाम' यह सब देख कर रोवे।
जग में करने को दो काम प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू पा ''वे नाम'' सब्द में खोवे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग दुर्दशा देख 'वे नाम' दे रोवे।।

151 जगत का वैर 'वे नाम' सूं, घड़ी घड़ी काटें खोट।
अंदर ''वे नाम'' सब्द सहारा दे, मन पल पल खावे चोट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द काढे जन्म जन्म के खोट।।

152 आवे ना जावे मरे ना जन्मे, सोई सत्यपुरूष हमारा।
जग में कोई मात पिता नहीं हमारा, सत्यपुरूष सब हंसों का सच्चा सहारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्यारा साधों का सच्चा सहारा।।

153 इस ब्रह्मण्ड में प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू सा ना कोये।
वे तो दासों के दास प्यारो, जा से पावन साहिबन होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दासापन सूं ही साहिबन प्रकटा भये।।

154 तीन लोक दृश्यम प्यारो, जानो इन्हें अनित्यम।
निजधाम आप सत्यपुरूष प्यारे, अदृश्यम जानो उन्हें तुम नित्यम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा सतपुरूष अंश नित्यम।।

155 चल हंसा निज लोक को, जग ले लिया भरमाई।
बिन 'वे नाम' कोई ना अपना, जो भ्रम से ले बचाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सब भ्रम दे मिटाई।।

156 हंसा हमारी जात प्यारो, मात पिता साहिबन आप।
राह हमारी केवल सतगुरू ''वे नाम'' सब्द मिलावे आप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द तो सतपुरूष सहाई आप।।

57 मन माया एको जानिये, माया मन ही समाई।
मन माया जब दोनों गये, सार सुरति आन समाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं मन शांत हो जाई।।

158 जो जाग गया ''वे नाम'' से, उसे त्रिलोकि में मेहमान ले जान।
जो 'वे नाम' बिन जग में पड़ा, मुर्दे समान उसे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागन से मन माया नाष ले जान।।

159 जागत और सोये में, जानो एक ही जोत उजियार।
'वे नाम' परमहंस जागा सुरति से, जग सोया पड़ा मन अनुसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू सब जीवें मन अनुसार।।

160 बाहर मन माया जाल देखिये, अंदर सुरति महान।
रोना हंसना गाना नाचना प्यारो, मन माया के खेल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग फंसा सारा जहान।।

161 चौदहं लोक बसें घट माहिं, सब के अंदर लाल ही लाल।
स्वांसा संग सुरति 'वे नाम' से रंगायें, ज्यों तन मेंहदी सूं लाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार त्रिलोकि पंच तत्व जाल।।

162 सतगुरू 'वे नाम' शिष्य वे जीवड़ा, ता में भेद तूं जान।
''वे नाम'' सब्द आत्म संग प्यारो, सुरति चेतन सूं एको जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोक्षदायी दात का दाता 'वे नाम' जान।।

163 'वे नाम' कई बार हो आयो सतलोक से, पाई सत्यपुरूष से ''वे नाम'' दात।
पा लो ''वे नाम'' सब्द की दात न्यारी, ले चले निजघर सच्ची दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही साहिबन दात।।

164 ''वे नाम'' निजधाम से आये, साहिबन कीन्हा अंदर निवास।
जो जन सिमरे ''वे नाम'' सब्द को, पाये निज घर में वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से हंसा लोक निवास।।

165 प्यारो मन मरघट भया, जब ''वे नाम'' सब्द हो पास।
विदेह नाम धारे बिना, मन का आत्म सूं ना छूटे साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज संग ले लेते निजधाम।।

166 सुरति के हेर फेर से, साहिबन सूं जुदा हुआ।
सुरति जब सब्द में डारी, नर पल में हंसा हुआ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं आत्म हंसा हुआ।।

167 बिन सत्संग जागन ना होई प्यारे, बिन जागे मुक्ति ना होई।
बिन मुक्ति आवागमण ना छूटे, साहिबन सूं मेल ना होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे आवागमण से मुक्त ना कोई।।

168 ''वे नाम'' दात पाई मन वश करो, सहज को पावे सहज।
''वे नाम'' सब्द निज मोक्ष है, सहज योग निज सहज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सहज सूं साध सहज।।

169 जिन जिन ''सार सब्द'' ''सुरत सब्द'' को जानेया, हुऐ भव निधि सूं पार।
''वे नाम'' सब्द जहाज है, जो चढ़े सो उतरे पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द जहाज सूं उतरो पार।।

170 करो भक्ति अराधना सतगुरू 'वे नाम' की, ममता मोह क्रौध सब जायें।
''सार नाम'' अमृत वृक्ष साहिबन का, फल चाखे निजघर जाये।
जो ना जहाज पे आ सके, तीन लोक में पड़ा रह जाये।।

171 मन माया तो एक हैं, माया मन ही समाये।
''वे नाम'' सब्द सुरति धारते, मन छूटे सुरति चेतन हो जाये।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति निजघर ले जाये।।

172 निजधाम सूं हो आ प्रकटे, सच्चे सतगुरू 'वे नाम'।
'वे नाम' साहिबन नाम वर्षा करी, हर ओर फैले 'वे नाम'।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दास पुनिः स्थापित किया साहिबन नाम।।

173 चल हंसा सत्यलोक को, तोड़ी के काल जंज़ीर।
यह संसार काल का देशा, बिन ''वे नाम'' सब्द ना टूटे जंज़ीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द काटे काल जंज़ीर।।

174 यह काल का देश प्यारे, झूठा जान जग परदेस।
यह तन पिंझरा नहीं तेरा हंसा, तजी माया चल हंसा निज देस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज भूला नर त्रिलोकि को माने निज देस।।

175 दरिया भव जल अगम प्यारो, 'वे नाम' करहु जहाज।
ताहि पर हंसा चड़ाई के, कराओ भव जल पार।
जो ना जहाज पर आ सके, वो जावे यम द्वार।।

176 'वे नाम' आया अमरपुर लोक से, देने ''वे नाम'' सब्द सुरति दात।
जो पा गया सो तर गया, 'वे नाम' की हर बात में बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' की वाणी चेतन सुरति बात।।

177 अच्छे दिन में खेल हैं खेले, दुख में कर रहा याद।
सुख ही सच्ची कसौटि याद की, दुख में दुख की याद।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सुख में नर करे ना साहिबन याद।।

178 इन तीन लोक में प्यारो, 'वे नाम' से बड़ा दास ना कोये।
देवी देवल और औंकार के सेवक, काटें एक वचन ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' कथन अटल ही होये।।

स प्यारे वो दिन याद कर, पग़ उपर तल शीष।
मृत्यु लोक में आये के, बिसर गया जगदीश।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, मोह फंसा नर भूला हंसा दीश।।

179 भारी कहु तो बहुत डरूं, हलका कहु तो झूठ।
मैं क्या बख़ान करूं सत्यपुरूष का, बोलूं तो हो जाये झूठ।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, जग सांच ना माने भाये उसे झूठ।।

180 दीठा है पर किसे कहुं, कहुं तो को पतियाये।
जैसे हैं तैसे रहें, हर्षि हर्षि गुण गाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते, सत्यपुरूष की महिमां गायें।।

181 देखा है तो कहना नहीं, बड़ा छोटा कहलाये।
सुने पर समझे नहीं, क्षर अक्षर से कहा ना जाये।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सुरति निःअक्षर मुख से कहि ना जाये।।

182 जो पकड़े सो चले नहीं, चले सो पकड़े नहीं।
यह बात आत्म सुरति की, क्षर अक्षर से बात बने नहीं।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, बिन चेतन सुरति कोई जाने नहीं।।

183 प्यारो सत्यपुरूष एक ना जानिया, औंकार देवी देव जाने क्या होये।
सत्यपुरूष ते सब होत है, सब ते एक ना होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष महिमां महान।।

184 सुख के संगी स्वार्थी, दुख में रहते दूर।
कोई प्यारा जान परमार्थी, दुख सुख सदा हजूर।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, संत परमार्थी स्वार्थ से दूर।।

185 सत्यपुरूष रचन ते नारी है, नारी रचन ते संसार।
''वे नाम'' से 'वे नाम' जो रचा, सो बिरला संसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष महिमां अपरम्पार।।

186 'वे नाम' वासा सुरत कमल में, चेला सुरति निरति माहिं।
साध सब्द सुरति लीन है, अब बिछुरत कबहुं नाहिं।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, चेला चले सतगुरू सुरति माहिं।।

187 प्रेम प्याला ''वे नाम'' सब्द का, सुरति में इसे दे डालो।
पारस सुरति 'वे नाम' को, मन माया तज डालो।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं तृष्णा तज डालो।।

188 अक्षर भेद ना जानहीं, क्षर में सब संसार।
निःअक्षर 'वे नाम' सूं पावही, कटे मिटे काल संसार।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर काल निःअक्षर भव पार।।

189 नर लाखों जन्मों से सोया पड़ा, उठ ''वे नाम'' सब्द से जाग।
सत्यपुरूष संग से बिछुड़ा, उन्हीं के संग लाग।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं सोया नर जाग।।

190 हर नर की बिसरी सुद्ध निजघर की, ''वे नाम'' सब्द से जाग।
सत्यलोक निजघर से बिछुड़ा, जाग सके तो जाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द से जाग।।

191 निराकार निर्गुण है माया, जिस पीछे रहता नर भाग।
आखों पर माया का चश्मां देकर, सुख के लिये रहा भाग।।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सुख दुख तेरा कर्मण भाग।।

192 सत्यपुरूष सुरति सतगुरू 'वे नाम' संग, चेतना का रंग अपार।
जो सत्संग आ 'वे नाम' दर्श करे, कृपा बरसे अपरम्पार।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्स महिमां अपार।।

193 जहां सत्यपुरूष तहंवा, हंसा बिन कुछ ना जाना।
हमारी बात माने जो कोई, पावे पद निर्वाणा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष की महिमां महान।।

194 काल को जानो अलख निरंझन, चारों वेदन गयो ज्ञान।
काल भक्ति में सब जग उलझा, पाप पुण्य कर्म ज्ञान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, काल निरंझन ज्ञान विज्ञान।।

195 साहिब 'वे नाम' अमरपुर वासी, हंसा लोक निज धाम।
''वे नाम'' नाम सत्यपुरूष दीना, चार लोक का ज्ञान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन दीन्हा चेतन सुरति दान।।

196 क्षर अक्षर सूं 'वे नाम' जानो, निःअक्षर दात वहां।
निःअक्षर अमर दात 'वे नाम' सूं पाओ, क्षर अक्षर संग छूटे जहां।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे नर फंसा मायावी जहां।।

197 बुरा जगत में नज़र ना आया, मुझ से बुरा कहां।
माली का सब बाग़ प्यारा, खुशबू में बदबू कहां।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, झूठे जग में शांति कहां।।

198 धुण का ही जग खेल प्यारे, धुण सूं दुख महान।
तुम धुण को अंतरमुखि करो, अमृत वर्षा हो महान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, अनहद धुणों की झंकार महान।।

199 रोना हंसना खेल है मन का, हंसात्मां का खेल नहीं।
हंसात्म तो है प्रेम की ज्योति, बिन ''वे नाम'' दात के मोक्ष नहीं।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू कृपा बिन मोक्ष नहीं।।

200 कहना सुनना देखना, अक्षर के अंग ले जान।
गुप्त निःअक्षर सुमरिये, सुरति बने अमृत बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू मारें निःअक्षर बाण।।

201 असंभूत साहिब जी निःअक्षर रूपा, माया ब्रह्माण्ड तब प्रकटा ना।
तीन लोक संभूत ब्रह्म हैं, अक्षर बिंदु निःअक्षर ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, त्रिलोक मिथ्या अजर अमर ना।।

202 प्रेम बाण जा को लग जाये, वे सुरति सूं जागा जान।
लाख कहै समझावे 'वे नाम' सतगुरू, मूर्ख नहीं लेता मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोया नर फंसा मान अभिमान।।

203 'वे नाम' सतगुरू सुरति को पाते ही, तन मन की टूटे लगाम।
बिसरे भूख प्यास तन की, 'वे नाम' सुरति बाण समान।
यह भेद सतगुरू देते हैं, सब्द सुरति सूं टूटे मन कमान।।

204 कांटे पत्ते फूल उगते, बिन कांटों के गुलाब कहां।
अक्षर निःअक्षर का खेल जग अंदर, बिन निःअक्षर अक्षर ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सुरति बिन खर अक्षर ना।।

205 चिंता मन की मोहनी, काढ कलेजा खाये।
''सार सब्द'' की दात सूं, पल में चित शांत हो जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागे तो भ्रम मिट जाये।।

206 यह जग पूर्ण माला समान प्यारो, एक सूं अनेक जहां।
मन माया का जाल है फै ला, बिन सतगुरू छूटे कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतन संग सूं छूटे माया रूपी जहां।।

207 जिन 'वे नाम' सतगुरू ढूंढा तिन सब पाईया, गहरी सुरति संग साथ।
वे प्यारो कैसे कुछ पावे, जिस किया ना 'वे नाम' संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में साहिबन साथ।।

208 अनहद धुनें हैं प्यारो, भंवर गुफ़ा दसवें द्वार की राह।
निरंकार की महिमां प्यारो, सब्द लोक में जाने की राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अनहद धुन पर सुन्न लोक की राह।।

209 सीढ़ी चढ़िये ज्ञान की, सहज सतगुरू ध्यान।
स्वान रूप संसार है, मन मान संग कैसा ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सहज धीरज ज्ञान।।

210 आये थे 'वे नाम' से ''वे नाम'' को पाने , ओट ना लगे कपास।
जब तक जीव जागे नहीं, बिन दुख कुछ नहीं पास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे दुख क्लेश संग नर पास।।

211 खाये पकाये लुटाये ले, पकड़ ले लड़ 'वे नाम'।
सेवक हो कर पाई ले, पूर्ण मोक्ष दात ''वे नाम''।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं पायें दात ''वे नाम''।।

212 जो ''वे नाम'' दात को पावसी, तिसका सतगुरू 'वे नाम'।
आठों पहर सुरति सब्द में, सतगुरू महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तारनहार सब्द ''वे नाम''।।

213 सतगुरू का समाना शिष्य में, करे सुरति चेतन महान।
अब मन माया का संग गया, सत्यपुरूष भी संग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शिष्य सतपुरूष सुरति से एको जान।।

214 जब लग मन माया संग हैं साथ, सुरति का छूटा साथ।
प्रेम तो सुरति अंग है प्यारो, प्रकटे जब छूटे मन माया साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति का मन माया से ना कोई साथ।।

215 बिन पूर्ण सदगुरू प्यारो, भवनिधि तरे ना कोई।
जब ''वे नाम'' दात 'वे नाम' सूं, भवनिधि पार करी जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात ''वे नाम'' मन माया पार ले जाई।।

216 अपने पहरे जागिये, ना परि रहिये सोये।
ना जाने छिन एक में, किस का बसेरा होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल पल जीवन बीता जाये।।

217 एक सत्यपुरूष को जानि करि, दूजा देह बहाये।
सहज भक्ति जप तप नहीं, सतगुरू चरणन समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणागति भव पार करि जाये।।

218 मान बड़ाई जगत में, सोये की पहचान।
सुरति सब्द का भेद पाया तो, पूर्ण सतगुरू की होत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति महान।।

219 जागा बड़ाई ना करे, मिठे बोले बोल।
हीरा मुख से कैसे कहे, लाख टका मेरो मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतन वाणी अति अनमोल।।

220 मोह फंद सब फसया, कोये ना सके निवार।
कोई जाग जन पारखी, सुरति तत्व विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन चेतन सुरति कोई ना पार।।

221 अष्ट सिद्धि नव निधि लौं, सब ही अंदर की भक्ति ले जान।
यह सब मोह और वासना, सुरति की महिमां 'वे नाम' सूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति मन पार ले जान।।

222 सब जग रात में सोया पड़ा, दिवस कहीं जागा नाहिं।
हीरा जन्म अनमोल प्यारो, ''सार नाम'' बिन कोई जागे नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे कोई पार नाहिं।।

223 साहिब 'वे नाम' दास बोलें विचारी, मोक्ष दात सत्यपुरूष सूं पाई।
पल में कटे फेरी चौरसी, जब ''वे नाम'' दात सुरति सूं ध्याई।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं साध पाई।।

224 विचारों मा मन तूफान प्यारो, ''वे नाम'' सुरति सुमिरन से मन छूट।
''वे नाम'' दात सुरति की औषधि, आशा तृष्णा को पड़ी चोट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुमिरन से मन मान छूटे।।

225 यह मन लौभी लालची, आत्म की गति महान।
सुरति को हर पल वश में किया, दुख देने की पकड़ी कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन वशिभूत सारा जहान।।

226 हंसात्मां की महिमां महान, सत्यपुरूष का अंश जान महान।
मन माया के वश में जान तूं, 'वे नाम' दात पाई बन महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात पा निज को पहचान।।

227 हंसात्मां बीज काल लोक से पारा, मूल स्त्रोत परम पुरूष महान।
माया काल और गति के वश में, बावन अक्षर ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बावन अक्षर सारा जहान निःअक्षर सुरति महान।।

228 सतलोक अमर है धामा, तहंवा पुरूष निःअक्षर नामा।
तीन लोक हंसा भरमाना, चौथे लोक है हंसा धामा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोया नर ना पाये निःअक्षर नामा।।

229 अंत काल आकाश भी, मूल स्त्रोत निःअक्षर पुरूष में जा समाये।
असंभूत परम पुरूष ही, निःअक्षर रूप में सब आन समायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर में परमपुरूष समाये।।

230 अनगिनत नाम संसार में, केवल धोखा जान।
''वे नाम'' सब्द जो गुप्त है, तां से पूर्ण मोक्ष ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं निजधाम ले जान।।

231 गुण सब साहिबन ''वे नाम'' सब्द में, मेरा काम नर जगाना।
दास देत पुकार साहिब हर पल, एक में एक हो जाना।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू साध सबै साहिबन समाना।।

232 सतयुग सत्य त्रेता तप, द्वापर पूजा आधार।
कलयुग ''वे नाम'' सब्द आधार, दात पाओ चलो उस पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात सुरति सूं भव पार।।

233 लाखों जन्म कटे ''वे नाम'' दात बिन, 'वे नाम' आन दियो छुड़ाये।
''वे नाम'' सब्द महिमां कोई जाने, मन छूटे पार हो जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे यम दूत सताये।।

234 सुरति सुमिरन में संग साथ साहिबन का, मन की टूटे तार।
'वे नाम' में ज्यूं ''वे नाम'' है रम रहा, स्वांस स्वांस में निरति तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांस स्वांस सब्द सुरति की धार।।

235 'वे नाम' में साहिबन वास प्यारो, सार सुरत सब्द में उनका वास।
मन माया का भाव बह गयो, मन का छूटा वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं साहिबन पास।।

236 आवे ना जावे मरे ना जन्मे, सोई निज सत्यपुरूष हमारा।
ना कोई जननी ना जन्मों ना कोई सृजनहारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, आत्म जन्म मरण सूं पारा।।

237 साध ना सिद्ध मुणि ना तपसी, ना कोई करत अचारा।
ना षट दर्शन चार वर्ण में, ना आश्रम व्यवहारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, सब हंसों का देश न्यारा।।

238 ना त्रिदेवा सोंह शक्ति, निराकार से पारा।
सब्द ''वे नाम'' अचल अविनाशी, क्षर अक्षर सूं न्यारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, मूल सब्द ''वे नाम'' की महिमां महान।।

239 ज्योति स्वरूप औंकार तहां ना, ना ही औईम (ऊँ) औंकारा।
धरति ना गगन पवन ना पानी, नां रवि चंद्र ना तारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, निज साहिबन देश न्यारा।।

240 बलिहारी 'वे नाम' साहिबन के, जिन मिलन की मुक्ति बनाई।
साहिबन शोभा केहि विधि करो, 'वे नाम' से कहि ना जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति में साहिबन समाई।।

241 बिना रवि के जंह उजियारी, सो निज देश हमारा।
बिना बादल तहं वर्षा होती, साहिबन देश न्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सतलोक आनंद पसारा।।

242 नर नारी वहां कछु नांहि, ठौर ठांव की बात कुछ नांहि।
जो पहुंचा जानेगा वे ही, कहन सुनन से न्यारा है।
यह भेद साहिब जी देते हैं, पुरूष अनामी का भेद दे जाते हैं।।

243 रूप सरूप वहां कछु नांहि, बिना प्रेम हंसा ओर ना जात।
क्षर अक्षर का खेल तहां ना, ना कागद पर अंक की बात।
यह भेद साहिब जी देते हैं, निःअक्षर सुरति धारा की बात।।

244 ता पर सत्यपुरूष का महल ईक न्यारा, संखन कौटि ता का बिस्तारा।
'वे नाम' वहां जा ध्याण लगाये, पल में पाये अमृत धारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, कोई प्यारा पावे सच्चा साहिबन प्यारा।।

245 दास 'वे नाम' कहैं समुझाई, प्यारो अंत बने कौन सहाई।
जावे अकेला संग ना कोई, अपनी करनी संग जाई।
यह भेद साहिब जी देते हैं, 'वे नाम' शरणागति से बात बन जाई।।

246 ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष ही जानो,'वे नाम' बिन जग झूठ ले जान।
औंकार शब्द से ''वे नाम'' सब्द न्यारा, जो पावे हंसा जान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति काल से मुक्ति जान।।
247 सोहं सत ज्योति निरंझन, ररंकार औंकार संसार भक्ति शब्द ले जान।
इन ते पार कोई एक ना प्यारो, फिर औंधे मूंह लटके ले जान।।

248 तीन लोक से आगे भेद 'वे नाम' सूं, पावे कोई खोजी प्यारा।
चौथे लोक के सत्यपुरूष प्यारे, पावे दात विश्वासी कोई प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं उतरो पारा।।

249 ''वे नाम'' सब्द जो पाये प्यारा, संग में पावे सत्यपुरूष न्यारा।
करे भक्ति सुरति की धारा, पूर्ण मोक्ष पावे वे प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द साहिबन सुरति धारा।।

250 गुरू जगत में बहुत प्यारो, शब्द मंत्र देत हर काना।
तरना जन्म लेना भव सागर में, सच्चा भेद ना जाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खर अक्षर भक्ति यमलोक ठिकाना।।

251 मन माया एको जानिये, जैसे रात और दिन।
जीव तो हर पल सोया पड़ा, रात हो या दिन।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, जीव फंसा तृष्णा में दिन रात।।

252 प्यारो इस जग की रीत अनूठी, तजे सच झूठ सूं प्रीति।
मन मुख सूं सिमरन करे, सुरति संग ना प्रीति।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, नर सुरति तज माया सूं करे प्रीति।।

253 यह भेद सतगुरू 'वे नाम' जी देते, सत्यलोक की महिमां महान।
अविगत नाम सत्यपुरूष को कहिये, जानें सतगुरू 'वे नाम' महान।
अविगत नाम बिन कोई पार ना पावे, हंसा लोक कहलाई।

254 जबहि ''वे नाम'' सब्द सुरति धरा, मन माया का छूटे साथ।
जैसे चिंगी आग की प्यारो, करे घास को खाक ईक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागो तो मन माया छूटे संग साथ।।

255 जो खोजी बने ''वे नाम'' सब्द का, धन्य साधक कहलाये।
कोई प्यारा पकड़े सब्द को, पार लगाये सब कोये।
यह भेद साहिब जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द महान कहाये।।

256 यही बड़ाई ''वे नाम'' सब्द की, जैसे सुरति तन की प्रीत।
बिना ''वे नाम'' सब्द कोई पार ना, 'वे नाम' सतगुरू सूं कर ले प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही ईक सांचा मीत।।

257 ''वे नाम'' सब्द स्वांस स्वांस में सुमिर ले प्यारे, पूर्ण मुक्ति की दात।
सुरति संग में जोड़िये प्यारो, यह सत्यपुरूष की दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही मोक्षदायी दात।।

258 नाम रत्न धन पाये के, सुरति में रखो संभाल।
भूल कर भी मत खोलना, यहि सच्ची मुक्ति की डाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करे साध सुरति संभाल।।

259 नाम जपत दरिद्री कौड़ी बला, खाने को नहीं दान।
कंचन कामिनी छोड़ दे प्यारे, जहां ना सतगुरू मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू जग धोखा जान।।

260 जैसे मन माया तन रमैं, तैसे 'वे नाम' सुरति रमाये।
तारा मण्डल भेद के प्यारे, निजघर अमरपुर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे काल में रह जाये।।

261 अमरलोक ईक अजर अमरदेस, हद अनहद के पार वह देस।
सुरति धार से चढ़ि कर देखो, बड़े भाग जो पावे देस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना पावे हंसा देस।।

262 अमरलोक सत्यलोक प्यारो, जहां रहता पुरूष विदेहि करतारा।
आदि जोत और काल भगवन, मत जान वहां इनका पसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक ईक्किस लोक से पारा।।

263 प्यारे हंसो वे निज देस हमारा, जहां रहता हमारा साहिब प्यारा।
सतगुरू संग जाय फिर ना आवे, ऐसा प्यारा देस हमारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्रेमी पाये अमरदेस न्यारा।।

264 सार सब्द निःअक्षर पाओ, गहे नाम संशय नाहिं।
बूझे महिमां 'वे नाम' सा संत, प्रेम आनंद बिन कुछ नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे संशय जाये नाहिं।।

265 आवागमण में सब जीव उलझे, स्थिर घर कैसे कोई पाये रे।
बिन ''वे नाम'' दात कोई पार ना पावै, फिरि फिरि जग में आवे रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति पार लगाये रे।।

266 सतलोक जाने के लिये, सहारा ''वे नाम'' सब्द का प्यारो।
अमृत फल का भोजन कर्ता, युगों युगों की भूख प्यास मिट जाती रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से तृष्णा मिट जाती रे।।

267 अमरलोक में प्यारो, सब ही अमर सुरति ले जान।
जो अमर पुरूष का दर्शन पाता, निर्मल हंसा रूप ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर लोक साहिबन सुरति लोक ले जान।।

268 'वे नाम' सतगुरू से, जो कोई प्यारा अमृत नाम है पाता।
अमृत नाम सुरति में लावे,प्रेम भाव पुरूष ही सुरति में पाता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं अमरदेस जीव पाता।।

269 आशा तृष्णा का संग छूट जावे, अंदर भयो प्रकाश सुरति महिमां।
अंदर सब्द निःसब्द की धारा, ज्ञानी सोई जिस अंदर सुरति महिमां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति साहिबन महिमां।।

270 जो निज घर पहुंचा प्यारा, सच्चा भेद जानेगा वेहि।
सतपुरूष सच्चा देस, कहन सुनन से न्यारा पावे गावे वेहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जाननहारा ही भेद बताही।।

271 अमरलोक में पुरूष विदेहि, निरंझन त्रिदेवी त्रिदेवों का संग ना जान।
वेद कितेब पार नहीं पावत, वहां कुछ भी मिटने वाला ना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर देस खर अक्षर से परे जान।।

272 परम पुरूष प्रकाश से, सब दीप प्रकाशित महान।
एक रोम प्रकाश प्यारो, करोड़ो सूर्यों सम्मान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परमपुरूष महां जोत स्वरूप ले जान।।

273 बिना ''वे नाम'' सब्द ज्ञान के, कोई जाने ना ज्ञान भक्ति का प्राण।
वीतराग सुरति सब्द में भक्ति है, बिन भक्ति मन मान अज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में पूर्ण ज्ञान विज्ञान।।

274 बिना ''वे नाम'' सब्द भक्ति करे, सो अंधा भटका जग जीव ले जान।
भक्ति तत्व समझा पकड़ा नाहिं, फिर कैसे पावे सच्चा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्द सब जग भटका जान।।

275 ''वे नाम'' ही सहज सब्द है, सार सब्द सुरत सब्द जान ले सोये।
सब सब्दों का बीज सब्द है, सब सुरति में चेतन होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन सारा जग सोये।।

276 तीन लोक प्रकृति पार 'वह सब्द', अगम अचिंत सुरति अपार।
अनुभव सहज सुरति में प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू चरणन आधार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणी सब्द की धार।।

277 एक अचम्भा जग में जानया, काल पुरूष कहते सच्चा नाम।
काल पुरूष मन रूप पसारा, सत्यपुरूष ''वे नाम'' सब्द ही सच्चा नाम।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष महिमां से हर नर अन्जान।।

278 सुरति निरति निरंतर ''सब्द'' में, सुरति चेतन हो जाये।
कुछ और दर्शावे नहीं, प्रेम भक्ति कहावे सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दरस प्रेमी ही पाये।।

279 काल मन माया रूप में प्यारो, नज़र ना आवें संग साथ।
''वे नाम'' सब्द सुरति में गही, मन माया संग छूट जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से अहम छुट जाये।।

280 परम पुरूष और औंकार के, मध्य में 'वे नाम' सतगुरू का धाम।
सब्द की डौर सुरति से देकर, कर जाये आत्म जगने का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ले चलें त्रिलोकि से निजधाम।।

281 सुरति सब्द स्वांसा सिमरते, खुले सुरत कमल सतगुरू द्वार।
पहुंचे संग जो जगमग जगमग हो रहा, सत्यलोक दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल सतगुरू रूप साहिबन सरकार।।

282 सब्द रत्न अनमोल है प्यारो, मत जाना इसे बे भूल।
पूर्ण सदगुरू सूं पाविये, सब्द बे मूल अनमोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द दात अनमोल।।

283 सतपुरूष 'वे नाम' दास को, दी दात अनमोल।
निजधाम सूं उतर कर, दिये दर्शन अनमोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' पायो सतपुरूष दात अनमोल।।

284 सदगुरू सत्यपुरूष तो एक हैं, निःअक्षर सब्द महान।
सब्द सुरति में डाल कर, पाओ मोक्ष का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर में साहिबन सतगुरू दोनों जान।।

285 सदगुरू उपदेश पर प्यारो, जो ना धरता ध्यान।
सो नर मन मायो सूं, कभी ना छूटा जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू वाणी सदा करो मान।।

286 अरबों साल सूं हंसा बिछड़े, अपने प्यारो प्रीतम सूं।
पल पल हैं देते साहिब जी, आ मिले अपने प्रीतम सूं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन मिलें चेतन सुरति सूं।।

287 तंत्र मंत्र माया जाल प्यारो, इन सूं लेन ना देन।
'सार नाम' दात पाये बिना, काग हंस मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द सुरति सूं हंसा रूप महान।।

288 खोजि होये ''वे नाम'' सब्द का, आये 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा पास।
अपनी होमा त्याग कर, पल में जा पहुंचे साहिबन पास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण सूं सतगुरू पास।।

289 ''वे नाम'' सब्द की दात बिन, कोई काल सूं ना बच पाये।
काल अंदर बाहिर फिरे, यह आंखें देख ना पायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे काल सताये।।

290 चिंता तो निःअक्षर नाम की प्यारो, और ना चितवे दास।
जो कछु चितवे 'वे नाम' बिन, सोई काल की फांस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोये नर को जगावे दास।।

291 सब्द पाये सुरति राखे, सो पहुंचे दरबार।
कहें 'वे नाम' तहां देखिये, बैठे पुरूष हमार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में दरसें साहिब सरकार।।

292 नाम जपत कुष्टि कौड़ी भला, चुन चुन गिरे जो चाम।
कंचन केरी देहि प्यारो, 'वे नाम' बिना झूठा संग चाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नामधारी को शत शत प्रणाम।।

293 ''वे नाम'' नाम सुमिरते, पापी तरें अनेक।
कहें 'वे नाम' ना छोड़िये, सार नाम की टेक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति काटे कर्मण प्रत्येक।।

294 ''वे नाम'' धन पाये के, सुरति बांध ना भूल।
नहीं आर नहीं पार वे, नहीं ग्राहक नहीं मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं चेतना अनमोल।।

295 जैसे माया मन रमे, वैसे ले सुरति में नाम।
तीन लोक के पार वे, जा पहुंचो निजघर निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं हंसा धाम।।

296 'वे नाम' जपत दरिद्री भला, टूटी मन मान की तान।
कंचन मंदिर जारी गया, जहां नहीं 'वे नाम' सब्द की तान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल पल जीवन बीते पाओ दात महान।।

297 धन रहे ना योवन रहे, रहे ना मन का मान।
'वे नाम' हर पल ''वे नाम'' सब्द में, टूटे कल और कल में जाने की तान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर जीव को हंसा जान।।

298 काम क्रौध मद लोभ में, हर पल कामी ले जान।
बिन पूर्ण सतगुरू सब्द के, हर कोई एक सा जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे जग सोया जान।।

299 मान बड़ाई खोये कर, खाक में मिलना जान।
''वे नाम'' दात सहायक बने, 'वे नाम' की कर पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे ना छूटे मन मान।।

300 सब को पूर्ण मान दे, निज को सेवक जान।
सेवक बन सब कुछ मिले, भृंग मत पर चलना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण सूं सेवक बने महान।।

301 मन माया की पहचान अवश्यक, आत्म को करते घात।
मन किया आत्म को वश में, ''वे नाम'' दात से बने बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं बनती बात।।

302 बिन तजे दुर्मत्ति संग, सुरति रंग ना लागै।
असंख युग परलै गये, कल और कल में सुरति मन संग लागै।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोया नर कल और कल में लागै।।

303 अमर लोक सच्चा देश हमारा, जहां परम हंसों का वासा।
सत्य महां सुन्न के पार प्यारो, श्वेत ही श्वेत में वासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा लोक श्वेत सुरति पसारा।।

304 जब चाहे पार ''वे नाम'' दात से, जब मन माया संग नाहिं।
मैं पापी बहु जन्म चुके, ''वे नाम'' संग 'वे नाम' के चूके नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन पार नाहिं।।

305 'वे नाम' सतगुरू कुमति काटि सुमति बढ़ावे, संग बल बुद्धि ज्ञान महान।
मोह लोभ की लहर उठे ना, सुरति में सब्द रमे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द महिमां महान।।

306 'वे नाम' का वासा वहां, जहां धरती पानी पवन आकाश नाहीं।
जहां धूप छांव चाँद सूर्य ना, ब्रह्मां विष्णु महेश नाहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' रमे साहिब सुरति माहिं।।

307 'वे नाम' सच्चा शूरमा, सार सुरत नाम का पाया बाण।
''वे नाम'' ही संग में प्यारे, जो पावे पावे पद निर्वाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात से देते पद निवार्ण।।

308 जब मन था तो सतगुरू नहीं, अब ''वे नाम'' में संग सतगुरू मन नाहिं।
प्रेम गली सत्य नाम की, ता में अब मन मान नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणी सत प्रेम धारा समाहिं।।

309 ''वे नाम'' सब्द पाई जागे प्यारा, संग में दास 'वे नाम'।
मन माया का संग गया, जा पहुंचे निजघर निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं पाओ हंसा धाम।।

310 संतों संतमत योगमत से आगे जानो, पांच शब्द से काल महान।
इसके आगे पुरूष पुरातन, 'वे नाम' सूं भेद ले जान।
सतलोक ज्ञान सभी जग को निज घर की कराता पहचान।।

311 ''वे नाम'' सब्द जहाज 'वे नाम' का, आप ही खेवन हार।
कोई प्यारा 'वे नाम' सेवा में प्यारो, पल में करे भव सागर पार।।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणागत सतलोक द्वार।।

312 जुगन जुगन हम भ्रमित फिरे, पाया ना ''वे नाम'' सब्द का दान।
सत्त प्रेम आनंद मार्ग में भूलेया, बिसरी याद ''वे नाम'' संग निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' संग पाओ निजधाम।।

313 सतलोक ईक पुरूष अपारा, ताकी महिमां ना जाने संसारा।
''वे नाम'' सब्द कोई भेद ना जाना, काल पुरूष तीन लोक पसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे नर जाये यम द्वारा।।

314 तीन लोक औंकार पसारा, ता में उरझि रहा संसारा।
जन्म जन्म से छूटि आस, जाने मृत्यु लोक पाताल अकास पसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक मृत्यु पसारा।।

315 सतलोक महल से 'वे नाम', प्रेम जोत ले आया।
मुझ विरहन को पूर्ण मोक्ष देने, मेरे सजन पठाया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सजना निजघर ले आया।।

316 रोम रोम में राग धारा जब, विरहा की आग है जगी ।
विरह तड़प सूं नाम पाया, जा से चेतना जौत जगी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विरह तड़प से प्रेम जौत जगी।।

317 काया रूपी किला जब जीत लो प्यारो, तीन लोक भी जीते जान।
धन स्त्री दोनों फंदे ले जान, ज्ञान विवेक से विकारों पर लगाम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं विवेक जगे महान।।

318 काम क्रौध लोभ मोह अहंकार, पांचों चोर ले जान।
पांच तत्वों की प्रकृतियां, संग तीन गुण जीव को बांधा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार ही सब बंधन रचियता जान।।

319 चौथे लोक अमरलोक में प्यारो, ऋषि मुणि सिद्ध साध ब्रह्म त्रिदेव भी नाहिं।
पीर पैगम्बर सत्तहर प्रकार की अनहद धुनें, बड़ी बड़ी शक्तियां भी नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक में परमहंस साहिबन सुरति समाहीं।।

320 सत्यरूपी इन्सान ने औंकार भगवन को, आप जैसा बनाया ले जान।
पांचवा तत्व जो आकाश तत्व प्यारो, काल पुरूष उस में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इक्किस लोक औंकार पसारा ले जान।।

321 आत्म का औंकार भगवन के प्यारो, किसी देस काल देवी देवों में वासा नाहीं।
चौरासी लाख कैद खानी में प्यारो, आत्म की कैद के बिन कुछ नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, त्रिलोकि आत्म भ्रमजाल बिन कुछ नाहिं।।

322 आत्म बिन पग चले सुने बिन काना, बिन आंख के देखती ले जान।
इसे कोई कैसे काटे डराये, निडर आत्म ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म अजर अमर ले जान।।

323 पुरूष सब का एक है प्यारो, हम हंसा सब नारी बहु अंग।
लाखों जन्मों से बिछड़े पड़े, 'वे नाम' ''वे नाम'' सब्द से जोड़े संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' पति आत्म पत्नि रूप में संग।।

324 बिना ''वे नाम'' सब्द नहीं भक्ति है, ''वे नाम'' सतपुरूष सुरति का प्राण।
वीतराग भक्ति की डौर प्यारो, बिना ''वे नाम'' दान के जागे अज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन 'वे नाम' सुरति नर अभिमानी जान।।

325 बिना ''वे नाम'' सब्द नर भक्ति करे, सो अंधा भटका नर जान।
भक्ति तत्व नाहिं भेद प्यारो, क्यों कर जावे निजघर निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे सब काल की भक्ति जान।।

326 महां सुन्न पार से ''वे नाम'' सब्द है आता, सार सुरत सब्द ''वे नाम'' ले जान।
सब सब्दों में सब्द है ''वे नाम'', सब्द जान सुरति का प्राण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मोक्ष आधार ले जान।।

327 अनुभव सहज सुरति ध्यान में, सतगुरू चरण आधार।
तीन लोक पार ''वे नाम'' सब्द, अगम अचिंत सुरति चेतन अपार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द परम चेतन सुरति भंडार।।

328 सुरति निरंतर ''वे नाम'' सब्द में, सुरति चेतन रह जाये।
और कुछ जग का भावे नहीं, सुरति कहावे सोय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरतिधारी ही जागा होये।।

329 काल हर ओर संग साथ प्यारो, जीव देख ना पाये।
कहैं ''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांस संग, 'वे नाम' संग निजघर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द काल सताये।।

330 एकाग्रता में सुरति वासा प्यारो, एकाग्रता टूटी सुरति संग गया जान।
निज की सुद्धि भूल जाओ प्यारो, एक पल के ध्यान की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल जो सुरत सब्द में सोहि जागा जान।।

331 ''वे नाम'' सब्द भृंग दात प्यारो, 'वे नाम' सब्द की डौर महान।
जो डौर को पकड़ लेता है, सतपुरूष का प्यारा अंश ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' संग सतपुरूष चेतना महान।।

332 भृगं सब्द 'वे नाम' का, तीन लोक से पार करता ले जान।
चुम्बक का काम ''वे नाम'' सब्द का, पूर्ण भक्ति का भेद ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द 'वे नाम' से जान।।

333 बिन ''वे नाम'' सब्द कोई पार ना, केता कोई करे उपाये।
जो दात पावे खोले नहीं, ता सूं निजघर जा समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति निजघर ले जाये।।

334 सतनाम सुख धाम निजधाम प्यारो, जहां सब परमहंसा हैं रहते।
माया मोह भरम सब कांटे, प्रेम प्रीति आनंद की हैं जोत जगाते।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतनाम से आनंद प्रेम साग़र प्रेमी समाते।।

335 भौजल ''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, कभी ना मिले किनारा।
सतगुरू मिले 'वे नाम' समावे, तभी पावे सांचा द्वारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द अमरप्रेम की धारा।।

336 बिन सदगुरू जग में कोई अपना नाहिं, जो निजघर जाने की राह बतावे।
कहत 'वे नाम' सुनो हंसा प्यारो, सुरति निरति मेल से आत्म हंसा हो जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग हंसा निजघर जावे।।

337 मन मान गया तो भला हुआ, आत्म सूं हंसा होना ले जान।
'वे नाम' सतगुरू दीन दयाल जी, आप की कृपा सूं मिला सब्द का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही देवें विदेह नाम का दान।।

338 'मूल नाम' सब्द जिन जिन पायो, जान मन माया सूं पार।
'वे नाम' जग अवतार लियो, करावे जीव साहिबन सब्द सूं पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द साहिबन आधार।।

339 चौरासी योनी का राजा मन है प्यारो, निराकार भगवन मन महान।
किसी को पार ना होने देते, तीन लोक में मन ही करता जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन ही निरंकार भगवन ले जान।।

340 सतगुरू बंदी छोड़ कहावें, ''वे नाम'' सब्द सूं ले चलें पार।
ज्ञान ध्यान जानत नहीं, सुरति सब्द करावे भव पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' जहाज चढ़ो तो उतरो पार।।

341 नींद निशानी मौत की, क्या राजा क्या रंक।
निरंकार शब्द को त्याग कर, जान ''वे नाम'' सब्द ही सच्चा अंक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार सब्द से मृत्यु 'वे नाम' से परमानंद।।

342 जब भक्ति दान बिन कुछ चाह नहीं, सतगुरू सुरति चेतन भाव।
फिर और कुछ नहीं चाहिये, चेतन सुरति सूं सुरति चेतन भाव।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति जगावे प्रेम स्वभाव।।

343 सतपुरूष मोहि समझाया, जीव जगाओ सब्द चिताई।
गुप्त वस्तु मुझे सार सब्द है दीन्ही, नाम विदेह सूं लो जगाई।
यह भेद दिया 'वे नाम' प्यारे ने, सतलोक सतपुरूष सुरति पसार मेरे भाई।।

344 जो साधक विश्वास जगाये, सतगुरू चरणन में ध्यान।
उसके संग ईक्कतर वंश मैं तारूं, नाम की डौरी पकड़ो महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संगत महान ले जान।।

345 मैं बार बार जतलाता हूं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां गाता हूं।
चार लोक की दात को पा कर, दास ही बना रहता हूं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल साहिब में रमा रहता हूं।।

346 ज्ञान कथै अरू जोति दृढ़ावे, ज्योति स्वरूप मर्म नहीं पावै।
जोति स्वरूप निरंझन राई, जिन सकल सृष्टि भरमाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक काल का जाल मेरे भाई।।

347 ''वे नाम'' सब्द की मर्म ना जानी, झूठा ज्ञान सबहीं लिपटाना।
सतपुरूष सतगुरू सो पावे, 'वे नाम' में जाये समावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष महिमां महान कहावे।।

348 पुरूष शक्ति जब सुरति समावे, काल ना सके भ्रमाई।
मुक्त सब्द कोई विरला जाने, पूर्ण समर्पण सूं सतगुरू भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सब्द की महिमां जानो मेरे भाई।।

349 सार नाम तीन लोक से न्यारा, चौथे लोक में वास।
यह सतपुरूष की सुरति प्यारो, अमरलोक सतपुरूष सुरति वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम में ही साहिबन वास।।

क आत्म बिन पग़ चलती, सुनती बिन काना जान।
कर बिन सब कार्य है करती, आंख बिन वेखना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म सुरति सूं जग चेतन जान।।

350 आत्म बिन पग़ चले सुने बिन काना, सुरति सूं करती सब काम ले जान।
ये जग आत्म सुरति सूं चेतन, बिन आत्म सब निर्जीव ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सूं त्रिलोकि चलायेमान तूं जान।।

351 ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष सतलोक जानिये, सतगुरू वासा ले जान।
जे पाना सतपुरूष को प्यारे, सतगुरू सुरति वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति में साहिबन वास।।

352 पारस करता कुछ काम प्यारो, सतगुरू काम महान।
पारस लोहा कंचन करे, सतगुरू दें पूर्ण मोक्ष का दान।
तीन लोक में प्यारो, सतगुरू आत्म को दे हंसा रूप महान।।

353 तीन लोक में 'वे नाम' बिन, किसी पास नहीं पूर्ण मोक्ष दात महान।
सतपुरूष चेतन सुरति वासा 'वे नाम' में, ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सतपुरूष महान।।

354 कलि में नर आंख नाक कान प्यारो, मुख सूं लेत स्वाद।
दुख के जो अंग हैं प्यारे, उन्हीं सूं लेता स्वाद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्ञान कर्म ईन्द्रियों दुख स्वाद।।

355 मन बुद्धि चित अहंकार द्वार पिण्ड के, अंधकार में जीव बेहाल।
जो नहीं करना सो करे, जो करे उससे बेहाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग सब नर बेहाल।।

356 ''वे नाम'' सब्द दात जब आन समावे, काल ना सके भ्रमाई।
मुक्त सब्द कोई विरला जाने, पूर्ण कर्म सूं सतगुरू पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मोक्ष दात है भाई।।

357 सतगुरू 'वे नाम' तीन लोक से न्यारे, अमर सजीव आदि और नित्य।
आदि नाम ''वे नाम'' कहाये, जा सूं रचना अमरलोक जो नित्य।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' आदि नाम अजर अमर नित्य।।

358 ''वे नाम'' सूं अमरलोक है प्यारो, इसी नाम सूं आत्म हंसा जान।
जो पकड़े वे नाम की डौरी, पल में हंसा रूप ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द रूपांतरण करे ले जान।।

359 'वे नाम' लाये साहिबन संदेस, नाम दात सूं चलो अमरपुर देस।
सार सुरत नाम 'वे नाम' पासा, पाओ दात चलो निजदेस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब धारें सतगुरू भेस।।

360 योग यज्ञ तप सब काल पसारा, और दान पुण्य सब काल व्यवहारा।
''वे नाम' सब्द सूं आत्म हंसा, मन मान नाम दात सूं बाहिरा।
यह भेद सतगुरू देते हैं, 'वे नाम' की महिमां महान।।

361 'वे नाम' सच्ची औषधि, सुरति में हर गाह।
औषधि सुरति स्वांसा संग हर पल, सुश्मिना चेतन कर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आदि नाम की महिमां जान।।

362 पुरूष नाम गहो मेरे भाई, ताते हंसा निज लोक सिधाई।
आदि नाम है जीव आत्म रखवारा, सतगुरू के संग निजघर जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आदि नाम महिमां संतन गाई।।

363 'आदि नाम' जो ध्यान लगाई, तब हंसा सतलोक को पाई।
ऐसा लोक साहिबन का प्यारो, जहां सुख ही सुख सदा रहाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर महिमां सतगुरू गाई।।

364 निजलोक में जब कोई जावे प्यारो, भव सागर सूं हो गयो पार।
सार सुरति 'वे नाम' साधक को देवें, हुआ अगम का दरया पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू तारें साध भव पार।।

365 मैं मूर्ख प्रतीती ना जानी, सतगुरू को ना सकी रजा।
अब कौन विधि दर्शन पाऊं, दर्शन बिन दूं प्राण गवा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सूं दर्शन ले पा।।

366 दासी बन चरणन निहारों, प्रेम सुरति की तृष्णा मिट जावे।
चरण टेकि प्रभु विनवों, 'वे नाम' दर्शन में साहिबन को पा जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति में साहिब समावें।।

367 अज्ञान आवरण आत्म पर डाल, आत्म जाने तन निज रूप।
निरति प्राणों के रूप में, सब तन में समा गई आत्म रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन संग हंसा आत्म रूप।।

368 ईन्द्रिय द्वार झरोखा नाना, तंह जान देवों का थाना।
ईन्द्रिय ज्ञान सुख ना सुहाई, विषय भौग ही जाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, देवी देव कियो काया में ठिकाना।।

369 मन का कहना मान कर, आत्म तन को जाना निज रूप।
आत्म को प्रलोभन दिया, अति आनंद बसे तन रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार काया बसयो मन रूप।।

370 मन ने लूटा हर जीव को, ना कछु लेन ना देन प्यारो।
मन का खेल कोई देखि ना पाये, नाना नाच नचाये प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन की करो पहचान प्यारो।।

371 हंसा तूं तो सतपुरूष प्यारा, अटपट तेरी चाल अपारा।
काल के वश तूं पड़ गया, ''वे नाम'' दात करावे मन से पारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसात्मां साहिबन अंश प्यारा।।

372 मन को खेल खेलने दे, तूं निज की कर पहचान।
'वे नाम' से ''वे नाम'' दात पा कर, सुरति को चेतन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां महान।।

373 माया रूपी रसरी सूं, आत्म बांधी गई महान।
सतगुरू पल में आन छुड़ावे, जब चलावें ''वे नाम'' सब्द का बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द बाण महान।।

374 बिना शीष का मृग है प्यारो, चहुं दिशा चरणे जाये। (मन का भेद)
भाव चारों ओर से फैंके, ता से आत्म जाग ना पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग जग भ्रमाये।।

375 सिद्ध साध योगी यति प्यारो, मन को जान ना पाये ईक रति।
जाये निरंझन माहिं समाये, निजघर का भेद जान ना पाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग जग जीव भरमाती।।

376 जब ही ''वे नाम'' सब्द सुरति धरा, छूटा मन माया का साथ।
जैसे चिंगी आग की प्यारो, जलावे कर्मण सुखी घास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' चिंगी जलावे सब कर्मण घास।।

377 एको 'वे नाम' को सुमरिये, सुरति में रहो समाये।
काल शब्द काहे सुमरिये, कुछ भी काम ना आये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द यमदूत सताये।।

378 सुरति निरति नाम संग, जा पहुंचे सच्चे देश।
जा की सुरति लगे जहां, पल में पहुंचे उसी देश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुश्मिना सम तो चेतन सुरति प्रवेश।।

379 सब के अंदर लाल भंडार हैं, कोई नहीं कंगाल।
जो कोई जाने इस भेद को, उस से छूटे काल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंतःकरण भक्ति करे मालामाल।।

380 या घट भीतर बाग बगीचे, या ही में 'वे नाम' सींचन द्वारा प्यारो।
या ही में मन वासा प्यारो, ''वे नाम'' दात से जाये हारा प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति मन भगाये प्यारो।।

381 इस घट भीतर अनहद गरजे, बरसे अमृत धारा।
इसी घट भीतर सात समुंद्र सुरति द्वारा, इसी में हंसा प्यारा।
यह भेद साहिब जी देते हैं, अंदर बाहिर एको प्यारा।।

382 मन की तरंग सब्द सूं मारो, चेतन सुरति की तान।
आदत बुरी संग गया प्यारो, तो हो गया भजन महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सतगुणों की ख़ान।।

383 आया तूं कहां से प्यारे, और जाना तुझे कहां।
इतना सा बस विचार ले, जे जाना तुझे साहिबन के जहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' ले चलें साहिबन के यहां।।

384 हर तन विषय वासना सूं प्यारे, भरा पड़ा ले जान।
अमृत सब्द ''वे नाम'' सतगुरू सूं, आत्म हंसा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग फंसा आत्म अन्जान।।

385 जिन के हित परलोक बिगाड़ा, अंत काल कोई नाहिं साथ।
हर पल स्वांसा संग भजन चले, सब्द सुरति निरति संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति में साहिबन साथ।।

386 सतगुरू बड़े औंकार सूं प्यारो, सुरति सूं कर विचार।
हरि सुमिरे तो भव है, सतगुरू दात सुमिरन सूं पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द मन माया पार।।

387 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, पूर्ण मोक्ष का भेद कुछ नाहिं।
सतगुरू गुरू में भेद को जानो प्यारो, बिन जाने दीक्षा नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अभ्यास सूं प्रकटे अविश्वास नाहिं।।

388 सतगुरू के लक्ष्ण जान लो प्यारो, सुनो धीर सुरति संग ध्यान।
प्रथम वेद शस्त्र का ज्ञान, दूजा सब्द निःअक्षर ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं पा लो निःअक्षर ज्ञान।।

389 सतगुरू साधक सतपुरूष, सब्द सुरति स्वांस से भक्ति विवेक।
तीनों संग त्रिधारा बने, आगे गंगा एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू सूं करो तुम हेत।।

390 जा गुरू पास सच्ची दात नहीं, चला क्या पा जाये।
दोनों अंधे समान प्यारो, (दोनों का) जीवन वृथा जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जानो गुरू सतगुरू में भेद।।

391 जिस का गुरू हो गृहि प्यारो, चेला क्या कुछ पाये।
मन माया संग छूटा नाहिं, मोक्ष कहां से पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ब्रह्मचर्य हो ''वे नाम'' सब्द सूं निजघर जाये।।

392 ''वे नाम'' सब्द बिन आत्मनिष्ट कहां, बिन साहिबन सब्द महान।
सार सब्द से शंकाओं का निराकरण करे, सार नाम की महिमां जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सतपुरूष वासा जान।।

393 सत्यपुरूष मोह आन जगायो, सुरत सार सब्द की महिमां समझाई।
सुरति में गुप्त वस्तु 'वे नाम' ने पाई, दर्श महान सत्यपुरूष पल ईक देई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम विदेह की महिमां पाई।।

394 जो साधक विश्वास जगाये, सतगुरू चरणन में ध्यान।
इस के सब वंश में तारों, नाम की डौरी पर रख ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विश्वास की डौरी जगाये ध्यान।।

395 अमरलोक में जो कोई जावे, भव सागर सूं जानो पार।
सार सुरत सब्द 'वे नाम' से साधक को, अग़म का दरया जानो पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अग़म का दरिया 'वे नाम' सूं पार।।

396 सतगुरू महिमां श्रेष्ठ है प्यारो, सतनाम सतगुणी ज्ञान ले जान।
सतगुरू सूं सत्य सुरति भये, दे अग़म का भेद महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू 'वे नाम' महिमां महान।।

397 'वे नाम' सूं तन मन का संग छूटा, मेरा होने का भाव छूटा ले जान।
सेवा भाव साधक में आता, निज का मिट जाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण सेवा से मिटे मन मान।।

398 सत्य नाम की दात जो पावे, तरैं उत्तम मध्यम और नीच।
जैसी मति तैसी गति, सुनी 'वे नाम' की लेवे सीख।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जात धर्म तरे हर जीव।।

399 कोई रजो गुण कोई तमों गुण, कोई सत्य गुण रहा बीज।
तय तीनों कर्म बंधन में बांधते, ''वे नाम'' सब्द लो सच्चा बीज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहज मार्ग सूं चलो बन सुरति बीज।

400 'वे नाम' सुमिर ले अमृत बाणी, छोड़ चतुराई मूर्ख प्राणी।
वेद क्तेब कुछ काम ना आवे, सतगुरू महिमां महान जान ले प्राणी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां साध ही जानी।।

401 जैसे कर्म जीव जग करता, तेसो ही तन पात।
जैसी माली कलम लगावे, वैसे ही फल फूल आ जात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द के फल करामात।।

402 भव सागर अति की वर्षा ना करो, अति में दुख महान।
मन औंकार पल पल धोखा देत जीव को, फिर फिर करता घात ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन 'वे नाम' बिन मत कोई अपना जान।।

403 भांति भांति के जीव प्यारो, चौरासी लाख योनि में करते वास।
विलग विलग कर जीवन काटें, यही तो औंकार के पास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, हम सब को सतपुरूष के जाना पास।।

क धन्य साहिब जी परम संत ज्ञानी, अमर भेद भाषो निज बाणी।
लाखों के संशय मिटे, जब साहिब की महिमां जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति संशय भ्रम मिटानी।।

404 ''वे नाम'' सब्द नौका जग आई, खेवट 'वे नाम' जी महान।
पुरूष सब्द सुमिरो सुरति सूं, भव जल पार उतारे अडोल ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द बाण महान।।

405 खस खस के दाने में, सत्यपुरूष का वासा जान।
सुरति एक तरंग समान है, वहीं से रस्ता जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष का हर जीव में वासा जान।।

घ धर्म राई दरि कागद फौर, नानक जी देई समझाई।
सतगुरू बात कोई ना काटे, जो देवे पा जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू की जान बड़ाई।।

406 समा रोशनी कौन छाने, 'वे नाम' से बात बन जाई।
सत्यपुरूष की महिमां 'वे नाम' के माहिं, विश्वास ही पार लगाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष समाई।।

407 आरम्भ भक्ति में अनहद जानो, ''वे नाम'' दात की महिमां महान।
अनहद निरंझन की प्रकाष्ठता, पूर्ण मोक्ष सूं नहीं कोई काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द मान अभिमान।।

408 सत्यपुरूष 'वे नाम' जग जानिये, सतगुरू पूर्ण जग के जान।
प्यारो जग वासियो, तंह 'वे नाम' का बास ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' से सत्यपुरूष की महिमां ले जान।।

409 जो खोजी सच्ची दात का प्यारो, उसकी खोज रंग लाये मेरे भाई।
वे सतगुरू संदेश पाये निज द्वार पर, मेल पल में जान मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, श्रद्धा विश्वास से पार मेरे भाई।।

410 खोजी होये पल में मिल जाऊं, जब सुरति में विश्वास।
कहें 'वे नाम' सुनो मेरे प्यारो, प्राणों का सब स्वासों के स्वांसा में वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, स्वांसा की महिमां महान।।

411 कलियुग में मार्ग वही, जैसा मन का भाव।
ज्ञानी वही जो कामी क्रौधी, प्रचार प्रदर्शन बिन अनुभव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कल युग में ''वे नाम'' दात ना पूछे जीव।।

412 संगत कीजै पूर्ण संतों की, कभी ना निष्फल होये।
लोहा पारस परस ते, पल में कंचन होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' संग कभी ना निष्फल जाये।।

413 ईक नर संतन की सेवा में, ईक हर पल संतन निंदा में भाई।
संत तो पारस रूप प्यारो, दोनों की देखें हंसा रूप में भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, पारस संतन भेद ना कोई।।

414 संत में भेद भाव पक्षापात प्यारो, राग द्वैष में पड़ते मत जान।
उन संग सजन हो या दुर्जन, पवित्र श्रेष्ठ और गुणगान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, संतों की पारस सुरति महिमां महान।।

415 सतगुरू भूखा भाव का प्यारो, लेन आदि का भूखा नाहिं।
मन माया का भूखा सोया जीव है, दुख सुख में भेद नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति बिन भेद नाहिं।।

416 जैसी चाल संसार की प्यारो, वैसी 'वे नाम' की मत जान।
संसार काल जाल के वश पड़ा, 'वे नाम' बिन प्रेम प्रीति कुछ ना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ढोंग मोह माया टंगा संसार जान।।

417 बहता पानी निर्मल प्यारो, बंद गन्दा हो जाये।
सतगुरू रमता सत्संग में भला प्यारो, रिश्ता नाता खो जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, एक पाया सब पाया होये।।

418 बंद पानी निर्मला प्यारो, जी नीला गहरा होये।
सतर्गुरू जन बैठे सत्संग करते भले, जो संग आये पार हो जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्संग में आने की महिमां जाने कोये।।

419 साधना साधने के लिये बैठना भला, आत्म कल्याण ध्यान में संलग्न होये।
दूसरों को 'वे नाम' दात से, पार लगने में संलग्न होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू 'वे नाम' का चलना बैठना महान होये।।

420 जब 'वे नाम' जी संगत में प्यारो, सुरति बास हर और प्यारो।
जे कोई पारस सुरति पकड़े नहीं, तो भी बास सुबास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, संतन की सुरति महान।।

421 सत्य नंगा कड़वा सहनता से बाहिरा, कैसे सुने अंधा बहरा संसार।
अंधविश्वास रूढ़िता कट्टरता, सत्य की कैसे पकड़े तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' सब्द दुख भण्डार।।

422 प्यारो मन गुप्त रूप में संग सभी के, आत्म गई भरमाई।
बिन ''वे नाम'' दात बात बने नहीं, मन माया संग सहाई।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, कामी नर सतगुरू शरणी ना आ पाई।।

423 तेरे अंदर सांचा निरालम्भ राम है, पर देखा ना जाये।
वा को तब ही देखिये प्यारो, जब सार सब्द में सुरति समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अंदर के बादल ले मिटाये।।

424 सांच को जग में कौ सुने प्यारो, जहां सांच की बात कोई ना करि जाये।
जग की हां में हां भरो, फूला फूला घर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ऊँच नीच में भेद ना पाये।।

425 सब वन तो चंदन नहीं प्यारो, शेरों के भी दल नाहिं।
सब सागर मोती नहीं प्यारो, यों सतगुरू जग माहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू महिमां जाग माहिं।।

426 मान बड़ाई जगत में, मन माया से लपटा जान।
प्रेम प्यास जागी नहीं, सोये नर की पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मान बड़ाई माया का खेल ले जान।।

427 प्रेम प्यास जागी साहिबन सूं मेला, निजघर निजधाम सुरति मीठी आस।
हरि डौर अंतरा मिटा, जागी सुरति की प्यास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतपुरूष कृपा से सच्चा साथ।।

428 मोह फंद सब फंदिया, कोये ना सके निवार।
सच्चा 'वे नाम' पारखी, पल में कराता भव पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द ही कराता भव पार।।

429 मथुरा काशी द्वारिका हरि द्वार, कर मन मुख से कुछ ना आवे हाथ।
'वे नाम' सब्द की दात बिना, काल का ना छूटे साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' बिना कुछ ना आवे हाथ।।

430 सतपुरूष कृपा बिन 'वे नाम' कहां, जीव कैसे जाग जान।
सतगुरू कृपा बिन ज्ञान कैसा, ''वे नाम'' ज्ञान बिन पूर्ण मोक्ष कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, भृंग मत्त बिन मोक्ष कहां।।

431 कथनी थोथी जगत में, करनी उत्तम सार।
कहें 'वे नाम' करनी भली, ता से तीन लोक भव जाल से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, करनी से उतरो भव जल पार।।

432 चाहै शून्य महां शून्य जा, कर्मण डौर संग साथ का दण्ड।
कहें 'वे नाम' मिटे नहीं, देह धरे का दण्ड।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' सब्द सूं कटे देह का दण्ड।।

433 जल में खिले फूल कमल का, चंदा भटके आकास।
जा के अंदर जो बसै, सो ताहि के पास आकास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से साहिबन पास।।

434 जहां प्रेम तहं मतभेद नहीं, तहां ना बुद्धि व्यवहार।
प्रेम मगन जब सुरति भयो, कौन देखे तिथी वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, इसी पल में रहना लगवे पार।।

435 अधिक स्नेहि सत्यपुरूष प्यारो, दूजा हंसा स्नेह।
जिन पाया 'वे नाम' सब्द, उनका छूटा भय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति सब्द दात सूं जीवत छूटे देह।।

436 प्रेम तो साहिबन डौर है प्यारो, नाप तोल में आवे ना।
पूछत विलम्भ ना कीजिये, सुरति जागे बिन जाने ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन प्रेम छेः तन छूटे ना।।

437 सत्य सब्द सो उनमुनि मुद्रा, सोई आकाश स्नेही।
ता में झिलमिल जोत दिखाये, जाना जनक विदेहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, उनमुनि पांचवी मुद्रा ले जान।।

438 ररंकार खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना।
ब्रह्मां विष्णु महेश्वर देवा, रंरकार को जाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, दसवें द्वार की महिमां महान।।

439 सोई सदगुरू मोहिं भावै, जो नयनन अलख लखावै।
डौलत बौलत बिसरे ना, सब्द सुरति सूं आन जगावै।
द्वार ना रूंधे पवन ना रोके, नांहि अनहद अरू झावै।।

440 सुश्मिना ध्यान का माध्यम प्यारो, लक्ष्य मत इस को तुम जानो।
जब ईंगला विनशे तब पिंगला भी विनशे, विनशे सुश्मिना नाड़ी।
उनमुनि तारी टूट जब जवें, तब कहां लागेगी ताड़ी।।

441 जैसे कस्तुरी मृग कुण्डल बसे, भेद ना जाने कोये।
हर घट मेरा साहिब बसे, नर सब जानत नांहि।
प्यारो मैं के तजते इस पल रहते, संग में जाने सोही।।

442 यह संसार माया जाल प्यारो, आंख खुलते ही खो जावे।
यह संसार मन के कारण, मन छूटे खो जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' दात से बात बन जावे।।

443 मन सुरति संसार में प्यारो, ताते पड़ गया नर धूर।
''वे नाम'' सब्द से सुरति स्थिर जब, आठों पहर हुजूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सार सुरति का सारा खेल।।

444 मन माया ने बांधिया, सोया पड़ा यह जीव।
जीव जागना चाहता नहीं, फिर क्या कर सकता पीव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' दात में देख ले पीव।।

445 जीप भ्रम जाल में पड़ा प्यारो, निज की ना करे पहचान।
झूठी भक्ति के जाल में फंसा पड़ा, अपने अंदर की नहीं करता पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अपनी आत्म का रूप ले जान।।

446 जैसे नट नटवर की दुख दई, तैसे मन आत्म को दुख देई।
बिन पूर्ण सदगुरू के जग में, दुख ना छूटे मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' एक भी सुखी नहीं मेरे भाई।।

447 बिना 'वे नाम' नर कैसे पावे, निजघर सच्चा ठिकाना।
खोजत मन अनुसार प्यारे, हर पल फिरत भुलाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' दात सूं मिले ठिकाना।।

448 सभी की रक्षा धर्म हमारा, गये की महिमां महान।
जिस का दूध जीव है पिता, उसे जान मां समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, दूध की महिमां जान।।

449 हर नर जगत में भटक गया है, 'वे नाम' भेद देहि ताही समझाना।
हर जीव की गठरी लाल है, 'वे नाम' की बात ले मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, लालों की महिमां पहचान।।

450 जहां प्रेम तहं नेम नहीं, तहां ना बुद्धि व्यवहार।
हर पल सुरति 'वे नाम' में प्यारो, चेतन सुरति से सुरति व्यवहार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, हर हंसा जग में आ भूल गया सुरति व्यवहार।।

'वे नाम' कहें

मांगन मरण समान है, मत मांगो कोई भीख।
मांगन ते मरना भला, यही संतन की सीख।।

कोई आवे तो बेटा मांगे – कुछ मेहर कर दीजे जी
कोई आवे रोग का मारा – हम पर कृपा कीजे जी
कोई आवे तो दौलत मांगे – रूपया भेंट ले लीजे जी
सार नाम का कोई ग्राहक ना – प्यारो उसमें रह लीजे जी
सब जग अंधा है प्यारो – अंधों का क्या कीजे जी
कृष्ण से कृष्ण मांग कर – अर्जुन दुर्योधन का काम किया –
वसुदेव दुर्योधन से बोले – पहला मौका तुझको दिया
नारायणी सेना की चाह की – उसी में उसकी रूची जी
सारी सेना पा दुर्योधन – अभिमान की छाती फूली जी
अर्जुन स्वंय से बात करे – कैसी भूल कर दी जी
अर्जुन बोला आप का संग जो – कौन लड़ने को आवे जी
वसुदेव को देख कौरव सेना – सारा आत्म बल खो जावे जी

'वे नाम' कहें :–

451 तन में नांहि मन में नांहि नयन में नांहि, वे बसें सुरति के देश।
मैं क्युं पत्तियां लिखूं, जो हर पल रहते स्वांसों के देश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर स्वांस उठत ता के देश।।

452 तन मन घट की जाने, हर स्वांस की चोरी।
चतन सुरति से क्या छिपायें, जिस से सुरति की जोड़ी है डौरी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर स्वांस संग उस की डौरी।।

453 हर घट में सुरति रूप, हर स्वांस में निरति रूप में प्यारो।
वे पल पल परख रहा आत्म को, परखे परखन हारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं जानो परखन हारा।।

454 मैं हर पल तुझे देखूं, तूं हर पल देखे उस ओर।
तेरी सुरति मन माया में, मेरी सुरति तेरी ओर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, उसे जान 'वे नाम' सूं जो है हर स्वांस की डौर।।

455 बिन 'वे नाम' भूल ना छूटे नां मिले ठिकाना, काल पकड़ी पकड़ी भरमावे।
तीन जुगन में नहीं निस्तारा, ''वे नाम'' सब्द पल में पार लगावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन पूर्ण संत कोई पार ना पावे।।

456 जो कोई संतन वाणी बूझे, बने काम नर तन सुरति से सूझे।
कलयुग संतन युग कहलाता, जो पावे दात सुरति सब्द निजघर भूझे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कलयुग संत देवें सत्य लोक की भूझे।।

457 तीनों युग में नर तप जोग विचारे, मन हृदय से ध्यान लगावे प्राणी।
बिन सतगुरू ना मिले सच्चा ठिकाना, कर्म अनुसार तन पावे प्राणी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कलयुग में सतगुरू महिमां जान प्राणी।।

458 अमृत सागर पास में प्यारो, देखे प्यास ना मिट पाये।
पिये बिन कौन बतावे, भेद अमृत जो अमृत पाया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कलयुग में प्राणी पूर्ण मोक्ष की दात को पाये।।

459 लोहा कंचन होय प्यारो, जब पारस की संगत करे।
कल्प वृक्ष को क्या देखे, खाये बिन भूख कैसे हरे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन कैसे निजघर रे।।

460 ''वे नाम'' सा ज्ञान जब उपझे जग में, होत प्राणी कल्याण।
प्रकट सत्यपुरूष स्वरूप है, एक नाम विश्वास कल्याण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कलयुग की महिमां महान।।

क सब धरति कागज़ करूं, लेखनी सब वनराय।
सात समुंद्र की मसि करूं, सतगुरू गुण लिखा ना जाये।
यह भेद कबीर साहिब जी देते हैं, सतगुरू की महिमां पहचान।।

461 सोई रूप निःतत्व है, ''वे नाम'' ताहि का सार।
देह नाम तो सब जपें, ''वे नाम'' सब्द सब सारों का सार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार सब्द –सुरत सब्द'' की महिमां अपार।।

क सतगुरू को कीजे दण्डवत, कौटि कौटि करो प्रणाम।
कीट ना जानें भृंग को, सतगुरू कर ले आप समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां महान।।

ख भृंगी सब्द ही जेहि पासा, सो ही सच्चा सतगुरू धर्म दासा।
पल पल सुरति उन में डालो, हर कार्य करो बन दासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल सतगुरू साथ बन दासा।।

462 तन मन हाथ कुछ है नाहिं, कैसे छोड़े सुरति साथ।
सुरति बैचारी क्या करे, जे ''वे नाम'' सब्द अंकुश नहीं हाथ।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द छुड़ावे मन माया साथ।।

463 सांचे का कोई ग्राहक नहीं प्यारो, झूठे जगत हर एक पतीजे।
बिन ''वे नाम'' सब्द सब अंधे, कैसे भव पार उसे कीजे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं भव पार कीजे।।

464 सतगुरू से सतगुरू ही मांग लो प्यारो,
उन संग पूर्ण मोक्ष दात, हर पल संग साथ ले जान प्यारे।
सुरति में सदगुरू, हर पल सुरति धार।।

465 चौथे लोक की संपदा, सो सतगुरू दीनी सुरति दान।
''वे नाम'' सब्द दात जब संग में, मिटे मन माया का मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विदेह सब्द मिटावे मान अभिमान।।

466 निगुण जाल में फंसा संसार, मन माया का खेल ले जान।
'वे नाम' सेवक नर नार के, जग आये देन पूर्ण मोक्ष का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मानना या ना मानना तूं जान।।

467 पूर्ण सतगुरू मिले बिना, छूटे ना काल का साथ।
आशा तृष्णा सब मिटें, जब ''वे नाम'' सब्द संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विश्वास का संग जब साथ।।

468 ''वे नाम'' सब्द से मेरे प्यारो, मृत्यु के सब फंदे कटे ले जान।
निःअक्षर दान में सत्यपुरूष सुरति, सब दुखों का नाश ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं सुरति महान।।

469 काल कंबली रंग ना चड़े, कौटन करे उपाये।
''वे नाम'' सब्द मन कचरा ना मिटे, लाख जे करो उपाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागे बात बन जाये।।

470 जब मांगे मिलता कहां, सुरति में जा देख खड़ा दास बन साथ।
वे तो प्रेम पुजारी सदा, सब कुछ सतगुरू हाथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, उस को पता सुरति जब साथ।।

471 दुख सुख का भेद जिसे, काल के घर का जान।
जो सुरति की धारा में बहता, 'वे नाम' हर पल संग ले जान।
जिस हाल सतगुरू राखे, उसी हाल में रहना महान।।

472 'वे नाम' सदगुरू दर्शन कर कर जीवां, वासा चरणन में ही।
इन बिन भव निधि तरई ना कोई, रहो सुरति में ही।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं सुरति जागई।।

473 सत्य लोक का जीवड़ा, पड़ा काल बस आई।
''वे नाम'' सब्द की दात को पा ले, सब काल जाल कटि जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द पल में पार लगाई।।

474 नाना मत पंथ जगत में, हर एक हरि गुण गावे।
'वे नाम' सतगुरू सब का भेद बता कर, सत्यपुर अमरलोक का गुण गावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू अमरलोक भेद बतावे।।

475 जल के सूखे कमल कुम्हलान प्यारो, बिन जल कहां समाना।
जो कोई प्यारा सतगुरू पावे, पल में पावे ठौर ठिकाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति का परम सुरति में ठिकाना।।

476 सच्ची डौरी सुरति निरति से प्यारो, जोड़ के रखना काम महान।
निरति अंगों की चेतन करती प्यारो, सुरति करे सभी काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति एक होत हंसा महान।।

477 हिन्दु माने ईश्वर है, आत्मां अमर तूं जान।
जैसे कर्म करेगा बंदे, वैसा ही फल जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्मों का फल दुख ही जान।।

478 मन आत्म को बिन रसरी बांध्या, जान मन का खेल महान।
सतगुरू 'वे नाम' से दात को पा ले, पल में छूटे लगाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां जान।।

479 कामी कुत्ता तीस दिन, कामी नर छे ऋतु बारहं मास।
वासना भय दुख का मूल प्यारो, प्रेम तो फूल की बास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम तो सुरति की बास।।

480 पार्वती सी पत्नि पाकर, शिव का मन क्यों डोला।
चकित हुऐ देख मोहनी, हा हा कर मन से बोले।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शिव मन माया भाव से डौले।।

क एक ही नाल कंवल सुत ब्रह्मा, जग उपराज कहाये।
कहें कबीर इक नाम भजन बिन, जीव विश्राम ना पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही पार करावे।।

481 सुरति की आंख से देख, निज हंसा रूप प्यारे।
प्रेम भाव विवेक ज्ञान, वैराग्य सत्य आत्म गुण प्यारे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' बिन नाहिं कोई पार प्यारे।।

482 पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' से मूल सब्द महिमां ले जान।
विषय विकार मन मान, बह जायेंगे संग सब्द ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में साहिबन वासा जान।।

483 कैसी जीव करनी करे, कैसी चले वह चाल।
सतगुरू ''वे नाम'' प्रताप ते, छूटे काल का जाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द छुड़ावे काल जाल।।

484 कहन सुनन जग जाना नहीं, देखा देखी चले सब काम।
''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांस से, सच्ची भक्ति करे सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात करे सब काम।।

485 तेरे अंदर सात सुन्न सात कमल, सात सुरत स्थान।
ईक्कीस ब्रह्माण्ड प्यारे, औंकार निरंजन ज्ञान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर जाना काम महान।।

486 'वे नाम' सेवादार निजघर से, सत्यपुरूष संग परमहंसों से मेल।
''वे नाम'' सब्द से कराओ, हंसों का परम पुरूष से मेल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति का सच्चा मेल।।

487 खुद से खुद को मिटाया नहीं जाता, मिटना तो मन मान तजने से आता।
दाना निज को मिटाने के लिये प्यारो, पांच तत्वों पर छोड़ देता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण से ही जीव सब पाता।।

488 ''वे नाम'' सब्द बिना सब झूठ बखाना, जो पाये सो पहुंचे निजघर द्वारा।
जब तक ''वे नाम'' सब्द दात ना, कभी ना होवे पारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन साहिबन सब्द कोई ना पारा।।

क नैनों की कर कौठरी, पुतली पलंग बिछाये।
पलको की चीक डारि के, पिया को लिया रिझाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सबूरी सूं साहिबन रिझाये।।

489 चेत हर पल बांवरे, जे निजघर जाने की चाहे।
निजघर प्यारे अति दूर है, हंसा बन कर ही जा पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा बन कर निज घर जाये।।

490 ''वे नाम'' सब्द दात पाने से, दुख सुख झगड़ा खत्म हो गया।
तन भी गया मन भी गया, सुरति सब्द स्वांसा संग हो गया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात पाने से झगड़ा खत्म हो गया।।

491 राम कृष्ण आयो माया मांहि, निरंकार पूर्ण मन आया नांहि।
जो जैसा है तैसा रहे, सत्य पुरूष भेद कोई जाने नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द भेद कोई जाने नांहि।।

492 कलि में केवल ''वे नाम'' सब्द सुरति धार, बिन सतगुरू नहीं कोई पार।
''सार नाम–सुरत नाम'' जहाज हैं, सुमिर सुमिर भव उतरो पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सुमिरन से उतरो पार।।

493 जा मरने से सब डरें, मेरी सुरति पावे आनंद।
जीवत मरि हो जीवत पाईये, मोक्ष परमानंद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सागर परमानंद।।

494 बड़े साहिब जी दो बार सत्यलोक हो आये, पूरी मुस्कान सत्यपुरूष की लाये।
दास उनको देख देख हर्षाता है, अंग संग कवच सत्यपुरूष का लाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन महिमां कोई विरला पाये।।

495 भरोसा मन कारण नर खो गया, प्रेम की बात ही कहां प्यारो।
स्वतंत्रता खोई मन कारण जगत में, फिर प्रेम तरंग कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन ढंग से निजघर ले लेते हैं।।

496 गुरू सदगुरू में भेद है, दोनों के शब्द सब्द में भेद है।
शब्द दात वेदों से आये, सब्द दात निःअक्षर दोनों में भेद है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शब्द तो क्षर है सब्द सुरति दात है।।

497 पुरूष रचन ते नारी है, नारि रचत ते पुरूष।
पुरूषे पुरूषे जो रचा, सो बिरला संसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब हंसों का अमरपुर विरला संसार।।

498 जो चेतन सुरति सूं चेतन नहीं, उसे सोया नर ही जान।
जो चेतन सुरति से चेतन हो गया, उसे हंसा रूप ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष के मूल नाम की महिमां जान।।

499 दास 'वे नाम' सत्यपुरूष से पाई प्यारो, मूल सब्द विदेह की दात।
जो पारस से परस गया, निज सा करती सच्ची दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' पास सत्यपुरूष की सच्ची दात।।

500 शिष्य तो ऐसा चाहिये, सतगुरू सब्द सुरति में सुरति देय।
सदगुरू भी ऐसा चाहिये, शिष्या से कुछ ना लेय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य सब्द का भेद ले ले।।

501 जो पावे 'वे नाम' की दात को, देख जगत से न्यारा।
उस की महिमां सतगुरू जाने, बने साहिबन का प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो पावे ''वे नाम'' सब्द सोहि साहिबन प्यारा।।

502 प्यारो सुरति उसको देनी चाहिये, सुरतिवान कोई हो।
किसी भी धर्म का, प्रेम प्यारा कोई हो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग सारा सुरतिवान साहिब का हो।।

503 साहिब जी सेवक सेवा में रहे, सेवक सतगुरू सोये।
कहें 'वे नाम' सेवा बिना, सेवक बने ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सेवा से सेवक काहे सोये।।

504 प्यारे मुताले जो किया कुछ है, उसे सतगुरू चरणों में देता जा।
अगर है शौक है निजघर जाने का, तो हर दम सुरति में गाता जा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां को गाता जा।।

505 ''वे नाम''सब्द पा, सतगुरू आगे नन्हे होय रहो।
सुरति सब्द स्वांसा एक से, सत्यपुरूष के प्यारे होय रहो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांस स्वांस में सेवक होय रहो।।

506 दाता सतगुरू साहिबा, निजघर जाने वाली सारी दुनियां।
पार लगावन वाला एक, नहीं मानन वाली दुनियां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कोई कोई जागे सोई सारी दुनियां।।

न प्यारे निदां अस्तुति नहीं जिन, बैरी मोत समान।
कह नानक रे सुन मना, मुक्त तांहि को जान।
यह भेद नानक जी देते हैं, काल ना छूटा जान।।

क सांझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोय।
चल चकवी वा देस को, जहां रैन ना होय।
यह भेद कबीर जी देते हैं, हंसों का अमरपुर में रहना होये।।

507 प्यारो भाव सागर है अमर अपारा, ता में डूब गयो संसारा।
पार लगन को एक ना चाहे, पूर्ण सतगुरू की पहचान ना पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल का जीव मन मान छोड़ ना पावे।।

508 हर अंदर मन ही रोय मन ही गाये, मन ही कर्म भ्रम उपझाये।
हर पल आत्म संग रहाये, आत्म मन का भेद ना पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया छूटे बात बन जाये।।

509 सोना सज्जन गुरूवा, टूटें जुड़े कई बार।
सतगुरू संगत जो पड़े, जन्म मरन से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर दात करावे पार।।

510 स्वांस स्वांस में ''वे नाम'' सब्द सुमिर ले, व्यर्थ स्वांस ना खोये।
बिन ''वे नाम'' सब्द के प्यारो, काल जाल ना छूटे कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू बिन पार ना कोये।।

511 सतगुरू सुरति में पाई के, सतगुरू चेतन सुरति पाई लीन्हा।
सतगुरू सुरति में सत्यपुरूष वासा, पारस ही करि दीन्हा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साधक हंसा करि निज को ले लीन्हा।।

512 महांसुन्न शिखर पर पिया का महल प्यारो, श्वेत ध्वज फहराये।
सुरत स्वरूपी पिया बसें तहां, सुरति से हंसा कर जाहें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साबिन कोन कोन गुण गाहें।।

513 सतगुरू पूर्ण जान 'वे नाम' को, सतलोक का क्या कई फेरा।
नाम जाति वरण कुल त्यागी के, सत लोक बसेरा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा बन पा सतलोक बसेरा।।

514 तीन लोक–स्वर्ग–मृत्यु लोक–पाताल, एक नारी निज से आई।
हर हंसा जग आ नारी पर बस पड़ा, कोई एक प्यारा ही बचा पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कोई ना इस भेद को पाई।।

515 काल लोक बिन सतलोक से, इक में नारी इक बिन नारी जान।
मृत्यु लोक मोहिनी सुरत एक समाना, सत्यलोक हर हंसा रूप एक जाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया का खेल मन माना।।

516 माया मोह ध्यान प्यारो, काल का फंद सब जान।
हंसों का सत्यलोक देश प्यारा, सत्यपुरूष सुरत सब्द में ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन पूर्ण सतगुरू कैसा ध्यान।।

517 सतगुरू संग साधक का संग, जग वासियों संग जगत।
सतगुरू संगत में प्रेम सत्य आनंद की वर्षा होत, जगत संग जीव सोया होत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया संग सुख कहां होत।।

518 सतगुरू संग ते परम पद पाईये, जगत के संग दुख अति भारी।
संत पास मूल अमृत सब्द है, ले लो रे सब पुरूष और नारी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पारस सुरति की महिमां प्यारी।।

519 झूठ सच का सफर एक ना, नांहि स्वर्ग सत्यलोक जाने की राह।
चीनी नमक एक समान होत हैं, गुण की एक ना राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन हंस आत्म की एक ना राह।।

520 मन माया एक ही जानिये, आत्म में मन ले जान।
मन जाये आत्म हंसा प्यारो, मूल सब्द की महिमां जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां ले जान।।

521 औंकार भगवन प्यारो, तीन लोक में डाला ढेरा।
उपझत बिनसत जन्म गंवायो, पड़े चौरासी की धारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''विदेह नाम'' ना छूटे घेरा।।

522 मथुरा काशी जाये द्वारिका, अठसठ तीर्थ नहावे।
सतगुरू बिन सब धोखा, फिर फिर गोता खावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल ''सब्द दात'' बिन पार ना पावे।।

523 चेतन मूरत जड़ को (पूजा) सेवे, काल भगवन से जोड़ा पावे।
देह अचार से बात बने ना, पार कैसे हो पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''मूल सब्द'' बिन बात कैसे बन पावे।।

524 चहुं दिसा मन भाव खड़े, हाथ लिये भाव हथियार।
प्राण गये सबही हैं देखते, काल ले गया मार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार सब्द'' का पकड़ हथियार।।

525 'वे नाम' ने पाये दो सतगुरू, बड़े साहिब जी–मधु परमहंसा महान।
दोनों की महिमां अपार है, बड़े साहिब जी करें साहिबन दर्श महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर दात से बनो महान।।

526 सुरति वान हो सब्द स्नेहि, सतनाम सत्य साहिब जी महिमां ये ही।
बिन ''सतगुरू सतनाम'' ना संसे जाई, संसे मिटे बिन नांहि मुक्ति पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक में एक ही सतगुरू जग आई।।

527 सब जग तजि जो होय न्यारा, सोई पावे ''वे नाम'' सब्द साहिबन प्यारा।
'सब्द' गहे तज जग की आसा, सुरति में पावे साहिबन वासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही साहिबन स्वांसा।।

528 काया ते आगे मूल सब्द जो होई, ता में राखो सुरति समोई।
बिन ''वे नाम'' (सार नाम–सुरत नाम) ना संशय जाई, संशय मिटे बिन ना निजघर जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतों की महिमां कोई जान ना पाई।।

529 काल का जीव तजे नहीं, मन माया और मान।
पाखण्ड जा के हृदय बसे, मान में तजे प्राण।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, काल तरंग छल कपट अभिमान।।

530 विदेह सब्द सुनाये के, तन मन सतगुरू हाथ।
सतगुरू दात पूर्ण मुक्ति का, प्रेम विश्वास जब संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन विश्वास बने ना बात।।

531 ''वे नाम'' अमृत बरसा, मुख खुला भरपूर।
जिन अमृत चखा नहीं, उनसे ''वे नाम'' अमृत अति दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सूरज उगने में नांहि देर।।

532 सतगुरू बिन कोई पार ना, फिर फिर गोता खावे।
चेतन सुरत जड़ को सेवे, अपना मूल गंवावे।
''वे नाम'' सब्द की महिमां, कोई कोई ही जान पावे।।

533 दे अचार किया कहा होई, मन की मैल ना धोई।
जप तप दान कर्म आदि से, मन की मैल बड़ाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से दुख जाये सुख आई।।

534 वक्ता होय कथा सुनावे, स्त्रोता सुने घर आवे।
''वे नाम'' सब्द का भेद ना कोई, कहे सुने जन्म अकारथ जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज घर का भेद ना पावे।।

535 धन सो साधक जान प्यारे, पावे 'वे नाम' घर जावे।
सत्य बिन जीव प्यारे, काल में काल का होई रह जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द दात पार करावे।।

536 तन पीला मन काला प्यारो, साधु संग झूठा माल।
''वे नाम'' सब्द बिन सुख नांहि, काल का फेला जाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार नाम'' बिन ना छूटे काल का जाल।।

537 नर तन पाय कर प्यारे, तन मन सूं किया जो काज।
काल का हर नर तरे, जो बैठे ''वे नाम'' सब्द जहाज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग बैठ ''सब्द'' जहाज।।

538 प्यारे संगत संग सतगुरू के, सहजे पलटे वंश।
काग से हंसा करे, मुक्ता चगे अब वंश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परमहंसा जान ले साहिबन वंश।।

539 ''वे नाम'' सब्द जहाज बैठे बिना, कैसे छूटे मन माया का जाल।
निष्चय वे बहेंगे काल सागर में, कैसे छूटे काल का जाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से कटे काल का जाल।।

540 कांच और कंचन सत्यपुरूष से आये, एक झूठ एक सांच।
कांच मन माया बह, हंसा रूप भयो कंचन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जान हंसा रूप कचंन प्रेम और सांच।।

541 विरह प्रेम की जोत प्यारो, सोता जन लिया जगाये।
''वे नाम'' सब्द की अमृत धारा, विरह दिया पठाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द काल से लेत छुड़ाये।।

542 ''वे नाम'' सब्द से सांचा सूरमा, सहे सब्द चेतन सुरति चोट।
सुरति चेतन होते ही, छूटे भ्रम निकसे खोट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत सब्द स्वांसा संग निकसे खोट।।

543 साध नर में आंतरा, जिस दिवस और रात।
नर की आस जगत को, साध ''सार नाम'' सुरति की दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नर की हर दम रात।।

544 सोंह सोंह बड़े बड़े ज्ञानी, मुख सूं हैं जप रहे।
''वे नाम'' सब्द निःअक्षर की महिमां, कोई कोई प्यारा जप रहा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, धुनें अंतिम सत्य नहीं कोई कोई भेद को पा रहा।।

545 ''वे नाम'' सब्द दात पाने पर, कुछ शेष करना है नहीं।
अंतर सुरति में प्यारो, स्वांस भेद सुरति धारा बिन कुछ नांहि।
अब क्या करना ना करना, बिन कुछ करना नांहि।।

546 हद अनहद के पार सुरति देस, अजर अमर उसे जान।
चेतन सुरति ''वे नाम'' से पाकर, सच्चे घर को ले तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य लोक की महिमां महान।।

547 कोई अमली ध्यानी, कोई ज्ञानी गृहि जान।
कोई साधु भंग पी मस्त, इन्हें ले प्यारे जान।
सतगुरू दर्शन से, एक शक्ति मिलती ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्शन की महिमां ले जान।।

548 निरंकार के उस पार प्यारो, 'वे नाम' सुरति सागर महान।
तहां परमहंसों का वासा प्यारो, बिन तन मन के जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां जान।।

549 चल हंसा तूं देस साहिबन के, आप देत पुकार हैं।
सत्य तो केवल अमरलोक है, झूठा सब संसार है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति देत पुकार है।।

क बिन देखे उस देश की, बात करे सो कूर।
आप तो खार ही खात है, बेचत फिरे कपूर।
यह भेद 'साहिब कबीर जी' देते हैं, अमर आत्मां का अमर देश बिन कूर।।

550 यह संसार झाड़ और झाखड़, उलझ पुलझ मर जाना है।
रहना नहीं देश विराना है, अमरलोक हंसों का ठिकाना है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से सत्य को पाना है।।

551 तीन लोक से भिन्न पसारा, अमरलोक सतगुरू का न्यारा।
तहां नहीं प्रलयः की छाया, नहीं तहां कछु मोह और माया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अदभुत देश हंसों का प्यारा।।

552 ''वे नाम'' सब्द नाम ही प्यारो, जा को सच्च सुरति देश ले जान।
तीन लोक आवागमण में जान, चौथे लोक की महिमां जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वर्ग ब्रह्म लोक पित्रादि औंकार पसारा ले जान।।

553 काम क्रौध लोभ मोह आदि की, लगी आग जलावे कुल संसार।
प्यारे हंसा छोड़ जलता संसार, पकड़ ''वे नाम'' सब्द की धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म की लोप हो गई धार।।

554 भक्तो मीन पपील गति छोड़ पा सार विहंगम गति, जहं ईच्छा तहं जाये।
'वे नाम' सतगुरू का संग कर, विहंगम चाल सूं घर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से पार हो जाये।।

555 प्यारो वे सुर नहीं, जिन देह को जाना नूर।
मन माया का संग छूटे, अंदर प्रकटे सुरति धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' जहाज से भव सागर पार।।

556 यह जग सोया लाखों जन्म से, कोई प्यारा जागा जान।
जागे में ''सब्द'' से जागना, जाग जानो महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू की महिमां जान।।

557 सुनी देखी सब झूठ प्यारो, सुरति की वाणी देखी सो कांच।
आंख कान क्षर अक्षर प्यारे, जान सत्य केवल सुरति निःअक्षर कंचन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति देखे सुने यह कांचन यह कांच।।

558 मन माया तजे, सुखी होत सब कोये।
मीठे से औगुण उपझे, मन माया का होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कड़वी ही से गुण होये।।

559 हीरा लेकर गंवार चला, पहुंचा जोहरी देश।
गंवार कंकर कहा, जौहरी टके में पाया अपने देश।
जौहरी करत परख गंवार की, गंवार भीतर परख ना लेख।।

560 सब जग आंधरा जान प्यारे, भेद ना बीज लगर।
पूर्ण भेद 'वे नाम' में, आप ही बोवन हार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आप ही करन करावनहार।।

561 प्यारो वे जन महान है, जागे फिर सोवे ना।
''वे नाम''दात से चैन सुख, प्रेम सत आनंद बिन कुछ ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू बिन जाग ना।।

562 सांख जोग नवधा भक्ति, काल के भक्ति के भेद और रीत।
''सार नाम'' सब्द से जागे साधक प्यारा, सुरति सब्द स्वांसा की रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू 'वे नाम' सूं जोड़ो प्रीत।।

563 गुरू सतगुरू अंतना, जस कामी निःकाम।
भेष रता से भिखारी है, सुरति रता से सुरति नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वेत रता से निजधाम।।

564 औंकार सत्यपुरूष में आंतरा, जैसे दिवस और रात।
औंकार लोक मिटे और बने, अमरलोक सदा अमर है जहां बिन बादल बरसात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जहां कभी नहीं होती रात।।

565 तीन लोक हर नर आंधरा, जाने ना विरह विराग की धार।
बात बने सत्संग में, जहां सतगुरू बोवन हार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू वाणी अमृत धार।।

566 संतन अंग में जीवड़ा, पावे सुरति चेतन रसधार।
जन्म जन्म का सोया जागे, रात कभी ना देखे जब संग में सुरति धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर में देखो सतगुरू की फेंकी सुरति धार।।

567 सतगुरू संत अंदर की देखी कहें, आंख कान की देखी सुनी कहें नहीं कोय।
यह देखी सुनी धोखा सब, सुरति की परखी सांची होय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति महिमां जाने कोये कोये।।

568 मैं सोया था बहु जन्म का, सतगुरू जान जगयो।
विश्वास भरोसा आ गया, सब कर्म धर्म गये विलास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से सुरति चेतन हो जाये।।

569 सतगुरू पूर्ण मिला, किया कर्म काण्ड आशा तृष्णा को रद्द।
विश्वास भरोसा जगाये के, पकड़ाया सुरति ''वे नाम'' सब्द।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष सूं आया सत सब्द।।

570 तीन लोक हैं डूब रहे भव सागर में, काम क्रौध लोभ मोह संग साथ।
'वे नाम' सतगुरू तैरूं प्यारो, कर दिया पल में सुरत संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साधक करता भव सागर पार सतगुरू साथ।।

571 ''वे नाम'' सब्द की चोट सठोर से, मन चंचल से निश्चल भया।
सतगुरू सुरति चेतन से सुरति जागी, टूटा मन माया का भय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागी छूटा मन का भय।।

572 लख चौरासी भुगते भुगते, सात बार मनुष्य देह पाई।
सांचा ''वे नाम'' सब्द पाया नहीं, फिर चौरासी आई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में पारस सुरति समाई।।

573 ''वे नाम'' सब्द दात को, बिरला कोई लेने आये प्यारो।
जो आवे परम पद पावे, भौर ना जग में आवे प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां गावे पार हो जावे प्यारो।।

574 ''वे नाम'' सब्द मूल दात है, आत्म से हंसा होने का आधार।
सुरति से सुमिरत ते सुख उपझे, छूटे मोह माया विकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुमिरते सुमिरते उतरो भव पार।।

575 जो ''वे नाम'' सब्द दात संभालता, पल पल सुरति चेतन होती जाये।
आवागमण का भेद मिटे, निजघर सतगुरू संग जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कोई कोई सार सब्द की महिमां पाये।।

576 ''वे नाम'' सब्द देनहार सत्यपुरूष हैं, उनकी महिमां महान।
'वे नाम' दास को परख कर, दिये ''सार सब्द–सुरत सब्द'' महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति से सुरति महान।।

577 प्यारो यही संसार में, सब सूं करिये प्रीत।
सब हंसा एक रूप हैं, चेतन सुरति सूं सुरति प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रीत सूं काल से जाओ जीत।।

578 मन मान से पकड़ा ना जाये, सुरति चेतन से सुरति जग जाये।
जागे तो ही मन मान मिटे, आशा तृष्णा काम क्रौध मिट जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पाई पार हो जाये।।

579 सब में मन रूप हरि है, हरि सुन्न तत्व में सब हैं।
साखी सतगुरू और नहीं कोई दूसरा, सत्यलोक से लाया सब्द विदेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हरि ठिकाना त्रिकुटि मध्य भंवर गुफा है।।

580 ''वे नाम'' से जीतो, तन मन लोभ प्यारो।
मूल नाम सुरति में धारो, सुरति चेतन सूं निजघर प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, औंकार सत्यपुरूष में भेद जान प्यारो।।

581 ''वे नाम'' सब्द बिन संशय गांठि ना छूटे, इस भेद को जान प्यारे।
सुरति जग सुमिरन में जा, सुरति हंसा रूप महान प्यारे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग निज को जान पार प्यारे।।

582 पल सुमिरे पल बीसरे,सुमिरन कहा ना जाये।
आठों पहर ''सार सब्द'' सुरति में, सुमिरन सोई कहाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार सब्द'' सत्यलोक का कहाये।।

583 सुरति पकड़ो जग वासियो, सुरति सब्द महां मंत्र ले जान।
पारस सुरति 'वे नाम' पासा, ''वे नाम'' सब्द आंधी सुरति ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक निजघर की महिमां ले जान।।

584 सुश्मिणा चेतन्य जब प्यारो, साधक पवन तत्व जल तत्व पर निर्भर ले जान।
तन के कार्य की अवस्था में, ठीक आहार पर निर्भर ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुश्मिणा उर्जा से तन सृजन ले जान।।

585 सुरति हर पल सुश्मिणा को, चेतन करती ले जान।
सुश्मिणा चेतन्य से, तन बिन स्वांसा चेतन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस अवस्था को जीवत मरना ले जान।।

586 दुनियां प्यारो भोली पड़ी, जिन्हें देखा जाना नहीं पूजी जाये।
पूर्ण सतगुरू दात को लाया, उस को जानना ना चाहे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पूजा से पार हो जाये।।

587 सच्चा नाम 'वे नाम' संग भाई, विदेह नाम कोई बिरला पाई।
विदेह नाम पावेगा सोई, जो सतगुरू में विश्वास जगाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विश्वास भरोसे से पार हो जाई।।

588 ''वे नाम'' सब्द दात सत्यलोक, सत्यपुरूष से आई।
सत्यगुरू सुरति को, महां चेतन करि जाई।
''वे नाम'' सब्द की महिमां, बिन सतगुरू कोई जान ना पाई।।

589 पल इक सुरति विदेह सब्द समाई, ताकि महिमां कहि ना जाई।
गुप्त वस्तु जो नर पाई, उस को काल कैसे दुख दे पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां कोई प्यारा पाई।।

590 ''वे हूं' दास शीतल परमार्थी, विदेह दात सुरति स्वांसा संग।
तपन बुझाई तन मन, दे दे सुरति चेतन सुरति का संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति का सच्चा संग।।

ग कबीर साहिब प्रकट होवे, गरीब दास का प्रण पूर्ण किया।
''सार सब्द'' दीक्षा का उनको दान दिया, पंथ का आरम्भ किया।
यह भेद गरीब दास देते हैं, उनके प्रण को साहिब जी पूर्ण किया।।

591 ''वे नाम'' स्नेह ना छोड़िये, जे तन धन भी निज का जाये।
जैसे प्रीति रिश्ते नातों सूं, वैसे नाम सूं घर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं निजघर जाये।।

592 मूल बीज बिन वृक्ष कहां से, सतगुरू अलख लखायो रे।
''वे नाम'' दात 'वे हूं' दास सूं, आवागमण मिट जावे रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात से नर पार हो जावे रे।।

593 औंकार भगवन का सहारा झूठा प्यारो, घट मांहि उजियारा रे।
बिन सतगुरू सब्द जो नाम जपे, कहिये रैन का सपना रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द की महिमां जान रे।।

594 करन करावनहार के, लाखों हाथ ले जान।
हंसा और मन अलग हो जाते, जब सतगुरू सब्द मिले आन।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करन आप समान।।

595 मन माया का संग खो जाता, जब ''वे नाम'' सब्द सुरति में धरे।
सतगुरू सुरति भाग जगावे, मन छूटे मिले प्रेम की धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सुरक्षा संग मिले वे नाम सुरति धार।।

596 'वे नाम' सतगुरू पूर्ण सूरमा, सुरति सूं मारो चेतन सुरति बाण।
मन मान का संग गया, 'वे नाम' संग पावें पद निर्वाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुमिरन की महिमां महान।।

597 सत्यपुरूष अंश सुरति अविनाशी, सुरति चेतन अमल सहज ले जान।
मन माया वश में जीव प्यारो, भाव भ्रम में जीव हर पल जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा अवस्था आनंदमयी ले जान।।

598 तन अंदर किसी भी स्थान पर ध्यान, पूर्ण मुक्ति से कौसों दूर ले जान।
मन को काया मन में राखे, कोई जीव छूटा मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुख दंख में एक सा रहना महान।।

599 मरने से जग डर रहा, मरन ना लागे मीठा।
जग में हर नर सो रहा, एक ना जागे डीठा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोये को सपना लागे मीठा।।

600 पांच तत्व का तन प्यारो, बाहिर भी ऐसा जान।
यह सब औंकार के अंग प्यारो, इन से किसी को पार मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन पूर्ण सतगुरू सब्द कोई पार ना जान।।

601 सत्यपुरूष निजधाम से फैंकी डौर है, जो पकड़े सो पार।
जो सतगुरू सब्द ना पा सके, कैसे करे भव सागर पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात से ही कोई होत है पार।।

602 जड़ चेतन की उरझी गांठ, जो सुरझत नहीं सुरझाई।
मन माया का संग हंसा का, हंसा आत्म कहलाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया संग हंसा गई दृढ़ताई।।

603 ज्यों ज्यों करता यत्न छूटन को, त्यों त्यों हंस आत्मां गई दृढ़ताई।
''वे नाम'' सब्द की दात जब संग में, पल में हंसात्मां गई छुड़ाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा काल सूं लो छुड़ाई।।

604 काल पुरूष परमात्मां की भक्ति में, ऋषि मुणि गण गंधर्व अरू देवा ले जान।
पंच भौतिक शरीर भाय प्यारो, व्यक्तित्व मन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर ''मूल सब्द'' की महिमां ले जान।।

605 जग में जो जन्मे मरे, ताको कैसे धरूं में सीस।
निरंझन सेवा में जग लाग, हर एक निवावे सीस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दौ पाटन के बीच में सब कुछ जाता पीस।।

606 जग में भाव की महिमां ही, मन मान ही महिमां ले जान।
आत्मां पल पल ले भरमाई, सतगुरू चेतन सुरति आत्म हंसा करे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सतलोक सूं आई जान।।

607 पंच तत्व सूं औंकार करि, मन मान का फैला जाल।
तीन लोक गुरू अस्तुति करें, सतगुरू सब्द बिन कटे ना काल का जाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू एक समय में एक ही आता जान।।

608 जग में महां निंदा दयाल पुरूष की, अस्तुति काल पुरूष की ले जान।
एक ही आता एक से आता, झूठे जग में सत्य की महिमां खेल करे बखान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सत्यपुरूष का ही रूप ले जान।।

609 ''वे नाम'' सब्द का दान सतगुरू सूं, पूर्ण भाग्यवान ही पाये।
जो सुख सतगुरू संग में, सो निजधाम ना होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पहचाने कोये कोये।।

610 शीतल जग में कोई वस्तु नहीं, चन्द्रमां हिम शीतल मत जान।
शीतल ''वे नाम'' सब्द प्यारो, नाम स्नेहि शीतल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शीतल निजधाम का हर हंसा ले जान।।

611 साहिब संदेश भेजिया, ''वे नाम'' सब्द से हर नर पार ले जान।
'वे नाम' आज्ञा का पालन करें, कई सो साल 'वे नाम' को जग में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यलोक ही हंसो का प्यारा घर ले जान।।

612 सत्यपुरूष बुलावा भेजिया, 'वे नाम' दिये मुस्काये।
आप का संदेश ही साहिब जी, मुझे पल पल दे जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब जी चेतन सुरति से सुरति जगाये।।

613 बिना विवेक सकल जग भरमे, माया हर जीव भ्रमाया।
मेहरबान केवल सत्यपुरूष आप, औंकार आप मन जग भ्रमाया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया से नर गया भ्रमाया।।

614 महांमारियां जैसे करौना भुकंप सुनामी आदि, निरंझन द्वारा कष्ट दिये जान।
संतों का सृजन ''वे नाम'' सब्द सूं, सतगुरू 'वे नाम' का इस युग में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं सब कष्ट भागे ले जान।।

615 भय से भक्ति करे संसारा, यह कोई भक्ति नांहि।
निर्भय हो भक्ति करो, पूर्ण सतगुरू नाम बिन भक्ति नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं सुरति चेतन बिन भक्ति नांहि।।

616 जीवों से पहले पाप करवाता, खुद ही उन्हें कष्ट भी देता जान।
देवताओं ऋषि मुणि जपि आदि, काम क्रौध बिन मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया का किया सब जान।।

617 केवल संतों से डरता मन प्यारो, संतों की महिमां महान।
संतों के कारण जग चल रहा, सत्यपुरूष की महिमां जान।
संत ना आते जगत में, पूर्ण मोक्ष की ना होत पहचान।।

618 'वे नाम' सतगुरू सत्यपुरूष प्यारो, करौना काल में पल पल संग ले जान।
हर दिन सुरति सूं बातें करें, करौना भेद 'वे नाम' सूं ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष को जो जानसी तिसको सतगुरू जान।।

619 सुरति बिन वर्णन साहिबन हो कैसे, क्षर अक्षर से पार।
कल्पना से बाहिर रूप है उनका, कहने सुनने बोलने से पार।
हर अंग में अनंत सूर्य और चन्द्रमां, वर्णन से जानो उन्हें पार।।

620 सत्यपुरूष अगम अपारा, वर्णन से पार सुरति धारा।
पल पल रूप बदलते प्यारो, अमी सिन्धु रस सुरति धारा।
कोन बतावे उनकी महिमां, सुरति चेतन से सुरति चेतन की धारा।।

621 'वे नाम' उपदेश छोटे सहि, चौट करें गम्भीर।
भावना ही आत्म को ''वे नाम'' सब्द से, हंसा रूप दे जाती गम्भीर।
मन मैला ''वे नाम'' सब्द से धोये, सुरति स्वांसा की महिमां गम्भीर।।

622 संतों का होना, सभी हंसों का है दाता साहिब हमारा।
हर पल सभी को, पुकार देता रहता साहिब हमारा।
लाखों जन्म से नर सोया पड़ा है, जागन का भेद ना पाया हमारा।।

623 सत्यपुरूष को पाने पर, सारे बंधन कट जाते हैं।
साधक सुरति जगने पर, निज का भेद पा जाते हैं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से सुरति जग जाती है।।

624 सरलता में, समस्त मानवीय गुण ले जान।
सुरति सब्द से सुरति में, समाहित होना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द की महिमां महान।।

625 मन मुरीद कभी सहज, होता मत जान।
उसकी उर्जा दिखाने, संभालने में लगी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मुरीद का दुख महान।।

626 सरलता निजधाम का प्रकाश पुण्झ प्यारो,सुरति में उगता ले जान।
दुख सुख का भेद गया, आशा तृष्णा का संग छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति में ध्यान महान।।

627 जीव जब मिले जिससे मिले, सुरति सूं करे सुने और भोले प्यारो।
क्षर अक्षर सुरति दात बिन, मन मान का धोखा जान प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर दात सुरति सब्द महान प्यारो।।

628 सत्त कर्म सत्त चिंतन सत्त चर्चा, बिन सत्संग ना होत निज पहचान।
बिन ''वे नाम'' सब्द दात मोह भागे नहीं, सुरति मन वष ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सब्द की महिमां महान।।

629 अनुराग बिन भक्ति नहीं, भक्ति बिन नहीं निज की पहचान।
अनुराग भक्ति निज पहचान, बिन ''सार सब्द'' मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां पहचान।।

630 पूर्ण सतगुरू बिन कोई सहज मत जानो, ''सार नाम'' बनावे सहज।
सत्यपुरूष की सुरति चेतन दात यह, सहज दात सूं होता कोई सहज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस पल में रहना बनावे सहज।।

631 क्रौध अग्नि हर घट प्यारो, मन के कारण ले जान।
ब्रह्म जी क्रौधत भयउ, छेः पुत्रन शाप दिया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शिव का क्रौध महान।।

632 संसार में जब जब शिव जी क्रौध करें, प्रलयः का उसी पल में होना जान।
सनकादिक बैकुण्ठ पधारे, जय विजय द्वार पाल शाप पाया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, क्रौध कारण मन ले जान।।

633 दुरवासा ऋषि भी, क्रौध को जीत ना पाये ले जान।
56 करोड़ यादवों को शाप से, भस्म करा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहज भक्ति मार्ग की महिमां जान।।

634 सारा संसार मान क्रौध में प्यारो, मन सूं लेता हर काम।
सुरति लाखों जन्मों से प्यारो, मन अनुसार करती हर काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, क्रौध बिगाड़े सब काम।।

635 कामी क्रौधी बहुत तरे, लोभी तर मिला नहीं।
सकल अधर्म लौभ से जानो, लोभी से बुरा जग नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लोभी सहज जग नांहि।।

636 लाख मिलें तो दो मन लावे, दो मिले चार को धावे।
दो पा मन में दुखी, दस पावे उधम मचावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लौभी कभी मोक्ष ना पावे।।

637 मोह सब चाहत का राजा प्यारो, यह सब दुखों का मूला।
ता ते उपझत बहु विधि सूला, अज्ञान आलस आश सब इसके मूला।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक का राज इसी के मूला।।

638 तृष्णा ईच्छा लालच प्यारो, कपट पाखण्ड रोग शोक मोह अंग ले जान।
इस राजा का परिवार प्यारो, अति बड़ा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोह सूं पार उतरा एक ना जान।।

639 क्षमा प्रेम विरह विराग, विश्वास भरोसा पार करता ले जान।
पूर्ण सतगुरू सतनाम सूं, भव पार होना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द महिमां ले जान।।

640 गाली आवत एक है, उलटत होत अनेक।
कहें साहिब ना पलटिये, रहे एक की एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति में रहो तो जानो एक।।

641 ''सार सब्द'' दात सतगुरू से पाकर, चले विवेक की चेतन शक्ति बाण।
मोह का आलस्य निंद्रा माया जाल, पल में निष्फल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्ञान विवेक प्रकाश सुरति सत्य बाण महान।।

642 ग्याहरवां द्वार खोले बिना, आत्म हंस ना होये।
ग्याहरवां द्वार सुरति अंदर, सतगुरू सब्द से बात बन जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साधक सुरति जागे निज घर जाये।।

643 देव तन से मानव तन में आना, ऊँची अवस्था पाना ले जान।
मनुष्य तन अति दुर्लभ प्यारो, तन बिन मोक्ष पाना मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ग्याहरवें द्वार की महिमां ले जान।।

644 भृंगि सब्द जिस पास प्यारो, सोई सच्चा सतगुरू ले जान।
सतगुरू को कीजे दण्डवत, सतगुरू नाम जहाज ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू को करो कौटि कौटि प्रणाम।।

645 किसी के बुरे कर्मों को देख कर, बस यह कहो मैं कुछ जानता नहीं।
अपने सतगुरू बिन प्यारे, मुझे कुछ जानना नहीं जानजा नहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज को जाने बिना कुछ जानना नहीं।।

646 प्रेम सुरति धारा परम शक्ति, सतगुरू चेतन सुरति धार करे सब काम।
कोई सतगुरू प्यारा पावे दात, सत्यपुरूष अमृत धारा सुरति करे सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सुरति धारा का सब काम।।

647 कोई सतगुरू प्यारा पावे, सुरति अनन्यता लगन दृढ़ विश्वास।
इतना गहरा और सच्चा प्यार, ऐसा साधक निहाल कर जगावे विश्वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चा प्रेम निर्स्वाथा बलिदान मंगता विश्वास।।

648 झुकेगी जागी सुरति, जिस का बह गया मान।
अकड़ मुद्ये की पहचान है, जिस में नहीं प्राण।
यह भेद साहिब जी देते हैं, सच्चे लोक को संग ले लेते हैं।।

649 सतगुरू की माने नहीं, अपनी राह पर जाये।
काल का संग छूटे नहीं, दुख का संग छूट ना पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पात्रा शिष्य को अवष्य पार कराये।।

650 भक्ति मार्ग अभ्यासी प्यारो, माया और पथ विचलित मत जान।
भक्ति मार्ग में चलने वालों से प्यारो, माया डरती ले जान।
साहिब जी : माया स्वयं लज्जित होती ले जान।।

651 रसरी पांव में काल की, कैसो सोवत बिन चैन।
सांस पल पल कहत है, पल में छूटे प्राण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज को तनिक भी स्वतंत्र मत जान।।

क जो जल बड़े नाव में, घर में बड़े दाम।
दोनों हाथ उलोचिए, यही सयानो काम।।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे व्यर्थ धर्म पुण्य काम।।

652 मुरली की तान में तूं है, तूं ही है अज़ानों में।
पर भेद यह अक्षर का, वे तो केवल 'निःअक्षर' सुरति में।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, निःसब्द धार सतगुरू संग में।।

653 सुरति सब्द स्वांसा एक जब, मन माया का छूटे संग।
अब काल की एक ना चले, आत्म हंसा बने चले निजघर सतगुरू संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चले हंसा निजघर को सुरति निरति एक संग।।

654 'वे नाम' साहिब की उल्टि वाणी, बरसे कम्बल भीगे पानी।
मन मान जिन का गया, सेवा सुमिरण मीठी वाणी।
यह भेद साहिब जी देते हैं, सच्चे लोक को लो तुम जान।।

क सोहं सब्द अगोचर मुद्रा, भंवर गुफा अस्थाना।
शुकदेव ताको पहचाना, सुन अनहद की ताना।
यह भेद साहिब कबीर जी देते हैं, धुनों को सत्यपुरूष नहीं जान।।

क जोगी होय के योग कमावे, रोम रोम करि छानेगा।
तीन लोक में कुछ ना छोड़े, पूरा जोग कमावेगा।
तबहुं नांहि सतगुरू का बच्चा, अबहिं कच्चा रे कच्चा।।

क एक शून्य की कौन कहावे, सात शून्य ले जावेगा।
महांशून्य पर आसन मारे, सोंह का घर पावेगा।
तबहुं नहीं सतगुरू का बच्चा, अबहिं कच्चा रे कच्चा।।

655 सब्द सब्द सब कोई कहे, वे जो सब्द विदेह।
मन जिभ्या पर आवे नहीं, स्वांसा सुरति में इसे लेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजधाम से आई प्यारो निःअक्षर दात विदेह।।

656 जो तुम पवना गगन चढ़ावो, करो आज्ञा चक्र में वासा।
मन संग पांच तत्वा सभी विनशे, अष्टम चक्र कर वासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल में निजघर सतगुरू संग वासा।।

वासनात्मक प्रेम से आध्यात्मिक प्रेम की ओर

657 प्रेम विवाह ईक बड़ा आधार नहीं प्यारो, प्रेम खेल निराशा की अनुभूति ले जान।
खेल शीघ्र समाप्त हो जाता प्यारो, निराशा की अनुभूति होती ले जान।
साहिब जी : खेल का शीघ्र समाप्त होता ले जान।।

658 विवाह ईक गहरी मित्रता अखंण्डता प्यारो, प्रेम आध्यात्मिकता ले जान।
आत्म प्रसार की ईच्छा संग में प्यारो, दौ का जोड़ करे काम महान।
साहिब जी : पूर्णतः समर्पण ले जान।।

659 विवाह गठरी आध्यात्मिक मैत्री प्यारो, पूर्ण विश्वास का केन्द्र ले जान।
ऐसा विवाह आत्मां को पूर्ण चेतन करता, गुणात्मक प्रेम का फूटना ले जान।
साहिब जी : सतगुरू का खेल महान।।

660 प्रेम महांसागर का नीर है बहता प्यारो, पर उल्टा बहता जान।
नीचे बहना मृत्यु प्यारो, उपर बहना सुरति का खेल महान।
साहिब जी : उपर बहने से निजघर पाना ले जान।।

661 मजनु ने केवल लैला से प्यार किया, किसी और से प्रेम की बात मत जान।
ये निषेधात्मिक प्रेम प्यारो, सारा संसार वर्जित किया ले जान।
साहिब जी : सारे विश्व से प्रेम करना ले जान।।

662 ज्ञान भक्ति में भेद प्यारो, कुछ भी मत ले जान।
ज्ञान वैराग़ योग साधना प्यारो, पुरूष वर्ग के ले जान।
साहिब जी : ऋषि मुणि माया को स्त्री रूप मानते ले जान।।

663 माया रूपी बाण से प्यारो, देवता ऋषि मुणि एक भी बचा मत जान।
ज्ञान मार्ग के अभ्यासी प्यारो, पथ से विचलित होते ले जान।
साहिब जी : भक्ति स्त्री रूप ले जान।।

664 बिल्व मंगल चिन्तामणि से प्यार था करता, दोनों का प्रेम अटूट ले जान।
एक दूसरे बिन रहना कठिन, सच्ची बात ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वासना प्रेम नाहिं ले तूं जान।।

665 बिल्व मंगल ही सूरदास प्यारो, कुछ पाना कुछ खोना जीवन का भेद महान।।
दोनों ने सब कुछ खोया, तब जाकर वे बने महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज की कर पहचान।।

666 ईन्द्रा थी पत्नि मंगल की, चिन्तामणि से पाई सम्पत्ति ले जान।
इस गणिका ने साधारण मंगल को, सूरदास महाकवि दिया बना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विरह तड़प से जागे प्रीत महान।।

667 कल्याण करें कन्हाई तिहारा, आर्शीवाद सूरदास का देने उठा टटोलता हाथ।
उनके पैरों पर अपना सिर झुकाये, बैठी थी चिन्तामणि फुसफुसा पड़ी एक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्री कृष्ण उभारा सूरदास को पकड़े हाथ।।

668 परमपिता सत्यपुरूष, किसी विरले मनुष्य को प्रदान करते अनन्यता लगन।
जिस में दृढ़ विश्वास, गहरा सच्चा प्यार निहाल किया धन्य हुई सुरति जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परम प्रेम कोई भाग्यशाली नारी पाये महान।।

669 मंगल अपनी आत्मां के, अणु अणु से प्रेम था करता।
चिन्तामणि दिया ठुकरा, ऐसी लगन दृढ़ विश्वास निहाल है करता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ऐसी प्रेम भक्ति किसी किसी को दात।।

670 रात भर कीचड़ पानी में, लथपथ बेहोश पड़ा रहा मंगल प्यारा।
चेतना शून्य अवस्था में था पड़ा, सांसा गति हर पल अवरूद्ध होती गई प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांस स्वांस में सूरति सब्द में रही प्यारो।।

671 अर्धचेतनावस्था में पड़ा पड़ा, बिल्व मंगल रह रह कर बड़बड़ाने लग जान।
बड़बड़ाहट में चिन्तामणि का नाम ही, सुनाई पड़ता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुख दुख में सच्चे सतगुरू की करो पहचान।।

672 भौर के उजाले में प्यारो, एक साधु की दृष्टि पड़ी ले जान।
पल में कंधे पर उठा कर, निज ठिकाने पर लगाया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संत साधु की महिमां महान।।

673 मंगल को गर्मी देकर, कुछ कुछ चेतना लौटा पाने में सफल होना ले जान।
मंगल रह रह कर अर्धचेतनावस्था में, चिन्तामणि का नाम लेता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ठुकराये प्रेम की महिमां अति महान।।

674 यमुना के पूर्वी पट पर, कृष्ण मंदिर पास कुटिया की महिमां जान।
दयावश उपलब्ध जड़ी बूटियों से, मंगल का उपचार किया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम दया विश्वास से सेवा की महिमां महान।।

675 चिन्तामणि निज कक्ष में पड़ी हुई, उसी बिस्तर पर चित लेटी जान।
आंखें छत की कड़ियों में टंगी हुई, बीती स्मृतियां पटल पर कौंधत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चे प्रेम में सुरति की महिमां महान।।

676 अनेक घटनायें, अनेक प्रेमा लाड़ित क्षण।
मस्ती भरी झूमें प्रेम गीतों में, मंगल की महिमां जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मंगल के गीतों की महिमां महान।।

677 मंगल कंई प्रेम गीत प्यारो, चिन्तामणि पर रचे और उसे सुनाये ले जान।
एक गीत वे प्रायः ही, सुनाया करता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मंगल के गीतों की महिमां जान।।

स ''पलक ओट नहीं होत लुनाई, घर गुरूजन बहुते विधि त्रासत लाज तनिक ना आई।
नैन जहां दरसत तुमि अटकी, श्त्रवन थके सुनि वचन सुहाई।
रसना और नहीं कछु भाषति, चिन्तामणि रट इहै लगाई।
चित चंचल संगहि संग डोलत, लोक लाज मरजाद मिटाई।
मन हरि लियो तो छवि तबहीं, तन बपुरे को कहां बसाई।।''
(राग धनाश्री) सूरदास जी

678 मंगल की सुरीली आवाज़, मुग्ध कर देने वाली ले जान।
आवाज़ से बड़कर छेड़ जाती थी, प्रेम दृष्टि चिन्तामणि के लावण्य पर टिकी हर पल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति में प्रेम जगाता प्यास महान।।

679 चिन्तामणि को मंगल संग बीते कंई वर्ष, स्मृति पटल पर कौंध रहे जान।
अनेक घटनायें प्रेमलोड़ित क्षन, मस्ती भरी झूमें कंई प्रेमगीत की महिमां ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम की एक पल की महिमां महान।।

680 चिन्तामणि को अपने रूप लावण्य का अति गुमाण,
पर मंगल के मुख से करी प्रशंसा से गुमाण नांहि।
वह निहाल होई ले जान, अपनी लुनाई की समस्त पूंजी लुटाये बिन कुछ नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, उसके आगे बिल्व मंगल बिन कुछ नांहि।।

681 चिन्तामणि धक्के देकर, बिल्वमंगल को अपने घर से बाहर किया।
मतवाला प्रेमी रहस्य ना पा भोला, मेरा जीवन अर्थहीन हो गया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग भूला निज को पा गया।।

682 इसी निरर्थकता का बोध लिये, भटकने लगा बिल्वमंगल।
दिनों दिन कष्ट पाता, हर वस्तु में उसे ही देखता मंगल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्ची राह पर हर पल आ रहा मंगल।।

683 जिस सुरति में एक समाता है, मन माया का संग छूट जाता है।
अनेक से एक होना प्यारो, भक्ति की सच्ची राह पा जाता है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सत्य आनंद एक कर जाता है।।

684 साहिब सबके एक हैं, साहिबन का प्यारा कोई एक।
सतगुरू सतनाम ''वे नाम'' सब्द ले जान, जो चीन्हे सो जाये निजघर एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, एक में सुरति से पाओ निजघर एक।।

685 मंगल मथुरा में एक मंदिर के प्रांगण में, थका हारा भूखा प्यासा टूटा पड़ा ले जान।
मंदिर के मुख्य पुजारी की दृष्टि पड़ी, उसे दया वश आसरा दिया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति में मंगल को ले जान।।

686 मंगल को मूर्तियों की सफाई का काम, सौंप दिया ले जान।
बदल में रहने की अनुमति और, दौ जून का भोजन पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मंगल की सुरति की महिमां महान।।

687 कृष्ण मूर्ति की सफाई करता मंगल, सहसा लग जैसे उसके हाथ कृष्ण पर नांहि।
उसकी सुरति में चिन्तामणि उभरी, उस के गात पर सरसरा रहे हाथ कृष्ण पर नांहि।
यह दश सुरति में प्यारो, मन माया भूला निज को नांहि।।

688 तत्काल मूर्ति के मुख पर दृष्टि पड़, नयनों से रस बरसने का अनुभव ले जान।
टूकर टूकर निहारने लगा, और अधर पर स्वंजन नयन रूप रस ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लागी छूटी मत जान।।

689 सुरति के पटल पर उभरी, चिंतामणि की छवि महान।
आत्म जगी क्षण रस विभौर, सुरति अमृत रस पीती जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मंगल दश पूर्ण सतगुरू ही सकता जान।।

690 मंगल झूम झूम गाता चला, संजन नयन रस भाते जान।
पहुंची पूजा करने एक युवती, उसे (मंगल) आत्म लिप्त भाव विभौर में ले जान।
मंगल की दृष्टि् में युवती, चिंतामणि ही ले जान।।

691 दृष्टि् पड़ते ही अनायास मंगल के मूंह से, चिंतामणि बोला ले जान।
युवति का आश्चर्य चकित होना स्वाभाविक था, मंगल का भ्रम जान युवती चली ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति लगी जान महान।।

692 युवती नाम प्रभा प्यारो, जाने माने विद्वान पंडित भास्कर की धर्म पत्नि ले जान।
बिल्व मंगल उसके पीछे पीछे हो लिया, अपने मकान के मुख्य द्वार पर रूकी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जाई एक पर रूकती जान।।

693 मैंने कह दिया आप को, मैं वह नहीं जो आप ने लिया जान।
प्रभा की मुद्रा तनिक तन गई, चिन्ते मैंने समझ लिया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति फंसी संसार में ता से दूर ले जान।।

694 इस प्रकार आप आप कह कर, मेरी भावना का अपमान ना करो।
तुम्हारे क्रौध का कारण क्या है प्यारी, तुम्हें देखने निहारने बिन क्या करूं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जन्म जन्म की लागी का क्या करूं।।

695 मैने ही तो लिखा था, तुम्हारे लवण्य की स्तुति में।
तो क्या आप ही कवि बिल्वमंगल हैं, प्रभा आश्चर्य में पड़ी देखने लगी आंखों में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्यारो जाग्रत अवस्था में सुरति आंखों में।।

696 तुमने चाहे आंखें फेर ली हैं, इस अपने मंगल से प्यारी।
कारण तो बतला दो, अभी भी सुरति की धारा में बह रहा था प्यारी।
आईये भीतर आईये, और वह भीतर चला आया प्यारा।।

697 वह मन माया से दूर सुरति में अटका हुआ, दर दर भटकने लगा प्यारा।
हर किसी में उसे अपनी प्रेयसी की, छवि दिखाई देने लगी प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, एक को पाना ही सब पाना है।।

698 प्रभा ने एक सुसज्जित कक्ष में, अपने सामने चौकी पर बिठाया।
प्रभा ने कहा कि अब बताईये, बिल्वमंगल की दृष्टि् प्रभा के नयनां में गाढ़ दी।
यह भेद प्रेम का जानो प्यारो, सब से तोड़ो एक में गाढ़ दो।।

699 प्रभा मंगल के हाथों में विचलित हुई, प्रयास निष्फल हुआ ले जान।
बाहें पूरी तरहं से उसके गिर्द बंध गई, वह भिंचने लगी तो बरबस चीख पड़ी ले जान।
चीख चौंका गई बिल्वमंगल की, चौंक का प्रहार उसे चेत में ले आया जान।।

700 चेतना लोटी तो मंगल छटपटा उठा, क्षमा करना देवी क्षमा करना।
बेसुधी में यह पाप कर बैठा, क्षमा करना देवी क्षमा करना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, क्षमा मांगना क्षमा करना।।

701 मोहांधता कामांधता जिसने, विवेक को अंधा कर डाला ले जान।
यह सारा अंधापन मेरी, इन आंखों के कारण ही ले जान।
जो हर कहीं उसके रूप रंस खंजन, नयनों को हेरते निहारते रहते ले जान।।

702 इन्हीं आंखों का दौष प्यारो, ये दुष्ट हैं पापी हैं कहता कुछ देखता जान।
दीवार में ठके दो सूजे दिख गये, उन्हें अपनी ओर खींचा ले जान।
देखते ही देखते अपनी आंखों को, सुअे से अंधा किया ले जान।।

703 देखते ही देखते दोनों नुकीले सूजे, अपनी आंखों में घौंप दिये ले जान।
प्रभा देखती ही रह गई, पल में बिल्वमंगल सूरदास ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अपना किया दुख भौग महान।।

704 सूरदास हो कर मथुरा छोड़ चल दिये, रूनकंता नामक स्थान ले जान।
वहां से भी विदा ली, जा बसे गौघाट हरिद्वार ले जान।
यहां रह अपनी काव्य तथा संगीत साधना प्यारो, चरम सीमां तक पहुंची ले जान।।

705 प्यारो ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष का, जो कोई पावे दात।
उसको कबहुं ना लागती, मन माया लार सूं प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सब्द की प्रेम ही रीत।।

706 सतलोक का सब्द विदेह प्यारो, जिब्या मन पर आवे नहीं।
सतगुरू सुरति सूं मिलती दात यह, काल के हाथ आवे नहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जगे बिन बात बने नहीं।।

707 शब्दै धरति आकाश प्यारो, शब्दे अनहद दात।
सकल सृष्टि सब्द के तांहि, सब्द भेद ही सच्ची दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागे तो बनती बात।।

708 सतगुरू राह निजघर जाना ले जान, त्रिलोक से न्यारा हंसा देस ले जान।
जैसे दूध में घृत छिपा, सार सुरत सब्द में सत्यपुरूष का वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जैसे मैंहदी में लाली का भेद महान।।

709 सत्संग में आ कर करो सुरति महान, सतगुरू चेतन सुरति की महिमां महान।
वाणी स्पर्श चरणामृत से प्यारो, मन मान का संग गया हंसा रूप पाया महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा रूप पाना काम महान ।।

710 सतगुरू की चेतन सुरति में प्यारो, साहिबन सुरती धार।
साहिबन सुरति चेतन कर, ले चले साहिबन दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें साहिबन दरबार।।

711 ऐसी वाणी बोलिये, मन मान जाये सुरति जग जाये।
सोयों को जाग्रत करे, सुरति चेतन कर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति चेतन से काम बन जाये।।

712 आध्यात्मिक व्यक्ति एक खुली किताब प्यारो, कोई भी पढ़ी लेत।
जो कोई दिखावा करे, उसी की आंख में रेत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दिखावा आंख की रेत।।

713 फल कारण सेवे सतगुरू को, कुछ ना आवे हाथ।
मन मान का संग रहे, कभी ना मिलता सतगुरू साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सेवा में मेवा ईक साथ।।

714 सतगुरू ''वे नाम'' सब्द क्या करे, सब्द ना सुरति स्वांसा संग।
लाखों जन्म से मन माया मैले पड़े, कैसे छूटे संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं छूटे मन संग।।

715 सतगुरू 'वे नाम' ऐसा कीजिए, लौभ मोह अहंकार नांहि।
मन मान सूं न्यारा रहे, रहे सुरति मांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति से निज माहिं।।

716 सतगुरू दर्शन को जाईये, दिन में कई कई बार।
'वे नाम' सतगुरू दरस किये, पहुंचो अमरपुर दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्स की महिमां अपार।।

त एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनिः आध।
तुलसी संगति सतगुरू की, काटे कौटि कौटि अपराध।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द पावे कोई बिरला साध।।

त कंई बार नहीं कर सके, दोये बखत करि लेय।
साहिब साधु दरस ते, काल दगा नहीं देय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द काल सूं छुड़ाई लेय।।

त मुट्ठी बांध के आया जग में, हाथ पसारे जाये।
हीरा जन्म अनमोल है, कौडियां बदले जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अनमोल मानव जन्म व्यर्थ जाये।।

त नाम भजो मन बसि करो, यही बात है तंत।
काहे को पढ़ि पचि मरो, कौटिन ज्ञान ग्रंथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम सिमरन काटे मन तंत।।

त चन्दन गया बिदे सड़े, सब कोई कहे पलाश । (पलाश पेड़ की लकड़ी)
ज्युं ज्युं चूल्हे झांकिये, त्युं त्युं महकी बास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति चहुं ओर महके बास।।

717 सरल चित शांत चेतन सुरति, सत्यपुरूष रूप ले जान।
सार सुरत सब्द सत्यपुरूष सुरति, हंसा मन माया पार ले जान।
कोई बिरला सतगुरू पाता है, वह ही मोक्ष विधाता महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलो निजघर आन।।

718 नर ही जग में ऐसा है, जो ''वे नाम'' सब्द बिन प्यासा है।
'वे नाम' में सुरति ध्यान धरा, जा में आप सत्यपुरूष वासा है।
तेरे अपने सारे संग तेरे, कोई मूल सूं टूट ना पाता है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर नर लाखों जन्मों से प्यासा है।।

719 सार सब्द सत्यपुरूष सुरति है, नर को मन माया से पार करें।
सतगुरू की महिमां अपरम्पार, निज संग ले साधक को पार करें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ हर नर जगाने का काम करें।।

720 मन तरंग उलझी हंसात्मां, सतगुरू ही आन उद्धार करें।
हमरी डौर जुड़ी सत्यपुरूष से, ''वे नाम'' सब्द से पार करें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में हर जीव का उद्धार करें।।

721 प्यारो ये जगत में, प्रीति जोत दिखती नहीं।
प्रेम का अकाल पड़ गया जग में, बिन स्वार्थ कुछ जग नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति का भेद कहीं नांहि।।

722 कौतिक रही केतिक गई, माया मान ममता भ्रम जाल हर कोय।
यह सब धोखा मन माया का, अंत में गया पछिताय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द पा बात बन जाये।।

723 बिन जागे मित्रता निभती नहीं, अनहोनी हुई जाये।
जगने पर भी जो जागे नहीं, त्रिलोक और चौथे लोक का अंतर ना पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू मिले बात हुई जाये।।

724 मन मान का संग सामान लाखों जन्म का, आत्म की खबर नहीं।
मन मान की कैद में पड़ी, किसी को खबर नहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, किसी को निज की खबर नहीं।।

725 काज परे काज सरै में अंतरा, संतन सूं भी ऐसा संसार।
वस्तु की बात तूं छोड़ दे, सत्य धारा में यही सार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख हरने पर सतगुरू सूं दूर।।

726 पंख टूटे बाज को, कोई ना लेता मोल।
मालिक सहारे वह रहे, जिस का नहीं कोई मूल्य।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही देता मूल्य।।

727 कम आमदनी या अभाव में, जीवन कठिन ले जान।
जैसे कम जल में मछली,जीवत रहना कठिन तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति ना जागना मृत्यु ओर बड़ना ले जान।।

728 मन की अग्नि लगी रहे, धुआं ना प्रगटे कोये।
हर नर दुखी काल संसार में, और ना बड़ाओ कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागो मन भी चेतन होये।।

729 सब जग सोया है पड़ा, किसी विधि जाग्रत होये।
सतगुरू की संगत करता नहीं, निःशब्द दात पाये ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने ना कोये।।

730 प्यारो मुश्किल आन पड़ी, जग में कैसे दो काम।
सत्य बोलें तो कार्य कठिन, झूठे को मिले ना सतगुरू नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, झूठ को तजना ही सच्च काम।।

731 बिन मूल अमर बेल प्यारो, कृपा मालिक पालत पोषण पाती।
जो रिश्ते नातों का त्याग कर, सतगुरू की हो जाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दात पा पार हो जाती।।

732 आध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि जान सहजता और सरलता।
संतों की पहचान जान तूं, सत्य सुरति आनंद से पा ले पता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भृंग मता से पा ले पता।।

733 सांख्य योग और कर्म योग में किसी एक को पाले, दोनों का फल ले जान।
कर्म योगी और ज्ञान योगी, एक सी महिमां जान।
यह भेद गीता में प्यारो, श्री कृष्ण का कहा ले जान।।

734 योग का पहला स्वरूप प्यारो, कर्म योग की महिमां ले जान।
कर्मयोग द्वारा प्यारो, मन की शुद्धि तथा निर्मल करना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, गुरू कृपा बिन बने ना काम।।

735 योग का दूसरा स्वरूप प्यारो, भावना योग की महिमां ले जान।
भक्ति पूजा अथ्वा प्रेम भाव, सबसे सुखद तथा सरल मार्ग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सुरति चेतन बात बनी मत ले जान।।

736 विरह विराग से प्रेम उपझे, मन की तरंग का मिटना ले जान।
बिन सतगुरू सब्द दात के, मन मान का मिटना मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम जागे भय का निराकरण ले जान।।

737 चौथा योग ज्ञान योग है प्यारो, आत्म की महिमां ले जान।
आत्म मन माया के वश पड़ी, बिन सतगुरू सब्द बात मत ले जान।
मूल सुरति योग सहज योग, भृंग मत्त की महिमां ले जान।।

738 पहिले यह तन मन काग समान प्यारो, करता आत्म घात।
अब यह आत्म हंसा भई, मन माया का छूटा संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा की प्रेम सत्य आनंद बात।।

739 सत्यपुरूष को जो देखे कहे नहीं, हंसा देखा क्षर अक्षर में कहा नहीं जाई।
सूने सो बतावे समझावे नहीं, सुरति की बातें सुरति सूं सुरति को कही जाई।
सतगुरू सुरति सागर को जाना, सुरति की महिमां सुरति सूं जानी जाई।।

740 सत्यपुरूष जाना सब जाना, उसी से सब कोये।
उसी सूं सब होत प्यारो, काल भगवन से कुछ ना होये।
ये भेद 'वे नाम' सतगुरू देते हैं, चेतन सुरति सूं सुरति की महिमां जाने कोये।।

741 पतिव्रता नारी का सुख घना, सतगुरू की साधक होये।
आठ पहर निरखत रहे, सच्ची सुहागिनी सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागे बात बन जाये।।

742 प्यारो सीप समुंद्र की, पानी स्वाति बूंद बिन कोई और ना ले।
खारा जल कभी नहीं लेती, शोभा सागर को देय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द सुरति को चेतन कर देय।।

743 साहिबन घर चौथा लोक प्यारो, अति दूर ले जान।
तहां सिलसिली गैल प्यारो, सतगुरू संग विहंगम चाल से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग विहंगम चाल से पार ले जान।।

744 सब घट सुरति रूप में, साहिबन वासा ले जान।
साहिबन सुरति चेतन सतगुरू सूं, सुरति निरति मैल से प्रगट ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति चेतन की महिमां महान।।

745 हलका भारी साहिब ना, सुरति रूप में जान।
चेतन सुरति की चेतन सुरति जाने, नैनों से कैसी पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति चेतन सूं पाना ले जान।।

746 संतो का सतगुरू एक है प्यारो, वह है सार सुरति नाम 'वे नाम'।
उस का संग सत्यपुरूष सूं, जग को जगावे दे ''वे नाम'' सब्द का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां जान।।

747 पल पल जग में मरना हो रहा, मरन का भेद ना जाना कोये।
सतगुरू सब्द पा जब मरा, पूर्ण मोक्ष का माना होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द पाये पार हो जाये।।

748 मन मान अंधियारा जानिये, सतगुरू नाम प्रकाश।
मन मान जाये ज्ञान उपझे, ता को नाम 'वे नाम' दास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ना है दास।।

749 सत्यपुरूष सब्द अमृत दात है प्यारो, मन मुरीद संसार ले जान।
पूर्ण सतगुरू कोई एक जगत में, ''वे नाम'' सब्द की दात सूं पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति स्वांसा की महिमां जान।।

750 मन माया की आग, फै ली सब आकाश में।
जग में हर ओर गिरें अंगार, सुरति निरति की पकड़ में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया सुरति सब्द की पकड़ में।।

751 जा मरने से नर डरे, मेरी सुरति चेतन धार।
पल मरिहों पल पाइयो, सत्य सुरति आनंद प्यार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति चेतन से पार।।

क कबीर लहरि समुंद्र की, मोती बिखरे आये।
बगुला परख ना जानई, हंसा चुनी चुनी खाये।
सतगुरू ज्ञान की महिमां सत्संग में, ज्ञान मोती पा कर साध पार हो जाये।।

752 ''वे नाम''सब्द की बड़ाई प्यारो, जैसे चुम्बक लोहा भाये।
बिन ''वे नाम'' सब्द की पार ना प्यारो, केता करो उपाय।
साहिब जी : मूल नाम कोई बिरला पाये।।

क कहें साहिब तब पाइयें, जब भेदी होत संग साथ।
सत्यपुरूष तेरे अंदर प्यारे, कैसे आवें हाथ।।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतपुरूष बसें संग साथ।।

753 सतगुरू भेदी सत्यपुरूष का, पा लो ''वे नाम'' सब्द की दात।
सुरति चेतन का संग करो, मन मान का छूटे साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दात से बन जाये बात।।

754 सतगुरू भूखा भाव का, धन मान का भूखा नाहिं।
पूर्ण मोक्ष देने के वास्ते, कुछ पाने का भूखा नाहिं।
सत्यपुरूष से पाया बांटता, अब और कुछ पाने की भूख नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आशा तृष्णा की भूख मिटती नाहिं।

755 सतगुरू द्वार पर पड़े रहो, धक्का भी लो खाये।
कभी तो कृपा भरसेगी, हंसा मोती हो तो खाये।
वे नाम ध्वणि निवाज़ि, जो संगत छोड़ी ना जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सूं सेव कमाये।।

756 जग जीव आया निज धाम से, जाना है उसी देश।
मन माया में बसि गया, हरि के झूठे स्वपन्न लोक देश।
मन माया भरमाया, भूल बैठा निज सच्चा देश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें निज देश।।

757 सतगुरू की बात को पूर्ण मान ले, कांटों के बदले बोवो तुम फूल।
ता को फूल से फूल हैं, भूले जा उस के कांटे त्रिशूल।
अपनी अपनी करनी, कांटे अपने अपने बोवे फूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख देने से पाओ धूल।।

क आवत गारी एक है, उलटत होयें अनेक।
कहें साहिब नांहि उलटिये, रहे एक की एक।
आवत गारी पर सुरति मत धरो, रहे भाव एक से एक।।

758 ऐसी वाणी बोलिये, सुरति का जागन होये।
सुरति चेतन ''वे नाम'' से हर एक शीतल होये।
सतगुरू सब्द बिन बात ना, लाख करे जे कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं जागन होये।।

759 जीव तन खातिर सब कुछ करता, आत्म की ना सोच विचार।
ताहि से मन मान ना छूटे, पार जाने को नहीं तैयार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मोह वश पड़ा डूबन को तैयार।।

760 ''वे नाम'' सब्द बराबर तीन लौक नांहि, शब्दों में मत तोल।
हीरा का भी मोल, सब्दहिं मोल ना तोल।
सत्यपुरूष का वास 'वे नाम', कैसे कौन करेगा मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द का मोल ना तोल।।

761 सुख दुख केवल संसार है, रिश्ते नाते संग साथ।
एक संत सेवादार परमार्थी, दुख सुख में देवें साथ।
सुरति जगाने वाला एक 'वे नाम', कभी ना छोड़े साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू का पकड़ो हाथ।।

762 सुरति महरमीं कोई ना मिलया, जो मिलया सो मन गरज़ी।
तीन लोक की रीत यहि, जिस को देखो वो गरज़ी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बनावे बे ग़रजी।।

क सख सोने की सुन्दरी, आवे वास सुवास।
जो जननी है आपनी, तऊ ना बैठे पास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जननी निष्चल प्रेम सुवास।।

क नारी निरखी ना देखिये, निरखी ना कीजै गौर।
देखत ही ते विष चढ़े, मन आवे कछु और।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पर नारी नर्क की डौर।।

क चींटी चावल ले चली, बीच में मिल गई दाल।
कहें साहिब दो ना मिलें, ईक ले दूजी डाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द पा शब्द बहा डाल।।

763 'वे नाम' कहें साहिब दोनों ना मिलें, ईक मूल दूजी डाल।
एक और 'वे नाम' सतगुरू हैं, दूसरी ओर संसार इक ले दूजी डाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, द्वैत में आत्मां भूली सुरति चाल।।

764 बहते को मत बहने दो, यह नहीं संतन की रीत।
बात से ज्ञान से प्रयत्न करो, सच्ची प्रीत की सच्ची रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्युं ज्युं ज्ञान बड़े प्यारो त्युं त्युं जागे प्रीत।।

765 दौष पराया देख कर, मन मान की पूजा होये।
दौष निज में देखना आ गया, पल में जागन होये।
ये बात पूर्ण सतगुरू सुरति सूं प्यारो, जब सार नाम दात पा जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही पार करावे।।

क जेती लहर समुंद्र की, तेती मन की दोड़।
सहजै हीरा नीपजै, जो मन आवे ठौर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन दौड़ में मिले ना ठौर।।

766 पहिले यह मन काग़ था, करता जीवन घात।
सार दात से हंसा भया, अमृत की पाता दात।
हंसा तो मोती चुगे सतलोक की दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द से बने बात।।

767 मन तो पंछी समान प्यारो, उड़ता बैठता चलता मन अनुसार।
कभी उड़ि आकास को जाता, कभी मन माया भाव अनुसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में रहो सतगुरू अनुसार।।

768 सतगुरू मिले बात बने, वे ले चलें उस पार।
बिन ''वे नाम'' दात के, कोई ना उतरे पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें साहिबन के दरबार।।

क मन मुरीद संसार है, सतगुरू मुरीद कोई साध।
जो माने सतगुरू वचन को, छोर गम्भीर अवस्था के साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावे मन माया साथ।।

769 मन दाता मन लालची, मन हरि मन राजा और रंक।
जिस को ''वे नाम'' दात मिले, सत्यपुरूष निजधाम हंसों का पावे संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग जीव सतगुरू साहिबन का पावें संग।।

770 ''वे नाम'' सब्द दात को पाई के, दूजा पाये दे बहाये।
कर्म धर्म जप तप तजो, सुरति सब्द स्वांसा संग समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति स्वांसा उर्दमुखि हो जाये।।

क मरते मरते जग मुवा, मरन ना जाना कोये।
ऐसी मरनी ना मरा, बहुरि ना मरना होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो जागे बहुरि ना मरना होये।।

771 सतगुरू बैचारा क्या करे, जे शिष्य सुरति से ना पकड़े ज्ञान।
सतगुरू सूं प्रेम प्रीती नहीं, सुरति में ना उतरे ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ज्ञान की महिमां जान।।

772 सुरति में ज्ञान ना उपझे, सुरति में ना उतरे परतीतं।
ताको सतगुरू क्या करे, जा की मन माया संग प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं जोड़ो तुम प्रीत।।

773 पाहन को हर कोई पूज रहा, पार उतरने की कोई नांहि बात।
आशा तृष्णा बिन आंखों के, लाखों जन्मों की बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू सूं बने बात।।

774 प्रेम प्रेम जग कह रहा, सच्चा प्रेम ना चीन्हे कोये।
जा प्रेम से साहिबन दर्श मिले, सच्चा प्रेम जानो सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सांचा प्रेम सतगुरू सूं होये।।

775 जो दिखता सो माया प्यारो, माया भेद जाने कोह।
जो सुरति जगा ना सके, मन मुरीद कहावे सोह ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मुरीद सूं कैसे संग हो।।

776 माया का सुख कुछ दिन प्यारो, यह सब मन की भूल।
सपने समान सब राज धन, इस में सुरति डालना भूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, औंकार भक्ति करना भूल।।

777 धन स्त्री पुत्र घर–बार, मोटी माया सहज तजनी जान।
अहंकार सूक्ष्म झीणी माया, तजनी कठिन तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, झीणी माया तजनी कठिन तूं जान।।

778 धन स्त्री पुत्र घर बाहर, माटी माया जान।
धर्म अर्थ काम मोह, तजना कठिन तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज को जगाना कठिन तूं जान।।

779 निरख परख कर सतगुरू कीजिये, पानी पीजै छानी।
बिना सुरति विचारे सतगुरू करे, काल की महिमां जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, छूटे नांहि चौरासी खानी।।

780 भेष से परख मत कीजिये, पा लीजिये ''वे नाम'' सब्द का दान।
बिना कसोटि नाहिं परख है, कंचन की पहचान।
खुद की परख़ कर लीजिये, इसी से दूजे की होत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से होत पहचान।।

781 पूर्ण सतगुरू भरम निवारे, दिखावे प्रेम प्रीत की राह।
निज सुरति में ध्यान कर, पावे सत्य प्रेम की राह।
लालच छूटे बात बने, सतगुरू शिष्य एक ही राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं मिलती राह।।

र देनहार कोउ और है, देता है दिन रैन।
लोक भरम हम पर करें, ताते नीचे नैन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अभिमानी के नीचे नैन।। रहीम जी

782 मन माया सूं मल उपझै, सुरति सूं लीजिये मल धोई।
चेतन सुरति ''वे नाम'' सब्द की, पल में निर्मल होई।
सत्यपुरूष एक ही करता जान, सतगुरू पर उनकी कृपा होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू कृपा से सुरति निर्मल होई।।

प पलटू ऊंची जाति का, मति कोई करे अहंकार।
साहिब के दरबार में, केवल भक्ति प्यार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भक्ति मिटावे अहंकार।।

र दोनों रहिमन एक से, जो ली बोलत नांहि।
जान परत है काग कोयल, ऋतु बसंत के मांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर गुण सब में नाहिं।। रहीम जी

783 बिन सतगुरू अपना कोई जग है नांहि, भगवन से झूठा नेह।
सतगुरू में सत्यपुरूष वासा, उन्हीं से कर ले नेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नेह से मिलता नेह।।

र जो विषया संतन तजो, मूढ़ ताही लपटाये।
ज्युं नर डारत वमन कर, स्वान स्वाद सूं खाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काग़ा को बिष्टा भाये।। रहीम जी

र कहु रहीम कैसे निभे, बैर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सज्जन और दुर्जन में कैसे निभे संग।। रहीम जी

784 कर्म रोग अति मीठा प्यारो, तजना कठिन ले जान।
''वे नाम'' सब्द पांच तत्व से मुक्ति, औषध का काम महान।
यह तन पांच तत्व का प्यारो, ''वे नाम'' सब्द मिटावे मन मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मिटावे मन मान।।

785 रूठे सज्जन अति प्यारे, उनके अंदर अति प्यार।
''वे नाम'' सब्द सुरति को जोड़ता, बनाता सुरति धार।
रूठना प्यार की धार प्यारो, पल में जोड़ो तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सूं प्रेम की जोड़ो तार।।

786 सुरति का मैहरमी कोई ना मिलया, जो मिलया सो गरज़ी।
दुख भण्झन सुरति नाम, सुरति सब्द को स्वांसा जोड़े सच्चा जानो दर्जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सूं प्रेम की दो अरज़ी।।

787 सत्य सब्द जो घट बसे, ता संग मन निवास।
मन थिर होवे ''वे नाम'' सब्द से, मूल सुरति में करे निवास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सुरति में करें निवास।।

788 मैं मिली जाऊं पाये पिया अपने, चेतन सुरति का परम सुरति में निवास।
''वे नाम'' सब्द सुरति धरा, भयो पाप का नाश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से निजघर वास।।

789 अमरपुर के सतगुरू वासी, वही है इनका डेरा।
हर पल सतगुरू सुरति करती, सत्यलोक का फेरा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतलोक का सच्चा फेरा।।

790 ना मिलती अगर ''वे नाम'' दात तेरी, तो क्या थी तीन लोक में औकात मेरी।
सभी हंसों को हर पल जगाने हैं आते, माया में पड़ा हर नर सुनता ना तेरी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चलो निजघर छोड़ो मेरी तेरी।।

791 सुरति मन माया में फंसी, तां सूं पड़ी गया अति दूर।
सुरति ''वे नाम'' सब्द बांध स्थिर करो, पाओ आठों पहर हुजूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब जी आठों पहर हुजूर।।

792 सब कुछ आया उस एक से, डाल पात फल फूल।
उसी का ''वे नाम'' सब्द सुरति से पकड़ लो, वही तो उनका मूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही साहिबन मूल।।

793 सतगुरू सब्द, भक्ति उन का मूल।
जब मूल को पकड़ा लिया, अखिल ब्रह्मण्ड भक्ति का मूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अखिल ब्रह्मण्ड भक्ति का मूल।।

क सुमिरन सुरत लगाये के, मुख से कुछ ना बोल।
बाहर का पट बंद कर, अंदर का पट खोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंदर की ज्योत अनमोल।।

क कबीर निर्भय नाम जप, जब लगी दीवे बाति।
तेल घटे बाती बुझे, सोवेगा दिन राति।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जागे निस दिन राती।।

794 स्वांस स्वांस 'वे नाम' कह रहा, हर पल सुरति ढोल।
स्वांसा मन संग खाली जा रहा, हर स्वांस सुरति मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर श्वांस में सुरति अनमोल।।

795 दुनियां सारी बांवरी, पांच तत्व में ध्यान लगाये।
निज अंदर नहीं झांकती, जहां पल में ही मिल जाये।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे निज में ना झांका जाये।।

796 बाहिर के मंदिर सब झूठ हैं, अंदर का पट खोल।
वहां ही मिलता वह आप है, सुरति निरति का सब खेल।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, नर भीतर सुरति सूं साहिबन मेल।।

797 साहिबन संत ना पत्थर ना धूल, नांहि बनें जल समान।
वे तो पूर्ण सहज बनें, सत्यपुरूष समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सहज सतपुरूष समान।।

798 ममता मुऐ एक फल, निर्बन्धता की प्राप्ति महान।
अहंकार मुऐ फल चार, धर्म अर्थ काम मोक्ष महान।
यदि भाव भाई समान मरे, हानि जान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हानी लाभ जानो ईक समान।।

क हीरा पड़ा जु गैल में, दुनियां जा में डोल।
जहां हीरा का पारखी, तहां हीरा का मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जाने मानव जन्म का मोल।।

799 ''वे नाम'' सब्द हीरा जानिये, पारखी कोई कोई जाने मोल।
तन मन धन अर्पित करो, जानें ''वे नाम'' सब्द का मोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जानो ''वे नाम'' सब्द का मोल।।

क चौसठ दीवा जोयके, चौदहं चन्दा मांहि।
तेहि घर किसका चांदना, जिहि घर सतगुरू नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतन बिन जग अंधकार माहिं।।
(सभी कलाओं का ज्ञान, चौदहं विद्याओं में भी निपुण होना)

क कबीर सतगुरू की भक्ति बिन, ध्रिग जीवन संसार।
धुआं का सा घौरहरा, बिनसत लगे ना बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द भक्ति आधार।।

टोटे में भक्ति करे, ता का नाम सपूत।
मायाधारी मसखरैं, कैते गये अउत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मसखरे पूत कपूत।।

क जाति वरण कुल खोय के, भक्ति करे सुरति लाये।
कहैं कबीर सतगुरू मिलै, आवागमण नसाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जाति पाति कुल जन्म मरन भरमाये।।

800 भक्ति भक्ति सब कोई कहे, सच्ची भक्ति ना जाने कोये।
सच्ची पूर्ण भक्ति तब मिले, जब 'वे नाम' सतगुरू कृपा होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू बिन बात बने ना कोये।

801 जब तलक सुरति, विषयों से दूर हो जाती नहीं।
तब तलक सुर, मन माया सूं छूट पाती नहीं।
सुरति जागे बिन, एकाग्र होती वृत्तियां नहीं।
निजधाम जाये बिना, सत्यपुरूष पाता नहीं।
सत्यपुरूष पाये बिना, पूर्ण मोक्ष पाता नहीं।।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन मोक्ष नहीं।।

802 सत्यपुरूष सूर्य समान जब, सतगुरू चंद्रमां जान।
साधक नैन चकौर प्यारो, सुरति चेतन सूं चेतन जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां महान।।

803 ''वे नाम'' दात पाये तन रोग ना व्यापै, करौना कोविड मिट जाई।
अठवन पठवन दृष्टि् ना लागै, निजघर वापिस जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे माया भरमाई।।

804 आदि नाम ही ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' आ जग खोला।
दात पाई मन मान गया, सुरति चेतन द्वार को खोला।
ऊंचा वही जिस नाम है जाना, बिन नामे द्वार कोन आ खोले।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन नामे कोन द्वार खोले।।

805 ईच्छा दुख का मूल प्यारो, माया मन का खेल।
जीव तूं तो हंसा सुरति रूप है, सुरति मन का कैसा मेल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,आत्म में मन माया की मेल।।

क मरकट मुट्ठी स्वाद ना बिसरै, घर घर नटत फिरी।
कहें साहिब नलनी कै सुवना, तोहि कोने पकरी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लालच ही निज को आन पकरी।।

806 जीव तीन लोक में प्यारो, आत्म माया संग निज को है बांधा।
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को है बांधा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म निज को आप है बांधा।।

807 जब लग सत्य सूं परिचय नहीं, भक्ति भ्रम ले जान।
नाचना गाना जप तप और दान, सब भ्रम के रूप महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य भक्ति बिन जग भ्रम ले जान।।

808 समस्त कर्म काण्ड भ्रम प्यारो, भ्रम कारण सब कर्म ले जान।
योगी जपी तपी गुफ़ा में, भ्रम से कर्म ले जान।
जब तक चाह निराकार पाने की, तब तक भ्रम में उसे जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द बिन हर नर भ्रम में जान।।

809 जब तक शरीर की आस प्यारे, तब तक निज को भ्रम में जान।
जब तक ''वे नाम'' सब्द दात ना पाई, तब तक सब भ्रम ले जान।
तन माया ही जान प्यारो, जग में वस्तु स्थान की चाह भ्रम ले जान।।

810 हर नर निज को भूल चुका है, स्वंय को भ्रम में फंसाया ले जान।
जैसे सोना कांच मकान में, प्रतिमा देख भूला ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज की भूल से दुख ले जान।।

811 अमरपुर ले चले परमपुरूष जी, जहां नहीं संकरी गलियां सजना।
खुला आकाश तहां है प्यारो, कोई अड़बढ़ नहीं चढ़ना।
''सत्यपुरूष सब्द'' सब काम करत है, परमहंसा दर्शन पाना।
जहां परमहंसा समाज सभी है बैठा, वहीं पुरूष के दर्शन करना।
सत्यपुरूष संग ही प्यारो, अमरपुर भवसागर होत है तरना।।

812 ''घर और अधर में सहज असस्था का डेरा, भ्रम जान तहां कुछ नांहि।
सुरति धार उपर को बहती, सकल भरपूर नूर बिन कुछ नांहि।
सुरत कमल भरपूर देखा, जब सुष्मिना पल्टी अब सुन्न में घर नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुष्मिना पल्टी तो सुन्न घर नाहिं।।

813 सतगुरू तो सतपुरूष रूप हैं, जिन की महिमां अपरम्पार रे।
उनकी आंखें सतपुरूष की आंखें जान कर, उनकी आंखों में दृष्टि् डाल रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सुरति डाल रे।।

814 सतगुरू वाणी में सतपुरूष चेतन सुरति, महां चेतन वाणी में सुरति डाल रे।
उनकी चाल में सतपुरूष सुरति, चरणों में सिर डाल रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति में सुरति डाल रे।।

815 चूहे को मिलेगी कातर, राण शह हो गया।
जिस फल लागा झुक गया, जिस पाया अकड़ गया।
नीचे को जो उतरा, अकड़ को निज ही पा गया।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, त्याग समर्पण सूं झुकना आ गया।।

816 सिमरण का झाडूं सुरति संग, आत्म को कर साफ़ रे।
मन मान कचरा आत्म में, हंसा को सार सब्द संग जोड़ रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महांचेतन सुरति आत्म को हंसा कर डाले रे।।

817 आंखों के विकार छोड़ दे, मन के सब विचार छोड़ दे।
बिन मांगे बिन यत्न के, संग सतगुरू चेतन सुरति के सुरति जोड़ दे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज सुरति सतगुरू चेतन सुरति संग जोड़ दे।।

818 आठों पहर सतगुरू निहारिये, जैसे चकौर निहारत चाँद रे।
सुरति ईक पल भी टरत नांहि, जैसे पतंगा की जोत सूं रे।
सुरति में चेतन सुरति सतगुरू की, निजधाम का ही हो जा रे।।

क अधिक स्नेहि माछरी, दूजा अल्प स्नेह।
प्राण तजे पल बिसरे, मर कर तजे ना नेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूर्ख जीव तजे ना मोह।।

क प्रीती मोह संसार में, नाना विधि की सोये।
उत्तम प्रीति सूं जानिये, ईक सतगुरू से जो होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सांचा मित्र सतगुरू ही होये।।

819 शीष सुरति सूं उतारे भुई धरे, सतगुरू का हो जाये रे।
'वे नाम' देत संदेश सुरति सूं, ऐसा होये दात पा जाये रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान छूटे निजघर जाये रे।।

820 सुरति धार प्रेम की प्यारो, मन माया से ना ही काम रे।
सतगुरू सब्द में सुरति रहे, सब्द सुरति स्वांस से बने काम रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शीष कटाने से बनें काम रे।।

821 जैसे मृग का प्रेम बांसुरी धुण से, खोये प्राण मणि ईक साथ रे।
निज को जान जोड़ सुरति को, सतगुरू सुरति धार इक साथ रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महांचेतन सुरति पार करावे रे।।

822 डाल पांव प्रेम पायल, आंखों में धैर्य रूपी काजल रे।
मांग में शील रूपी सिंदूर, सतगुरू चेतन सुरति पति मिलन का सुख रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति पीव मिलन का सुख रे।।

823 सुरति जगी मन चेतन हो, मूल सुरति में समाये रे।
तब सब कुछ प्राप्त हो जाता, काम क्रौध मद लौभ बह जायें रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से काम क्रौध बह जाये रे।।

824 प्रेम प्याला सुरति धारा सतगुरू की, सार सब्द सुरत सब्द से पाये।
जो शीष दक्षिणा दे सके, साहिबन दात को पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से नर पार हो जाये।।

825 सोहि रूप निःतत्व साहिबन का, ''वे नाम'' सब्द में धुण का सार।
देह नाम सूं काल जाल में, ''वे नाम'' सार नाम सूं पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करावे भव पार।।

826 भव सागर तारन ग्रंथ जान यह, 'वे नाम' से ''वे नाम'' सब्द संदेश।
जो सब्द सुरति स्वांसा एक तार, सो पहुंचे सत्यपुरूष दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष सब्द सूं मिलता संदेश।।

827 तीनों को सुरति धारा में रखो, हर ओर सहजता शान्ति आनंद की बास।
जब जग के हर फूल में प्यारो, मन माया का रंग और बास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर ओर फैलाओ महांचेतन सुरति बास।।

828 वासुदेव श्री कृष्ण गुरू रूप में, अर्जुन को देत ज्ञान रे।
जो पितरों की भक्ति करे, पित्तर लोक को जाये रे।
जो जिस की भक्ति करे, उसी योनि में जाये रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन माया जग कुछ नाहिं।।

829 नर चाहता सीधे भगवन ध्यान, भक्ति से शक्ति लेने की बात रे।
शब्दा–तीत अक्षर–तीत, बिन सतगुरू बने ना बात रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू बने ना बात रे।।

830 सतगुरू परमपुरूष एक तूं जान, इन में कुछ भेद ना मान रे।
भेद करे मूर्ख कहलाये, परमपुरूष का सतगुरू ही श्रेष्ठ रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष तदरूप रे।।

831 विदेह नाम जो मुक्ति दात है, कोई विरला पाता दात रे।
बिन सतगुरू बात बनती नहीं, ''वे नाम'' सब्द बिन नहीं कोई पार रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन कोई ना पार रे।।

832 बिना यत्न सतगुरू सुरति चेतन करता, उनमें अदभुत शक्ति प्रवाह रे।
वह सुरति के खेल से, दिव्य शक्तियों का करते संचार रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महां सुरति में चेतन सुरति प्रवाह रे।।

833 सुरति जगती नाम दान सूं प्यारो, अंदर के शत्रु लेता जान रे।
सुरति को स्थिर करो, सतगुरू में दे समा रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सतगुरू में समाये रे।।

834 सतगुरू दर्शन से, सुरति चेतन सतगुरू ध्यान रे।
जिस का ध्यान उसी में सुरति, पल छिन आवे जावे रे।
बिन खबर के संग खड़े साहिब जी, अति आनंद दे जावे रे।।

835 मन मान का मिटना, सुरति की महिमां महान।
सुरति जगे, तो मन मान का मिटना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति जागे तो मिटे मन मान।।

836 सुरति की आंख से देखना, अति सूक्ष्म ध्यान ले जान रे।
सतगुरू चेतन सुरति परवाह साधक में, मन माया का संग झूठा जान रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति आत्म की आंख रे।।

837 भव सागर तारनहार, ''वे नाम'' सुरति धारा यह ग्रंथ रे।
'वे नाम' से ''वे नाम'' सब्द दात, सत्यपुरूष सूं पाई दात जान रे।
यह सब्द सुरति स्वांसा एक तार, जा पहुंचे सत्यपुरूष दरबार रे।।

838 हर फूल को खिलने के लिये, पांच तत्व का मिलता संग।
क्षर अक्षर को निःअक्षर बनाने के लिये, चाहिये सतगुरू चेतन सुरति संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं कर सुरति संग।।

839 गन्ने के रस को प्यारे, दे दे कुज्जा मिशरी रूप।
अक्षर की धारा को प्यारे, वैराग़ प्रेम प्रीति सहजता का दे रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महांचेतन सुरति रूप।।

840 हर नर मन मान आकाश समाना, भाव से खाली आत्म रूप।
पांचों तत्वों से पार ''वे नाम'' सब्द सुरति से, सब्द से पहचान निज रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति पहचान निज रूप।।

841 निज सुरति धारा सब्द संग, प्रकटावे सब्द में सतगुरू रूप।
देखना सुनना बोलना चुप रहना, जान अक्षर के रूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर दात साहिबन रूप।।

842 सहज सहज सब कहत हैं, सहज मिला ना एक।
सहजता का भाव तब प्यारो, जब 'वे नाम' सूं पाओ सुरति चेतन सूं एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान छूटे तो मिले एक।।

843 सुन्न गगन में शब्द की धुण उठत है, सो सब अक्षर में आवे।
सुनने वाला बोल कर प्यारे, क्षर का रूप दे जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द निःअक्षर में आवे।।

844 बिन जाने परख़ सतगुरू मत कीजिये, जग में हर पग़ पे धोखा जान।
बिन छाने जल मत पीजिये, जिस में किटानूं महान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू जग रोग़ी हुआ जान।।

845 ''वे नाम'' सब्द पूर्ण मोक्ष दे जावे, ता से आत्म होई रे।
मन मान मिटे, पल में आत्म हंसा होई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं आत्म हंसा होई रे।।

846 बिन मन मान मिटे, कैसे कोई पार होई रे।
सतगुरू का संग किये बिना, निजघर की सुध बुध खोई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं निजघर की सुद्धी जागे रे।।

847 तीन लोक में हर एक की, किसी ना किसी वस्तु की भूख प्यास रे।
'वे नाम' पूर्ण सतगुरू पाले, मिटे सब भूखों की भूख प्यास रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मिटा ले निज की भूख प्यास रे।।

848 भूख में देवी देव प्यारो, हर कोई भूखा चारों ओर।
''वे नाम'' सब्द बिन भूख ना जाये, चाहे अंदर गेमों नौं द्वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल सतगुरू सांचा द्वार।।

849 नाम का खोटा सिक्का बांध कर, कैस मिटेगी मन माया की भूख।
''वे नाम'' सब्द की सच्ची दात बिना, मिटी ना राजा ईंद्रादि की भूख।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, देवी देवो सूं मिटे ना माया तृष्णा भूख।।

850 सच्ची दात का सुमिरन कर ले, तेरा आवागमण मिट जाई।
सतगुरू सुरति सब्द सात चक्र से पारा, आठवें चक्र में जा पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आठवें चक्र से साधक निजघर पा जाई।।

851 जैसे घड़ा नीर का फूटे, पत्ता टूटे डार से।
सब कुछ छोड़ के जाना सब को, तीन लोक भी मिट जायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं बात बन जाये।।

852 मोह माया को तज डालो, रिश्ते नाते संग साथ।
'वे नाम' से प्रीति कर ले प्यारे, चेतन अमृत सुरति संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर लोक ले जावे सतगुरू साथ।।

853 धन्य धन्य घर वह जान, जिस घर 'वे नाम' सतगुरू चरण पड़ें।
चरणामृत रूपी महां प्रसाद पा जाये, देवी देव रहें दूर खड़े।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चरणामृत सूं दुख दर्द रहें दूर खड़े।।

854 काम क्रौध नाम दात से दूर करें, पावें संतोष विश्वास संग खड़ा।
आत्म से हंसा करे, पास में देखो साहिब खड़े।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल साहिबन संग खड़े।।

सहज से अंर्तमुखि

855 भौतिक आध्यात्मिक अथ्वा, दिव्य शक्तियों की सिद्धियों के लिये।
ध्यान परम आवश्यक, चित्त को स्थिर करने के लिये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति को चेतन करने के लिये।।

856 स्थिरता सुरति सूं बने, उसे ध्यान करना ले जान।
धारण श्रद्धा विश्वास आने पर, ध्यान की महिमां ले जान।
यह भेद 'वे नाम' सतगुरू देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन बात बनी मत जान।।

857 विश्वास भरोसे के बल पर, चित्त को सुरति से बिंदु पर डाल।
उसी बिंदु पर ध्यान रमा रहे, सब्द सुरति स्वांसा बिंदु पर डाल।
मन स्थिर मूल सुरति में जा समाये, तब सुरति चेतन सुरति में दे डाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीनों को एक बूंद में डाल।।

858 ध्यान की इस अवस्था में प्यारे, सतगुरू अंग संग ले जान।
आत्म शुद्धि की अनुभूति मिलती, सतगुरू चेतन सुरति में समाये ले जान।
ध्यान भक्ति का अटूट सम्बंध प्यारो, सतगुरू को मूल ध्येय ले जान।।

859 श्रद्धा विश्वास से अभ्यास करना, ग्याहरवें द्वार संग में सत्यपुरूष ले जान।
सौलहं सूर्य की जोति दे कर, साहिबन संग में निजघर ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन रूप ले जान।।

860 सहज रूप से ब्रह्म मुहूर्त में ध्यान, आज्ञा चक्र जा सतगुरू को पाना ले जान।
सुरत कमल ग्याहरवें द्वार में, विहंगम चाल से सत्यपुरूष संग निजधाम ले जान।
ध्यान से दुखों को स्थूल वृत्तियों का, पूर्ण नाश ले जान।।

861 पेट भरा हो या हो खाली, भक्ति भाव कहीं ना।
भक्ति प्रेम की जोत जगाती, मन माया सूं जोड़ा जब ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द बिन बात बने ना।।

862 औंकार भगवन होने पर भी, नांहि गर्व को लेस।
भार उठाहें तीन लोक का, ता पर कहावत सेस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विनम्रता में ही महानता का लेस।।

863 दुर्जन से प्रेम प्रीति कुछ नांहि, स्वान सी विपरीति जान।
काटे चाटे दुख होत है, सुख कभी मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख एक समान जान।।

क सतगुरू ऐसा कीजिये, लोभ मोह भ्रम नांहि।
दरया सों न्यारा रहे, दीसे दरिया मांहि।
सदा तृप्त व संतुष्ट, कीचड़ में रहे कमल के मांहि।।

864 पूर्ण ज्ञानी पूर्ण संयमी, पूर्ण अनुभवी रहे सागर के माहिं।
शिष्य में पात्रता सतगुरू में पूर्णता, रहें हर पल सुरति माहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर पावें महांचेतन सुरति माहिं।।

865 गुरू लौभी शिष्य लालची, दोनों लूटन की राह।
दोनों ठग जग जानिये, एक ना सच्ची राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द दिखावे सच्ची राह।।

866 गंगा धारा में बहती लकड़, रूक ना जाये डूब ना जाये कहीं रेत में धस जाये।
यदि उठा ना लिया जाये, या किसी भंवर में ना फंसे तो साहिब को पा जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात पायें सुरति चेतन से निजघर को जायें।।

867 यदि तुम भंवर में ना फंसो, या कहीं भीतर से सड़ने ना लगो।
तो तुम भी सीधे सार सब्द संग, सच्चे निजघर अमर द्वार लगो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू समर्पण से अमर द्वार लगो।।

868 नदी किनारे रूक जाना, दस ईंद्रियों और उनके विषयों में फंस जाना ले जान।
डूब जाना ईच्छाओं का दास, ध्यान सुमिरन की क्षमता खो जाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सेव निजघर जाना ले जान।।

869 रेत में फंस जाना प्यारो, स्वार्थी हो जाना ले जान।
अपनी ईच्छाओं की पूर्ती, अपनी प्रतिष्ठा का सोचना ले जान।
आत्म जाग्रति के लक्ष्य को, नर भूला ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में नर भूला ले जान।।

870 जल से निकाल लिये जाना, साधना अभ्यास का त्याग ले जान।
मन मान का बोल बाला, मंद बुद्धि लोगों का संग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति स्वांसा सब्द में हर पल ले जान।।

871 भंवर में फंसा वे नर जान प्यारे, जो पांच ईंद्रियों के वश पड़ा ले जान।
सुस्वाद भोजन विषय वासना आशा तृष्णा, और निंद्रा में फंसा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग करे काम महान।।

872 चौथा लोक अमरलोक कहलाई, अमृत पान करे तहां जाई।
तीन लोक के भगवन मन जानो, अमरलोक का भेद ना देई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं बात बन जाई।।

873 ज्ञानी मुणि पंडित और ध्यानी, बिन सार नाम मिले ना निजघर भेद।
''वे नाम'' सब्द बिन तीन लोक से पार ना, फिर कैसे पावे निजघर भेद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं पा ले निजघर का भेद।।

874 जो ना होये सतगुरू का दासा, संग रहे यम की फांस।
सार सुरत नाम दात पाये 'वे नाम' से, पल में छूटे यम की फांस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पल में छुड़ावें यम की फांस।।

त चार अठारहं नौ पढ़े, खट पढ़ (छे शास्त्र) खोया मूल।
सार सब्द चीन्हे बिना, ज्युं पंछी चण्डूल।
चार वेद, अठारहं पुराण, नौ व्याकरण, छे शास्त्र ना जानें मूल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, राग़ वैराग़ अनुराग़ ना जानें साहिबन मूल।।

875 अजर अमर सत्यलोक प्यारो, सुमिरन सुरति जगाई।
बिन कर मुख मन से प्यारो, स्वांस सब्द संग सुरति जगाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द सुरति आत्म जगाई।।

876 धरती आकाश तहां ना प्यारो, अजर अमर वह देश।
जो हंसा उस देश से हो आवे, जग में देवे सच्चा संदेश।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू देवें सच्चा संदेश।।

877 सत्य नाम की महिमां अपरम्पार है, सतगुरू संग साहिबन दरबार।
कहें 'वे नाम' जग वासियो, 'वे नाम' सतगुरू पावे फैरा कंई कंई बार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू संग जाओ सच्चे दरबार।।

878 ''सार सुरत नाम'' महां अमृत दात, मन की तृष्णाओं को दे मिटाये।
''वे नाम'' सब्द पाये बिना, आशा तृष्णा को कोन दे मिटाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द आशा तृष्णा मिटाये।।

879 मन बैरी मत जान प्यारे, उस का खेल उलझाना ले जान।
नाम दात जब पास में, मन चेतन हो मूल सुरति समाता ले जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, नाम दात सूं मन चेतन शांत होता जान।।

880 खेल काल का कठिन प्यारो, सुरति में गाओ सब्द ''वे नाम''।
''वे नाम'' सब्द में साहिबन सुरति, दात अनमोल पाई सतपुरूष सू 'वे नाम'।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ''वे नाम'' ही सतपुरूष जी का नाम।।

881 कर दीदार अंदर की आंख से, दसवें द्वार में महल प्यारा।
सहज शांत वैरागी बन जाओ, 'वे नाम' में वासा सत्यपुरूष प्यारा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरत कमल सतलोक द्वारा।।

882 ऊंचा श्वेत रंग प्यारा, महां चेतन सुरति से सुरति रूप न्यारे।
हंसा रूप में संत तहां पहुंचें, देत दीदार साहिब जी प्यारे।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू में पायें सतपुरूष दरश न्यारे।।

883 भव सागर ईक अगम पथ, नदियां आन मिलत अनेक गंभीर।
नाव ना केवट नर घनेरा, हर ओर दिखें वे पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना उतरे पार।।

884 धन दोलत की बात नहीं प्यारो, संग ना जात शरीर।
नर्क कुण्ड में नर को डालें, जब निज को माने शरीर।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, चिता में जल मरे शरीर।।

885 चाह मिटे जब ''वे नाम'' सब्द है संग, सुरति चेतन बे परवाह।
वे ही जान साधक प्यारो, जिस संग नांहि है कोई चाह।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द सुरति ही मिटावे चाह।।

886 इस जग अंदर सतगुरू सूं प्रीति, कठिन जान मेरे भाई।
बिन लगन कारज हो कैसे, आने जाने में प्रलयः हो जाई।
''वे नाम'' दात पाने से प्यारे, बिगड़ी बात बन जाई।।

887 पपीहा स्वाति बूंद का प्यासा, पिया पिया रटि जाई।
बूंद बिन प्राण तलफत दिन राति, प्यास ही मरि जाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सत्य सुरति ही प्यास मिटाई।।

888 प्यारो मृग संगति स्नेही, संगति सुनन को जाई।
ईन्द्री स्वाद में प्राण दान दे, मरने का भेद ना पाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द बिन मरने का भेद ना पाई।।

889 सुमिर सुमिर करी रैन गुज़ारो, दिन काटा नहीं जाई।
विनती सेवक की सुनो स्वामी, विलम्भ किये सुरति बलि जाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सुरति आन जगाई।।

890 अन्न ना भावे नींद ना आवे, हर पल सुरति सब्द में जाओ।
बार बार मोहे विरह सतावे, बिन मोत मरी जाओ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन मोत ही मरि जाओ।।

891 लाखों सूर्य की लौ ''वे नाम'' सब्द में, सतगुरू सुरति आन समाये।
ऐसी अनमोल दात से, निजघर हंसा आवे और जायें।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' निजघर आवे और जावे।।

892 सतगुरू वडियाई सत्यपुरूष सूं आई, बिन मूल नाम नहीं भव पार।
सतगुरू नाम सूं आत्म हंसा, ता से उतरे भव पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, अक्का सब्द उतारे भव पार।।

893 निजधाम–सार सार सुरति नाम में, सतगुरू चरणन ध्यान लगाये।
जो सतगुरू चरणन रचिया, तिन की संगत में जाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साध सतगुरू संगत में जाये।।

894 ज़हर पराया अपना, ज़हर ही कहलाये।
रक्षा करनी कठिन रे, ज़हर को ज़हर की काट पाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ज़हर को ज़हर ही काट पाये।।

895 सत्यपुरूष हंसा जान अविनासी, महिमां कहि ना जाई।
नाम सुरति स्वांसा में ध्याते, खिन ढील ना कीजे भाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, श्रद्धा से नाम सिमरा जाई।।

896 भेष फकीरी मन संग साथ, सुरति ना आवे हाथ।
सुरत सब्द में जो रहे, सत्यपुरूष तिन के साथ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष दोनों ईक साथ।।

897 सुमिरण ऐसो कीजिये, जाने ना दूजा कोये।
हाथ मन हौंठ कार्य ना करें, प्रेम सब्द सुरति स्वांसा गाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, प्रेम सब्द सुरति स्वांसा समाये।।

द दादू मार्ग कठिन है, जीवित चले ना कोई।
सोई चलि है बापुरा, जे जीवत मृतक होई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जगत जीव मृतक होई।।

स सहजो भज हरि नाम कूं, तजो जगत सूं नेह।
अपना तो कोई है नहीं, अपनी सगी ना देह।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मृत्यु काल संग ना देह।।

क संत मिले सुख उपझै, दुष्ट मिले दुख होये।
सेवा कीजै संत की, जन्म कृतार्थ होये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द पा जन्म कृतार्थ होये।।

क आया था किस काम को, तूं सोया चादर तान।
सुरति संभाल ऐ गाफिला, अपना आप पहचान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सोये नर अपना आप पहचान।।

क बूंद समानी समुद्र में, यह जाने सब कोये।
समुद्र समाना बूंद में, भूझे विरला कोये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू बिन भूझे ना कोये।।

क पहुपन केरी बास ज्युं, व्यापि रहयो सब ठाई।
बाहिर कबहु ना पाईये, पावै संतों मांहि।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, दुष्ट सदा रहियो डिठाई।।

898 दया धर्म सुरति बसे, सुरति सूं अमृत बैन।
तेई ऊँचा जानिये, जिन सब्द सुरति स्वांसा संग ध्यान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द सुरति स्वांसा संग ध्यान।।

प पल्टु ऊंची जाति का, मति कोई करे अहंकार।
साहिब के दरबार में, केवल सुरति धार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू शरणी सुरति धार।।

क नैनों की करि कौठरी, पुतली पलंग दियो बिछाये।
पलकों की चीक डारि के, पिया को लियो रिझाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, प्रेम से पिया को लियो रिझाये।।

899 प्रेमी ढूंढत जग फिरूं, वे तो संग संग होये।
प्रेमी सूं प्रेमी मिले, विष को अमृत सब्द दे धोये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति सूं प्रेमी संग पायें।।

900 ''वे नाम'' सब्द से पीव मिलैं, पिव सुरति में रमाई।
सतगुरू तो केवल प्रेम है, उनकी चेतन सुरति में सुरति रमाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द चेतन सुरति में सुरति रमाई।।

901 यह दुनियां दो रोज़ की, मत कर या सूं हेत।
सतगुरू चरणन चित्त लाईये, जो पूरन सुख हेत।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू ही सांचा भेद देत।।

902 सुरति तेल की धार प्यारो, नींद में भी संग साथ।
मन सूं जाये तन सूं जाये, नींद में भी ना तोड़े साथ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति स्वांसा संग साथ।।

903 'वे नाम' धीर के धरे, मन माया भूखे रह जायें।
सुरति ना पकड़े हाथ जी, धर धर भटका खायें।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन सब्द नर भटका खाये।।

904 फिकर सबको खा रही, फिकर ही मोह का अंग।
फिकर कल कले में ले रही, ये तो मन माया का अंग।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, चिंता मन माया का अंग।।

905 क्षमा संतन का अंग है, साधक उनसे सिखते करते सुरति से।
औगुण कुछ संग नहीं, सुरति का रहे जब संग।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जागा सुरति का रहे जब संग।।

क क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
क्या विष्णु का घटि गयो, जो भृगु मारी लात।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू बांटे प्रेम दात।।

क तिल भर मछली खाये के, कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट लै मरै, तो भी नर्क निदान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सार सब्द नर्क निदान।।

क देह घेर का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोये।
सुरति वान सुरति में रहे, सोया नर भुगते रोये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सोया नर भुगते रोये।।

906 सुरति से सब होत है, जे सुरति संग ''वे नाम'' सब्द की डौर।
चेतन सुरति सूं आंख में नूर है, सत्यपुरूष सूं जोड़ो डौर।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू प्रेम प्रीत की डौर।।

907 मन तो पंछी रूप प्यारे, उड़ी के पहुंचे आकास।
पल में नीचे आन पड़े, फिरि माया गन्द पास।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जीव लिपटा मन माया फांस।।

908 मन दौड़ समुंद्र लहर समान प्यारो, अति चंचल ले जान।
पल में कौवे से हंसा बने, सार सब्द की महिमां जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सार सब्द की महिमां महान।।

909 मन बिना सीस का मृग, चारों ओर विषय विकारों की घास चरने जाये।
सतगुरू ज्ञान रसरी से बांधकर, ''वे नाम'' सब्द दात में जा समाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में जा समायें।।

910 मन मुरीद जग वासियो, सतगुरू मुरीद हो जाओ।
जो पावे ''वे नाम'' सब्द दात को, सतगुरू सुरति संग निजघर जाओ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सुरति संग निजघर जाओ।।

911 मन पल में दाता पल में लालची, पल में राजा समान ह्रदय का जान।
यह मन यदि ''वे नाम'' सुरति में समा जाये, मूल सुरति में समाना ले जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मूल सुरति में सब्द समाना ले जान।।

912 पाप पुण्य में उलझा कर, मन ठगत कुल संसार।
आप ध्यालो आप कंजूस, ह्रदय से जोड़ा संसार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन माया में उलझा संसार।।

913 प्यारो यह मन लालची, नर नचावे बन गंवार।
'वे नाम' सब्द दात सूं भागता, नर भ्रमाने को तैयार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जीव जावे नर्क द्वार।।

914 मन को अन्तःकरण में धरा कर प्यारे, शांत कर ले सुरति की धार से।
जब हो गल्त चल ईच्छायें करे, फेर ''वे नाम'' सब्द अंकुश से।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन वश ''वे नाम'' सब्द दण्ड से।।

915 मन तो केवल एक हैं, रूप रंग इस के जान अनेक।
जो कोई या ते बचे, तीन लोक में सतगुरू एक।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, तीन लोक में सतगुरू सदा एक।।

916 तीन लोक में सब को ठगै भटकाये, मन ही जान आप औंकार।
जो कोई जग में मन को जान ले, राखे सतगुरू सब्द की धार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, तारें सतगुरू सब्द की धार।।

917 मन पांच भावों से बना, काम क्रौध लोभ मोह अहंकार।
मन पांचों के वश में प्यारो, पांचों के वश संसार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, पांचों वश पड़ा संसार।।

918 लाख कोस दूरी पर जे सतगुरू बसें, सुरति को सतगुरू सुरति में डाल।
सतगुरू चेतन सुरति असवार सब्द पर, करे सुरति संभाल।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, नर ना करे सुरति संभाल।।

919 सतगुरू सत्यपुरूष करी जानिये, रहिये सुरति माहिं।
मिलैं तो करो दण्डवत प्रणाम, सुरति में चेतन सुरति माहिं।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति तो चेतन सुरति माहिं।।

920 मूल सुरति ध्यान सतगुरू रूप है, पूजा मूल सतगुरू पांव।
''वे नाम'' सब्द सतगुरू वचन है, मूल चेतन सुरति सत भाव।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, चेतना मूल सुरति स्वभाव।।

921 पूर्ण सतगुरू सिर पर राखिये, जानिये सत्यपुरूष रूप।
सुरति को चेतन सुरति संग जोड़ी ये, पाओ सुरति में उनका रूप।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, पाओ सुरति में सतगुरू रूप।।

क सतगुरू को कीजै दण्डवत, सुरति सूं कोटि कोटि प्रणाम।
भृंग भी कीट को सुरति सूं, कर ले आप समान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू कर लें आप समान।।

922 सतगुरू सब्द त्याग के, जो कोई शिष्य चला जाये।
अब काल का संग छूटे नहीं, पूर्ण मोक्ष कभि ना पाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मायाधारी मोक्ष कबहु ना पाये।।

923 ना जाना सत्यपुरूष को, ना हम करि पुकार।
वे तो सतगुरू में मिलें, सुरति सूं जोड़ो तार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति सूं जोड़ो तार।।

न यों सुपना देखना, जग रचना तिम जान।
इस में कछु सांचो नहीं, नानक सांची मान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, नानक बात सच्ची मान।।

924 निजघर मार्ग कठिन प्यारो, बिन सतगुरू सब्द चले ना कोई।
सब्द सुरति स्वांसा एक कर, जीवित मरना होई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द बिन जीवत मरना ना होई।।

925 सपने राज पाठ देत हैं, जागै तो हाथ कुछ नाहिं।
सपनों सा संसार यह, सब मन मान के माहिं।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब जग मन मान के माहिं।।

926 सहज को पकड़ो सहज बनो तुम, सहज साहिबन रूप।
सहज सुरति सतगुरू की, सहज है हंसा रूप।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सहज है बस हंसा रूप।।

927 सहज का बीज ''वे नाम'' है, सब्द स्वांसा सुरति कर एक।
तीनों मिल महां बीज हैं, साहिबन सब्द सूं एक ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन सब्द सूं एक।।

928 सहज सहज सब कहत हैं सहज ना जाने कोये।
सहज से सब हंसा आया है, सहज कहावे सोये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, हंसा ही सहज कहावे सोये।।

929 सहज सत्यपुरूष जानिये, जिन ''वे नाम'' सब्द दिया बीज।
मूल सब्द से सहज सतगुरू, जिन पाया सहज का बीज।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू से पाओ सहज का बीज।।

930 सहज में सुरति सहज प्यारो, सहज में रहते आप।
सहज को पकड़ो सहज बनो, सहज स्वांसा आप।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' धार सहज स्वांसा आप।।

931 हम सब सहज लोक से आये, सहज हंसा रूप।
मन माया का संग मिला, बिना आत्म रूप।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन निष्प्राण बिन आत्म रूप।।

932 काल जाल के वश में पड़े, भूले निज रूप हमार।
''सार सब्द'' दात 'वे नाम' सूं, मिले निज रूप हमार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं मिले हंसा रूप हमार।।

933 सगुण में अटके ज्ञानी सभी, निर्गुण में ध्यानी भटके जान।
मध्य में अनहद वाणी है, मोक्ष ''वे नाम'' सब्द का बाण।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन सब्द सब भटके जान।।

934 सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ किवाड़।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो सच्चा दरबार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं सांचा दरबार।।

935 जात धर्म से उपर है, ''वे नाम'' सब्द का ज्ञान।
''वे नाम'' ही साहिबन नाम है, ता में मोक्ष का दान ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, पा लो ''वे नाम'' सब्द का दान।।

936 सतगुरू बड़े सत्यपुरूष से, मत कर सोच विचार।
सत्यपुरूष सिमरे सो वार है, ''वे नाम'' सब्द सिमरे सो पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द जो सिमरे सो पार।।

937 कोई प्यारा सब्द का पारखी, पावे सब कुछ।
सतगुरू चरणों मांहि, पावे पूर्ण मोक्ष।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, संतन सब्द सूं पूर्ण मोक्ष।।

938 वे नाम प्यारो गर्व मत कीजिये, माया आवन जान।
अभी नाव काल सागर में, पल में उल्टी जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, काल जाल फंसी आत्म महान।।

939 मोह माया तजना सहल है, मन मान सहज तजा नहीं जाये।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने ना, सतगुरू पा बात बन जाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू पा बात बन जाये।।

940 'वे नाम' मुख से ना कहें, हमारा मोल ना तोल।
मान बड़ाई जो तजे, पल में पाता बे मोल।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू वाणी अति अनमोल।।

941 पर्वत पानी ना टिकै, नीचे बहता जाये।
नीचे सब पा जाते हैं, कोई ना प्यासा जाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सुरति आत्म प्यास बुझाये।।

942 सतगुरू भक्ति अति कठिन है, ज्युं खांडे की धार।
बिना सार सब्द पहुंचे नांहि, सतगुरू सूं कर ले प्यार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं भव पार।।

943 मन माया का संग जब, भक्ति का चढ़े ना रंग।
दुखी होत भुजंग जब, केचुलि का छोड़े संग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, विष अमृत का विपरीत रंग।।

944 जब लग अभिमान ऊंची जाति का, भक्ति का ना संग।
मान तजै सतगुरू भजे, भक्ति से जोड़ता संग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सत्संग चढ़े भक्ति रंग।।

945 पंथ हमारा मूल सुरति योग है, मार्ग सहज योग से ध्यान।
भृंग मत से सुरति हमारी, सबद सुरति ''वे नाम'' ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति 'वे नाम' ले जान।।

946 ध्यान अभ्यास से ठहराव, जीवन के लिये अति आवश्यक ले जान।
दृष्टि् भ्रांतियां जब टूटती, तब अंतर्मुखी जीव ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अंतर्मुखी साध के गुण ले जान।।

947 ध्यान केवल सतगुरू रूप का, जो हैं पूर्ण सहज।
ध्यान के अभ्यास से, ''वे नाम'' सब्द से सहज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' धारा से सहज।।

948 एक ध्यान एक में ध्यान, सहज की अवस्था पावे महान।
दुखों की स्थूल वृत्तियों का, पूर्णतः अंत ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द जीव सोया जान।।

949 जो हंसा अमृत दात पिये, कंकड़ पत्थर क्युं खाये।
कंकड़ के लिये सर कैसे झुके, अमृत पावे सर झुकाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमृत दात झुकने से पाई जाये।।

950 चौंसठ कलाओं का ज्ञान संग में, चौदहं विद्याओं में निपुणता संग।
जो पूर्ण सतगुरू पाया नांहि, हर दुख क्लेष तेरे संग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्संग छुड़ाये मन माया रंग।।

951 ''वे नाम'' सब्द हीरे से आगे, नर को परख़ नाहिं।
जो ज्ञानी सब्द का पारखी, पावे दात सतगुरू चरणों माहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, पाओ दात सतगुरू शरणी माहिं।।

952 एक का ध्यान एक में समाना, सहज अवस्था पाना ले जान।
'मै' मेरी मन मान का, सहज तजना ना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द पारखी पूर्ण जागा ले जान।।

क हीरा पड़ा जु गैल में, दुनियां जामें डोल।
जहां हीरा का पारखी, तहं हीरा का मोल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागा जाने सब्द अनमोल।।

953 अमृत फल छाड़ि के, जो मिले सो खाये।
रत्न गंवाया सागर में, घर घर भटका खाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन तरंग जीव बहता जाये।।

क एक बार में परखिये, नांहि बारम्बार।
बालू तौहूं किरकिरा, जो छानै सौ बार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दुष्ट छल करे बारम्बार।।

क जब गुण को ग्राहक मिलै, तब गुण लाख बिकाये।
जब गुण को ग्राहक नहीं, कौड़ी बदले जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, परख़ बिन जीवन व्यर्थ जाये।।

954 सतगुरू सत्यपुरूष रूप प्यारो, रहिये सुरति में सब्द समाये।
पल पल उनमें ध्यान करो, सुरति को चेतन सुरति में समाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द चेतन सुरति में समाये।।

955 मूल ध्यान सतगुरू रूप प्यारो, पूजा मूल सतगुरू पांव।
''वे नाम'' सब्द ही मूल दात है, मूल सत्य सुरति भाव।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्य सब्द सुरति स्वभाव।।

क सतगुरू को सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा मांहि।
कहैं साहिब ता दास को, तीन लोक डर नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू ओट फिर डर नाहिं।।

956 माया मन ते ऊपझे, माया जान त्रिगुण रूप।
पांच तत्व से तन बना, मन बांधे हंस रूप।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन ने बांधा आत्म सुरति रूप।।

957 मन माया देखन में दो हैं, पर सच्च में दोनों एक।
तीन लोक माया जाल है, मन ने बांधा हंसा अनेक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन ने बांधे हंसा अनेक।।

958 जिस गुरू स्वयं मृत्यु सूं, छुटकारा पाया मत जान।
वह कैसे नाव चलायेगा, पत्थर की नाव ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोया जीव डूबा ले जान।।

त तुलसी जग में दो बड़े, एक नाम एक दाम।
नाम मिलावे पीव से, उसी सूं मिलता दाम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नाम माहिं निजधाम।।

क प्रेम छिपाया ना छिपे, जा घट प्रगट होये।
जपै मुख बोले नहीं, नयन देत हैं रोये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दरस बिन नयन नीर बरसाये।।

क छिन ही चढ़ै छिन ही उतरे, सो तो प्रेम ना होये।
जा घट प्रेम पिंजरे बसे, प्रेम कहावे सोये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्रेम पीड़ा सही ना जाये।।

क पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा, गुरू भया ना कोये।
ढाई अक्षर सुरति में धारे, सो सतगुरू का होये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कोई बिरला सतगुरू का होये।।

959 सोता सब जग जगाईये, जानें पूर्ण सतगुरू दात।
जगत तो सोता भला, जो सतगुरू की सुने ना बात।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागा साध माने संतन बात।।

960 जब ही नाम सुरति भया, छूटे मन माया का साथ।
सुरति चेतन से चेतन भई, आत्म से हंसा होना एक साथ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साध सतगुरू रमें ईक साथ।।

961 दुनियां पूजे संतों को, उन के जाने पर।
पूजा माथा टेकना, रसम जान उनके जाने पर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन वाणी प्रेम की धार।।

962 मेहनत भाव प्रकटाये, पर दुख बिन कुछ नांहि।
निंदा अस्तुति से लेन ना देन, कुरीतियों से बचना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोया कुरीतियों में डूबा जान।।

963 'वे नाम' सतगुरू को जाने नहीं, मूल नाम सूं लेन ना देन।
तीन लोक में सभी भटके, निज सूं लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग में सब झूठ का लेन देन।।

964 भोले भाले लोगों को भ्रमित किया, समाज को लूटने वालों ने।
तन तजने पर पूजा भक्तों की, मनोकामनाओं बिन कुछ लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोये को नाम सूं क्या लेन देन।।

965 बिन ''वे नाम'' सब्द दात, सच्ची भक्ति मत जान।
क्षर अक्षर में अटका हर नर, निःअक्षर सब्द का भेद पाया ना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोया जीव सतगुरू द्वार जाये ना।।

966 तीन लोक में कहीं भी जाओ, ईर्षा द्वैष भय बिन कुछ नाहिं।
सतलोक ही अमर लोक, जहां सत्त सहजता सुरति आनंद बिन कुछ नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतलोक सुरति प्रेम बिन कुछ नाहिं।।

पंच शब्द पंच तत्व
जहां योग तहां भौग विनाषा

967 जन्म मरन के चक्र में पड़कर, आत्म भूली सच्चा साहिबन दरबार।
मन मान द्वंद में खोया, कैसे पावे ''वे नाम'' सब्द सुरति धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं पाओ साहिबन दीदार।।

क शब्द औंकार भूचरी मुद्रा, त्रिकुटि है अस्थाना।
व्यास देव ताको पहिचाना, चांद सूर्य सो जाना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भूचरि मुद्रा वेद व्यास ध्याना।। **1 Water** पानी

क ज्योति निरंझन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन माहिं।
तेहि को जाना गौरख योगी, महां तेज है ताहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चाचरी मुद्रा गोरख नाथ ध्याहिं।। **2 Fire** आग
(चाचरी मुद्रा का प्रचलन, गौरख नाथ जी के द्वारा ही हुआ)

968 इसमें साधक तीसरे तिल में, ध्यान एकाग्र करता जान।
साधक दिव्य प्रकाश देखता, आनंदमय ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, त्रिकुटि ध्यान आनंद प्रकटाता ले जान।।

969 स्वांसा नासिका के अग्र भाग पर, ध्यान रोकना ले जान।
नर का दम घुटना, काम बने महान ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान एकाग्र करना ले जान।।

970 योगियों में संतान देने का, अहंकार आना ले जान।
तीन लोक में ही रहता वासा, काल में वासा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अहम भक्ति में बाधा जान।।

971 सोहंग शब्द अगोचरी मुद्रा, भंवर गुफा अस्थाना। (सुरति शब्द अभ्यास करते हैं)
शुकदेव ताको पहिचाना, सुन अनहद की ताना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, शुकदेव अगोचरि मुद्रा परवाना।। **3 Air** हवा

972 सत शब्द सो उनमुनी मुद्रा, सोई आकाश स्नेही।
तामें झिलमिल जोत दिखावे, जाना जनक विदेही।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, राजा जनक उनमुनि मुद्रा स्नेहि।। **4 Earth** पृथ्वी

973 ररंकार खेचरी मुद्रा दसवां द्वार ठिकाना। (सुश्मिना की महिमां महान ले जान)
ब्रह्मां विष्णु महेश्वर देवा, रंरकार को जाना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, खेचरी मुद्रा ररंकार सब्द ध्याना।। **5 Sky** सुन्न

974 नाम विदेही जब पावे, अंदर का उजरा हो साफ़।
''वे नाम'' सब्द दात बिना, आत्म मत जानो साफ़।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं आत्म मल साफ़।।

975 जैसे दूध से दहि प्यारो, यही मथे तो माखन मिले।
माखन को दो आंच, घी पल छिन में आन मिले।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, श्रद्धा सूं संतन आन मिलें।।

आहार से शुद्धता और पतन

976 आहार की शुद्धि से प्यारो, बुद्धि की शुद्धि लो जान।
बुद्धि की शुद्धि से प्यारो, ज्ञान की शुद्धि ले जान।
ज्ञान की शुद्धि सहजता सूं आये, जो आप सहज हो महान।
सतपुरूष प्यारे ने, दी 'वे नाम' को ''वे नाम'' दात महान।
ता सूं पूर्ण मोक्ष मिले, साधक पावे निजघर महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' देवें संपूर्ण शुद्धि ज्ञान।।

977 जैसा भोजन मन सूं खाइये, तैसे भाव उत्पन्न जान।
पानी से बानि सोये, ''वे नाम'' सब्द की महिमां जान।
औसर मानुष जन्म का, बारम्बार मिला मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख एक से जान।।

978 मांस खाना अपराध प्यारो, शाकाहारी और मांसाहारी अपनी अपनी पहचान।
सब में आत्मवास प्यारो, सब एक घर से आये जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब जीव साहिबन अंश जान।।

979 मांसाहारी जीवों की आंखों में, रात की रोशनी अति महान।
अपना शिकार देख वे लेते, पानी जीभ से उठाकर पीते ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहार जीव भुगत भौगी ले जान।।

980 उनके दांत गोल और नुकीले, ज़हर दांतों में ले जान।
आंखे उनकी दिन को जलती, शिकार देखना कठिन ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दुष्ट का दुष्टता में ध्यान ले जान।।

981 मांसाहारी जीवों के नाखुन नुकीले, शिकार पर इनका प्रहार।
शिकार पर दांत और नाखुन, करते अति भयंकर प्रहार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, काल करे सब का संहार।।

982 शाकाहारी जीवों की आंखें, दिन में जलती मत जान।
निगल कर पानी पीते, नथुने भी चौड़े ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भौग योनियां कर्मों के फल ले जान।।

983 शाकाहारी जीवों के प्यारो, दांत भी चौड़े ले जान।
दांतों में ज़हर नाहिं, बंदर भैंस गाय आदि ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भौग योनियों में आत्म फंसा ले जान।।

984 ईन्सान के नाखुन भी चौड़े, ज़हर के बिन ले जान।
अपने नियम पर प्यारो, नहीं तूं चलता ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मानव तूं निज की कर पहचान।।

985 मांसाहारी मानवा, अति पापी नीच ले जान।
ताका संग करना मत, सब अवगुण उस में ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहारी काम क्रौध की खान ले जान।।

986 सत्य और अहिंसा सिद्धांत, नर के जग में ले जान।
मांस खाने वाला हिंसक, हिंदु या सच्चा नर उसे मत ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहारी सत्य प्रेम से दूर ले जान।।

987 मांस का खाना जग में, ईश्वरीय अपराध ले जान।
जीव मांस का खाना, वेज्ञानिक अपराध भी ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहारी भक्ति सूं कौसों दूर ले जान।।

998 मांसाहारी मानवा, बिन राक्षस कुछ मत ले जान।
उसका भक्ति करना झूठ, हर कृत दूसरे को दुख देना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहारी नीरा अधर्मी ले जान।।

989 सत्य कर्म सत्य संभाषण, और सत्य ही सुनना ले जान।
हो आहार आपका शुद्ध, बुद्धि शुद्ध से शुद्ध ज्ञान ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कोई बिरला ही सत्यभाषी ले जान।।

990 अन्न खाने से ही प्यारो, होती मन की पहचान।
पानी पीने का प्रभाव, वाणी पर ले जान।
खाने पीने पर, मन की पहचान ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सात्विक आहार अति महान।।

991 अवगुण शराब का प्यारो, मानुष से पशुआ करना ले जान।
ताका यज्ञ जप तप किया, सभी निष्फल ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मद्य्होशी निशाचर ले जान।।

992 मास खाना ईश्वरीय वैज्ञानिक अपराध प्यारो, सभी में आत्म जान।
शाकाहारी मांसाहारी की प्यारो, अपनी अपनी पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निज की करो पहचान।।

993 मांसाहारी जीवों की आंखों में प्यारो, रात में देखने की शक्ति महान।
जल जीभ से उठाकर पीते प्यारो, नाखुन भी गोल नुकीले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब जीवों में सुरति प्राण।।

994 मांसाहारी के दांतो में ज़हर जान प्यारे, देख यह भेद महान।
शाकाहारी जीवों की आंखें प्यारो, दिन को जलती मत जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भौग योनि जीव बेबस तूं जान।।

995 शाकाहारी पानी भी निगल कर पीते प्यारो, नाखुन चौड़े उनके जान।
दांत भी उनके प्यारो, चौड़े बिन ज़हर के जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, शाकाहारी शांत प्रवृति के जान।।

996 चीता बिल्ली शेर सियार नेवला प्यारो, मांसाहारी जीव ले जान।
सब अपना अपना कार्य करते, मांसाहारी मानवा तर्क देत महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मांसाहारी मानव और पशु ईक समान।।

997 छल कपट हर जीव में प्यारो, घूसखोरी बिन नहीं कोई काम।
संतों की भूमि पर प्यारो, छल कपट नीचता भरा काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भारत संतों की भूमि महान।।

998 पाप कर्मों में सदा मन, जिस का रहता मलीन।
उस को सतगुरू प्यारो, सपनों में भी मिलता मत जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, महांपापी संतन सूं दूर ले जान।।

999 देवी देवता जगत में, पूजा करे सब संसार।
सतगुरू समान पूजा नहीं, भक्ति का जानो सार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कोई बिरला जाये संतन द्वार।।

1000 सतगुरू भक्ति चार लोक भक्ति प्यारो, सत्यपुरूष वासा उन में ले जान।
सतगुरू भक्ति सतपुरूष की भक्ति, बिन कोई और भक्ति मत ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन में भेद मत जान।।

1001 ''वे नाम'' सब्द से पाप कर्मों से दूर, भय और मान छूटा ले जान।
हर ओर सतगुरू ही सतगुरू दरशें, उनसे खाली कुछ मत जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू भक्ति सहज सत्त भक्ति ले जान।।

1002 हक की कमाई खाना, खाने का सच्चा भेद ले जान।
पाप कर्मों से सुरति चेतन मत जान, मन तरंग हर काम में बाधा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नेक कमाई सूं बड़ती चेतना ले जान।।

1003 किसी को कष्ट देना भूल प्यारे, सच्ची भक्ति भेद ले जान।
आत्म सब नर में एक प्यारो, भेद करना दुख का कारण ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन शरणी सच्चा भक्ति ज्ञान।।

1004 किसी को कष्ट देना प्यारो, पक्का अपराध करना ले जान।
आप से किसी को कष्ट ना होवे, सच्ची भक्ति का भेद ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब में आत्म एको समान।।

1005 जैसा व्यवहार किसी से चाहते नहीं, तुम भी मत करना लो जान।
किसी से गाली नहीं चाहते, देना भी मत सच्च लो जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कर्मण बीज फल अति महान।।

1006 गुस्सा करते पीड़ा देते, गाली देना गुस्सा करना निज भूल ले जान।
क्रौध में आया काल जी, तोड़े उसकी टांग करे अति परेशान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, क्रौध भक्ति में महां बाधा तूं जान।।

1007 सतगुरू समान जग दाता नहीं, जग सदियों से सोया जान।
सार नाम सम जग कुछ है नहीं, बिन मोल पा लो दान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सूं पाओ नाम दात महान।।

1008 अमरलोक में जे सतगुरू बसैं, दीजै सुरति पठाये।
सब्द सुरति सवार हो, आ सब काज कर जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति में सतगुरू लो बसाये।।

1009 तीन लोक जे कागज करूं, लेखनी करूं बनराये।
सात समुंद्र की मसि करूं, गुरू महिमां लिखी ना जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू महिमां सार सुरति बताये।।

1010 जेहि खोजत कई युग थके, ब्रह्म मुणि अरू देव।
कहें 'वे नाम' सुन साधवा, सतगुरू की कर ले सेव।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू की कर लो सेव।।

क धरति फाटे मेघ मिले, कपड़ा फाटे डौर।
मन फाटे को सुरति औषधि, सुरति संग सब्द की डौर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, रहो सुरति संग सब्द की डौर।।

1011 मन बुद्धि चित के प्यार में प्यारो, उभरे काम क्रौध अहंकार।
जब तक ना पाओ पूर्ण सतगुरू प्यारो, काल के हाथ पतवार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सच्चा घर तीन लोक से पार।।

1012 माया का सुख चार दिन, निज की करो पहचान।
''वे नाम'' से जानो सुरति को, ''वे नाम'' सब्द में ध्यान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में धरो ध्यान।।

1013 काल नाम सबहि गुण गावे, विदेह नाम की महिमां महान।
विदेह नाम में साहिबन वासा, जगवे प्रेम जोत महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द जगावे प्रेम ज्योत महान।।

1014 अंदर की भक्ति प्यारे, काल पुरूष अधीन।
पांच शब्द और पांचों चक्र, सभी काल सीमा के अधीन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, काल की भक्ति कर्म फल पराधीन।।

1015 सतगुरू का ही ध्यान 'वे नाम' संग, सुरत कमल संग साथ।
सौलहं सूर्य की जोत को पाना, ग्याहरवें द्वार से निज घर साथ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू प्रेमी निजघर उन संग साथ।।

1016 सागर (दरिया) भव जल अगम का, ''वे नाम'' सब्द करे जहाज।
ताहि पर हंसा चढ़ाई के, सतगुरू ले चले जहाज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू नाम सुरति जहाज।।

1017 'वे नाम' आये अमरपुर से, देवें साहिबन सुरति दात।
जो पा गया सो पार गया, चेतन सुरति सूं जोड़ो साथ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं जोड़ो साथ।।

1018 निरालम्भ राम ते ''नाम'' की महिमां, हंसा बने महान।
राम चरित रात कोटि में, सत्य सब्द की महिमां महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार सब्द की महिमां महान।।

1019'सात द्वीप नव खण्ड में, निःअक्षर दात से बड़ा ना कोये।
इसी में पूर्ण मोक्ष है, जानो यह बात सब कोये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निःअक्षर में सतगुरू वासा होये।।

1020 ''वे नाम'' सब्द को सुरति स्वांसा में, ध्याया करो सभी।
सतगुरू की शरणी में, तुम आया करो सभी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ध्याया करो सभी।।

1021 जीव तथ्यों में नांहि प्यारो़, सपनों में जीता जान।
मन हर तन में प्यारो, एक जगत का निर्माण ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग सपनों में सोया ले जान।।

1022 रात दिन चित्त प्यारो, सपनों में घिरा ले जान।
पल पल सपनों का घेरा प्यारो, बड़ जाने का नाम विक्षप्ता ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सपनों में उलझा निज से अन्जान।।

1023 सपने जहां शून्य प्यारो, सार नाम का काम महान।
स्वयं का पागलपन प्यारो, कोई जागा जीव बने महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागा जीव जाये निजधाम।।

1024 पुरूष रचन ते नारी प्यारो, नारी से तीन देव।
पुरूष पुरूषे भृंग मता, हंसा सूं सतगुरू सेव।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, रहो सदा सतगुरू सेव।।

1025 सतगुरू को पल पल दण्डवत, पल पल करो प्रणाम।
कीट पकड़े भृंग सुरति को, हो जायें एक समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू साध ईक ही जान।।

1026 'वे नाम' सत्यपुरूष के रूठते, सतगुरू में सुरति पठाये।
प्यारो सतगुरू के रूठते, सत्यपुरूष ना होत सहाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू शरणागत उतरें पार।।

1027 चेतन सुरति सूं सुरति परसी नहीं, नर का नर रह जाये।
चेतन सुरति सूं सुरति चेतन होई, अब पल में घर को जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति निजघर ले जाये।।

1028 ''वे नाम'' सब्द समाना शिष्य में, सत्यपुरूष के गुणों को पाये।
अब दो से एक हो गये, पल छिन में निजघर जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं मोक्ष मिल जाये।।

1029 ''वे नाम'' सब्द से 'वे नाम' का, अस्तित्व स्थापित हुआ।
सतगुरू सेवा से साधक में, चेतन सुरति से सुरति का संग हुआ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं जीव जागा हुआ।।

1030 तन मन धन सतगुरू को दिया, मन से ईच्छा कोई नाई।
बुद्धि से निर्णय मत करना, चित से भी कुछ करना नाई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कर्ता और ना कोई।।

1031 जिसे स्वंय पर संदेह प्यारो, स्वंय का पागलपन दिखना जान महान।
''वे नाम'' सब्द यह काम करे, मन बनावे शांत महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' में शांति महान।।

1032 अज्ञान के बोध से प्यारो, स्वपन का टूटे भाण।
स्वपन असत्य के बोध से प्यारो, स्वपन का टूटे भाण।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अज्ञानता ही महां ब्रह्म जान।।

1033 साधना सुरति स्वभाव में प्यारे, मन मान की करता पहचान।
जिससे मुक्त होना प्यारो, उसकी पहचान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन मान की करो पहचान।।

1034 सतगुरू राखो नैनन की कौठरी, रहो पल पल आज्ञा माहिं।
सत्य प्रेम की जो जग गई, सतगुरू चेतन सुरति माहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति साध माहिं।।

1035 अहंकार में आकर प्यारो, कोई क्रिया भी नांहि।
नर अब शांत हो गया, बंद आंखों से सुरित बिन कुछ नांहि।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म सुरति बिन जग कुछ नाहिं।।

1036 आत्म ज्ञान की महिमां अपार प्यारो, बाहर सब कुछ खाली जान।
अंदर से बाहर कुछ है नहीं, अपना दृष्टा निज को जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अपना दृष्टा निज को जान।।

1037 जितनी तड़प दुख से बाहिर आने को, उतनी भवसागर से करे पार।
इस बिन ना काम बन सके, 'वे नाम' सब्द से कर ले पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' संग भव कर ले पार।।

1038 खोजी होये पूर्ण ज्ञान का, सतगुरू को पावे पास।
पल में पहचान है होती, जब सतगुरू चरणन दास।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सदा रहो सतगुरू चरणन दास।।

1039 झुकने से खोज पूरी होई, सार सब्द की पाई दात।
मन माया का संग गया, सुरति से होई बात।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, समर्पण सूं बन जाये बात।।

1040 जब पास में कुछ खाने को ना, कमाने की तड़प महान।
ईक ईक दाने को तड़प उठी, हर कार्य को तैयार ले जान ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव मन वश तड़पता ले जान।।

1041 तन मन धन प्यारे, तीनों मन के अंग महान।
ईच्छा आशा तृष्णा भी प्यारे, मन की उपझ ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म मन तरंग फंसी ले जान।।

1042 बुद्धि निरख परख निर्णय करें, चित्त याद करने की धार।
अहंकार सब क्रिया करता, हर कार्य करे मन अनुसार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव हर कार्य करे मन अनुसार।।

1043 आवश्यकता खोज की जननी प्यारो, यही जीव की सच्ची पुकार।
जब तक पूर्ण मोक्ष की तड़प ना, कैसे उठे तड़प और पुकार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, विरह वैराग़ की तड़प पुकार।।

1044 मजदूर को तुम देख लो, कड़कती धूप में करता काम।
पैसा काम कराता प्यारो, दुख सुख से क्या काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभ में जीव करें हर काम।।

1045 ध्याण सतगुरू के चरणों में प्यारो, लगाया करो सभी।
पूर्ण मुक्ति जीवन का लाभ प्यारो, कमाया करो सभी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान सिमरन में रहो सभी।।

1046 प्रथम संतों के सत्संग से प्यारो, सदज्ञान सुरति में धारा करो सभी।
दौष दुर्गुणों के त्याग कर, सदगुणों को उपझाया करो सभी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सदगुणों को उपझाया करो सभी।।

1047 देह से हर हंसा भिन्न तूं, चेतन्य अजर अविनाषी निज को जान।
ज्ञानहीन हो चौरासी फिरे, सतगुरू चेतन सुरति से निज को जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति में निज को जान।।

1048 निजरूप की पहचान कर, ''वे नाम'' सब्द का चिंतन महान।
विषय विकारों में है तूं पड़ा, निज की ना की पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करे हंसा महान।।

1049 लक्ष्य जीवन का तूने पहचाना नहीं, उस की ना की पहचान।
सुबह से शाम तक कल कल में रहा, सतगुरू की ना की पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नर ने सतगुरू की ना करि पहचान।।

1050 नर तन हीरा रूप प्यारे, काम के वश पड़ा सब जान।
आज समय तुझे है मिला, ''सार सब्द'' की महिमां जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सब्द की महिमां महान।।

1051 ज्ञान होन पर प्यारो, तड़प उठने का होना सार।
जब तक मोक्ष पाने की तड़प नहीं, फिर दात का क्या है सार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन श्रद्धा भक्ति बेकार।।

1052 तड़प जागे तो प्रयास हो सके, तेरे अंदर सुरति निरति महान।
निज हंसा रूप की पहचान कर, ''सार सब्द'' दात महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''सार सब्द'' दात महान।।

1053 प्यारे हंसना छोड़ दे, रोने में सुरति डाल।
बिना रोये मिलता नहीं, सार सब्द में सुरति डोले।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''सार सब्द'' सुरति में डाल।।

1054 अमल छल धोखा कपट प्यारो, संग से संग टूटा जान।
''वे नाम'' सब्द जब पास में, मन मान का संग भी छूटा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द से मन मान छूटा ले जान।।

1055 जग की वस्तु पर ध्याण अटकाना ना, विवेक वैराग्य ज्ञान का प्रवेश जान।
मन मान को हारा हुआ पाना, सुरति चेतन का प्रवेश जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति चेतन सूं मन वश में जान।।

1056 सतगुरू जब नैनन की कौठरी में, निज पल पल आज्ञा माहिं।
सत्य प्रेम आनंद की जोत जाई, चेतन सुरति आनंद माहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति आनंद माहिं।।

1057 ''वे नाम'' सब्द सुरति में जाते ही, हुआ दुखों का नाष।
मान माया का जाल टूटा, जागे श्रद्धा और विश्वास।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द जगावे श्रद्धा विश्वास।।

1058 सतगुरू शरणागति राखो प्यारो, 'वे नाम' सूं जुड़ती तार।
सतगुरू आज्ञा निरखत रहो, सेवा से सेवादार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सेवा में रहे सेवादार।।

1059 मूल सब्द कहीं ढूंढे कहीं प्यारो, कैसे आवे हाथ।
जो कोई पावे 'वे नाम' सतगुरू को प्यारो, पाओ ''वे नाम'' चेतन सुरति साथ।
साहिब जी : पाओ महां चेतन सुरति को साथ।।

1060 ''वे नाम'' सब्द को दात को पा कर प्यारो, पाओ मोक्ष पद निजधाम।
अमृत दात यही कहावे प्यारो, जिस का सच्चा निजघर निजधाम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हम सब हंसों का सच्चा घर निजधाम।।

1061 भिखारीपन छूटे नहीं, जे ना जानो हंसा रूप।
''वे नाम'' सब्द बिन जागे नहीं, जिसमें हैं साहिबन रूप।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द साहिबन रूप।।

क तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी तूं।
निज को प्यारे जान ले, तेरी तुझ से छूटे तूं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द ना छूटे मै तूं।।

1062 माला कर से सुमिरन मन सूं, सोये की देत पहचान।
कर मन का मनका छोड़ दे, सतगुरू की महिमां जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां अति महान।।

1063 'वे नाम' द्वार आने पर प्यारे, मन माया से छूटा जान।
परमहंसों से मेल करना, खुदी को मिटाना जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, खुदी को मिटाना जान।।

1064 सत्य प्रेम आनंद को पाना प्यारो, एक में ही है समाना।
चेतन सुरति सतगुरू की का संग, चेतन सुरति में सुरति समाना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति में सुरति समाना।।

1065 सतगुरू द्वार से गुज़रना आ गया, शेष बचा ना कोई काम।
स्वर्ग द्वार से क्या लेना प्यारो, सतगुरू चरणों सभी धाम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू चरणों में सभी धाम।।

1066 सतगुरू सेवा से सुरति प्रकाशात, महिमां का वर्णन कहां।
सुख सम्पति की कहां चले, चेतन सुरति सम कुछ कहां।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति सम कुछ कहां।।

1067 सुरति जागी चाह चिंता भागी, मनवा की टूटी डौर।
प्रेम प्यारा सतगुरू जगत में, जोड़ी सुरति सूं चेतना की डौर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जोड़ो सुरति सूं चेतना की डौर।।

1068 लेन देन बंधन कर्मों का, मांगो कहां से दे।
लेखा सब मूल सुरति में, उसी अनुसार ही कुछ दे।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लेखे अनुसार देव भी दें।।

1069 अमल अहारी तन प्यारो, पकड़े ना सुरति धार।
हर पल मन तरंग में, सुरति सब्द की जोड़े ना तार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरत सब्द से जोड़ा तार।।

1070 शराब भांग तम्बाकू प्यारो, तन को ही खा जायें।
अंदर भक्ति का संग ना जुड़े, मृत्यु गालें जगायें।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नशा जीवों को खाये।।

1071 सिंघों के बच्चे अनेक ना, लालों के मिलें ना थाल।
पांति में संत ना मिलें, एक संत की पा लो चाल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन की पा लो चाल।।

1072 मन सब कवाड़ा कर दिया, सुरति की डौर चेतन सुरति सूं।
संत मन की भाषा जानते नहीं, करते इस पल सुरति सूं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू वाणी भरी सुरति सूं।।

1073 विषय विकारें के नर्क में, नर्क ही हो गया हर ओर।
नर्क में ही जन्मा प्यारो, नर्क से नर्क की ओर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग जीव जावे नर्क की ओर।।

1074 ज्ञानवंत हंसा रूप प्यारो, ''मन भावों का'' आवरण दे कर ढक लिया।
नष्वर पदार्थों में फंसा कर, हंसों को भटका दिया।
जग को नर्क में मिला कर, नर्क ही बना दिया।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभ ने जीव को नर्क में फंसा दिया।।

1075 चेतन को जड़ का रूप दिया, झूठ को सच का रूप दे दिया।
माया जो दुख ही दुख है, उसे सुख का रूप दे दिया।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, माया ने जग भरमा दिया।।

क मन कहता है कहने दे, क्या कर सकता शरीर।
उतरा पड़ा कमान से, कौन चलावे तीर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरतिवान धारे धीर।।

1076 कंचन कामनी तजना सहल ना प्यारो, जान सब मन के काम ले जान।
मान बड़ाई रिश्ते नाते प्यारो, सब मन के हाथ कमान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तीन लोक की मन के हाथ कमान।।

1077 तीर की शक्ति कमान के अंग प्यारो, मन की शक्ति सुरति संग।
मन तो केवल पंगु प्यारो, सुरति की शक्ति पंगु संग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन कार्य करे सुरति संग।।

1078 हंसा आप को आप बहायो, शक्ति से भरपूर।
निजघर जाने की शक्ति संग में, निज शक्ति से है भरपूर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म निज शक्ति से है भरपूर।।

1079 भृंग मत्ता ही सहज मत्त कहलाता, अमरपुर से आया जान।
हम सब हंसा अमरपुर से आये, कल कल से पार मत जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कल और कल में जीव उलझा जान।।

1080 भृंग मत्त ही सहज मत्त कहलाता, अमरपुर ले जाते।
हम सब हंसा अमरपुर से आये, काल से बच नहीं पाते।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, काल से जीव बच नहीं पाते।।

1081 वे चारों जानत नहीं, चौथे लोक का सच्चा राज़।
अमरपुर सच्चा लोक हंसों का, सत्यपुरूष का जानो राज़।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतपुरूष का जानो राज़।।

1082 सुरति को चेतन सुरति सूं चेतन प्यारो, मन माया का काटे जाल।
सुमिरन में रह हर चीज़ खाओ, कटे रोगों का सभी जाल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति काटे कर्मण जाल।।

1083 गण गंधर्व ऋषि मुणि अरू देवा, निरंझन भगवन की करते सेव।
खाली के खाली रहें, कर के मन की सेव।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभ वश जीव करे मन सेव।।

1084 तीन लोक भव सागर प्यारी, बिन सार नाम नहीं पार।
बिन नामें मन माया छूटें नहीं, काम क्रौध लोभ मोह अहंकार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार नाम सूं उतरो पार।।

1085 मन माया बंधन में हंसा पड़ा, पल पल किया बेहाल।
सुरति निरति को तोड़ रखा, यही बांध महांकाल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन बंधन ही महांकाल।।

1086 हंसा पड़ा बहु लूट में, बिन कारण ले जान।
मन माया से लेन ना देन है, तो भी बंधन में सुरति जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन बंधन में सुरति जान।।

1087 बैल से जैसे मनवा काम है लेता, जासे बैल का लेन ना देन।
हर पल कैद में है पड़ा, बांध के रखता जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव फंसा मन अधीन।।

1088 हंसा को निज की पहचान भूली, दुख का कारण जान।
मन हर काम करवाता सुरति सूं, कभी ना देता चैन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन नचावे जीव बेचैन।।

1089 मन ने आत्म हंसा को यत्न से बांधा, हंसा को नहीं पहचान।
मेरी माता मेरा भाई, सब रिश्तों का खेल महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव भूला अपना आप पहचान।।

1090 कौटि नाम जगत में प्यारो, मुक्ति से कौसों दूर।
गुप्त नाम 'वे नाम' सतगुरू पासा, पूर्ण है मुक्ति धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू पासा पूर्ण मुक्ति धार।।

1091 सुरति की डौर से घेर सब्द पवन को, फेर उल्टा चले।
ज्ञान भूमि अर्द और उर्द में, स्वांसा उल्टि चले।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, स्वांसा सम उल्टि चले।।

1092 स्वांसा को सब्द उल्टा कर देता, अति अनूठी मुद्रा जान।
या विधि सुरति जो लगाये, मन माया संग छूटा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं मन माया छूटे ले जान।।

1093 खेचरी मुद्रा में दसों पवन, सुरति निरति चेतन ले जान।
उल्टा जाप हो गया प्यारो, वाल्मीकी भयो ब्रह्म समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, खेचरी मुद्रा बालमीकी भयो ब्रह्म समान।।

1094 अष्टम चक्र में प्यारो, पवन का ताला जान।
तन से दस पवनों को उठा कर, दसवें द्वार का खुलना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अष्टम चक्र में करो ध्यान।।

1095 अष्टम चक्र पर जब स्वांसा, तन मृत्क होता ले जान।
ऐसी मरनी जो मुआ, जीवित मरना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीवत मरने से साध महान।।

1096 ऐसी अवस्था साधक जब पाता, सुरति ब्रह्माण्ड में ले जान।
बिन सुरति कुछ संग ना, तन से छूटा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति से मन छूटा ले जान।।

1097 जा मरने से जग डरे, मैं पल पल मरता जाऊँ।
ऐसी मरनी जब मरूं, हंसा रूप पा जाऊँ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागूं तो हंसा रूप पा जाऊँ।।

1098 दसवें द्वार से जब बाहिरा, अत्यन्त सूक्ष्म सुत्र संग ले जान।
महां योगेश्वर 'वे नाम' ने प्यारो, विज्ञान दही चाल महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, विज्ञान देहि चाल अति तीव्र ले जान।।

1099 सतगुरू शरणी जो पाये प्यारो, सो साधक जानो महान।
मेहरमी होये सो जाने प्यारो, साहिबन सुरति देश महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साहिबन सुरति देश अमरलोक महान।।

1100 जानन हार जान है लेता, सत्यवान अंतःकरण का बाण।
कहनन सुनन की बात ना, जानन हार चलावे बाण।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जाननहारा चलावे सत्य सब्द का बाण।।

1101 झूठ से झूठी बात नांहि, कल की बात ना जाने कोये।
इस पल ही सब कुछ, कल की कल जाने सोये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कल और कल में जीव खोये।।

1102 विचार उठत तो एक है, बाहिर बने अनेक।
एक ही अंदर रहने दो, रहे एक का एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्र हो तो सब जग एक।।

1103 प्रेम दया क्षमा विवेक प्यारो, भक्ति लक्षण ले जान।
अपनापन कहीं दिखता नहीं, भक्ति खो गई ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग में भक्ति खो गई ले जान।।

1104 वायु मण्डल प्रदूषित प्यारो, भोजन भी दूषित ले जान।
मिलावट का खेल महान प्यारो, शुद्ध कुछ भी मत ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भक्ति बिन शुद्ध कुछ भी मत ले जान।।

1105 प्रेमी खोजत 'वे नाम' चले, साहिबन ही जाने एक।
जा को प्रेम का भेद दिया, बात सुने ना एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्रेमी जग की सुने ना एक।।

1106 'वे नाम' का घर तीन लोक से, पावों कौस भर गांव।
जो पहुंचे सो पावे अमृत रस, गिरे तो छूटा गांव।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग तजो तो पाओ गांव।।

1107 सत्य वचन पाने से प्यारो, मन माया संग छूटा जान।
शाकाहारी हक कमाई, चोरी का छूटा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतनाम ही छूड़ावे अभिमान।।

1108 ध्याण उसी का प्यारो, देखा जिसे कभी हो।
सुरति जिस की कुंद प्यारो, अंकुरित एक पल हो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द अंकुरित ईक पल में हो।।

1109 देवी देवल पूजन से, आये खाली का खाली हो।
सतगुरू परमहंसा जो पूजे, सब कुछ ही उस का हो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, खाली हो तो साहिबन आवन हो।।

1110 सुख में हर दम संग में जब, दुख में दुख ना हो।
हर पल सुरति में रह कर, एक से एक का संग हो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं सब ईक सम हों।।

1111 सतगुरू आज्ञा में रहने से, हर पल उसी का संग हो।
सुरति चेतन सुरति संग, बहु विधि अमृत पाओ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार सुरति अमृत धारा पाओ।।

1112 सत्य सब्द सत्यपुरूष ही जानो, नाम बिना सब झूठ।
निर्गुण सर्गुण ते नाम न्यारा, बिन चीन्हे जान सब झूठ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन चीन्हे जान सब झूठ।।

1113 हर हंसा को बिसर गई सुद्ध घर की, निजघर की महिमां ना जाने कोई।
दुख सुख में भेद कर के प्यारो, निजघर की महिमां ना जाने कोई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निजघर की महिमां ना जाने कोई।।

1114 गृही होकर ज्ञान देवे, अमली होका ध्याण।
गुरू हो कर वेदों का ज्ञान प्यारो, कैसे बने हंसा महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमली कैसे बने हंसा महान।।

1115 जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाये।
सुरति सब्द स्वांसा में, काल का संग छूट जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं मन छूटा जाये।।

1116 हंसा ने निज को तन जाना प्यारो, हर भक्ति तन से करता जान।
तीर्थ यात्रा जप तप मूर्ती पूजा का, भक्ति से लेन ना देन।
निराकार की भक्ति भी प्यारो, काल की भक्ति ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, काल की भक्ति चौरासी में ले जान।।

1117 चार प्रकार लोग कृष्ण भक्ति करें, अति उर्थ धन यश जिज्ञासु महान।
चारों में भला जिज्ञासु प्यारो, जो आत्म परमात्म का जिज्ञासु महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म को परमात्म जिज्ञासु जान।।

क तुलसी जग में दो बड़े, एक नाम एक दाम।
नाम मिलावे पीव से, दाम करे सब काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दाम बनावे काम।।

1118 आत्म कल्याण की चाह प्यारो, सतगुरू सूं जोड़े तार।
पूर्ण मोक्ष का लक्ष्य प्यारो, पल में सार नाम से पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार नाम सूं पल में उतरो पार।।

1119 प्रेम प्यारे पास प्रेम धारा से चलो, पल में करता साथ।
निज को मिटाना काम है, गुले गुलज़ार एक साथ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, गुले गुलज़ार ईक साथ।।

1120 भौतिक पदार्थों के प्रति, हमारी रूची प्यारो।
समस्याऐं बड़ाती, अंतःकरण सूं दूर प्यारो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन हंसा का कोई मेल ना प्यारो।।

1121 चाह मिटी तृष्णा मिटी, मन की टूटी टांग।
वे ही प्रेम प्यारा है, जिस के संग हर अंग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्त प्रेमी रंगें संतन रंग।।

1122 बल धन कार्य सिद्धि से काम प्यारो, ईष्ट से लेन ना देन।
सतगुरू सूं हर कार्य की पूर्ती, भक्ति सूं लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग का भक्ति सूं लेन ना देन।।

1123 सतगुरू सूं सतगुरू को मांग लो प्यारो, सच्चे शिष्य की सच्ची पहचान।
चिंता तो ''वे नाम'' दात की, सतगुरू चरणों की महिमां जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू चरणों की महिमां अति महान।।

1124 सतगुरू को सतगुरू सूं मांग लो, चेतन सुरति सूं सुरति महान।
चिंता तो ''वे नाम'' दात की, चरणों में जोत पाये महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन चरण जोत महान।।

1125 मांग तो केवल मांग है, मरता का टूटे मान।
आप जो चाहें हो सकता प्यारो, हंसा का रूप महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जानो हंसा रूप महान।।

1126 दुनियां ऐसी भई दिवानी, किसी की बेटी भक्ति से लेन ना देन।
किसी को बेटा किसी को बेटी चाहिये, मुक्ति से लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग का मुक्ति से लेन ना देन।।

1127 कोई प्यारा दुख का मारा, कृपा की मांगे खैर।
कोई आवै तो दौलत मांगे, एक रूपया देता खैर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ईक दुखी दूजे को देता खैर।।

1128 सत्त प्रेम कोई ग्राहक नांहि, झूठ का सहारा साधन महान।
सब जग आंधा प्यारो, अंधों में अंधा महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, स्वार्थ में अंधा जहान।।

1129 पास कुछ ना लीजिये, जो देवें सो पाये।
सतगुरू ता के संग रहें, मत कोई दुख को पाये ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग की भूख मिट ना पाये।।

1130 सतगुरू समान जग कोई है नहीं, सेवादार शिष्य समान।
कुछ चाहे मांगो नहीं, सतगुरू कर ले आप समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कर लें आप समान।।

1131 निस्वार्थ सेवा प्यारो, सतगुरू सेवा जान महान।
सेवादार सेवा में रहें, सतगुरू कर लें आप समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कर लें आप समान।।

1132 जो साधक मांग पर मांग में, सतगुरू का प्रेम दूर से दूर ले जान।
जो प्रेम का भूखा प्यारो, प्रेम प्रीत से सुरति महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू प्रेम में सुरति महान।।

1133 प्रेम चाहे प्रेम देवे प्यारो, सच्चे साधक की होत पहचान।
उसकी सुरति में आप वासा करें, उसे शहनशाह जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द प्रेमी शहनशाह समान।।

1134 जो सुरति सब्द से रहे बाहरी, दुखों का संग महान।
उस से बड़ा कोई कंगाल ना, सुरति सूं टूटे कमान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं टूटे मन कमान।।

1135 एक सुरति मन में लाखों तमन्ना, उससे भी ज्यादा चाह।
हृदय में वासा पा गया, सुरति में कैसी चाह।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरतिवान की शांत हर चाह।।

1136 वे ही शहनशाह प्यारो, जिसको नांहि कोई चाह।
वह पूर्ण सतगुरू को पा गया, बिन चाह के शहनशाह।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन चाह के जीव शहनशाह।।

1137 श्री कृष्ण के मुख पर मुस्कान, इस पल में रहने का संदेश।
सुरति तरंग में रहते हर पल, दुख सुख में सम संदेश।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दुख सुख में ईक सम संदेश।।

1138 जीव सभी लाभ हानि को देखते, बिन लाभ कैसा (जग) काम।
हानि हर कार्य में देखना, दुख बिन कुछ मत जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग दुख बिन कुछ मत जान।।

1139 प्रेम जोत हर ओर जगाओ, प्रेम बिन सब झूठ।
मन मान संग छोड़ कर, इस पल बिन सब झूठ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कल और कल सब झूठ।।

1140 देने से सुख मिलता प्यारो, छीनने से दुख महान।
देने वाला खिला खिला रहे, देने वाला सतगुरू महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, देन वाला सतगुरू महान।।

1141 जो ता को कांटा बोये, ता को बोवो तुम फूल।
उस को उस के कांटे मिलें, तुझ को तेरे फूल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कांटों संग सुगंधित फूल।।

क कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराई।
अटपट चाल साहिबन की, मौसे कही ना जाई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साहिबन महिमां कही ना जाये।।

1142 जग बाहरी उपासना को प्यारे, करता क्या बूढ़ा क्या जवां।
परम चेतन अवस्था में हंसा, तन क्या बूढ़ा क्या जवां।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हंसा परम चेतन जवां।।

1143 ज्ञान में पूर्ण हर दम रहता, नीचे कभी नहीं आता।
कौटि प्रलयः देखे 'वे नाम', मरना कभी ना होता।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साध जीवत ही मर जाता।।

1144 सुशुप्ति स्वपन जाग्रत अरू तुरिया, चारों का खेल जग सारा।
सुशुप्ति में चेतना कुंद प्यारो, छूटी जन्म जन्म की सुधि धारा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जन्म जन्म की बिसरी धारा।।

1145 जाग्रत से सुशुप्ति चेतना दस गुण कम, मन की अवस्था ले जान।
चेतना जब आज्ञा चक्र में प्यारो, निज की पहचान ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निज की कर ले पहचान।।

1146 शिव जो प्रथम योगेश्वर प्यारो, गोरख सूं पार ना पायो।
सातवें योगेश्वर 'वे नाम' प्यारो, रूके नहीं परमपुरूष को पायो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोया नहीं परम पुरूष को पायो।।

1147 ईड़ा विनशे पिंगला विनशे, विनशे सुश्मिन नाड़ी।
अर्द से उर्द ताड़ी लागी, ''वे नाम'' सब्द में सुरति नाड़ी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सुरति ताड़ी।।

1148 योगी तन में प्यारो, विभिन्न चक्रों पर ध्याण रोकते जान।
शब्द का संग मन में प्यारो, कण्ठ चक्र पर देखें जोत महान।
आद्यशक्ति का वासा प्यारो, प्राणों का संग महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आद्यशक्ति मोहनी माया महान।।

सात चक्रों की महिमां

1149 विभिन्न चक्रों पर प्यारो, योगी लगाता ध्यान महान।
पहला मूलाधार चक्र प्यारो, तहां गणेश जी वासा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मूलाधार गणेश जी वासा जान।।

1150 अपान वायु स्थान प्यारो, ऋद्धि सिद्धि का चक्र महान।
योगी ध्यान लगते तहां, पल में पाते ज्ञान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ऋद्धी सिद्धी पायें योगी महान।।

1151 दूसरा नाभी चक्र प्यारो, तहां ब्रह्मां जी वासा जान।
ध्यान से ईंद्री बल कम प्यारो, ब्रह्म ध्यान की महिमां महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ब्रह्म काल ध्यान नाभी चक्र महान।।

निरंकार के 21 लोक (यथा पिण्डे तथा ब्रह्मण्डे)

साहिब जी/सतपुरूष जी/परमपुरूष जी

सतलोक/हँसालोक/निजधाम/अमरपुर

7 सहज लोक
6 वाणी/शब्द लोक
5 ईच्छा लोक
4 अँकुर लोक
3 मूल सुरति लोक
2 सोहंग लोक
1 अचिंत लोक

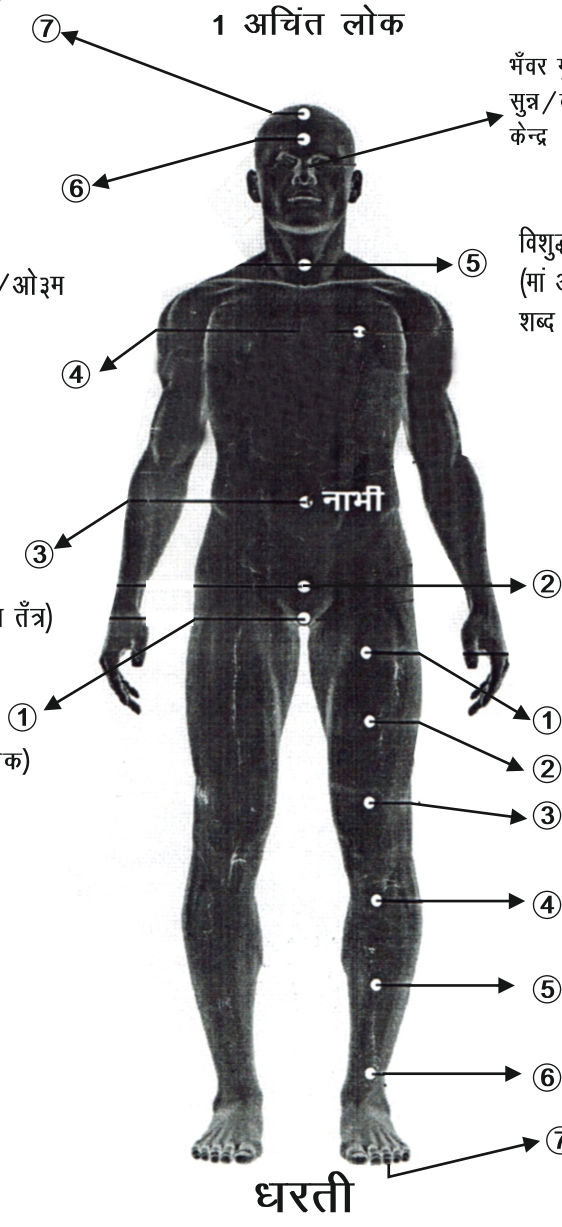

महांकाल कालचक्र

निरंकार का एक दिन और रात

आठ अरब चौसंठ करोड़ वर्ष

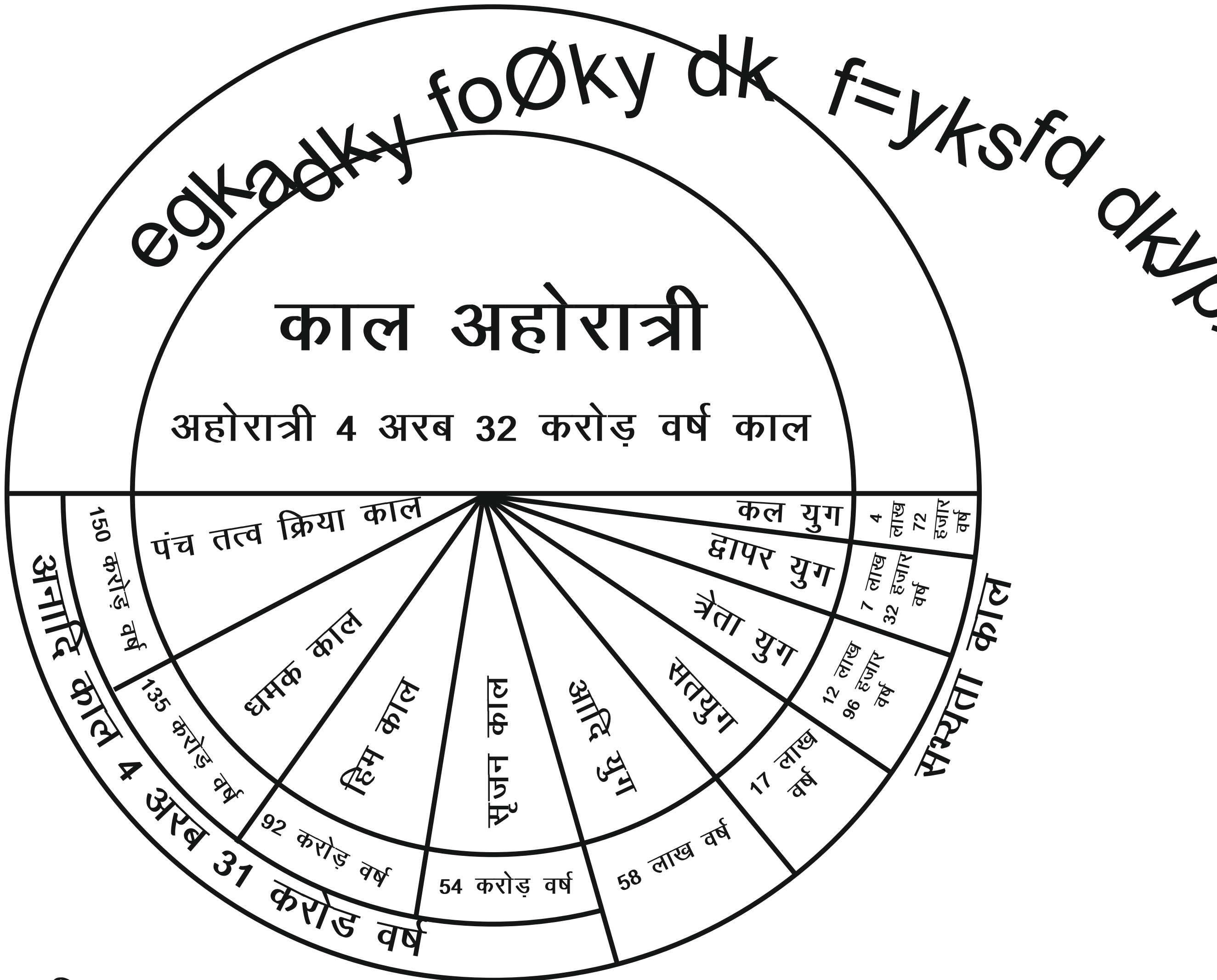

अनादि काल

1. पंच तत्व क्रिया काल
2. धमक काल
3. हिम काल
4. सृजन काल

संरचना युग

1. आदि युग
2. सत युग
3. त्रेता युग
4. द्वापर युग
5. कल युग

1152 तीसरा शुद्ध नाभी चक्र प्यारो, दस पवन का समाना ले जान।
अंदर विष्णू ध्यान में प्यारो, प्रकाश का दर्श महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान प्रकाश का दर्श महान।।

1153 चौथा हृदय चक्र प्यारो, पवन का समाना ले जान।
तहां शिव जी का वासा प्यारो, ध्यान से ज्ञान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हृदय चक्र ध्यान से ज्ञान महान।।

1154 कण्ठ पांचवां चक्र प्यारो, विशुद्ध चक्र ले जान।
धीरे धीरे प्रणनों का प्यारो, आन समाना ले जान।
आद्य शक्ति का वासा प्यारो, योगी चेहरे पर तेज महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, योगी यत्ति चेहरे पर तेज महान।।

1155 छठा चक्र त्रिकुटि स्थान प्यारो, ध्यान का प्रवेश ले जान।
तहां सुगंधित पवन का बहना प्यारो, अमृत स्वाद ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान अमृत स्वाद ले जान।।

1156 शब्द औंकार भूचरी मुद्रा प्यारो, त्रिकुटि की महिमां महान।
व्यास देव ता को पहचाना, ध्यान हर कार्य का बल ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान हर कार्य का बल ले जान।।

1157 सहस्त्र सार सातवां चक्र प्यारो, ध्यान मांग स्थान ले जान।
ता पै योगी ध्यान लगते, दर्श में पांच रंग का सूर्य महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, महांकाल पंच रंग का सूर्य महान।।

1158 मेरू दण्ड के भेद को प्यारो, टांगों के बल से चेतन ले जान।
त्रिकुटि में ध्यान प्यारो, प्रकाश महान ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान प्रकाश महान ले जान।।

1159 पीला रंग धरति का प्यारो, मीठो जान स्वाद।
श्वेत रंग जल का प्यारो, खारो जान स्वाद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सागर जल खारो जान स्वाद।।

1160 लाल रंग अग्नि का प्यारो, तीखो जान स्वाद।
नीलो रंग वायु का प्यारो, खट्टो जान स्वाद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव चाखे स्वाद।।

1161 कालो रंग आकाश का प्यारो, फीको जान स्वाद।
निगुण पांचवां तत्व प्यारो, पूर्ण मोक्ष की नाहिं बात।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन भक्ति पूर्ण मोक्ष की नाहिं बात।।

1162 सागर तट पर बिखेरे मोति, हंसा चून चून खाये।
बगले को पहचान कोई ना, भूखा ही उड़ जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभी भूखा ही मर जाये।।

1163 सत्य की धारा में प्यारो, अंधियारा मिट जाये।
सत्य पर चलना प्यारो, आप प्रेम कहलाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साध ही प्रेमी कहलाये।।

1164 'वे नाम' प्रेम सत्य आनंद प्यारो, शान्ति की मूरत कहलाये।
जा सुरति में चेतन सुरति वासा नहीं, मृतक ही कहलाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागा नर मृतक ही कहलाये।।

1165 सतगुरू का उपदेश प्यारो, साधक सुरति में समाना जान।
बारम्बार प्रणाम सतगुरू को, मनुष्य तन जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मनुष्य तन जानो महान।।

1166 मन मान का संग गया, भय विकार छूट जायें।
प्रेम शांति सुरति धारा संग, जग से प्रेम तार जोड़ जाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग से प्रेम विकार जगाये।।

1167 सात चक्र और पांच मुद्रायें प्यारो, ता में योगी की दौड़।
''वे नाम'' सब्द जग भूलया, सत्य प्रेम ही सच्ची ठौर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्य प्रेम ही सच्ची ठौर।।

1168 निर्गुण सगुण के पार प्यारो, सतपुरूष दरबार।
पूर्ण सतगुरू सूं बात बने, सुरति सूं जोड़ो चेतन सुरति धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं जोड़ो चेतन सुरति धार।।

1169 निर्गुण दिव्य शक्तियों प्यारो, प्राप्ति की जानो खान।
रजोगुणी दो के मध्य में प्यारो, लाभ का ध्यान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग लोभ में डूबा जान।।

1170 तमोगुणी खानपान का प्यारो, जाने ना महत्व महान।
काले ईल्म का भेद है देता, संग भौग महात्म महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तमो गुण से ही संरचना जान।।

1171 काले ईल्म में प्यारो, बदले का लक्ष्य ले जान।
हरणाकुश बड़ा भक्त प्यारो, मांगा वरदान को जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भक्ति वरदान को जान महान।।

1172 ना धरति ना आकाश ना अंदर बाहर प्यारो, वरदान की मांग महान।
जो कोई लड़ने को आवे, नष्ट करने की राह महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, त्याग की राह अति महान।।

1173 द्रोणाचार्य का नाष प्यारो, द्रौपद की भक्ति को जान।
काले ईल्म का प्रकोप प्यारो, खान पान से लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तांत्रिक मानवता का दुश्मन जान।।

1174 चारों ओर जब देखते प्यारो, भक्ति की भूल महान।
कोई पेड़ों की कोई नदियों की, कोई पत्थरों को जाने महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग कब्रों पत्थरों को जाने महान।।

1175 इस में नर का दौष कुछ है नांहि, इस ओर लगने वालो का दौष महान।
हंसा रूप परमपुरूष का अंश, जानो तो बनो महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हंसा रूप जानो तो बनो महान।।

1176 सतपुरूष रक्षम को चीन्हा नहीं, भक्षम का लगायें ध्यान।
डुबकी लगाते पैसे चड़ाते, दुखों का संग महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दुखों से भक्ति जागे महान।।

1177 चारों ओर छल कपट बड़ रहा, तांत्रिक ज्योतिषि का खेल महान।
सयाने पुजारी बड़े लूट में, सावधान होना काम महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सावधान रहना काम महान।।

1178 माला फेरत युग भया, मन मान का फिरा ना फेर।
कर मन का मनका छोड़कार, सुरति से सब्द का मनका फेर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति से सब्द का मनका फेर।।

1179 साहिबन घर निजधाम प्यारे, तहां सुरति का सागर महान।
कर्म धर्म तहां काम ना, क्षर अक्षर का लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म का खर अक्षर से लेन ना देन।।

1180 साहिबन घर अति दूर प्यार, तहां सिलसिली गैल।
पांव ना पड़े पिपोली का प्यार, सुरति का सारा खेल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति फेर का सारा खेल।।

1181 परमार्थ के लिये कुछ दान दो, राजा रंक फकीर।
चाह का संग छोड़ कर, सुरति का चलाना तीर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत सुरति का चलाओ तीर।।

1182 हर जीव का मान करो प्यारो, सब में जान एक प्राण।
सुरति प्राण की पहचान कर, सच्ची बात ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सच्ची बात ले जान।।

1183 जगत भगत में वैर प्यारो, दोनों में मान महान।
सच्चे भगत का वैर से क्या लेना प्यारे, निज की तूं कर पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निज की कर तूं पहचान।।

1183 सतगुरू को चार लोक का प्यारो, सच्चा भेदी जान महान।
उन को कभी मानुष ना मानना, सत्यपुरूष तद रूप महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष का तदरूप महान।।

1184 सतगुरू दीन दयाल प्यारो, सुरति सूं जानें भेद।
चेतन सुरति सूं सतपुरूष संग में, सुरति सूं मिलता भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं मिलता सत्य का भेद।।

1185 सतगुरू शरणागति पक्की नहीं, करे भरोसा और।
विश्वास भरोसा पाये कर, अब संग कोई ना और।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, विश्वास सम कोई ना और।।

1186 सतगुरू दीन दयाल जी, तुम संग जोड़ी दौड़।
जैसे काग जहाज पर, सूझत कतहुं ना ठौर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अज्ञानी जाये मन ठौर।।

1187 सुमिरन सुरति की रीत है, मन माया सूं टूटे डौर।
सतगुरू की सुरति सूं भक्ति कर, कभी ना टूटे डौर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति निज का मान।।

1188 चिंता तो 'वे नाम' की, ताहि से जोड़ ध्यान।
जो कुछ सुरति नाम बिनु, सो हो निज का मान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं निज की पहचान।।

1189 सुरति के हारे हार हैं, सुरति में होती जीत।
कहें 'वे नाम' निजघर पाये, सतगुरू सुरति की परतीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत सुरति सूं कर परतीत।।

1190 भक्ति भक्ति की बात जगत में, किसी बिरले जाना भेद।
चेतन सुरति को सुरति में प्यारो, भक्ति युक्ति का जान भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भक्ति युक्ति का जानो भेद।।

1191 आपा खोई सतगुरू रिझाये, सच्चे शिष्य की होत पहचान।
सच्चे शिष्य लाहा ले चले, मन मुख की होत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन मुख सदा रहे परेशान।।

1192 भक्ति दूषित मत करो, सतगुरू को ही सब जान।
जो जो सदगुरू कहें, वे ही करना महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू करनी जानो महान।।

1193 सतगुरू पाया कहा माना प्यारो, काल का संग गया महान।
अब कल और कल में जाना नहीं, इस पल में रहना जान।
निज की पहचान हो गई, मन मान की टूटी कमान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, भक्ति तोड़े मन की कमान।।

1194 मन माया ईन्द्रियों में प्यारो, उस मन मुरीद लें जान।
मन माया ईंद्री रस से दूर जो, सच्चा भक्त उसे ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, त्यागी सच्चा भक्त ले जान।।

1195 सतपुरूष की समझ साधक से दूर प्यारे, सतगुरू की कर पहचान।
सतगुरू चेतन सुरति सूं प्यारो, गुणगुण सुरति चेतन बने महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत सुरति चेतन बने महान।।

1196 कौटि नाम संसार में प्यारो, मुक्ति सूं लेन ना देन।
'वे नाम' तो गुप्त दात प्यारो, जानो तो बनो महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, गुप्त दात जानो तो बनो महान।।

1197 क्रौध किया घट मांहि प्यारो, सुरति महिमां नहीं जानी।
सतगुरू सूं जान सुरति भेद को, सत्य की पहचान पुरानी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आत्म की सत से पहचान पुरानी।।

1198 नन्हे होकर जो चले, साहिबन का संग महान।
मन माया अति दूर प्यारे, सतगुरू की कर पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू की करो पहचान।।

1199 निज की पहचान से प्यारे, मन मान का होत ज्ञान।
जो मन मान में रहते प्यारो, चंद पल की खुशी महान।
इसी से सारी भूल है, इस पी में रहना जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, इसी पल में रहना जान।।

1200 यज्ञ जप तप दान पूण्य, सब मन के धोखे जान।
ध्यान सतगुरू रूप का, सहज भक्ति की देत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सहज भक्ति ही देत पहचान।।

1201 सुरति स्वांसा सतगुरू नाम में, कुछ और ना चितवे दास।
जो कुछ चितवे नाम दात बिनु, सब जान काल की फांस।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग जान काल की फांस।।

1202 इस पल में ना आना हार है, मन माया से जीते जीत।
कहें 'वे नाम' प्यारो, सुरति सब्द में रहना जीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सब्द में रहना मन जीत।।

1203 सुमिरन सुरति की रीत प्यारो, इस पल से कर प्रीत।
पहले सतगुरू की भक्ति प्यारो, छूटे मन माया से प्रीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हर पल सतगुरू सूं करो प्रीत।।

1204 सुरति आप की आप ही बंध्यो, निज पहचान माहिं प्रीत।
समझ पड़े जब सब्द प्यारो, फिर कैसी इस से प्रीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द छुड़ावे जग सूं प्रीत।।

1205 मनवा तो दस दिसा फिरे प्यारो, फिर कैसी इस से प्रीत।
मन को सब्द से शांत कर, सुरति से कर प्रीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं कर प्रीत।।

1206 प्यारो सतगुरू जानिये, निज से जब प्रीत।
प्रेम से सब होत है, मन माया से ना कर प्रीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग माया से ना कर प्रीत।।

1207 आत्म कल्याण की लगन प्यारे, सुरति में नाम ध्याण।
हर समय एक सा प्यारो, जब जागे करो ध्याण।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जब जागो तब करो ध्यान।।

1208 आत्म हंसा मन माया से पार जब, पूर्ण शुद्ध ले जान।
सुरति में कुछ मेल ना, सतपुरूष अंश महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हंसा सतपुरूष अंश महान।।

1209 मन से लेन ना देन सुरति का प्यारो, बच्चे समान ही करो ध्यान।
दान ज्ञान विद्या से प्यारो, पार होना असंभव जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कर्म काण्ड में जीव फंसा ले तूं जान।।

1210 श्री कृष्ण 'वे नाम' सम प्यारे, चेहरे पर हर पल मुस्कान।
इस पल में रहना आ गया, तिलक पगड़ी टोपी इस समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू अधरों पे सदा मुस्कान।।

1211 जीव का हर अंग गंदा जान प्यारे, मरने पर बदबू महान।
तन का मान कैसा प्यारो, निज की ना की पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निज की तूं कर पहचान।।

1212 शांत रह हर कार्य करो प्यारो, दुखिये की कर पहचान।
खुशी ईक दो पल की प्यारो, सच्चा कार्य निज की पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सांचा कार्य निज की पहचान।।

1213 माता पिता के गुण बच्चों में जान प्यारे, सात पीढ़ी तक गुण महान।
सुरति को ऐसा जानिये, सतपुरूष के गुण महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जानो सतपुरूष के गुण महान।।

1214 भगवन कृष्ण सूं इस पल रहना सीख लो, दुख सुख जान एक समान।
दो दुखों का अंतराल सुख प्यारो, सब का दुख से नाता महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग का दुखों से नाता महान।।

1215 मान भरोसा कल कल प्यारो, एक जावे दूजा आ जावे।
ये सब मन का जाल प्यारो, एक जावे दूजा आ जावे।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन तरंग सबै नर भरमावे।।

1216 बच्चा सुरति महान संग साथ लाया, मन माय से कैसी पहचान।
मन माया को भरने सभी हैं पड़े, पल पल छूटे साहिबन पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं कर साहिबन पहचान।।

1217 ज्ञान विज्ञान बोझा सर आ पड़ा, मन का जान सब काम।
एक आता दूसरा जाता प्यारो, उपर की सीढ़ी चड़ने का काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ना रूकना मन का काम।।

1218 यदि ईच्छा पर नियंत्रण हो गया, मन पुरानी यादों में लेत भ्रमाये।
बचपन के दिन भुला ना देना, पल पल देत भ्रमाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तृष्णा पल पल देत भ्रमाये।।

1219 मनवा दस दिशा फिरे, सुमिरण से छूटा संग महान।
गहराई से इस पल में प्यारे, सुरति का काम महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति का काम महान।।

1220 आप को आपा ही बांधता, सुरति भी भूली चाल।
स्वान कांच मंदिल में प्यारो, भौंक भौंक मरे बेहाल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आशा तृष्णा मन का जाल।।

1221 आत्म साक्षात्कार को जीवन प्यारो, तन कार्य में पड़ा ले जान।
जीव आत्म हंसा की महिमां जानी नहीं, कल कल के फेर को जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कल और कल के फेर को जान।।

1222 ध्यान में तन मन से कुछ काम ना, इस पल में आ जाओ।
मन की तरंग पकड़ो नहीं, सब्द सुरति स्वांसा में ले जाओ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति स्वांसा में लो समाओ।।

1223 ईच्छा मन का रूप प्यारो, मन तरंगों में मत जाओ।
ध्यान में ईच्छा पर चिंतन नहीं, निर्णय ना संग लाओ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तृष्णा ना संग लाओ।।

1224 निज को सतगुरू संग जोड़ दो, यादों में मत जाओ।
करो समर्पित निज को प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति में खो जाओ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति में खो जाओ।।

1225 मन का दूसरा रूप बुद्धि प्यारो, इस पल में रह कर जान लो।
मन का बंधन छूटा प्यारो, सुरति में आना जान लो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति में आना जान लो।।

1226 पत्थर मूरत पूजे सुख मिले, मन मान का खेल ले जान।
हर एक की श्रद्धा भली, तीन लोक में मन महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तीन लोक में मन राज ले जान।।

1227 संत की चाह नहीं मुक्ति प्यारो, नहीं मन मान का साथ।
सेवा ही उनका लक्ष्य प्यारो, रहें साहिबन साथ।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुख में रहें साहिबन संग साथ।।

1228 प्रेम दया क्षमा विवेक प्यारो, भक्ति के लक्षण महान।
जग में प्रेम कहीं दिखता नहीं, सतगुरू की महिमां जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां अति महान।।

1229 संत मुक्त हो जग आता प्यारो, मन मान सूं लेन ना देन।
सेवा ही उनका लक्ष्य प्यारो, जागो तो होत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागो तो होत आत्म पहचान।।

1230 भक्ति स्वतंत्र जान प्यारे, सत्संग गुणों की खान।
कल कल जाना गया, पाओ पद निर्वाण।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हंसा पाये पद निर्वाण।।

1231 सार सब्द का दान लीजिये, मन मान का दीजिये दान।
लाखों नर बहि गाये, अंदर से गया ना मान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं भागे मन मान।।

1232 माया का सुख चार दिन, निज को करो पहचान।
सपनी पाया राज धन, ता से कहां है चैन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन माया डूबा हर नर तूं जान।।

1233 माया दासी संतन की, लोभी के सिर की ताज।
लोभी से मान चाहती, संतों से बचाती लाज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग माया कांटों का ताज।।

1234 ''वे नाम'' सब्द से सुरति जागी, पल पल अधिक बड़ी।
जहां जहां डोलूं परिक्रमा, हर पल अधिक बड़ी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सब्द अति महिमां बड़ी।।

1235 सतगुरू कुम्हार शिष्य कुंभ है, पल पल काढ़े खौट।
चेतन सुरति का अंदर सहारा दें, कल और कल को मारें चोट।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साध रहे हर पल संतन ओट।।

1236 सत्त सतगुरू गु अंधियारी जानिये, रू कहिये प्रकाश।
मन माया जाल का संग गया, अंदर जगे प्रकाश।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सुरति प्रेम प्रकाश।।

1237 जहां देखो गुरू अंधरा प्यारो, चेले को कम मत जान।
अंधे को अंध मत जान प्यारो, दोनों का नाम महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग में गुरू चेला अवगुणों की खान।।

1238 सात दीप नव खण्ड में, सतगुरू से बड़ा ना एक।
सतगुरू की महिमां अपार है, सुरति चेतन सूं करता एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, हंसा सुरति सब में एक।।

1239 सतगुरू को पल पल दण्डवत, चरणों में सुरति ध्यान।
विश्वास भरोसा आ गया, सुरति से सतगुरू सुरति में ध्यान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, धरो सतगुरू चेतन सुरति में ध्यान।।

क सतगुरू को कीजै दण्डवत, कौटि कौटि प्रणाम।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू कर ले आप समान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कर लें आप समान।।

क सतगुरू आज्ञा मानै नहीं, चले अटपटी चाल।
लोक वेद दोनों गये, आये सर पर काल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, माया में आत्म भूला निज चाल।।

क सतगुरू आज्ञा ते आवई, सतगुरू आज्ञा ले जाये।
कहें कबीर सो संत जान, बहु विधि अमृत पाये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन सूं बहु विधि अमृत पायें।।

1240 मुझे तो काम सतगुरू से प्यारो, दुनियां से लेन ना देन।
संगत की सेवा सच्चा काम प्यारो, मन माया से लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति का मन सूं लेन ना देन।।

1241 जग अनात्म भक्तियों में पड़ा, सहज भक्ति से लेन ना देन।
लग्न मुहूरत सब झूठ प्यारो, कर्म काण्डों में नर उलझा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कर्म काण्ड में नर उलझा जान।।

1242 तीन लोक में सब ही अटके प्यारो, खरे सयाने भी भटके जान।
भ्रमित हर नर हो रहा, देवताओं की पूजा भण्डारा महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निरंकार भक्ति में नर अटका जान।।

1243 कलियुग आयो पाखंडियों का प्यारो, सतगुरू ना जाने कोये।
कल कल में रहने वाला कामी, भक्त कहवे सोई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जो सतगुरू का होई भक्त कहावे सोई।।

1244 भुलावा साहिबन आ गया, जाना मज़े उस पार।
कुछ करने को अब है नहीं, जो शरणी आवे करूं उसे पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जो 'वे नाम' शरणी आवे वही भव पार।।

संत मीरां को समर्पित 'वे नाम' जी के दोहे

1245 आओ मेरे मन मोहन प्यारे, दर्शन की एक झलक दिखला जा रे।
खाना पीना भाता नहीं, नैनों की प्यास बुझी जाये रे।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संत नैनों की प्यास बुझाये रे।।

1246 साहिबन बुलावा भेजिया प्यारो, 'वे नाम' पल में हुआ तैयार।
किस ओर जाना प्यारो, हर पल करूं ईन्तज़ार।
इस पल में है जाना मुझे, कल कल का नहीं ईन्तज़ार।।

1247 कुछ कर ना सका साहिबन काम में, यत्न किये हज़ार।
यह जग बहुत दूर चला गया, कैसे सुने पुकार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग जीव ना सुने पुकार।।

1248 मीरा भी कहती चली गई, मैं भी आने को तैयार।
जगना अति कठिन काम प्यारो, श्री श्री श्री श्री पाने में लगा संसार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मान पाने में ही लगा सारा संसार।।

1249 इतने श्री जिस संग में, फिर जागे कैसे संसार।
मान की गठड़ी संग में प्यारो, फिर कैसे ना जले संसार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मै बड़ाई में जले सकल संसार।।

1250 रात दिन तेरे आने की आस में, रात कटती नहीं दिखती।
सुख चैन सब खो गया, मिलने की आस हर पल है बड़ती।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मिलन की तड़प प्यास है बड़ाती।।

1251 हृदय उच्चाट है पड़ा, सुरति भी नहीं संभलती।
मीरा पूरी बांवरी हो गई, सुरति चेतन सुरति में जब मिलती।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति में दात मिलती।।

1252 वसुदेव कृष्ण अर्जुन को कहते, देवताओं की पूजा नाहिं।
पित्तरों भूत प्रेतों की प्यारो, भक्ति कबहु करना नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अंध भक्ति में सुख नाहिं।।

1253 जो पित्तरों की भक्ति करे, पित्तर लोक में वासा पाई।
जो भूतों प्रेतों की भक्ति करे, प्रेत योनी में जा समाई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अंध भक्ति अति दुखदाई।।

1254 केवल सतगुरू गुरू भक्ति प्यारो, और में फल कुछ नाहिं।
इन भक्तियों से प्यारो, परम कल्याण कुछ नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू भक्ति में भटका नाहिं।।

1255 पूर्ण सतगुरू बिन, सहज सत भक्ति नाहिं। (आत्मवतन सेव भुतेशू)
त्रिगुण को भक्ति में प्यारों, भूल बिन कुछ नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग माया में सुख नाहिं।।

1256 तीन बड़ी कमियां स्वर्ग में, मोत संदेश भय बिन कुछ नाहिं।
क्रौध भय से माला का कुम्हलाना, तहां कुछ उन्नित नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू शरणी बिन मुक्ति नाहिं।।

1257 कर्मों का फल भौगना प्यारो, कर्म क्षीण हुऐ बिन कुछ नाहिं।
ईर्ष्या हर स्वर्ग में प्यारो, इस से बड़ा दुख कोई और नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ईर्ष्या द्वैष में दुख नाहिं।।

1258 दौष युक्त सात स्वर्ग प्यारो, तहां अभय प्राप्ति कुछ नाहिं।
काल के सभी लोकों में प्यारो, दुख बिन कुछ नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, काल कराल अति दुख देहि।।

1259 पूर्ण सतगुरू जाने बिना प्यारो, पूर्ण मोक्ष कहिं नाहिं।
पूर्ण सतगुरू पाते ही, काल का संग अब नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू पाते ही काल छुट जाहि।।

क पतिव्रता मैली भैली, काली कुहड़ कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, वारूं कौटि सरूप।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, संतन भये शांत स्वरूप।।

1260 पारस सुरति सत्यपुरूष की प्यारो, सतगुरू की सुरति धार।
जो पावे इस सुरति को, तीन लोक से पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत सुरति ले चले तीन लोक से पार।।

1261 प्राकृतिक जीवन ही प्यारो, सच्चा जिना ले जान।
जो भौतिकवाद में उलझ गया, सब कुछ खोया ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव सोया ना जाने परमहंस महान।।

क भक्ति साहिबन अति बारीक ले जान, शीष दिये बिन नांहि पाई।
नाचना गाना ताल पीटना, सच्ची भक्ति का भेद ना पाई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू बिन जग भटका खाई।।

1262 अकह नाम का भेद सतगुरू सूं, पाये बिना भक्ति नहीं।
लिखा ना जाये पड़ा ना जाये, इस बिन पार कोई नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नाम बिन कोई पार नाहिं।।

८ सुन्न गगन में सब्द उठत है, सो सब बोल में आवे।
निःसब्दी वह बोले नांहि, सो सत्त सब्द कहावे। (पल्टु साहिब जी)
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निःसब्दी सत्त सब्द कहावे।।

1263 जग में जो भी दिख रहा प्यारो, वह सब काल का जाल।
हर जीव में मन का वासा प्यारो, संग में अंधा मोह का जाल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सतगुरू छूटे ना काल जंजाल।।

1264 बलि से छल कीन्ह भगवन, छोटा रूप धारण कर मांग।
साढ़े तीन पग धरती दान, तन बड़ा कर नापी मांग।
आध पग दान ना पा, बलि को पाताल दिया दण्ड।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निरंकार लोक भुक्तो कर्मण दण्ड।।

क कबीर का गाया गायेगा, तीन लोक मार बिन कुछ नाहिं।
उनकी सुरति में गाया बूझेगा, कुछ अंतरगर्त सूझे बिन बचे नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अंतःकरण में सुरति प्रेम नाहिं।।

1265 पांचवी मुद्रा खेचरी प्यारो, दसवें द्वार की खोज महान।
'वे नाम' ने इस की पहचान की, चारों ओर जोती स्वरूप महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, खेचरी मुद्रा पाओ ऋद्धि सिद्धि महान।।

1266 वी रूप द्वार काले तत्व का, अंदर काला तत्व महान। (अंग्रज़ी अक्षर **V**)
सूर्य चांद तारा कोई ना, नांहि धरति जल अग्नि पवन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निरंकार लोक सुन्न तत्व पसार जान।।

क रंरकार खेचरी मुद्रा प्यारो, दसवां द्वार ठिकाना।
ब्रह्मां विष्णु महेश्वर देवो, रंरकार को जाना।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, पंच शब्द भक्ति सुन्न लोक ठिकाना।।

1267 सोहंग शब्द अगोचरी मुद्रा प्यारो, भंवर गुफ़ा अस्थाना जान।
शुकदेव ने भेद को पाया, अनहद की तान सुनी महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अनहद तान धुन महान।।

1268 सुरति अभ्यास पराकाष्ठा जान प्यारे, तुरिया तीत से पार मत जान।
आप बने आप मिटे, खेल काल का जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग खेल काल का जान।।

1269 विहंगम चाल से कई बार गया, सतपुरूष संग अंदर सैल महान।
कौरा पत्र औंकार दिया, भेद बताये सतपुरूष महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मूल सुरति सूं पाओ विहंगम चाल महान।।

1270 जन्म मरण का लेखा मिटा, अमर दात सतपुरूष दी महान।
निजधाम जाने पर भेद यह जाना, सतपुरूष सूं भेद पाया महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' सतपुरूष सूं पाया भेद महान।।

क सत्त शब्द सो उनमुनि मुद्रा, सोई आकाश स्नेहि।
तामें झिलमिल जोत दिखावे, जाना जनक विदेहि।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, उनमुनि मुद्रा ज्ञाता जनक विदेहि।।

1271 सगुण निर्गुण भक्तियों में प्यारो, पूर्ण मुक्ति मत ले जान।
मनुष्य जन्म पूर्ण मोक्ष का पाना, हर नर भूला बैठा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग नर निज को भूला ले जान।।

1272 योगी मीन पपील चाल से प्यारो, सैल करे आसमानी।
पायें विहंगम चाल पूर्ण सतगुरू प्यारो, ग्याहरवें द्वार की राह पहचानी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मीन पपील सूं सैल करो असमानी।।

1273 सत्य 'वे नाम' नाम साहिबन, सो ही नाम हंसा हमारा।
ज्योति स्वरूप औंकार प्यारो, पहचाने नाम हमारा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साहिबन अंश हंसा नाम हमारा।।

1274 हंसा की अमरलोक में प्यारे, आयु का भेद कुछ नाहिं।
अमरलोक से हर हंसा आया, बिन पहचान के देश वे नाहिं।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमरलोक सब हंसा एक कोई भेद नाहिं।।

1275 जिस में धुण लगी प्यारो, ताहि में आनंद ले जान।
इस जहां में प्यारो, धुण से बार बार जन्म ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अनहद धुणों में मोक्ष ना जान।।

1276 आनंद वस्तु स्थान में नांहि प्यारो, ता का वासा निज अंदर ले जान।
खेल विषय विकार धन, आनंद के साधन ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सत सब्द आनंद नहीं ले जान।।

1277 जब तन मन विचार थिर प्यारो, सुरति निरति थिर तूं जान।
सुश्मिना सम्म अवस्था प्यारो, उस कल्प की महिमां जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, थिर सुरति निरति महिमां जान महान।।

1278 जब तुरियातीत से पार प्यारो, कौटि ब्रह्मण्डों का मालिक उसे तूं जान।
अस अवस्था को पाकर, कभी गिरना ना उस का जान।
निजधार की दात पाने पर, काल जाल सब छूटा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, तुरिया तीत अवस्था अति महान।।

1279 औंकार भगवन के कंई जन्म जब होत, तब साहिबन का एक पल जान।
हर हंसा का भी पल प्यारो, मरना कभी ना जान।
'वे नाम' अविनाषी भेद हैं देते, सतलोक की महिमां महान।।

1280 सत्य स्वरूप नाम सतपुरूष को सो ही जान 'वे नाम'।
ज्योति स्वरूप औंकार प्यारो, आन जपे नाम 'वे नाम'।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साधो आन जपो सब्द नाम 'वे नाम'।।

1281 हर नाम सदा शिव सेवा, तीन लोक सूं पार ना फेरा।
हर ढंग सूं शिव को ध्यावे, रिद्धि सिद्धि भी दुख का फेरा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सगुण निर्गुण है माया फेरा।।

1282 रिद्धि सिद्धि सुख संग प्यारो, भवसागर संग छूट जावे।
कैलास पर्वत पर जे वासा, साहिब संग छूट जावे।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, धन लोभी का साहिबन संग छूट जावे।।

1283 सिद्ध साधु गण गंधर्व और देवा, सब मिल करें औंकार सेवा।
यह सब औंकार तक पहुंचे जान, ईक ना पाई सतगुरू सेवा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सारा जग करे औंकार सेवा।।

1284 भक्त अनेक आये जग मांहि, निर्भय सत्य घर को पावत ना एक।
सहज सत्य भक्ति प्यारो, भक्ति बिन पार जान ना एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन भक्ति कोई पार ना एक।।

1285 सतयुग भक्ति करि ध्रुव राजा, पांच वर्ष आयु ध्रुव राजा।
छठे मास प्रकटे हरि आई, बने बैकुण्ठ ध्रुव राजा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, कर्म फल भौगें रंक और राजा।।

1286 साठ हज़ार वर्ष पायो राज, कुटुम्भ सहित बैकुण्ठ को राज।
परम पुरूष का भेद ना पायो, फिरी जन्म पायो काल के राज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्रुव फिर जन्म पायो काल के राज।।

1287 जहां द्वैत तहां माया प्यारो, अमृत साग़र का भेद कठिन तूं जान।
वह तो अक्षम लोक प्यारो, अक्षय नाम से पार नहीं जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सब्दे कोई पार नहीं जान।।

1288 'वे नाम' अनाम निःअक्षर प्यारो, उसे 'वे नाम' बिन जाने ना एक।
वही 'वे नाम' का वास प्यारो, साहिबन का सच्च देश वह एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ईक ''वे नाम'' सब्द की लो टेक।।

1289 सतगुरू शरण ना आवही, फिर फिर होये अकाज।
जीव खोये जायेंगे, तिहुं पर काल का राज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभी पर छाया काल राज।।

1290 कितने भेद को पाने चले, बिन साहिबन कृपा पावे ना एक।
'वे नाम' विहंगम चाल प्यारो, पल में पहुंचे निजघर संग ना एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की लो तुम टेक।।

1291 सतगुरू कृपा से प्यारो, बरसे साहिबन कृपा महान।
कहें 'वे नाम' सतगुरू कृपा बिन, पार एक ना जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन एको जान।।

1292 कौटि नाम संसार में प्यारो, मुक्ति देत ना एक।
''वे नाम'' सब्द तो गुप्त प्यारो, 'वे नाम' दास बिन जाने ना एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करे सुरति एक।।

दस वायुओं की महत्वता

1293 सतपुरूष का हर कार्य प्यारो, 'वे नाम' दास बिन जाने ना एक।
दास जिन साहिबन दर्श किया, वोहि जानो जागा एक।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार सुरति सूं लगाओ टेक।।

1294 यज्ञ हवन वायु शुद्ध करे, वायु शरीर में अति महत्वपूर्ण लो जान।
दस वायु सूं शरीर कार्यशील, बिन वायु काया निष्क्रीय ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन प्राण त्रिलाक बेजान लो जान।।

फ मुर्शिदे कामिल से मिल, सिद्धक और सबूरी से तकी।
वे तुझ को देगा फहद, दिलभर पे जाने के लिये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लाख बहाने दिलभर को पाने के लिये।।

1295 हमारी आत्मां प्राणों में रमी प्यारो, प्राणों में चार प्राण प्रमुख ले जान।
हर एक प्राण के प्यारो, चार उपप्राण शरीर में ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, शरीर में उपप्राणों की महत्वता लो जान।।

1296 प्राण ही वायु जान प्यारे, तन में नौ नाड़ियों में प्रवेश जान।
नौ नाड़ियों से प्यारो, बहत्तर कौठों में प्रवेश ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्राण वायु तन चेतन करती ले जान।।

1297 वायु के कारण प्यारो, चलना बोलन सुनना खेल ले जान।
हर कार्य वायु से प्यारो, वायु बिन मन पंगु ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, वायु बिन जीव पंगु ले जान।।

1298 तन में दस वायुऐं प्यारो, विभिन्न अंगों में अलग अलग कार्य करे महान।
बिजली की तार समान प्यारो, सुरति प्राणों में समाई जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति प्राण हर अंग समाई ले जान।।

1299 दस प्राणों का प्यारो, तन में इनका खेल महान।
अपान वायु गुदा स्थान में प्यारो, पेट से खारिज होना महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अपान वायु से हाजमा रहे बलवान।।

1300 अपान भौजन को पचाती प्यारो, प्रकृति व्यायाम का संग महान।
कुछ भी तन में व्यर्थ ना, मल द्वार से बाहिर आना जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अपान मल बाहर त्यागे लो जान।।

1301 यह वायु हानीकारक प्यारो, तन में जहां पहुंचे हानी करे महान।
कम खान अति अच्छा प्यारो, अधिक खाना दुख देत महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अपान बिगड़े तो दुख देत महान।।

1302 हृदय में आई तो प्यारो, हार्ट अटैक दुख महान।
सिर में आ जाये तो प्यारो, सिर भारी करे दुखी महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अपान हृदय गति रोक लेती ले जान।।

1303 दूसरी उदान वायु व्यारो, कलेजे में रहती जान।
कलेजे रक्त का संचलन करती, हर एक का काम महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, उदान वायु रक्त संचार करे महान।।

1304 तीसरी प्राण वायु प्यारो, हृदय का कार्य करे महान।
चौथी प्राण वायु प्यारो, जोड़ों में रहती जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्राण वायु शरीर गतिमान रक्खे ले जान।।

1305 धनंजय वायु प्यारी, भुजाओं का कार्य करे महान।
छाती में भी वासा इस का, लकबा वायु विकार जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, धनंजय वायु कण्ठ शुद्ध करे ले जान।।

1306 बुद्ध निराकार जोत के दर्शन किये, निर्वाण का पाया ज्ञान।
कुछ भी पाया नहीं, सब खोया जग का जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन भौजन अल्प जीवन बिन वायु मृत्यु जान।।

1307 काल की हर वस्तु छूटि प्यारो, जग झूठा पसारा जान।
स्वपनों का संग गया, झूठे विचारों कुरीतियों सूं छूटा साथ महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सार सब्द सब झूठ पसारा ले जान।।

1308 मन से अच्छा बुरा सब गया, चाह सूं संग छूटा जान।
झूठ खोरी का संग गया, ध्याण की महिमां महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ध्यान सिमरन की महिमां महान।।

1309 एक दिन अमरलोक बिन सब मिटेगा, आवे जो वहां से खबर उसकी कहे।
जिस को सतपुरूष नज़र आवे प्यारो, फिर वह कुछ ना चाहे।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन जागे नर माया ही चाहे।।

1310 स्वांस स्वांस में सुमिरिये, एक दिन मेला होय।
फिर कभी बिछोड़ा नहीं प्यारो, सत्य प्रेम आनंद का मेला होये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्त सब्द से आनंद ही आनंद होये।।

1311 पवन को सुशिमन में पलट कर प्यारे, अधर में धर किया।
धर से अधर का मेल प्यारो, सतगुरू मेहर सब किया।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू मेहर सब काम किया।।

1312 दसवें द्वार से आत्म जब जाये प्यारो, स्वर्ग लोक में वासा जान।
ग्याहरवें द्वार से निकासा जब प्यारो, अमरलोक में वासा जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्राणों में ध्यान अमरलोक वासा जान।।

1313 बंकनाल ऐसा बिंदु प्यारो, मन की स्फूरना कम होई ले जान।
प्राण चेतना अति अधिक प्यारो, अंदर आनंद की महिमां जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति की महिमां ले तूं जान।।

1314 जाप अजाप अनहद सभी गये, जब सुरति में सब्द विदेह।
धुणात्मक वर्णात्मक शब्द दोनों गये, केवल रह गया सब्द विदेह।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब भ्रम मिटे जब पाई दात विदेह।।

1315 कौटि शब्द नाम संसार में, तीन से मुक्ति मत तूं जान।
'वे नाम' सब्द जो गुप्त प्यारो, पूर्ण सतगुरू सूं ले तूं जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, गुप्त भेद सतगुरू सूं ले तूं जान।।

1316 सत्य सब्द की भक्ति में प्यारो, सतगुरू सब करता जान।
बिन सतगुरू कृपा के प्यारो, छूटे काल जाल महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावे काल जाल ले जान।।

1317 करोड़ों जीव भटक रहे प्यारो, पास ना सच्चा भेद।
बिन 'वे नाम' कृपा के प्यारो, कैसे जानो साहिबन भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सूं जानो साहिबन भेद।।

1318 मन ही औंकार सबै नचाये, जीव कबहु ना जाने सच्चा भेद।
पूर्ण सतगुरू दात लाये जगत में, चरणों पर झुकने से पा लो भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू चरणों में पा लो भेद।।

1319 सत्य समान धर्म नहीं प्यारो, जानो सच्चा भेद।
प्रेम सत्य आनंद प्यारो, सुरति में इन का भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति में सत्य धर्म भेद।।

1320 सतगुरू चेतन सुरति प्यारो, निज की पहचान का करती काम।
मन मान माया का संग गया, निज की तूं कर पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नर निज की तूं कर पहचान।।

1321 सुरति को चेतन सुरति चेतन करे, सतगुरू सूं मिलता भेद।
नदी का सागर सूं मेल प्यारो, समर्पण सूं मिलता भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, श्रद्धा समर्पण से मिलता भेद।।

1322 ईच्छा करना मन का काम प्यारो, निर्णय करना बुद्धि का काम महान।
चित्त को हर काम याद प्यारो, कार्य कर्ता अहंकार महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नर में कर्ता अहंकार महान।।

1323 स्वभाव में डूबना सुरति सूं प्यारो, सुरति संग स्वभाव एक तान।
दोनों एक ही जान प्यारे, इस पल में सुरति को जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, इस पल में रहना तूं जान।।

1324 मुक्ति मन माया का छूटना प्यारो, सतगुरू सब्द सुरति का बाण।
गहरे से गहरे हो प्यारे, सुरति में निज को जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन चेतन सुरति जीव माया डूबा ही जान।।

1325 काम क्रौध आशा तृष्णा प्यारो, मन के अंग ले जान।
सुरति सब्द स्वांसा में रहना प्यारो, स्वभाव में जीना सुरति महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्रेम भाव ही सुरति जान महान।।

1326 ''वे नाम'' सब्द बीण प्यारो, आत्म निष्ठ होना कठिन ले जान।
स्वयं पर विश्वास जब, सतगुरू पर विश्वास ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू पर श्रद्धा विश्वास आस्था महान।।

1327 स्वयं पर सतगुरू पर प्यारो, विश्वास सुबास सुरति जान।
सत्य प्रेम आनंद शांति प्यारो, विश्वास के संग ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, विश्वास भरौसा दिलाये सब्द महान।।

1328 सुरति स्वभाव में रहना प्यारो, इस पल में रहना जान।
निज पहचान से हो प्यारो, प्रेम सुरति की कर पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति स्वभाव प्रेम की कर पहचान।।

1329 आशा तृष्णा में जाना प्यारो, मन माया का सच्चा ध्याण।
जो आशा छोड़ते नहीं, कैसे जाने सत्य आनंद महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग ना जाने सत्त आनंद महान।।

1330 अनासक्ति का सबंध प्यारो, सोच विचार का संग ले जान।
इस का सबंध मन विचार से प्यारो, सुरति सूं लेन ना देन।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति का मन सूं लेन ना देन।।

1331 अनासक्ति का संबंध प्यारो, विचारों का संबंध ले जान।
इस का संबंध निज सूं नांहि प्यारो, मन तरंग सूं ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन तरंग जीव बहा ले जान।।

1332 संसार में होना आसक्ति नहीं, संसार का मन में होना आसक्ति जान।
संसार का सुरति से वाष्पिभूत प्यारो, अनासक्ति ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अनासक्ति मुक्ति मार्ग ले जान।।

1333 इस पल में ही रहना प्यारो, मन माया से वाष्पि–भूत ले जान।
मन माया काल और कल प्यारो, सार सब्द से वाष्पि–भूत ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं मन वाष्पि–भूत ले जान।।

1334 दमन चेतन और अचेतन में प्यारो, समस्त द्वंद का मूल ले जान।
सुरति में जा सब त्याग दे, एक से एक का ध्यान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति से कर एक का ध्यान।।

1335 आनंद प्रेम सत्य की चाहा नहीं प्यारो, भीख मांग ना समान ले जान।
खोने को कुछ भी पास ना, पाना का संग छूटा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सूं मन माया छूटे ले जान।।

1336 चाह प्रेम सत्य आनंद के मार्ग में प्यारो, निज का धोखा ले जान।
खाली होने से प्यारो, तुम में ही सब समाया ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जीव भीतर सब समाया ले जान।।

1337 लुटाये बिना जग में प्यारो, आनंद मुक्ति का मार्ग कहां।
काम वासना मन का अंग प्यारे, सुरति का काम कहां।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति का काम नहीं इस जहां।।

1338 जीवन की सुरति धारा में प्यारो, चाह की रही ना राह।
चाह आनंद को मार्ग में प्यारो, बाधा को देती राह।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन भक्ति बाधा को देती राह।।

1339 जीव तथ्यों में नांहि प्यारो, स्वपनों में रहता जान।
हर मन एक जगत प्यारो, हर तन में करे निर्माण।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, स्वपन्न तन में प्रमाद करे निर्माण।।

1340 स्वपनों का संग जब छूटे प्यारो, शून्यता सुरति धार।
विक्षिप्ता स्वपनों का जोड़ प्यारो, सुरति की तोड़े धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति सूं तोड़ों स्वपन्न धार।।

1341 विचार को मन की शक्ति जान लो, सुरति चेतन सूं लेन ना देन।
विचार ना विश्वास को छीने प्यारो, मनुष्य का दीन हीन होना ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन मौजी को दीन हीन ले जान।।

1342 शब्द से सत्य मिलता नहीं, अध्यन चिंतन मनन से बने ना काम।
निर्विचार निर्विषय चित्त, चेतन सुरति से सत्य का काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति से बनें सब बिगड़े काम।।

1343 सत्य सत्य सुरति में प्यारो, चेतन सुरति से सुरति का शून्य महान।
चेतना ही केवल जहां, सत्य का उदघाटन महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्य उदघाटन महिमां महान तूं जान।।

1344 सत्त प्रेम आनंद सुरति में प्यारो, उसे पाना धोखा ले जान।
मन माया का आवरण उठाना प्यारो, अपने आप में सत्य ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, आप में सत्य समान ले जान।।

1345 जिस आवर्ण पात्र से है ढंका, मन मान ही उसे ले जान।
मन मान का आवर्ण ''वे नाम'' सब्द से उठे, निज सुरति में सत्य महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, निज सुरति में धारो सत्तनाम।।

1346 सुरति ही सत्य प्रेम आनंद प्यारो, अमृत की खान ले जान।
सत्य कहीं मत खोजो प्यारो, तेरा ही अंग रूप महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्य प्रेम हंसा अंग महान।।

1347 खोजी चेतन सुरति का प्यारो, पल (तुरन्त) में ही पाता ले जान।
सतगुरू सब्द प्यारो, सत्यपुरूष की चेतन सुरति महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू में सतपुरूष चेतन सुरति ले जान।।

1348 सुरति ही साधन होकर प्यारो, सतगुरू सूं पाये वस्तु महान।
सरिता साग़र खोज लेती प्यारो, प्रेम प्यास सतगुरू का संग महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, प्रेम से पाओ सतगुरू संग महान।।

1349 प्रबल प्यास अथक संकल्प प्यारो, प्रतीक्षा का फल महान।
पूर्णतः पुकार पर पुकार प्यारो, द्वार पर सतगुरू ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सदा बाट जोहें ले जान।।

1350 प्यास संकल्प प्रतीक्षा पुकार प्यारो, प्रार्थना के अंग ले जान।
प्रार्थना कृत्य नहीं प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा में जाना जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति स्वांसा महान ले जान।।

1351 प्रार्थना में हुआ जाता प्यारो, भाव में सुरति महान।
सुरति में विजाति जब प्यारो, भाव की टूटे तान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सूं टूटे मन की कमान।।

1352 ''वे नाम'' सब्द सुरति में प्यारो, विजाति का टूटे बाण।
मन माया का संग गया, खिलें प्रेम के भाव फूल महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, शुद्ध भाव से जीवन अति महान।।

1353 सार नाम की दात से प्यारो, सुरति चेतन ले जान।
मनमान के आवरण प्यारो, पल में छूटे ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, नाम सूं झूठे आवरण हटें ले जान।।

1354 असंभव कभी असंभव नहीं प्यारो, जब कारण और कार्य में मेल।
जब संकल्प में सुरति धार प्यारो, सुरति निरति में जानो मेल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति निरति धारा अनमोल।।

1355 जहां सत्य का वास प्यारो, वहीं शांति का द्वार ले जान।
''वे नाम'' सब्द कड़ियों को जोड़ता, सत्य का सागर संग महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सत्य का साग़र महान।।

1356 जगत जिस में जीते सभी, स्वयं का निर्माण महान।
''सार सब्द'' दात जब पास में, जगत का संग छूटा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार सब्द सूं मन छूटा ले जान।।

1357 बीज बोने फल आने के भेद में, भ्रांति की सम्भावना ले जान।
भ्रांति कड़ियां तोड़ती, शांति का संग छूटा ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, शांति का संग उन्नति पथ महान।।

1358 चकौर चांद एकटक निहारता प्यारो, शेष सब जाता भूल।
भूख प्यास का संग गया प्यारो, स्वयं को भी जाता भूल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, लोभी लालची निज को जाता भूल।।

1359 सुरति से एकटक निहारो सतगुरू को, शेष सब जाओ भूल।
झूठे जग का संग गया प्यारो, निज को भी जाओ भूल।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू सूं जानो निज मूल।।

1360 विश्वास भरोसा ला सतगुरू पर प्यारो, और कुछ शेष ना काम।
भरौसा ध्रुव तारे की चमक प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा से काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सतगुरू सब्द स्वांसा का क्या काम।।

1361 निज की खोज ही सत्य की खोज प्यारो, विश्वास भरोसा करे सब काम।
''वे नाम'' सब्द अंधेरे से पार करे, शेष सतगुरू कृपा से काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कृपा से बनें सब काम।।

1362 अवतार मन का रूप प्यारो, किसी से नहीं परेशान।
मन के दस हज़ार अंग साथ में, मन के भावों पर पूर्ण कमान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन के हाथ जग जीव कमान।।

1363 कौन किसी को परेशान करे प्यारो, मन ही आप भगवान।
मन की करामातें दिखाता प्यारो, मन के साठ लाख हाथ महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन के साठ लाख भाव ले तूं जान।।

1364 सुरति की डौरी उन के हाथ में, उसी से काम लेते महान।
प्रेम आनंद में रहते सदा, सत्य शांति का खेल महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सत्य शांति सब्द समाई ले जान।।

1365 अवतारों को कुछ छोड़ना है नहीं, मन के हाथ लगाम।
पल पल खेल दिखाते जगत में प्यारो, हर जीव के गले लगाम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन ने डाली हर जीव के गले लगाम।।

1366 सत्यपुरूष जन्म लेता नहीं, जग कैसे करे बख़ान।
सतगुरू मन के खेल खेलें कहा, सुरति का करते बख़ान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सतगुरू वाणी सब माया जान।।

1367 जग करामातें चाहता प्यारो, सतगुरू सूं उन्हें क्या।
अपनी अपनी ड फली बजात जगत में, ईक भी ना धरता कान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति पर मन ना धरे कान।।

1368 तट पर रहते रहते प्यारो, कितने काल किये व्यतीत।
अब ''वे नाम'' दात लाया प्यारो, आओ चलें जग जीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन जीते जो वही जग जीत।।

1369 सतगुरू कृपा बरस रही प्यारो, खुली चेतन सुरति को सुरति में आने दो।
प्रेम आनंद संग साथ प्यारो, जोत से निज जोत जगा दो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमर जोत से निज जोत जगा लो।।

1370 सुरति स्वयं के भीतर प्यारो, 'वे नाम' सूं पूर्ण दात तुम पा लो।
मछली प्यासी सागर में प्यारो, सच्चे भेद को पा लो।
पृथ्वी आकाश शांत जान प्यारे, राम कृष्ण प्रेम महान जान लो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं सत सुरति भेद पा लो।।

1371 मुझे तो काम सतगुरू साहिबन से, जगत के रूठन से क्या काम।
जगत मन मान माया से बना, सुरति में आना सच्चा काम।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मूल सुरति में आना सच्चा काम।।

1372 कोई सर्गुण भक्ति में खोया प्यारो, कौ निर्गुण का करे ध्यान।
मुस्लमान सूत्र हद तक चले, हिन्दु महां सूत्र ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जग में सभी जीव महान।।

1373 'वे नाम' की सच्ची राह प्यारो, हद अनहद के उस पार।
सुरति का भेद जो पाता प्यारो, जाता निजघर द्वार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं निजघर द्वार।।

1374 तन मन बंधन हैं नहीं प्यारो, सुरति बंधन में जान।
सुरति साहिबन अंश प्यारो, दुख सुख से पार ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, दुख सुख से पार हंसा ले जान।।

1375 भक्ति निशानी मुक्ति की प्यारो, मन माया का जानो भेद।
पूर्ण निर्वाण पाना ही लक्ष्य प्यारो, पूर्ण सतगुरू सूं जानो भेद।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' सूं जानो निर्वाण भेद।।

1376 सतगुरू की सुरति में समाना ही काम प्यारो, कल और कल छूटा ले जान।
इस पल में सुरति वासा प्यारो,सतगुरू की महिमां जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां अति महान।।

1377 निज को पाना निज से नांहि प्यारो, केता करो उपाये।
सतगुरू को सब कुछ सौंप दो, पल में मिलना होये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं मिलना होये।।

1378 जिन ना जाना 'वे नाम' को प्यारो, मथुरा जाओ या काशी द्वार।
तीन लोक से पार जानो सृजनहारा प्यारो, ये भेद काल भगवन से पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द तीन लोक से पार।।

1379 जो नर सतगुरू का कहा माने प्यारो, सो साहिबन का हंसा प्यारा।
अमर दात संग में जब प्यारो, सतगुरू संग पाये निजघर प्यारा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, 'वे नाम' संग जायें निजघर प्यारा।।

1380 आत्म ज्ञान बिन सब खाली प्यारो, क्या देश क्या प्रदेश प्यारो।
अमर दात मन माया से छुड़ाये प्यारो, सुरति जोत जग मगाये प्यारो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमर सब्द सुरति जगमगाये प्यारो।।

1381 सतगुरू सत्त सब्द सत्य, आप सत्य जे होये।
सब्द सुरति चेतन करे, पल में साहिबन दीदार होये।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति से साहिबन दीदार होये।।

1382 धर में अधर का संग प्यारो, सतगुरू मेहर से सब हुआ जान।
आज्ञा चक्र में प्यारो, किया साहिबन दीदार महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन दरस महान।।

1383 सुमिरण से जागे सत्य प्रेम आनंद प्यारो, दुखों का नाष ले जान।
कहें 'वे नाम' सुमिरण किये, सतगुरू साहिबन संग एक ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन एको लो जान।।

1384 सतगुरू की शरण ले के चलो, संग ले चलें उस पार।
सब हंसा सतपुरूष रूप प्यारो, सतगुरू संग चलो उस पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, अमरलोक सब हंसों का दरबार।।

1385 वेद शास्त्रों की सीमां से पार, बुद्धि और कल्पना से जान उसे पार।
जहां गये फिर लौटना कहां, कौ 'वे नाम' सा पावे पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन तरंग जीव बहे कोइ ना उतरे पार।।

1386 भक्ति भक्ति सब जगत बखाने, सत्य भक्ति किसी विरले ही जानी।
सन्यासी योगी जट्टाधारी, करी भक्ति पर युक्ति ना जानी।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, योगी सिद्ध सब्द महिमां ना जानी।।

1387 सत्त प्रेम आनंद प्यारो, सुरति के गुण महान।
''वे नाम'' सब्द जा के पास प्यारो, जान उसकी महिमां महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द की महिमां अति महान।।

1388 करो सब का मान एक का ध्याण प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से निज की पहचान।
सतगुरू चेतन सुरति सूं सुरति जगती, ''वे नाम'' सब्द से पार ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं पार तूं जान।।

1389 कल और कल ही मन प्यारो, इस पल में रहना जान।
निज की पहचान से प्यारो, सत्यपुरूष की होत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सूं सतपुरूष की होत पहचान।।

1390 जो जाग गया सो पार गया, कल कल से संग छूटा ले जान।
सत्य प्रेम आनंद शांति का संग, पल पल सत्य पुरूष का संग ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन जागे काल ना छूटे ले जान।।

1391 सत्यपुरूष पास उस पार चलो प्यारो, सतगुरू सब्द करो जहाज।
जिसे ''वे सब्द'' दात दे जावें प्यारो, सहज से सहज मिले जहाज।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, जागो तो सहज से मिले सहज।।

1392 मन मान में हार जान प्यारे, ''वे नाम'' सब्द से पार।
कहें ''वे नाम'' सब्द पाये प्यारो, सुरति जागे तो जानो पार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति प्रीत जागे तो पार।।

1393 मनवा सूं सुमिरन कैसे प्यारो, यह तो काल की रीत।
सुमिरन सुरति की रीत प्यारो, सच्ची रीत सूं जगती प्रीत।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सिमरन रिती सूं जगती प्रीत।।

1394 पूर्ण सतगुरू तारे तेरे प्यारो, ईक्कहतर वंश एक सुरति धार।
भूत भविष्य का संग छूटे प्यारो, जब पास में ''वे नाम'' की धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मोक्षदायी ''वे नाम'' सब्द सुरति की धार।।

1395 सतगुरू दर्शन के किये प्यारो, उतरो भव जल पार।
सतगुरू दर्शन को जब चले, सुरति में भर लो चेतन सुरति धार।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द में भर लो चेतन सुरति धार।।

1396 सुख दुख में एक सम रहो प्यारो, कबहु ना छूटे संतन संग।
हर पल सुरति में रहो प्यारो, कबहु ना छोड़े सतगुरू संग।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू संगति आनंद प्रेम ईक संग।।

1397 सतगुरू सबको चाहते प्यारो, चेतन सुरति बिन बात बने ना कौई।
आशा तृष्णा जब संग में प्यारो, तब लग दास बने ना कोई।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, चेतन सुरति बनावे दास हर कोई।।

1398 जाकी सुरति जागी नहीं प्यारो, दासा पन से दूर।
''वे नाम'' दात पाये बिना प्यारो, दुख दर्द से भरपूर।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति करावे दुख दर्द से दूर।।

1399 'वे नाम' सच्चा कुल सोई जानिये प्यारो, जा कुल में कोई दास।
जो कुल दास बिना प्यारे, वहां केवल काल का वास।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सब्द जग काल का ग्रास।।

1400 सभी बंधन तोड़ कर प्यारे, पा ले ''वे नाम'' सब्द का ज्ञान।
जो सब्द सुरति स्वांसा में रहता प्यारो, उसे ही जान महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, मन माया तजो बनो महान।।

1401 भादों नदी समान भक्ति भाव ना, सोई सरिता जेठ मास जल युक्त हो।
देखा देखी भक्ति नहीं प्यारो, हर पल भक्ति युक्त हो।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सोया नर भक्ति से युक्त ना हो।।

1402 भक्ति बीज का युग से लेन ना देन प्यारो, अनंत युग में एक समान।
समय काल से पार वह, क्या कर सकता मन मान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, समय काल से परे 'वे नाम' दात महान।।

1403 भक्ति भेष भाव बहु अन्तरा प्यारो, जैसे पृथ्वी आकाश।
भक्ति लीन सतगुरू चरणन में प्यारो, मन माया जगत की आस।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन जागे ना छूटे जगत की आस।।

1404 भक्ति पदार्थ भण्डार मिलें प्यारो, जब सतगुरू रूप ध्यान।
सत्य मार्ग की भक्ति में प्यारो, सतगुरू सुरति महिमां महान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सतगुरू भक्ति प्रेम प्रीत की खान।।

1405 सतगुरू की दात से प्यारो, विक्षिप्तता टूट जाती है।
''सार सब्द'' की दात से प्यारो, अज्ञान की लड़ी टूट जाती है।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सार सब्द सुरति सूं आत्म जग जाती है।।

1406 सत्त प्रेम आनंद प्यारो, सुरति की जोत महान।
सुरति जगे बिना सत्य प्रेम संग ना, सुरति जागे तो सब पास ले जान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति जागे तो साहिबन संग ले जान।।

1407 सत्त प्रेम आनंद प्यारो, अनादि अनंत असीम ले जान।
सुरति जागे तो प्यारो, निज भूल की होत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, बिन सब्द निज की ना होत पहचान।।

1408 हर नर की आंखें बंद प्यारो, तो ही निज को निज से दूर ले जान।
सत्य प्रेम से नाता टूटा पड़ा, सतगुरू सूं होत पहचान।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, समर्पण प्रीत से होत सतगुरू पहचान।।

1409 सतगुरू ही हमारी संपदा प्यारो, किसी और संपदा पर भरोसा कैसा।
शेष सब विपत्तिया प्यारो, ''वे नाम'' सब्द बिन भरोसा कैसा।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सब्द सुरति देवे अटल भरौसा।।

1410 विश्वास भरोसे बिन सब तजो, यही है सच्ची बात।
जिस पूर्ण सतगुरू पा लिया, कौन काटे उस की बात।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, साध सदा माने संतन बात।।

1411 संकल्प विश्वास भरोसा प्यारो, जानो सच्चे प्यार की बात।
जे ''वे नाम'' दात पास है तेरे, कुछ और पाने की मत कर बात।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात सूं छूटे मन साथ।।

1412 जब विपत्ति अति है प्यारो, किनारे भी साथ छोड़ जाते हैं।
तेरी सच्ची प्रीत सतगुरू सूं, सब बिगड़े काम बनाती है।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, श्रद्धा समर्पण सब काम कराती है।।

'वे नाम सुरति धारा'

सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

1413 सत्य को स्वयं में खोज लो प्यारो, यही सुरति का जहाज।
कहीं और मत खोजो इसे, ''सार सब्द'' सुरति स्वांसा अंग जहाज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू लाये सार सब्द जहाज।।

1414 पुरानी लीक पर चलना छोड़ो प्यारो, मुर्दों की बात से लेन ना देन।
पूर्ण सतगुरू की खोज करो, ''वे नाम'' सब्द बिन कैसे लेन और देन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द सब मन सूं लेन देन।।

1415 अकेले संग से अकेले प्यारो, अकेले जग प्रवेश।
भीड़ संगठन झुण्ड प्यारो, अभय से भय में कराते प्रवेश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा पाये अभय सुरति प्रवेश।।

1416 प्रथम मन की प्रवृति प्यारो, लोभ मोह अहंकार।
काम क्रौध संग उपझें प्यारो, बिन ''वे नाम'' सब्द नहीं पार।
मन का हथियार अज्ञान प्यारो, बिन आत्म ना चले हथियार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन आत्म ना चले घर परिवार।।

1417 बुद्धि लोभ को आज्ञा देत प्यारो, तृष्णा पत्नि का करती काम।
पाप कर्म करवाती तृष्णा, बुद्धि का जान सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बुद्धि करे सब मन से काम।।

1418 भक्ति गुणों को उत्पन्न करे, प्रेम दया क्षमा विवेक।
बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारे, नहीं उपझे प्रेम सत्य विवेक ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं उपझे प्रेम सत्त विवेक।।

1419 स्थूल तन से आरम्भ हमारा, सुरत कमल विश्राम।
सुरत कमल सतगुरू लोक प्यारो, सत्य सब्द से बने सब काम।
सत्य को अपने में ही प्यारो, जगना और उधाड़ता है काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल में पाओ सतपुरूष दरस महान।।

1420 खोना ही खोना इस जग में प्यारो, जो खाली वहीं हंसा महान।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने ना, सतगुरू की दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण सूं मिले सतगुरू दात महान।।

1421 सतगुरू सत्यपुरूष ही संपदा हमारी, किसी और सम्पदा पर भरोसा कैसा।
शेष सब संपत्तियां विपत्तियां प्यारो, विपत्तियों पर भरोसा कैसा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू का संग फिर भय कैसा।।

1422 मन माया का खेल प्यारो, सुरति भ्रमाने का काम महान।
जब ''वे नाम'' सब्द की दात मिले प्यारो, मन माया सूं छुटकारा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया छूड़ाये सब्द महान।।

1423 ''वे नाम'' सब्द फूल समान प्यारो, चारों और फैंके सुधंद महान।
फूल को खिला देखो प्यारो, आनंद जगना सुरति में काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर प्रेम जगाना सुरति काम महान।।

1424 सोयों को ''वे नाम'' दात प्यारो, पल पल आन जगाती है।
जो जाग गया सो पा गया, निज संग निज घर ले जाती है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात निजधर ले जाती है।।

1425 सतगुरू सेवा वन्दना प्यारो, सुमिरन से उपझे वैराग़।
निज को निज तबहि पाईये, जे सदगुरू बदलें भाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन समर्पण सतगुरू कैसे बदलें भाग।।

1426 संत प्रेम के देश से ही आते प्यारो, हेतु संग उपझे हेत।
विश्वास भरोसा जब जगे प्यारो, तभी ही उपझे हेत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भरौसा विश्वास संग उपझे भेद।।

1427 माया का सुख दिखता प्यारो, सच्च में धोखा जान।
सपने जैसी बात प्यारो, दुख बिन मत और कुछ जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग दुख तृष्णा बिन कुछ ना जान।।

1428 सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुड़ें सौ बार।
जो जन सुरति सूं टूटे प्यारो, सतगुरू कृपा बिन जोड़े ना दोजी बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' झाडू की महिमां अपार।।

1429 सुर नर मुणि को प्यारो, लाखों जन्मों से ठग रहा मन मान।
बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारो, कोई ना छोड़ पाया मन मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' का झाडू जान महान।।

1430 जेति लहर सागर की प्यारो, तेति मन की जान।
मूल सब्द का बाण प्यारो, तोड़े मन मान की कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द झाडू का भाण।।

1431 मन मान तरंगों के पंख प्यारो, इधर उधर उड़ी जायें।
''वे नाम'' सब्द के बाण से प्यारो, शांत हो मूल सुरति में समायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शांत साधक मूल सुरति समाये।।

1432 सत्य से सत्य की पहचान प्यारो, चेतन सुरति से सुरति को जगाओ।
मन माया से पार प्यारे, जो भटका उसे राह दिखाओ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' झाडू पाई पार हो जाओ।।

1433 चेतन सुरति से सुरति का प्यारो, जगना ही संकल्प से भरना काम।
शेष सतगुरू पर छोड़ दो प्यारो, यहीं सच्चा जग आने का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' झाडू करे जगाने का काम।।

1434 प्रेम से प्रेम का दिया जलाओ प्यारो, प्रेम से महांसागर निज में बन जाता है।
प्रेम सत्य आनंद की महिमां प्यारो, बूंद से महांसागर भी बन जाता है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सुरति झाडू सुरति से परम सुरति बन जाता है।।

1435 पल पल पत्तियां सुरति से प्यारो, सतगुरू को लिखना मत छोड़ो।
संपदा बांटने से प्यारो, यही भूल कर भी लिखना मत छोड़ो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' झाडू का संग मत छोड़ो।।

1436 पत्रों के उत्तर भी सुरति सूं प्यारो, पल पल सुरति सागर से बह कर आयेंगें।
जब जग महांसागर में प्यारो, आकर समा जायेगा।
सत्य प्रेम आनंद से भरे पत्र प्यारो, परम सुरति में जा समायेंगे।।

1437 जब आप प्रेम आनंद में प्यारो, सतगुरू भी प्रेम आनंद में जान।
आप की ही नहीं प्यारो, सतगुरू की भी प्रतीक्षा करता जान।
हर काम सुरति से प्यारो, लिखो रखो सम्भालना काम महान।
साहिब जी प्राणों के सागर, सब पत्र अमर ले जान।।

1438 ''वे नाम'' सब्द स्वयं में प्यारो, सुरति का कुआं खोदने की कुदाली जान।
कुदाली 'वे नाम' ने दी प्यारो, कुआं भी स्वयं खोदा ले जान।
साधक को कुछ करना नहीं, समर्पण करना ले जान।।

1439 किसी दुखिये के काम आना प्यारो, भूखे नंगों को भोजन कपड़ा देना ले जान।
पड़ोसी का दुख दर्द प्यारो, निज का दुख दर्द ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख दर्द मन तरंग ले जान।।

1440 एक पत्थर से पत्थर प्यारो, घर का निर्माण ले जान।
एक फूल से फूल प्यारो, बगीचे का होत निर्माण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बूंद बूंद से सागर का निर्माण।।

1441 सम्पन्न का काम प्यारो, निर्धन को उठावे बनावें महान।
फिर देश की पहचान है होति, मन मान से छुटकारा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, धन बांटने से बड़ता ले जान।।

1442 एक एक देश से विश्व है प्यारो, जन हर एक को मिले निर्वाण।
'वे नाम' दास भी संग प्यारो, मिल कर बनो महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करें आप समान।।

1443 तन तो पांच तत्व का प्यारो, जो अच्छा लगे दो धर्म निज नाम।
निज का रूप हंसा प्यारो, 'वे नाम' मेरा यही है सच्चा नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' ही जानो सच्चा नाम।।

1444 हिन्दु तो सुरति नहीं प्यारो, मुसलमान कैसे दो नाम।
मन माया का आवरण प्यारो, वे भी कैसे दो नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सुरति अमर है नाम।।

1445 नाम देन का खेल प्यारो, खेल खेल से पड़ गया नाम।
मन मान को जाना नहीं, पूर्ण मोक्ष दात से बनें सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दात सूं बनें सब काम।।

1446 मन माया को हटाना प्यारो, सतगुरू का सुरति ठिकाना ले जान।
''वे नाम'' सब्द से सुरति जोड़ प्यारे, मन माया का संग छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं मन छूटा ले जान।।

1447 बिन सब्द बात बने ना प्यारो, मन मान अति बलवान ले जान।
मन माया का प्रेम से प्यारो, लेन ना देन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द पर जग जीव धरें ना ध्यान।।

1448 मन के संग हर नर जान प्यारे, अपनी अपनी कल्पनाओं में खोये ले जान।
''वे नाम'' सब्द से स्वयं की पहचान प्यारो, जागा जीव निज को ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं जीव जागे ले जान।।

1449 जब ही स्वयं पर संदेह प्यारो, स्वयं का पागलपन अनुभव में ले जान।
अब ही निज की पहचान प्यारो, ''सार सब्द'' की दात का काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से निज की कर पहचान।।

1450 ''सार सब्द'' से अज्ञान का बोध प्यारो, अज्ञान का बाण टूटा ले जान।
सतगुरू कृपा चेतन सुरति सूं प्यारो, दर्श की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दरस की महिमां अति महान।।

1451 गिद्धों को युद्धों से सुख प्यारो, पेट भर भर उड़ते दिन रात।
इन युद्धों की आस लिये वे, स्वपनों में जीते दिन रात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लोभी सपनों में जियें दिन रात।।

1452 दूसरों के दुख में सुखी कुछ प्यारो, लाभ ही लाभ पर आंख।
दूसरों के दुख में लाभ नहीं प्यारो, अपने सुख पर पूर्ण रखते आंख।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लोभी की कभी मिटे ना भूख।।

1453 सुरति साधना से निखरती प्यारो, प्रकाश अंधेरे में छिपा ले जान।
सत्य भी उसी में छिपा प्यारो, सच्ची पहचान से आनंद महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज हंसा रूप आनंद महान।।

1454 मन से सत्य स्वर्ण आंच्छादित प्यारो, इसे अपना मन मत जान।
बंधन आवागमण का प्रतीक प्यारों, ''वे नाम'' सब्द से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं छूटें मन बंधन ले जान।।

1455 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, निज की होत पहचान।
सब्द से आनंद प्रेम सत्य प्यारो, पूर्ण मोक्ष की दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण मोक्ष की दात ''वे नाम'' सब्द महान।।

1456 सत्य प्रेम आनंद प्यारो, निज के अंग ले जान।
कल और कल का संग गया, निज को निज में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम प्रीत करावे निज की पहचान।।

1457 समस्त क्रियाओं में प्यारो, कल्पनाओं से जागरण है लाना।
सुरति सब्द स्वांसा में डाल कर, इस पल में ही रहना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति मन से छुड़ा आत्म में लाना।।

1458 मूर्च्छित अवस्था से बाहिर आना प्यारो, निज में अदभुत क्रांति घटित ले जान।
''वे नाम'' सब्द में रहना रहना सीख लो, सतगुरू चरणन में ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरणन में राखो ध्यान।।

1459 निज ज्ञान को तज डाल प्यारे, यही है तेरा मान।
सच्ची दात को पाते नहीं, सरल सत्य प्रेम पाना कठिन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्ची दात पाना कठिन काम ले जान।।

1460 मन ही सब में आप निरंझन, सुरति को रक्खा भ्रमाई।
मन ब्रह्मां का अंश प्यारो, मन सुरति एक नांहि भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन थां थां भटकाये भाई।।

1461 तीन लोक में प्यारो,मन माया का राज़ ले जान।
तीन लोक से भिन्न प्यारो, अमरलोक सत्यपुरूष का ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक सतपुरूष धाम ले जान।।

1462 स्वर्ग आत्म साक्षात्कार में प्यारो, सहायक मत ले जान।
मन संग स्वर्ग भी प्यारो, बंधन का कारण ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन बंधन के कारण मृत्यु आये ले जान।।

1463 ऋषि मुणि योगी प्यारो, मन के धोखे में पड़े ले जान।
त्रिदेव भी प्यारो, मन के धोखे में खोये ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, माया धोखे में सारा जहान।।

1464 पांच तत्व तीनों गुण प्यारो, सभी मन के अंग ले जान।
चौदहं यम भी संग में प्यारो, बिन सतगुरू पार ना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू कृपा बिन कोई पार ना जान।।

1465 ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं सुमरिये, सतगुरू रूप में ध्यान।
सतगुरू चरणन की पूजिये, सतगुरू कृपा से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू कृपा से पार ले जान।।

न नानक एको सुमरिये, जल थल रहा समाये।
दूजा काहे सुमरिये, जो जन्में ते मर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन नामे सब भरमाये।।

1466 सत्यपुरूष ''वे नाम'' सब्द के माहिं प्यारो, मूल सब्द भी इसे ले जान।
ताकी भक्ति करे जो कोई, तीन लोक से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात त्रिलोक से पार ले जान।।

1467 तीन लोक शब्दों में काल है, ''वे नाम'' सब्द निर्वाण।
जो यह सब्द भेद ना जानहि, कभी ना पावे पूर्ण निर्वाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे कोई ना पावे निर्वाण।।

1468 जो सतगुरू पग़ परसे प्यारो, गर्भ ना आवे पूर्ण मोक्ष पा जावे।
सतगुरू पग़ परसे तीन से प्यारो, पल में पार हो जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग जीव भव पार जावे।।

1469 आठ सिद्धियां नौं निधियां प्यारो, सदगुरू पांव नाखुन में ले जान।
सभी पदार्थ सतगुरू से प्यारो, चरणों में मिलते ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरणों में मिलता सच्चा ज्ञान।।

1470 पारस सुरति संतन संग साहिबन की प्यारो, पल में करे आप समान।
कीट को भृंग की पहचान कहां, श्रद्धा समर्पण से होते काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण से मन मान का संग छूटना ले जान।।

1471 सांच तीन लोक में कहीं है नांहि प्यारो, चेतन सुरति से सुरति बने महान।
सांच को कोई जाने नहीं, झूठ की देत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं मिलती पहचान।।

श्री कृष्ण जी के अनुसार : –

1472 मैं ही लक्ष्य साक्षी पालन करता प्यारो, प्यारा प्रिय मित्र लो जान।
मैं ही सुष्टि रचियता प्यारो, मैं ही प्रलयः का कारण ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार ही प्रलयः करता ले जान।।

1473 हे अर्जुन तप प्रदान करता में प्यारे, सब का अविनाषी बीज भी जान।
अमरत्व तथा साक्षात मृत्यु प्यारे, सत्य असत्य मोहे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य असत्य भी निरंकार माया ले जान।।

1474 वेदों का ज्ञाता सोम रस सेवन प्यारो, मेरी भक्ति में लीन महान।
पाप कर्मों से दूर प्यारो, ईन्द्र लोक स्वर्ग धाम में लीन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्मयोगी ईन्द्रलोक पायें स्थान।।

1475 स्वर्गिक फल को भोग कर प्यारो, पुण्य कर्मों का फल क्षीण जान।
फिर मृत्यु लोक में जन्म प्यारे, पुण्य कर्मों में लीन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पुण्य कर्मों से मुक्ति ना ले जान।।

1475 तीनों वेदों के ज्ञान से प्यारे, ईन्द्रिय सुख में लीन।
कर्म धर्म जन्म मरण के प्यारे, चक्र में रहत मलीन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन चक्र में जीव रहते मलीन।।

1476 जो अनन्य भाव से मेरे, दिव्य स्वरूप का करे ध्याण।
उस के हर कार्य को करता प्यारे, पल पल देता मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन पल पल देता अहम अभिमान।।

1477 हे कुन्ती पुत्र सुनो बात प्यारे, मन से पूजे देवी देव।
श्रद्धा से करता दान प्यारे, फल पावे जो नित पूजे देव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन मांगे ही पूजें देवी देव।।

1478 जो प्रेम भक्ति से प्यारो, पत्तर पुष्प फल जल करे प्रदान।
श्रद्धा विश्वास से प्रणाम प्यारो, प्रेम भाव से सब स्वीकार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्रद्धा प्रेम से सब स्वीकारें देव महान।।

1479 जो करो जो खाओ प्यारो, मुझे अर्पित करो दान दो बनो महान।
श्रद्धा विश्वास से प्यारो, मुझे अर्पित करना कार्य महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज अर्पित करना कार्य महान जान।।

1480 मेरा सब कुछ जान कर प्यारो, जग में करो सब काम।
सब बंधन में काटों प्यारो, मुक्ति पाने पहुंचो अपने गृहधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध ध्यान करे निज गृहधाम।।

1481 किसी सूं द्वेष पक्षपात नहीं प्यारो, नहीं करता कोई भेद।
जो भक्ति युक्त हो सेवा करे प्यारो, करें ना दुख सुख में भेद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध ना करें सुख दुख में भेद।।

1482 योगियो से वही भला प्यारो, श्रद्धावान जो होये।
प्रेम भक्ति में मांगन प्यारो, मेरा प्यारा सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मांगन से अच्छा मरना होये।।

1483 मेरा राखे आसरा प्यारो, डाले मुझ में पूरा ध्यान।
मन को एकाग्र करे, दुख सुख एक समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जानो दुख सुख एक समान।।

1484 ज्ञान विवेक का सार प्यारो, हर एक को दिया बताये।
ज्ञान से उत्तम और कुछ प्यारो, मन को शान्त बनाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' धारा मन को शांत बनाये।।

1485 सेव करे सतगुरू मिलें प्यारो, सुन वचन धीर चित्त लाये।
प्रथम वेद शास्त्र का ज्ञान प्यारो, सतगुरू पल में पार लगाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू वचन धारें चित्त लगाये।।

1486 सब घट मन के भावों से प्यारो, भरा पड़ा ले जान।
बिन सतगुरू बात बने ना, कल कल में रहता जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस पल में रहना जान।।

1487 बहुत गुरू इस जग में प्यारो, आत्म का कुछ ज्ञान मत जान।
प्रथम ताकी परिक्षा प्यारो, निज की पहचान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू बिन ना हो निज पहचान।।

1488 उस का काल क्या करे प्यारो, जो नित जागा होये।
आत्म मन अधीन चले प्यारो, बचने का उपाये ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं जागना होये।।

1489 सतगुरू कृपा जे होये तो, मन का मान टूट जाये।
कहें 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, ''वे नाम'' दात से सुरति चेतन कर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं मन मान छूट जाये।।

1490 मोह ही जग में प्यारो, दुख का मूल ले जान।
निज के हित परलोक बिगड़ा, उन्हीं के कारण निज को भूला ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वार्थ वश नर निज को भूला ले जान।।

1491 कहा ना जाई भेद प्यारो, लिखा भी मत ले जान।
सतगुरू मिलें तो प्यारो, अकह सब्द का भेद ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अक्का सब्द भेद महान ले जान।।

1492 बिन सतगुरू भेद प्यारो, हंसा अभी रस पीवत घर आवे।
सुरति चेतन से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से पार हो जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द रस पीते ही हंसा हो जावे।।

1493 बिन सतगुरू कोई प्यारो, कैसे अकह समझाई।
पूर्ण सतगुरू सूं प्यारो, निज की पहचान पा जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज की पहचान सब्द कराई।।

1494 हर पल सुमिरन करें प्यारो, चेतन सुरति सूं सुरति जग जाई।
अजर अमर करे प्यारो, अकह दात जब संग समाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अक्का दात सुरति सूं सिमरी जाई।।

1495 आवागमण से पार प्यारो, जन्म मरण का बीज नसई।
अमृत दात 'वे नाम' सूं प्यारो, जो पाई निजघर को जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमृत दात निजघर ले जाई।।

1496 साहिब के दरबार में प्यारो, संत की महिमां महान।
तीन लोक का करता प्यारो, पूर्ण संत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' धरा पर पूर्ण संत ले जान।।

1497 गुप्त नाम ही 'वे नाम' प्यारो, पावे बिरला संत कोये कोये।
जा पर सत्यपुरूष कृपा प्यारो, जग से पार करावे सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, गुप्त नाम भेद पावे कोये कोये।।

1498 कौटि नाम तीन लोक में प्यारो, पूर्ण मुक्ति ना देवे एक।
सच्चा सब्द 'वे नाम' पास प्यारो, मुक्ति का दाता एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में 'वे नाम' मुक्ति दाता एक।।

1499 पूर्ण मरने से हर नर डरे, 'वे नाम' सुरति आनंद।
हर पल मरहूं प्यारो, हर पल पाओ आनंद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा ही पाये पूर्ण परमानंद।।

1500 खाली होना इस पल प्यारो, छूटे कल और कल।
निज की निज से पहचान प्यारो, जो नहीं मेरा छूटा इस पल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बस जागा ही रहे इस पल।।

1501 एकाग्रता से बैठना प्यारो, धीरे धीरे स्वांसा का सिमटना ले जान।
तन छूटा मन छूटा प्यारो, मरने का आभास ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन छूटे तो मरने का भय दूर ले जान।।

1502 पल में तन पथरा जाता प्यारो, मन की टूटी कमान।
शंकायें उत्पन्न मन है करता, निज में निज को जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संशय भ्रम मन की तरंग ले जान।।

1503 कहें 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, मृतक होये के संग ले जान।
'वे नाम' पहले प्यारो, मर कर पाया 'वे नाम' ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम सुरति प्रकटे तो जीते जी मरना ले जान।।

1504 मन ही नर की प्यारो, बिंदु पर आने में बाधा ले जान।
संसार सागर गोता प्यारो, मन भार भार देता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन तरंग भ्रमाये ले जान।।

1505 सुश्मिना मध्य निरंझन वासा, दसवें द्वार पर पहरा ले जान।
मकर तार उपर को प्यारो, चढ़ना अति कठिन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुश्मिना मध्य निरंजन कफ़ रूप ले जान।।

1506 सतगुरू का पल पल प्यारो, सानिध्य से स्वांसा उर्दमुखि ले जान।
साधक जाने कोई संग प्यारो, उपर को खींचता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांसा उर्दमुखि करना ले तूं जान।।

1507 गर्म स्वांसा से प्यारो, कफ का पिघलना ले जान।
तन की बाधा संग प्यारो, मन पल पल भ्रमाता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन नर को पल पल भरमाता ले जान।।

1508 ध्यान हटा जब प्यारो, मन माया तरंगों का काम।
हर ओर सुरति भटकाता, पर सतगुरू मेहर से होता सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति से होता मन तमाम।।

1509 संसार सागर में प्यारो, रखने का करता काम।
भावों का प्रयोग मन करता, सुरति चेतन से सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागन से बनें सब काम।।

1510 सब कुछ खोया जान प्यारे, ईच्छाओं से छूटा संग ले जान।
कोई कोई प्यारो स्वांसा सिमटाता, तन पत्थर समान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ईच्छा हटे तो मन छूटा ही ले जान।।

1511 सुरति हर पल प्यारो, होशियार ''वे नाम'' सब्द से जान।
सतगुरू शिष्य और साहिब जी, ध्यान में ईक संग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ध्यान में सतगुरू साहिब ईक रूप ले जान।।

1512 स्वांसा पलटी शून्य में प्यारो, घर से अधर भरपूर प्राण।
तन छूड़ा सुरति से प्यारो, आज्ञा चक्र में मेल प्राण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आज्ञा चक्र में करो ध्यान।।

1513 सुरत कमल की फेरी प्यारो, मेल साहिबन संग ले जान।
अब पीछे क्या राह प्यारो, निज घर की सैल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर की सैल अति महान।।

1514 सांच प्रेम एक साथ प्यारो, झूठ से लेन ना देन।
जा की सुरति सत्य प्यारो, काल से लेन ना देन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा का काल से लेन ना देन।।

1515 स्वार्थ वश दोषों का छिपाना प्यारो, झूठ का संग ले जान।
मन का काम है यह सारा, सुरति का लेन ना देन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म का मन से लेन ना देन।।

1516 चित्त तोड़ो सुरति संग प्यारो, साहिबन रूप महान।
चित्त तो मन का अंग प्यारो, मन करता काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन वश तो सुरति जाग्रत महान।।

1517 सतगुरू महिमां कोई प्यारा गाये, जा की सुरति में सतगुरू चेतन सुरति समाये।
वे साधक में हर पल रहते, जब प्रेम डौर से सुरति में आन समायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सुरति में साहिबन आन समायें।।

कृष्ण जी की वाणी अनुसार :–

1518 तीन लोक में मुझे प्यारो, कर्म बंधन तथा ईच्छा कुछ नाहिं।
तो भी जग को जगाने प्यारो, कर्म करूं जग मांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म कर्म बंधन में लिप्त नाहिं।।

1519 आत्म निष्ट जो नर प्यारो, जगत लिया तिस जीत।
उसे साधु सच्चा जान लो, संकल्प से भगवन ले जीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निस्वार्थ भक्ति से भगवन लो जीत।।

1520 भक्ति से सुधार लो प्यारो, मान अपमान से उठ और जाग।
शान्ति को प्राप्त करो प्यारो, जगाओ प्रेम प्यार की आग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अपमान में कैसे बुझे यह आग।।

1521 निज तन समर्पित करने से प्यारो, निज कष्ट दुखों का नाष ले जान।
मन स्वयं ही दुखों का आधार प्यार, ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति ही करे दुखों का नाष ले जान।।

1522 शिकायत किस को करें प्यारो, शिकायत गई प्रार्थना उपझी ले जान।
आसक्ति में प्रार्थना का प्यारो, अनुग्रह भाव प्रसाद महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अनुग्रह समर्पण भक्ति प्रसाद महान।।

1523 सत्त प्रेम आनंद को प्यारो, आसक्ति लाना कठिन काम ले जान।
समग्रता में स्वीकार प्यारो, सतगुरू स्वीकारना तपष्चर्या ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण भाव ही परम सेवा ले जान।।

1524 सतपुरूष का काम ही प्यारो, 'वे नाम' दास का काम ले जान।
उन बिन ना मैं ना मेरा प्यारो, और ना कोई काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' धुन में रहना ले जान।।

1525 उन का मुझ में रहना प्यारो, मेरा उनका साधक में रहना काम।
उन का पाना ही प्यारो, कर देता सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन समाये ले जान।।

1526 खोना ही तो पाना प्यारो, एक का पाना सब खो जाना।
सब का पाना एक खो जाना, सब खोया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्रेम में मन मान खोया तूं जान।।

1527 सुख जब जाते प्यारो, दुख का संग महान।
जो दुख सुख में एक प्यारो, एक में रहता बनता महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्थित प्रज्ञ अवस्था अति महान।।

1528 गीता गाना खिलना प्यारो, जोड़े सुरति की तार।
सतगुरू सब्द दात प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा संग जोड़ो तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति संग जोड़ो सुरति धार।।

1529 मज़ा ईन्द्रियों की पहचान प्यारो, सुरति सूं लेन ना देन।
कर्मानुकूल युगों युगों से प्यारो, सुरति दंडित ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोये नर की सुरति मन में फंसी ले जान।।

1530 विचार शब्द को जन्म हैं देते, सब्द कार्य करावे महान।
कर्म करने से आदत हो जावे, आदत से जीव धारा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति छुड़ाये बुरी आदतें ले जान।।

1531 जीवन धारा जिस ओर है बहति, वहीं बने लेखा महान।
साहिब जी, उसी अनुसार जीव नया जन्म ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्मण लेखा कबहु ना मिटता ले जान।।

1532 नाम विदेहि मिले 'वे नाम' सूं, अंदर के खुलें कपाट।
''वे नाम'' सार सब्द की दात बिना, कैसे जाने बाट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू खोलें भीतर के कपाट।।

1533 पांच तत्व को तन रच्यो, 'वे नाम' सूं जान लो यह बात।
मन का सुश्मिन में वास प्यारो, भाव सूं करता हर पल बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही चेतन सुरति दात।।

1534 दही मथे बिन माखन ना प्यारो, भेद ना घी ले जान।
बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारो, मन मान छूटा नहीं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं अहम मिटे ले जान।।

1535 मन मान लूटा सुरति को प्यारो, खेल खेला महान।
बिन चेतन सुरति प्यारो, सुरति चेतन मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति ही खेला महान।।

1536 अच्छे बुरे कर्म मन सूं प्यारो, सुरति से लेन ना देन।
दोनों बंधन कारक प्यारो, फल रहित कर्म की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निस्वार्थ कर्म ही बंधन काटे महान।।

1537 पाप पुण्य दोनों बेड़ी प्यारो, आशा तृष्णा कारण बंधन।
कर्म करो बिन चाह के प्यारो, जन्म मरण से छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दै कोई निस्वार्थी मत जान।।

1538 जो पित्रों की भक्ति करे प्यारो, पावे पित्र लोक स्थान।
जो जा की भक्ति करे प्यारो, उसी लोक में समाना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान से बने ना काम।।

1539 संकल्प मन की वृति प्यारो, क्रिया से बुद्धि की पहचान ले जान।
चलना उठना निर्णय करना प्यारो, बुद्धि का काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बुद्धि मन का अंग ले जान।।

1540 कल और कल में जाना प्यारो, चित्त का खेल ले जान।
कार्य में अहंकार क्रौध प्यारो, पाप पुण्य भी साथ ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पाप पुण्य मन ही करता ले जान।।

1541 मन बुद्धि चित्त अहंकार प्यारो, सब मन ही के अंग ले जान।
संकल्प में मन सुरति का संग प्यारो, सुरति मन के वश पड़ी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वृत्तियों में फंसी सुरति ले जान।।

1542 बिल्ली देखी बगुला देखा, सर्प जो देखा बिल का।
निज सोच में सभी प्यारो, सभी खेल खेलते निज मन का।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग खेला मन माया का।।

1543 जग में आई चेतन जोत प्यारो, अंदर बाहर चेतन ले जान।
तन चेतन मन चेतन प्यारो, सुरति का मन–संग छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति से मन तरंग छूटे ले जान।।

1544 भरोसा विश्वास बीज भक्ति का प्यारो, सुरति में पनपता ले जान।
ध्यान सब्द स्वांसा प्यारो, पूर्ण मोक्ष की सीढ़ी अति महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मोक्ष सीढ़ी महान तूं जान।।

1545 अदा कर सुरति के खज़ाने से प्यारो, छुड़ाने आया अपने हंसों को।
लाखों जन्मों से प्यारो, मन जाल में पड़े हंसों को।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' जहाज लाया निजघर जाने को।।

1546 सतगुरू चरणों में खाक होना पड़ता है, जे जाना निजघर है हंसों को।
कभी कुछ मांग मन में नांहि, पकड़ ले चरण कमलों को।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पा लो संत चरणों की धूली को।।

1547 'वे नाम' सतगुरू को सौंप दे निज को, वे सब हैं जान जाते।
चिंता से मुक्त होता जो हंसा, 'वे नाम' सब काम हैं करते।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से बिगड़े काम हैं बनते।।

1548 अपनी मैं ''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, कभी मिटती मत ले जान।
बिन सूर्य की किरणों के प्यारे, कमल का फूल खिलता मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे मान ना जाये ले जान।।

1549 पूर्ण समर्पण से मन छूट जाता है, पल में श्रद्धावान बनता है।
'वे नाम' सतगुरू कृपा सूं प्यारो, सतगुरू रूप बनता है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन रूप दरशता है।।

1550 कृपा में चेतन सुरति प्यारो, निज सुरति में आन समाती है।
सत्यपुरूष का संग मिलता है, सतगुरू संग निजघर पहुंच जाते हैं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति अमरलोक ले जाती है।।

1551 एक भरोसा एक आस विश्वास, पीछे अब कुछ ना जब संग ''वे नाम'' दात।
अब पूर्ण सुरति चेतन होई, साहिबन संग मेल कराती दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन संग मेल कराती चेतन सुरति दात।।

1552 चेतन सुरति बदले प्यारो, सुरतिवान नर नार को।
जब सुरति प्रत्यारोपित प्यारो, सच्ची राह दिखावे सुरति धार को।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सच्ची राह दिखावे साध को।।

1553 खुद से खुद को मिटाया नहीं जाता, मन मान के तजने का काम।
दाना निज को मिटाने के लिये, पांच तत्वों पर करे भरोसे का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द करे भव पार कराने का काम।।

1554 निज को सत्यगुरू पर प्यारो, छोड़ कर देखो मेरे भाई।
आशा तृष्णा है भाग जाते प्यारो, ''वे नाम'' दात पास जब भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणी पार लगाई।।

1555 सुश्मिना मध्य वासा निरंकार का, दसवां द्वार मूंद रखा मेरे भाई।
मकरतार पर चढ़ना कठिन प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा एक करो मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुश्मिना द्वार खोलो मेरे भाई।।

1556 गगन गुफ़ा को प्यारो, पवन स्वांसा से साफ है करना।
बिन ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, कैसे सुरति को चेतन है करना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति को चेतन सुरति है करना।।

1557 पवन को पलटते पलटते प्यारो, शून्य में घर कर जाना है।
सतगुरू पूर्ण संग में साहिबन, चरणों में शीष निवाना है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण प्रेम सूं सतलोक जाना है।।

1558 सोलहं सूर्य की जोत को पाकर प्यारो, साहिबन संग संग निजघर जाना है।
सतगुरू रूप में साहिबन पाकर, उन संग निजघर ही जा समाना है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग साहिबन में जा समाना है।।

1559 सतगुरू कृपा से प्यारो, सुरत कमल साहिबन दीदार।
संग उन्हीं के प्यारो, पहुंचे सच्चे साहिबन दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल दरशें सतगुरू करतार।।

1560 निज बिन जब खो गया प्यारो, सहज संग सहज होना ले जान।
''वे नाम'' सब्द से होता सब प्यारो, संग सतगुरू कृपा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सत्संग बरसे कृपा महान।।

1561 जन्म मरन के चक्र में पड़ कर, हंसा भूला साहिबन दरबार।
नर मन मान द्वंद में खोया प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सूं ना जोड़ी तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति से पाओ निज द्वार।।

1562 मेरी तेरी का चक्र प्यारो, नर को मोह ने किया बेहाल।
निज की तो पहचान गई प्यारो, कैसे पावे ''वे नाम'' सब्द का माल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करे माला माल।।

1563 'वे नाम' पास दो सच्चे सब्द प्यारो, 'वे नाम' सूं पा लो सच्चा माल।
सत्यपुरूष 'वे नाम' सुरति में डालें, पूर्ण मोक्ष दात का माल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणी चेतन सुरति अनमोल।।

1564 सगुण निर्गुण भक्ति में प्यारो, तीन लोक विस्तार ले जान।
इन दोनों के पार प्यारो, अमरलोक साहिबन लोक ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक हंसा घर ले जान।।

1565 'वे नाम' सतगुरू संग पाने पर प्यारो, मिलती पूर्ण मोक्ष की दात।
मनाने रूठने का अंग मन प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सूं बनती बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सूं छूटे मन साथ।।

1566 सतगुरू गूंगे बांवरे प्यारो, बिन साथ बने ना बात।
जो सब कुछ समर्पण कर दे, सतगुरू ले चलें निजघर साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विहंगम चाल से सतगुरू चलें निजघर साथ।।

1567 ध्यान तो सतगुरू रूप में प्यारो, अक्षर को ना चितवे दास।
सुरति स्वांसा से प्यारे, छूटे मन माया की फांस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जगावें मिलन की आस।।

1568 जीवत मृतक होये के पाना, रीत पुरानी है।
सब्द सुरत स्वांसा उर्द मुखी होती जाये, सतगुरू कृपा से बात बन जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांसा उर्दमुखि से बात बन जाये।।

1569 नर तन खातिर अवगुण करता, निज की ना सोच विचार।
ताहि से मन मान ना छूटे, पूर्ण मोक्ष का ना किया विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तन मन करे बंटाधार।।

1570 'वे नाम' दास आये प्यारो, देने सत्तपुरूष की सच्ची बात।
दात को पाया साहिबन को पाया, मन मान छूटा जब संग में दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान मिटे जब संग में हो दात।।

1571 'वे नाम' आये जगाने हर नर को प्यारो, पल्ले खर्च क्या है बांधना।
सत्यपुरूष हर पल संग में प्यारो, फिर और संग क्या है बांधना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणी तो फिर क्या डरना।।

1572 'वे नाम' समान जग कोई है नहीं, सुरति धारा में जब विश्वास।
''वे नाम'' सब्द सुरति सूं प्यारो, जगाये भक्ति प्यास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति जगाये भक्ति प्यास।।

1573 नर संग कंई युगों से प्यारो, संग में तमन्ना और हवस।
''वे नाम'' सब्द का ठिकाना कहां, जब अंग अंग में तरंग हवस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द छुड़ाये मन हवस।।

1574 चाह तमन्ना हवस का द्वार बंद कर, कुछ उठे ना मांग।
सतगुरू हर पल संग साथ प्यारो, तज दे हर एक मांग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे नर तजे ना मांग।।

1575 तन मन सतगुरू को सौंप प्यारे, मन भी जान शरीर।
हर पल सुरति का संग प्यारो, तन मन पर चले सुरति का तीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चलावें सत सुरति का तीर।।

1576 अंधे नांहि फूल फल पत्ते डाल प्यारो, अंधों के हाथों में सब माल।
गुरू चेला दोनों अंधे प्यारो, लूटें दो हाथों से माया माल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग अंधों का मेला करे धमाल।।

1577 आशा तृष्णा मन के डाल प्यारो, तीन फल लगे कमाल।
फल पावे तो लोभ बड़े, फल गया तो क्रौध से आंखें लाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आशा लोभ क्रौध मन के जानों लाल।।

1578 मन ने जग को रच कर प्यारो, जीव को हर ओर से किया बेहाल।
जग में रहे तो भी दुख है, मन मान किया में हाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चे संत बिन होत बेहाल।।

1579 शुद्धि के लिये प्यारो, अग्नि से गुज़रना ही सच्चा काम।
प्रेम की पीड़ा नर के लिये प्यारो, अग्नि से पार होना ही सच्चा काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन से पार होना ही सच्चा काम।।

1580 जन्म जन्म की प्रार्थनाओं का प्यारो, एक दिन फल मिलता ले जान।
सच्चे सतगुरू की पुकार प्यारो, हर नर को जगना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू नर नार का पीव ले जान।।

1581 सघन होई प्यास प्यारो, बने अंततः प्रेम पुकार महान।
कोई कोई प्यारा प्यारो जाग, प्रेम की सुनता पुकार महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति की पुकार महान।।

1582 प्रेम की पीड़ा मन की नांहि प्यारो, चेतन सुरति से सुरति की पुकार।
सब का संग छूटा प्यारो, फिर उठती प्रेम पुकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग गया भयी पुकार।।

1583 माली की पहचान प्यारो, हर फूल की करे पहचान।
हर फूल की पुकार प्यारो, प्रेम का संदेश ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, फूल को अंधा मत जान।।

1584 प्रेम सिहासन नहीं देता प्यारो, हर ओर कांटो की बाड़।
मिलता जब सूली का पत्र प्यारो, कर जाता पार वह बाड़।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्ची पुकार जला जाती बाड़।।

1585 दिखती सूली युगों युगों तक प्यारो, सिंहासन का भेद उस पार।
याद ना आवे मन राजा की, खेल खेलता हर बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन खेल खिलाये हर बार।।

1586 बुरा भला जग में प्यारो, कर्मों का खेल महान।
मन माया का खेल प्यारो, रचा साहिबन महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा को खेल खेलना महान।।

1587 काल निरंझन (मन) प्यारो प्यारे बेटे साहिबन के, काम दिया साहिबन महान।
जो नर खेल को जीते प्यारो, बने परम हंसा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खेल की पहचान महान।।

1588 जग के कांटे सूली प्यारो, सिंहासन खाली मत जान।
तन जाता है जाने दे प्यारे, निज की कर पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतों का जग आना जान महान।।

1589 मन माया की पीड़ा प्यारो, हंसा तन छोड़ा बना परम हंसा महान।
पीड़ा रोग दुख प्यारो, परम हंसा संग प्रेम के फूल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जीवत मरने से मिलता पूर्ण मोक्ष का दान।।

1590 मृत्यु देख कर प्यारे, भय छोड़ धन्यवाद करना जान।
जे पूर्ण सतगुरू से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द का पाता दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नर तन पाना जान महान।।

1591 सत्त को पाना प्यारो, सत्य में समाना ले जान।
बीज का टूटना, अंकुर का फूटना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख जानो एक समान।।

1592 सतगुरू हर पल प्यारो, हर और से निखारते ले जान।
आना है तो जाना पड़ेगा, कभी ना मिटने की पुकार महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब जी सतगुरू चरणों में मिटना महान।।

1593 सोच विचार मन माया की शक्ति प्यारो, विश्वास कच्चा ले जान।
सपने सुन्दर देता प्यारो, भंवर गुफा में निज को पड़ा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन के खेल जानो, बनो महान।।

1594 दीन हीन बेहाल प्यारो, विचारों की माला मन आधार।
सुरति नर की शक्ति प्यारो, सोच विचार से कैसे कोई पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विचारों में जीव मन माया आधार।।

1595 विचारों से कभी नहीं प्यारो, चरम निर्विचार उस पार।
सुरतिवान बनो प्यारो, मन माया गाये बनो निर्विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात से निर्विचार।।

1596 सब्द पाया मन मान गयो प्यारो, संग में गये विचार।
ऐकांत में एक को सुरति से प्यारो, सब्द स्वांसा करो एक तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अर्द और उर्द बने उस पार।।

1597 विचार से विचार मत काटो प्यारो, सुरत सब्द से सुरति को तार।
ना सुनी ना बोली प्यारो, स्वांसा सुरति सब्द ध्याण से उस पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति कराये भव पार।।

1598 विचार से विचार में प्यारो, आदत बन जाती है।
फिर बाहिर कैसे कोई आवे, प्यास और जग जाती है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चुप्पी सुरति से निर्विचार दशा बन जाती है।।

1599 टूटना मिटना प्रेम में प्यारो, मिटते होने का भेद ले जान।
मिटने होने के संग संग प्यारो, मूल के संग जुड़ना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो बचता उसी की महिमां महान।।

1600 जो निज को बचाता प्यारो, वह भटक जाता ले जान।
जिन खोजा तिन पाया प्यारो, निज का समर्पण जान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मिटने में ही प्रेम ले जान।।

1601 कुछ को टूटना अखरता प्यारो, आंखों का धोखा संसार।
उस की ओर आंख का खुलना प्यारो, सत्य प्रेम से होत एक सुरति सार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागो तो छूटे संसार।।

1602 हर नर हंसा रूप प्यारो, मूल चूल संग साथ।
शेष को बचाना कैसा, मन माया छूटें एक साथ।
साहिब जी – मिटने बनने में साहिबन का सच्चा साथ।।

1603 अंदर सतगुरू रूप की प्यास जग ले, उसी के दर्शन से मिटती प्यास।
गर्मी से धरती प्यासी, वर्षा आन मिटाती प्यास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्शन से मिटती प्यास।।

1604 सतगुरू ध्याण में डूबना प्यारो, करूणा की वर्षा हर ओर ले जान।
तेरा डूबना सच्चा कार्य प्यारो, उसे हर पल तैयार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल पल जीवित मरना महान।।

1605 पूर्ण विश्राम हर हंसा का प्यारो, सच्चा लक्ष्य ले जान।
बिन ''वे नाम'' दात के प्यारो, विश्राम प्रेम लक्ष्य पाया मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा पाये सतलोक विश्राम ले तूं जान।।

1606 मन माया पल पल प्यारो, देवें चार मुक्ति का दान।
योगी सिद्ध ज्ञानी ध्यानी, अहम फंसे ना लें दात ''वे नाम''।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख जानों एक समान।।

1607 मन पल पल भरमावता प्यारो, हर जीव अंधकार में ले जान।
निज को पार लगाना प्यारो, बिन सतगुय बात बनी मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर ओर अंधकार ही अंधकार महान।।

1608 आंखे मींद मत प्यारो, सतगुरू का साधक को पैगाम।
सुरति जागी जब हर पल रहती, मन माया की टूटी लगाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चा देश सब हंसों का सच्चा धाम।।

1609 मन चौरी करी आत्म की प्यारो, निज तन का सब कार्य कराती ले जान।
दुख सुख मन का खेल प्यारो, पूर्ण सतगुरू सूं भेद ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म जागे तो कार्य करे महान।।

1610 सच्चे 'वे नाम' सतगुरू संग प्यारो, साहिबन को पूर्ण मोक्ष दात महान।
सत्य प्रेम आनंद की डौरी प्यारे, जोड़ो निज सुरति संग महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शान्ति चुपी करे काम महान।।

1611 कण कण से बने प्यारो, चांद सूर्य आकाश सागर महान।
हर तत्व शब्द की उपझ प्यारो, तत्वों से बना हर जीव महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तत्व औंकार के अंग महान।।

1612 हम ने रात ना जानी प्यारो, सो जान लो सुन्न तत्व को।
आशा तृष्णा मन के भाव प्यारो, सुख दुख जानो रात दिन को।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चे घर की पहचान एक सतगुरू को।।

1613 आंसू बहाना छोड़ दो प्यारो, दासापन सतगुरू सूं अपना लो।
सत्य प्रेम की बेल उगेगी प्यारो, आंसुओं की माला को अपना लो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आंसुओं का सच्चा भेद पा लो।।

1614 सतगुरू की वाणी पर प्यारो, सुरति सब्द संग धरो ध्याण।
लेप मन माया का प्यारो, पल में मिटता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख एक समान ले जान।।

1615 स्वांसा डौरी प्राणों संग प्यारो, मन से ना बांधी लो जान।
जीते जी भेद को पा लो, सतगुरू सब्द दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पाने की प्यास महान।।

1614 प्रेम की सरिता बनो प्यारो, जग प्रेम का प्रवाह महान।
जग का सब कुछ भुला, सुरति स्वांसा सब्द में ध्याण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम में सब जग लगे एक समान।।

1615 प्रेम प्यास से शांत प्यारो, प्रेम प्यास से इस पल में ले जान।
मार्ग प्रेम एक संग प्यारो, दोनों ईक डौरी संग ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम घर में प्रेमी ले जान।।

1616 कर मन से कुछ मत करना, ता से प्रेम आनंद खो जाता ले जान।
जागते में जो सोये प्यारो, निंद्रा में जाग मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विचारों का जगत ले जान।।

1617 बूंद भी सागर हंसा भी प्यारो, महांसागर ले जान।
बस इस की पहचान प्यारो, दुख छूटे मिले सुख महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू सब्द बनोगे कैसे महान।।

1618 शांत बैठ कर प्यारो, सब्द सुरति स्वांसा में ध्याण।
सतगुरू साहिबन का संग प्यारो, निजघर की सेल महान।
साहिब जी शांति में प्यारो, सुरति महांसागर तल पे निज को जान।।

1619 सोवत जागत सतगुरू संग प्यारो, स्वांसा सुरति सब्द संग जोड़ तार।
सतगुरू साहिबन बिन नहीं प्यारो, सुरति निरति की जुड़ती तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, उर्दमुखि कर सुरति सब्द स्वांसा की तार।।

1620 सुरति निरति निज में प्यारो, चारों ओर चलना जान महान।
संगीत इन का आधार प्यारो, काम जीवन को संगीत बनाना महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति स्वांसा मेल संगीत महान।।

1621 पाओ सत्य प्रेम आनंद प्यारो, जब संगीत की पकड़ो डौर।
पल पल निज के निकट प्यारो, आनंद प्रेम सत्य संगीत की डौर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संगीत जोड़े हंसा की सत्यपुरूष संग डौर।।

1622 बिन प्रेम संगीत कैसा प्यारो, सत्य की डौर संग साथ।
जब जग प्रेम डौर में प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जब सुरति का चेतन सुरति संग साथ।।

1623 प्रेम शांति सुरति निरति संग प्यारो, दुख सुख से लेन ना देन।
दोनों की भाषा आनंद प्यारो, मन मान छूटे सत्य संग प्रेम महान।
साहिब जी – मन मान छूटे जागे प्रेम सत्य आनंद महान।।

1624 सतगुरू पग पग पर प्यारो, सत्य प्रेम का देते ज्ञान।
सुरति पकड़े बात बन जाती, जब चारो ओर प्रेम का फूटे ज्ञान।
साहिब जी – सतगुरू ही देवें प्रेम सुरति ज्ञान।।

1625 बिन ''वे नाम'' दात के प्यारो, पूर्ण मोक्ष कहीं मत जान।
जन्म मरण संग साथ प्यारो, काल समय का काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर लो 'वे नाम' संग महान।।

1626 मन पल पल भरमाता प्यारो, समय काल से जोड़े तार।
इस पल आने नहीं देता प्यारो, सार सब्द सूं जोड़ो तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जोड़ो चेतन सुरति से सुरति की तार।।

1627 बाहिर की भक्ति की ओर प्यारो, संग में टूटे साथ।
हर एक भक्त दिखना चाहता प्यारो, कर्म कांड सूं छूटा साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग जोड़ो साथ।।

1628 मन निरंझन मन अंग प्यारो, तुम्हारे भक्त होने में सहायक मत जान।
इन के नाम अनेक प्यारो, पूर्ण मोक्ष की दात से लेन ना देन।
सयह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर एक मान में खोया ले जान।।

1629 टीका लगावे निज को सजावे प्यारो, संग में मन मान वाले कई और।
अंदर बाहिर एक प्यारो, सच्चे मालिक को जाने कोई और।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज की पहचान देने वाला बिन सतगुरू ना और।।

1630 अंदर की मैल देख प्यारे, देश विदेश में चर्चा महान।
कुछ करामतों का ज्ञान संग में, भरम फैलावें महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन का सत्य प्रेम आनंद से लेन ना देन।।

1631 ताप रोग मत जान प्यारे, संदेश वाहक ले जान।
रोग की खोज महान प्यारो, उसी से छुटकारा होना महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख में एक समान रहना ले जान।।

1632 काम क्रौध लोभ मोह प्यारो, रोग के संदेश वाहक ले जान।
मन माया कारण रोग प्यारो, पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' सूं ले जान।
चेतन सुरति 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा सूं, पाना काम महान ले जान।।

1633 संदेश वाहक से झगड़ा कैसा प्यारो, वह तो देता केवल संदेश।
वे कैसे दौषी प्यारो, ''वे नाम'' दात से जागने का मिलता संदेश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर जाने का 'वे नाम' सच्चा संदेश।।

1634 बिन पानी प्यास कैसे भूजे प्यारो, सुरति बिन प्यास के कौसों दूर।
प्यास जब जागे प्यारो, पानी नांहि जाने दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जगावनहार मत जान तूं दूर।।

1635 पूर्ण प्रकाश तब आता प्यारो, जब अंदर का अंधकार मिट जाता।
प्रकाश पूर्ण प्रकाश को पाकर प्यारो, सत्य प्रेम आनंद प्रकटाता।
पूर्ण रोग का कारण जानो, मैं मन रूप में ताप के संदेश हूं देता।।

1636 मैं तो संदेश अंधकार का प्यारो, बिन संदेश कुछ भी तो नांहि।
पूर्ण रोग का कारण जानो, मैं ताप के संदेश बिन कुछ नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सुरति संदेश निरोग मांहि।।

1637 सुरति निरति सब्द स्वांसा संग मेल प्यारो, सत्यगुरू सत्यपुरूष की देत पहचान।
निज का होश में आना जान ले, फिर निज में आना साहिबन की पहचान।
साहिब जी समय काल का संग छूटा ले जान।।

1638 वासनाओं से मैं भरी प्यारो, वासनाओं को महान मत जान।
चित्त 'मै' से बड़ा प्यारो, बुद्धि चित्त से पार ले जान।
साहिब जी अंदर का मन बुद्धि से उपर ले जान।।
विश्व रूपी मन छोटे मन से प्यारो, अति विशेष ले जान।
विश्व रूपी मन से प्यारो, सतगुरू महिमां महान ले जान।।
'वे नाम' सतगुरू साहिबन तद रूप हैं प्यारो, दोनों का संग महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द महां चेतन सुरति ले जान।।

1639 निंदा निंदक का बुखार प्यारो, मन मान का खेल महान।
संत को मन वाले प्यारो, सहन ना कर पाते ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, उन्हीं को बनने दो महान।।

1640 वर्तमान भक्ति का स्वरूप प्यारो, अत्यंत विकृत (अलग) ले जान।
हर नर जग में सोया भटका प्यारो, सत्य मार्ग से अति दूर ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया की ओर झुका ले जान।।

1641 जग का वातावरण भक्तिमय नहीं प्यारो, भौतिक पदार्थों का आकर्षण ले जान।
छल कपट पाप प्यारो, भाई भाई में वैर महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, धोखा धड़ी क्रूरता का वातावरण ले जान।।

1642 भृंग मत्ता जब पास प्यारो, सत्य प्रभु आनंद उपझा ले जान।
पारस सुरति संतन के पासा, सतगुरू महिमां महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां महान ले जान।।

1643 माता पिता का ऋण प्यारो, चुकाया मत ले जान।
सतगुरू भक्ति से प्यारो, उनका पार होना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ईक्कत्तर पीढ़ी का कल्याण होना ले जान।।

1644 मन माया कागज करूं प्यारो, लेखनी सुरति धार।
निरति सात सुरति एक करे प्यारो, सतगुरू गुण ''वे नाम'' सब्द की पार।
साहिब जी – सतगुरू की महिमां अपरमपार।।

1645 एक के पास सांच जगत में, वैरी सब संसार।
संत सांच जब कहते प्यारो, वैर करे झूठा संसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में सब मारन को तैयार।।

1646 तीन लोक में एक संत प्यारो, ता से बड़ा ना एक।
काल भी हर पल प्यारो, तीन लोक को भरमाता एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल मन माया जानो सबै एक।।

1647 निर्विचार प्रयास से नांहि प्यारो, ''वे नाम'' दात सुरति का काम।
''वे नाम'' सब्द इस पल में प्यारे, सुरति निरति स्वांसा का सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान को शांत करने का काम।।

1648 सचेत होना जागना प्यारो, इस पल में रहना ही काम।
''वे नाम'' दात सब करे प्यारो, सुरति सब्द से बने सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति करे सब काम।।

1649 किसी वस्तु को खोज ना प्यारो, यह सब मन का काम।
सोचना विचार करना प्यारो, अर्थहीनता का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति का सुरति सब्द से काम।।

1650 किसी बात को समझने का प्यारो, प्रयास करना मन का खेल महान।
समझना संभावना चेष्टा करना प्यारो, सब मन के भाव ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन का छूटना अति कठिन ले जान।।

1651 जो भक्ति का भेद देता प्यारो, उसे परखना, उसे परखना महान है काम।
कुछ ना लेवे सब कुछ देवें, सत्य भक्ति का करते सच्चा काम।।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करता जग जगाने का काम।।

1652 सतगुरू की पहले प्यारो, परीक्षा करना सब मन का काम।
छल कपट धोखा प्यारो, करते धर्म को दूषित करने का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया से पार होना ही महान है काम।।

1653 पाप पुण्य का भेद प्यारो, कर्म क्षेत्र में प्रवेश ले जान।
भाई भाई लड़ पड़ते, चरित्रवान आशा तृष्णा से छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भाई से भाई का प्यार महान।।

1654 मन मान की परख प्यारो, सत्यपुरूष की दात महान।
''वे नाम'' दात जब पास में, मन मान चेतना से शांत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर एक की महिमां महान।।

1655 सतगुरू कृपा सूं परख प्यारो, साहिबन दात महान।
परख से पहचान सतगुरू, ''वे नाम'' सब्द में साहिबन वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्त की राह पर चलना महान।।

1656 परख बिन परिचय नहीं प्यारो, बिन सत्संग ना होत ज्ञान।
सहज बनो निर्भय रहो, 'वे नाम' संत सुजान सूं ज्ञान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस पल में रहने की महिमां महान।।

1657 कल और कल संग छोड़ प्यारे, हर कार्य सुरति सूं करना जान।
सब को हंसा रूप जान प्यारे, निजधाम से आये ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब संतन अंग संग ले जान।।

1658 पूर्ण मोक्ष गति काहु ना जानी, सोया हर एक नर नार ले जान।
सोया नर मुख होय जीभ दस लाखा, क्षर अक्षर का करे बखान।?
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सब्द की महिमां महान।।

1659 झुकता वही जीव जग अंदर, जो कुछ जागे हैं
सतगुरू 'वे नाम' को पा लिया तो, अब शेष क्या पाना है।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं सब्द को पाना है।।

1660 सच्ची भक्ति भेद 'वे नाम' सूं, सुरति सब्द स्वांसा का ज्ञान।
भोग मत अनहद धुणों को प्यारो, महिमां का खेल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की दात महान।।

1661 रिश्ते नातों से उपर उठो प्यारो, बिन भेद दान देना महान।
निज को भी जब दान का भेद नांहि, सुन्न अवस्था में रहना जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात का भेद अति कठिन ले जान।।

1662 सब जीव हंसा जान प्यारे, अपने परायों में भेद ना जान।
इक घर से हम सब आये, एक सत्यपुरूष के अंग महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष महां चेतन सुरति महान।।

1663 महां चेतन सुरति से सुरति चेतन प्यारो, एक सीमां रहित लोक से आई ले जान।
असी लोक का भेद 'वे नाम' सूं, सत्यपुरूष का सच्चा घर महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें निजधाम।।

1664 मन सदा सुख और शांति का चाहवान प्यारो, बिन सुरति भाव ना छूटा जान।
हर काम सुरति सूं लेता प्यारो, भ्रमाना बिन सब्द के जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां मान।

1665 सच्ची भक्ति से दूर रखे हंसा को, कल और कल सपने देत महान।
जो वस्तु पहुंच से दूर प्यारो, उसी में उलझाता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक भी थोड़े जान।।

1666 योग क्रियाऐं मुद्राऐं प्यारो, किसी ना आवें काम।
उनके संग मन भी प्यारो, पर ''वे नाम'' सब्द करे सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द करे सब काम।।

1667 मन आप ही औंकार भगवन प्यारो, ''वे नाम'' सब्द आगे नवावे माथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द का कर संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर सुरति सब्द स्वांसा एक साथ।।

1668 सहज भाव से संदेश प्यारो, सार सुरति छुड़ावे मन का साथ।
सुरति प्रकाशित ''वे नाम'' सब्द सूं, सुरति सब्द स्वांसा का साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया का छूटे साथ।।

1669 फूंक फूंक कर चलो प्यारो, सूर्य दिन बनाने का करता काम।
उसे अच्छा कहो या बुरा, उस का जगना ही सच्चा काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति करती साध जगाने का काम।।

1670 जल्दी जल्दी ग्राम दूध का पीना, जीभा जला देता जान।
घूंट घूंट पियो प्यारो, मीठापन मिलता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहजता से करना काम ले जान।।

1671 संत संत में भेद कैसा, जान पायो 'वे नाम'।
ता से सत्यलोक प्रकट भयो, सुरति स्वांसा में 'वे नाम'।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत सुरति भेद जानो महान।।

1672 सत्य हंसा गु अंधियारी जानिये, रू कहिये प्रकाश।
मिटि आज्ञाने ज्ञान दे, सतगुरू सुरति प्रकाश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू देवें ज्ञान सुरति प्रकाश।।

1673 जहां आश तहां वासा प्यारो, जन्मों जन्मों का लेखा ले जान।
लाखों जन्म से भटक रहे प्यारो, पाया ना पद निरवान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया छूटे निजघर में वासा जान।।

1674 संत मन में 'विदेह नाम' प्यारो, पांच मुद्राओं से पार।
ध्यान सुरति सूं प्यारो, करो शीश से सवा हाथ उपर।
सायह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' लिखने पढ़ने से पार।।

1675 सुरति ''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, किसी और शब्द की ना पकड़े तार।
सुरति निरति के मेल से ही, मन मान से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू कृपा से पार।।

1676 भृंग मता सतगुरू कृपा मार्ग, सतगुरू भक्ति का सार।
अति ऊंचा यह सच्चा मार्ग, सुरति सब्द से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांस स्वांस में सुरति सब्द से पार।।

1677 सहज मार्ग ही संतमत प्यारो, निरंकार सत्ता सूं पार ले जान।
अमरलोक साहिबन का प्यारा, हंसों का सच्चा देश ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात ही विदेह सब्द ले जान।।

1678 सतगुरू साहिबन कृपा सूं बोले, पल पल अनुभव भरता ले जान।
किसी बात पुस्तक का प्यारो, मोहताज मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक से पार ले जान।।

1679 सतगुरू साहिबन तदरूप प्यारो, आत्म ज्ञान का संग भण्डार ले जान।
आध्यात्मिक शक्तियां भी संग में, अमृत देता महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सतगुरू एको रूप ले जान।।

1680 काल की दात प्यारो, पांच शब्द पांच मुद्रा ले जान।
उस के आगे सत्यपुरूष प्यारा, बिन पूर्ण 'वे नाम' कैसे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विहंगम चाल त्रिलोकि से पार ले जान।।

क काया नाम सबहिं गुण गावैं, विदेह नाम कोई विरला पावे।
विदेह नाम पावेगा सोई, जिसका सतगुरू सांचा होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पार वोहि जाका सतगुरू सांचा होई।।

1681 'वे नाम' बिना हृदय शांत ना होई, कौटिक कर्म करे जे कोई।
जब लग ''वे नाम'' दात नांहि पाव, तब लग सुरति मन सूं पार ना होई।
सयह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू बिन पार ना कोई।।

1682 ''वे नाम'' सब्द जग जानत नांहि, सुरति सब्द शक्ति लेत पहचान।
''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन कर देता, परम सुरति की दान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम दान से पार ले जान।।

1683 कोई आत्म बिन 'वे नाम', संसार सागर से पार मत जान।
सहज मार्ग भृंग मता, 'वे नाम' सतगुरू का पंथ महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल पल जगने का काम करते महान।।

1684 जा को ''वे नाम'' दात मिल जाई, काग से हंसा हो जाई।
सार सब्द सुरत सब्द साहिबन के, ता से पूर्ण मोक्ष पा जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू संग निज घर ले जाई।।

1685 अक्का नाम भी 'वे नाम' प्यारो, हंसा कर निजघर ले जाई।
जन्म मरन की कैद मिट जाई, बहुरि हंस गर्भ ना पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यत्न सूं केई 'वे नाम' ना पाई।।

1686 परमहंसा ही निजघर हो आवे, ''वे नाम'' दात सत्यपुरूष दे जावें।
कोई कोई प्यारा दात को पावे, पल में मन मान छूट जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर भटके की सच्ची राह दिखावे।।

1687 सार नाम स्वाति बूंद सूं, जानो अति महान।
सीप स्वाति बूंद को प्यारो, मोती करे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करे आप समान।।

1688 जब मन सूक्ष्म रूप से प्यारो, मूल सुरति में आन समाता जान।
आत्म से हंसा रूप प्यारो, पल में पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

1689 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, सुरति चेतन ले जान।
हृदय प्रकाशित प्यारो, आज्ञा चक्र में सुरति निरति मेल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सूक्ष्म भेद की उत्पति सुशिमना में ले जान।।

1690 वसिष्ठ मुणि कहते हैं प्यारो, आत्म ज्ञान पाने पर पार ले जान।
आत्म से हंसा प्यारो, निजघर की सैल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा का परम सुरति को पाना ले जान।।

1691 'वे नाम' बिना प्यारो, आत्म मलीन शक्तिहीन मूर्ख ले जान।
सब्द से आत्म निर्मल सांची प्यारो, सुमति प्रगट होई ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंधियारी मिटी महल उजियारा ले जान।।

1692 धरती निज स्त्रोत के चारों ओर प्यारो, चक्कर काटती ले जान।
आग भी लपटें प्यारो, सूर्य की ओर उठती ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंस भी निजघर जाना चाहता ले जान।।

1693 'वे नाम' ही निज मूल नाम प्यारो, और मंत्र सब डार।
कटें 'वे नाम' ''वे नाम'' बिना, कोई ना उतरे पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, डूबता आया संसार।।

1694 चौथा लोक काल से परे, जहां साहिब सत्यपुरूष है वासा।
तीन लोक में काल का खेल, तहां पर नांहि साहिबन वासा।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया से परे परमहंस निवासा।।

1695 साहिब कबीर संत सम्राट हैं, उन सा प्यारा संत कहां।
चार लोक का पूर्ण ज्ञान दिया, चौथे लोक की महिमां महान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब कबीर संत शिरामणि महान।।

1696 'वे नाम' निःअक्षर न्यारा भाई, तांहि में सत्यपुरूष समाई।
योगी तपस्वी सिद्ध साधक प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की दात ना पाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस सब्द को योगी खोज ना पाई।।

1697 जब लग नाम ध्यान विदेह, तब तक कैसे मिटे संदेहा।
सुरति बांधि अस्थिर करो, पल में मिटे संदेहा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सपर्पण से मिटता संदेहा।।

1698 'वे नाम' सेवक सेवा में प्यारो, सेवा से सेवक हो जाओ।
कहे 'वे नाम' सेवा बिना, निजघर कबहु ना जाओ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सेवा से सत्य प्रेम आनंद हो जाओ।।

1699 सत्य प्रेम आनंद से प्यारो, विश्वास भरोसे से सहज ले जान।
सहज महां चेतन सुरति प्यारो, सतगुरू में समाते ही सहज ले।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहज में समाते ही सहज ले जान।।

1700 सहज सतगुरू प्यारो, जा में सहज सुरति का वास।
मन मान माया का प्यारो, जा में सहज सुरति का वास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक में सहज अवस्था का वास।।

1701 सतगुरू दर्शन की महिमां प्यारो, दिन में करो कई कई बार।
असयो माह का मेह प्यारो, अति करे उपकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करावें मन माया पार।।

1702 सतगुरू उपदेश का प्यारो, सुरति में करो विचार।
जो जन सतगुरू पाता नांहि, मिलता काल द्वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कबहु ना लगता उस पार।।

1703 सतगुरू सांचा कुम्हार प्यारो, साधक के पल पल काढे खोट।
चेतन सुरति से सहारा प्यारो, सुरति से पल पल मारे चोट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान पर पड़ती चोट।।

1704 सतगुरू समान जग दाता ना प्यारो, साधक कहलाना जान महान।
दीक्षा पाना सर अर्पित प्यारो, मन मान छूटना काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ज्ञान पाने की महिमां महान।।

1705 सात द्वीप नौं खण्ड में प्यारो, सतगुरू की चेतन सुरति महान।
जो आवे दात को पावे प्यारो, साहिबन महां सुरति पावे बने महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष दोनों का संग महान।।

1706 मन माया में पड़ा नर प्यारो, पावे ना ''वे नाम'' सब्द की दात।
मैं लूं चलो अमर लोक को प्यारो, वो बांधन से छूटने की ना करता बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल का जीव माने ना सच्ची बात।।

1707 तीन लोक में काल जाल का वासा प्यारो, सब जग करता उसीका ध्यान।
निराकार वेद ऐको प्यारो, तीन गुणों में फंसा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्त रज तम का जाल महान।।

1708 निरंझन माया का भ्रम प्यारो, चारों और फैला ले जान।
ब्रह्मां विष्णु और शिव देवा, निरंझन सेवा में पड़े ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो है सनातन सत्य को भूला ले जान।।

1709 जग में आ जो जन्में मरें, तांहि धरूं नहीं सीस।
'वे नाम' जैसा जो आवे प्यारो, चरण कमलों पर कटाओ सीस।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चा साधक चरण कमलों पर कटावे सीस।।

1710 निरंझन आद्य शक्ति उत्पन्न होना प्यारो, सत्यपुरूष महां चेतन सुरति सूं जान।
निरंझन आद्य शकित को प्यारो, वश कर त्रिदेव उत्पन्न होना ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आद्य शक्ति हो माया ले जान।।

1711 माया ने तीनों पुत्रों को प्यारो, राज करने को दिये ले जान।
ब्रह्मां जी चार वेदों को पाया, धर्म पुराण का बखान किया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विष्णु जी तुलसी माला से पंथ चलया ले जान।।

1712 विष्णु जी तीन लोक के प्यारो, पालनहार ले जान।
राजा प्रजा सभी प्यारो, विष्णु की भक्ति सेवा में लगे जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में तीन गुण तीन देवों की महिमां महान।।

1713 शिव की महिमां क्या लिखुं प्यारो, सारा संसार गुण गाता ले जान।
तीनों पुत्रों ले प्यारो, माता की बात मत मानी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अपनी महिमां का खेल रचाया महान।।

1714 योग यज्ञ जप तीर्थ प्यारो, यह सब काल के जाल।
कहें 'वे नाम' ''वे नाम'' बिना, काल का ना छूटे जाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ब्रह्मां विष्णु महेष्वर फैलाया जाल।।

1715 निर्भय हो कर प्यारो, ''वे नाम'' सब्द का ज्ञान।
अष्टम कमल दल पर ध्यान प्यारो, सुरति महां सुरति से चेतन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्तनाम भी ''वे नाम'' सब्द ले जान।।

र दुर्मति छोड़ि कमल धरु ध्यान, तीन लोक जान काल समान।
चौथे लोक में नाम निसान, रामानंद गुरू करे बखान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दास कबीर को निर्मल जान।। (संत रामानंद जी)

क मन ही देव निरंझन प्यारो, हर नर रहा भरमाई।
हर हंसा अमरलोक से आया, मन ने दिया भरमाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर नर काल के वश पड़ा मेरे भाई।।

1716 हर नर अलख निरंझन के प्यारो, गुण गाता ले जान।
बिन रसरी सभी जग बंध्या, झूठी बात सांच कर लो मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर नर कल के वश पड़ा ले जान।।

1717 सतगुरू बिन नर प्यारो, निगुरा ही ले जान।
सतगुरू को पाने से प्यारो, शिष्य के कर्मों के फल कटे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू सगुण निगुर्ण भक्ति से न्यारा ले जान।।

1718 बिन नामे कोई ना उतरे पारा, ''वे नाम'' सब्द गये बने न्यारा।
भरम मोह नासे प्यारो, भक्ति ज्ञान से बने न्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन नामे कैसे कोई उतरे उस पारा।।

1719 ''वे नाम'' सब्द विदेह स्वरूपा, निःअक्षर रूप अनूपा ले जान।
तत्व प्रकृति से पार अमृत धारा, वेद पुराण से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण मुक्ति की दात ले जान।।

1720 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, निःशब्द सब्द दात महान।
अक्षर सीमां से पार प्यारो, साहिबन वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं ररंकार ओम सोहं शब्द अजपा ले जान।।

1721 मन वाणी से पार प्यारो, वे तो साहिबन सब्द स्वरूप।
अक्षर सीमा से पार प्यारो, वे परम सुरति स्वरूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति महां सुरति स्वरूप ।।

172 प्रकृति पार वह सब्द प्यारो, अगम सुरति धार।
प्रकटे सहज समाधि में प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' चरणन आधार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सब्द उस पार।।

1723 सत्त सब्द सब का कर्ता प्यारो, जान अगम अचिंत अपार।
त्रिलोक प्रकृति से पार प्यारो, विश्वास भाव समर्पण करावे पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जिन जिन पाया जग से हो गये पार।।

1724 स्वांस रहित सब्द रहित प्यारो, ''वे नाम'' सब्द अनुभव पारखी संत करे।
अजपा शब्द अक्षर गूंझ प्यारो, जाप से अजपा नहीं प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर जान अक्षर सीमा से पार।।

1725 रंरकार ओम सोहं शब्द प्यारो, श्वांस श्वांस के आधार ले जान।
ता से अजपा शब्द नांहि, मिथ्या मन की कल्पना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द जोति प्रकाश महान।।

1726 ''वे नाम'' सब्द है सुरति धार, तन मन से पार की धारा।
जोई गहे मूल नामा प्यारो, सो पावे सुख सागर धारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सब घट की धारा।।

1727 हर नर जग में 'वे नाम' प्यारो, जा का जान सकल पसारा।
एकहि हम सब प्यारो, एक सी सबकी सुरति धारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरपुर ही सब का सच्चा घर प्यारो।।

1728 निःअक्षर नाम जब सुरति में आई, ताकि सुरति निःअक्षर में रहे समाई।
सुरति चेतन से 'वे नाम' कहाई ताहि से तीन लोक छूट जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' बिन निजघर को जाई।।

1729 परमपुरूष ही सब्द दाई प्यारो, कबीर 'वे नाम' सुरति चेतन कर जावें।
जग में आकर सुरति चेतन सूं प्यारो, हर नर सुरति निजघर ले जावें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात पाई हर नर उनसा हो जावे।।

1730 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, काया से जान न्यारा।
गुदा स्थान मूल कमल प्यारो, चार पंखुरी दल न्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस में गणेश देव का प्यारो वासा जान प्यारा।।

1731 मूल कमल पर ध्यान से प्यारो, जाप मन संग साथ।
विद्या में उन्नति प्यारो, अच्छे गुणों की प्राप्ति संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ध्यान जाप से गुण उपझ एक साथ।।

1732 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, काग से हंसा कर देता ले जान।
'वे नाम' अनमोल प्यारो, पढ़ा या लिखा ना जाय महान।
बिन सतगुरू 'वे नाम' के प्यारो, किसी के पास मत ले जान।।

1733 ''वे नाम'' दात भृंगा सुरति प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा पाई ले जान।
कहें 'वे नाम' जानेगा वे ही प्यारो, जा पर दया सतगुरू की होई ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आंखें मेटि जागरत अवस्था में ले जान।।

1734 यह जग रैन का सपना प्यारो, कोई नहीं यहां अपना।
स्वपन में जो दिखता प्यारो, भ्रमांक उसे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब नर नित्य मानते ले जान।।

1735 तन ही मन मन ही तन प्यारो, इस मन के दो रूप ले जान।
स्थूल और सूक्ष्म जान प्यारे, मन बुद्धि चित्त कर्म ज्ञान ईन्द्रियां ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सूक्ष्म में मन बुद्धि चित्त अहंकार ले जान।।

न तन घर सुखिया कोई ना देखा, जो देखा सो दुखिया।
जोगी दुखिया झंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दूजो को सुखी देख जग नर दुखिया।।

1736 स्वयं के अनुभव ही प्यारो, अनुभूति के प्रकाया में यथार्थ खुलता महान।
ज्ञान भोजन संग प्यारो, प्रयोग से बात बनति ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रकाश का अनुभव मौन सुरति में समाना ले जान।।

1737 बिन अभिप्सा पैदा होना प्यारो, मनुष्य केवल सम्भावना ले जान।
पांच महां भूतों का जोड़ तोड़ प्यारो, पांच तत्व बिन कुछ मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, केवल मिट्टी ही ले जान।।

1738 देह से मन मन से देह प्यारो, उत्पति हुई ले जान।
इन दोनों से हम्हें प्यारो, उस पार निजघर जाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया अनुक्रम ईक धोखा ले जान।।

1739 एक जन्म माता के पेट से प्यारो, दूसरा 'वे नाम' देता ले जान।
जब तक तुम ही प्यारे, सत्य की झलक मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुम ही सत्य होने में बाधा ले जान।।

1740 जब तक 'मै' ना मिटे प्यारो, निज की पहचान मत जान।
इस पल में रहना हो कैसे, कल और काल का जब संग महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अहम के विसर्जन से जोत जगती महान।।

1741 निज का ज्ञान दिखावा प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' की शरणी आना महान।
अहम चालाकी हुशियारी प्यारो, छोड़ के आना 'वे नाम' दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान से कैसे कोई उत्तर उस पार।।

1742 कोई ना समझे बात 'वे नाम' की प्यारो, कितने प्रवचन किये मेरे भाई।
कोई ना भूझे सुरति प्यारो, प्रेम के आंसू सूख गये मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' अखियन साहिबन प्रीत में छलक आई।।

1743 मन बुद्धि मान में प्यारो, मन हर पल घूमता मेरे भाई।
सोच विचार परेशान करत हैं, इन से बचना कठिन मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मान से बुरा कोई नांहि मेरे भाई।।

1744 बुरा खोजना नांहि कठिन प्यारो, निज संग रहता हर पल ले जान।
सुरति सूं निज को देख प्यारे, कल और कल से बुरा और मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मै मेरी से बुरा और मत जान।।

1745 सुरति फंसी संसार में प्यारो, मन माया का सब काम।
'वे नाम' बिन अंधी सुरति प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति से होत सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से मन मान का टूटे बाण।।

1746 काल सतावे तीन लोक में प्यारो, ताहि का जग में सब ध्यान लगावें।
निरंकार ताहि को जान प्यारे, ताहि का अंदर ध्यान लगावें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वेद शास्त्र ताहि का गुण गावें।।

1747 तीन लोक अंश (जीव) प्यारो, अमर लोक से आये ले जान।
रक्षक ताहि को जग जाना, भूल प्यारी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर की महिमां महान।।

1748 खुद ही अवतार रूप में प्यारो, पल पल भ्रमाता ले जान।
द्वापर दिखी कृष्ण की रीति, अर्जुन को गीता उपदेश दिया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्म धर्म के खेल में डाला ले जान।।

1749 पहले पाप करवाया अर्जुन से, धर्म अनुसार पाप किया ले जान।
खेल खेल में अर्जुन भटका, कभी ना उतरा पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल का खेल महान ले जान।।

1750 कृष्ण पाण्डवों से यज्ञ करवाया, तब भी खेल ना हुआ पूरा ले जान।
प्रायश्चित करने हिमालये चड़े प्यारो, फिर भी पिण्डा ना छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नर्क में वासा पाया ले जान।।

1751 यह खेल सब दुख का मूल प्यारो, पग पग पे धोखा ले जान।
यह कैसी मुक्ति प्यारो, बिन धोखे कुछ और मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया का खेल ले जान।।

1752 अंधा नर समझता नहीं प्यारो, बलि राज दानी महान।
भगवन पहले प्यारो, छोटा रूप धार कर लेने आये दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साढ़े तीन पग धरती मांग दान।।

1753 पग नापन की बारी जब प्यारो, बड़ा रूप कर नापा दान।
तीन लोक तीन पग में प्यारो, नाप लिये महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आधा पांव दान ना पा दिया पाताल महान।।

1754 खेल खेल में प्यारो, मांग ने जो काम किया ले जान।
अंधा नर इस जग का प्यारो, जाने ना भगवन का खेल महान।
यह सब देख कर भी प्यारो, हर नर इसी की भक्ति में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल भगवन से बचना कठिन ले जान महान।।

1755 'वे नाम' जी जग में प्यारो, अमृत सब्द का देते दान महान।
अमर लोक से अमृत आया, पावे कोई कोई साधक महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, शुद्ध चेतना से पा लो सच्ची दात महान।।

1756 सच्चे सब्द ''वे नाम'' से प्यारो, हर कोई दूर भाग रहा मेरे भाई।
कुल की रीति से चलना प्यारो, पार एक भी मत जानो मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यह सब विष समान व्यवहार मेरे भाई।।

1757 पुरानी मान्यतायें प्यारो, मन माया में पूर्णता अटकना ले जान।
किनारा कोई सूझे ना प्यारो, हर कोई मन माया में लिपटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान त्यागना अति कठिन ले जान।।

1758 चंदन पास बांस का निवास प्यारो, बड़ाई कारण चंदन होना मत जान।
ता कारण बांस दुखी प्यारो, मान बड़ाई से दूर होना ही बनावे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन बड़ाई त्यागने से अमरपुर वासा जान।।

1759 'वे नाम' सतगुरू की खोज करो प्यारो, ताहि से निजघर पाना ले जान।
'वे नाम' पल पल पुकार पे पुकार हैं देते, अंदर के नैन फूटे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्म भ्रम से दूर होना कठिन ले जान।।

1760 गाय की सुरति बछड़े में प्यारो, जहां वहां चरती जब घास।
सिर पर घड़े लिये सखियां प्यारो, हिलमिल पनिया घाट इक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बातचीत करती सुरति घड़ी के साथ।।

1761 नटनी बांस लिये रस्सी पर चलती प्यारो, सुरति ना डोले कहुं ओर।
सुरति का सब खेल प्यारो, मन मान सूं कोसों दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान चेतना से कौसों दूर।।

1762 मेरा ही नहीं तूं सभी का दाता, सतगुरू संग जोड़ ले नाता।
सुरति को चेतन करते प्यारे, महांसुरति संग जोड़ता नाता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चे घर से जोड़ता नाता।।

1763 दुखों से छुटकारा प्यारो, ''वे नाम'' दात से ले जान।
सुरति में सब्द धारणा प्यारो, अमर काया का प्राप्त करना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमृतत्व प्राप्त करना कठिन कार्य ले जान।।

1764 अमर मूल सब्द प्यारो, वर्णन से बाहिरा ले जान।
जगत के नामों से न्यारा प्यारो, ता में साहिबन वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर सब्द ही ''वे नाम'' सब्द ले जान।।

1765 ''वे नाम'' सब्द से आया प्यारो, सत्य का प्रमाण ले जान।
सतगुरू महिमां सत द्वीप नौं खण्डों में प्यारो, सतपुरूष का तदरूप ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्शन की महिमां महान।।

1766 'वे नाम' सतगुरू के उपदेश का प्यारो, सुरति सूं करो विचार।
जो सतगुरू पाता नहीं प्यारो, तन तजने पर पाता यम द्वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वे जान कबहुं ना लगता पार।।

1767 झूठे गुरूओं को त्यागना प्यारो, पहला काम ले जान।
तनिक देर मत लगाओ प्यारो, झूठ सूं मत जोड़ो तार।
ऐसी दात कब पावोगे, मत पड़ भरम में सुन ले सच्ची पुकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिना कसौटी कोई ना उतरे उस पार।।

1768 निःसब्द दात का भेद प्यारो, हंसा को कर्म फांस से उस पार।
कर सतगुरू पे भरौसा प्यारे, पल में करावे भव पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू कैसे कोई उतरे उस पार।।

1769 तत्व भेद निःतत्व समाई, तीर्थ व्रत की ओर मत जाई।
काम क्रौध तृष्णा परिहारो, होय निःकर्म बात बन जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सम्पति विपति से पार हो जाई।।

1770 शील स्वभास सुरति बसावे, अंतर स्थिर ध्यान लगावें।
गवै तत्व निःतत्व सुरति सूं, काम क्रौध से पार हो जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महां संगत तल पर निज को पावे।।

1771 धन योवन की कैसी आशा, कनक कामिनी से रहे उदासा।
चहुं दिशी ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा करे उदासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख से पार है वासा।।

1772 अंदर की दृष्टि में प्यारो, इक तूं ही तूं ही समाता।
तेरा दासा पन प्यारे, हर पल सुरति धारा बन जाता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुझ बिन और कुछ सुरति नहीं भाता।।

1773 मान मानो ''वे नाम'' सब्द प्यारो, पावे सुने ना विचार।
सत्य सब्द का खोजी कोई प्यारा, सुने सुनावे ''वे नाम'' सब्द विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें साहिब दरबार।।

1774 ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, मन को शान्त बनाये।
सब्द स्वरूपी दात साहिबन की, मन माया से पार ले जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंदर की आंख खुल जाये।।

1775 देह का पाना ही प्यारो, दुख सुख का भुगतना ले जान।
सतगुरू मन माया से प्यारो, सुरति से काम लेते ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया से साहिब की देत पहचान।।

1776 बिन मन माया के प्यारो, साहिबन की कैसे होत पहचान।
सुरत सब्द को प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से हैं देत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया भी साहिबन अंग ले जान।।

1777 सत्यपुरूष नाम की शक्ति प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा पास ले जान।
जो नर इस दात को पाता, सत्यपुरूष शक्ति सुरति में समाती ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति मेल से हंसा रूप ले जान।।

1778 ''वे नाम'' दात पाते ही प्यारो, सौलहं गुणों की शक्ति साधक में ले जान।
सत्य संतोष ज्ञान विवेक प्यारो, पल में आन समाते ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, धीरज दया क्षमाशील बनता ले जान।।

1779 साधक की सुरति प्यारो, त्याग वैराग्य शान्ति से भरी ले जान।
निःकर्म मान विचार से प्यारो, सच्ची दूरी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, करूण मित्र प्रेम भाव सुरति में समाते ले जान।।

1780 जा पास ''वे नाम'' दात प्यारो, काल जाल से छूटा ले जान।
सब गुण आन समाते प्यारो, दुख सुख लगते एक समान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन गुण पांच तत्वों से पार ले जान।।

1781 विहंगम चाल जब मिलती प्यारो, हंसा रूप अमर काया ले जान।
तीन लोक पांच तत्वा त्याग कर प्यारो, अमरपुर निजघर पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परमहंसों से मेल होना ले जान।।

1782 सत्यपुरूष अमर सब्द महिमां प्यारो, कोई कोई विरला साधक जाने।
अमर मूल का वर्णन प्यारो, जगत से न्यारा साधक ही जाने।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा निज को सत्यलोक का ही जाने।।

1783 अमर काया वे ही पावे प्यारो, जो अमर सब्द सुरति मांहि समावे।
सतगुरू महिमां जो जन गावे, अमरलोक में जा समावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सब्द ध्यावे अमरपुर को जावे।।

1784 'वे नाम' सुरति धारा ग्रंथ प्यारो, कहें 'वे नाम' विचार।
''वे नाम'' सब्द जाने बिना, निज को भूला जान संसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सब्द करावे भव पार।।

1785 सात द्वीप नौं खण्ड में प्यारो, सतगुरू परमहंसा से बड़ा ना कोये।
जो करना सतगुरू करे, बिन सतगुरू बात बने ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' अमर दात पावे कोये कोये।।

1786 निःसब्द दात दे कर प्यारो, कर्म फांस से मुक्त करें नर नार।
बिन दात फिर फिर जग में आये प्यारो, कबहु ना पहुंचे निज द्वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःसब्द की महिमां अपरम्पार।।

1787 सदगुरू ज्ञान मार्ग पर प्यारो, दृढ़ता से रहना सत्यमार्ग पाना ले जान।
मन मान की पहचान प्यारो, सुरति सब्द पर चलना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष नाम की महिमां ले जान।।

1788 योग यज्ञ जप तीर्थ प्यारो, यह सब काल पुरूष के जाल ले जान।
''वे नाम'' सब्द की दात बिन, मन मान से नांहि पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सब्द से पार ले जान।।

1789 चौथा लोक ही ''सत्य नाम'' प्यारो, तीन लोक में काल का जाल ले जान।
मतहीनता को त्याग कर प्यारो, अष्टम कमल दल पर ही धारण करो ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,'वे नाम' निर्भय ही देत ज्ञान।।

1790 कर प्रणाम ज्ञानी चले प्यारो, करन जग हंसा के काज।
जपै काल ना मानि प्यारो, तुम्ही पुरूष की लाज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नर नार को हंसा बनाने का काज।।

1791 हर हंसा तीन लोक का प्यारो, हर पल सुरति 'वे नाम' में जान।
काम क्रौध अहंकार विनाश, तीन लोक से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

1792 सब्द ''वे नाम'' का छुड़ावे फनदा प्यारो, पहुंचे सत्यलोक निज देश हमारा।
आवागमन से छूटा नाता, निर्मल हंसा सुरति की धारा।
पल में सतगुरू संग प्यारो, पहुंचे सत्यलोक पावे साहिबन दर्श प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पूर्ण संग पहुंचे सत्यपुरूष दरबारा।।

1793 वासुदेव ने बर्बरीक से युद्ध का पूछा भेद, बर्बरीक ने युद्ध का भेद दिया।
सुदर्शन चक्र ने सर काटन का प्यारो, खुद ही काम सारा किया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब जान कृष्ण ने काल का काम किया।।

1794 जब तक ''वे नाम'' सब्द की दात नहीं प्यारो, जग लीलाधर करे अपना काम।
काल पुरूष लो जान उसे, मन माया भी उसी का निज नाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, युद्ध धर्म नहीं है अधर्मी काम।।

1795 आप ही गुरू आप ही शिष्य प्यारो, बूंद और सागर रूप में काम किया।
आप ही आवे आप ही जावे, मन माया मिल सब खेल किया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सूं जब तक ना मेल किया।।

1796 इस ब्रह्माण्ड में चेतन दात प्यारो, आत्म सुरति प्रकाश ले जान।
निरंकार भगवन सुन्न में समाये, शरीर में सहस्त्रदल कमल वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भंवर गुफा में मन समाया ले जान।।

1797 दूध से घी जब पा लिया प्यारो, फिर दूध होत मत जान।
जब दही को मथ मक्खन किया प्यारो, फिर दही में समाना मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति निरति से हंसा होना ले जान।।

1798 सतगुरू ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, सुरति निरति को हंसा रूप करता ले जान।
हंसा मन माया से प्यारो, निकलता जान काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में साहिबन वासा ले जान।।

1799 सतगुरू सच्चे शूरमा प्यारो, 'वे नाम' सुरति का मारें बाण।
'वे नाम' सुरति संग आ गया, मिलता पद निर्माण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

1800 जो दात 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा पासा, चौथे लोक से आई ले जान।
सत्यपुरूष दिया दान सब्द का, पाया पद निर्माण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू पाया दो सब्द का दान।।

1801 जो पावे दात को प्यारो, सुरति स्वांसा संग जोड़े तार।
अंदर जगमग सुरति हो गई, खुल गया सत्यपुरूष दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष का होता दीदार।।

1802 'वे नाम' सदगुरू और साहिब जो प्यारो, ''वे नाम'' सब्द में वासा ले जान।
जैसे मेंहदी में लाली प्यारो, दूध में घी फूल में वास ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लकड़ी में आग छिपी ले जान।।

1803 परमपुरूष और काल निरंझन के मध्य में प्यारो, सदगुरू धाम महान ले जान।
''वे नाम'' सब्द महांचेतन सुरति प्यारो, हंसा संग में डौर महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू का खेल महान ले जान।।

1804 आत्मां सब्द जहाज में प्यारो, चलती संग मीन पपील की चाल।
अंदर की आंख खुल जाति प्यारो, सुरत सब्द का सब कमाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कल्पना से पार सुरति का देख कमाल।।

1805 खोती शब्द वाणी निःशब्द में प्यारो, वर्णन से बाहिरा चेतन सुरति का काम।
सत्यपुरूष रूप का वर्णन कैसा, रूप देखना ही सच्चा काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अब मन ही सुरति का करता काम।।

1806 सहज सत्य वे सब्द प्यारो, ''वे नाम'' सब्द कहाये सोये।
सब शब्दों का सब्द प्यारो, सुरति का सब कर्ता है सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द महिमां जाने कोये कोये।।

1807 तीन लोक से पार ''वे नाम'' सब्द प्यारो, महांसुन्न पार से आता ले जान।
अनभव सहज ध्यान में प्यारो, सतगुरू चरणन आधार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सब्द की महिमां महान।।

1808 मन वाणी से लेन ना देन प्यारो, साहिबन सुरति स्वरूप।
स्वपन जाग्रत के मध्यावस्था में प्यारो, देखो साहिबन स्वरूप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जाग्रत में छूटे संग स्वरूप ।।

1809 सुरति सब्द स्वांसा के जीरते प्यारो, खुलें सुरत कमल किवाड़।
सत्यपुरूष संग हंसा चले, पल में पहुंचे सत्य पुरूष दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही करावे भव पार।।

1810 सदगुरू कर्मों पाप पुन्य से पार प्यारो, सत्य सब्द में समाये सब्द ले जान।
''वे नाम'' सब्द का पाना प्यारो, सतगुरू सत्यपुरूष का एक संग पाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, एक चेतन दूसरी महां चेतन सुरति ले जान।।

1811 काम क्रौध लोभ मोह मद पर प्यारो, पूर्ण नियंत्रण ले जान।
हर बुराई से सब्द बचावे, ''वे नाम'' सब्द सब कार्य करता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांसा एक संग ले जान।।

1812 जब जग शब्दे शब्द बखाना प्यारो, सच्चा ''वे नाम'' सब्द नहीं पहिचाना।
शब्द में जान फंसा हर कोई, सुरति सब्द नहीं पहिचाना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन दात की नहीं पहचान।।

1813 जाप अजपा अनहद प्यारो, सभी से संग छूटा ले जान।
सुरति समानी सब्द स्वांसा में, कभी संग छूटा मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन दात महान।।

1814 शब्द ज्योति निरंझन से प्यारो, नेत्रों मध्य स्नायुमण्डल कोशिकायें जगाता ले जान।
सोचना देखना कार्य चिंतन प्यारो, कोशिकाओं का खेल ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यह सब योग माया का खेल ले जान।।

1815 सतगुरू ध्यान सुरति सब्द योग प्यारो, इसे अभ्यास योग मत जान।
ब्रह्मां विष्णु महेश जाना नहीं प्यारो, सुरति सब्द योग ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ता से राम नाम की महिमां जान।
शून्य से रर्रा उठा 'म' अक्षर माया से उत्पन्न जान।।

1816 सूर्य चंदा तारे प्यारो, सुरति को चेतन करना मत जान।
मन माया का अंधकार प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सूं मिटता जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''सार सब्द'' जीव सोया जान।।

1817 सुरति निरति के मेल से प्यारो, हंसा रूप मिलता महान।
हंसा अमर काया का पाना प्यारो, अमर सब्द की महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर मूल का वर्णन महान।।

1818 सत्तपुरूष का गुप्त नाम प्यारो, अमर सब्द जान महान।
पुरूष नाम गाओ सुरति सूं, स्वांसा में प्राणों की महिमां जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर सब्द सुरति चेतन की दात महान।।

1819 अमर सब्द सब तै न्यारा प्यारो, बिन पूर्ण सतगुरू जाने ना कोये।
अमर मूल सुरति ग्रंथ प्यारो, बिन सच्चे सेवक पावे ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर काया बिन अमर सब्द पावे ना कोये।।

1820 अमर नाम जाने बिना प्यारो, काल आन नचावे।
जन्म मरन जीव को मिट जाई, जब पुरूष नाम सुरति आन जगावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमर नाम बिन कोई जाग ना पावें।।

1821 अमर नाम को पा कर हंसा, कर्म फांस से मुक्त ले जान।
पाप पुण्य की आस त्याग कर, कर्म धर्म से छुटकारा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कनक कामिनी के प्रति उदास ले जान।।

1822 बिन देखे सत्यपुरूष की, कैसे करे कोई बात।
उन का रूप मिटता बनता प्यारो, बिन ''वे नाम'' बने ना बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो देखे करे ना बात।।

1823 बिन देखे अमर देश को प्यारे, माने ना संतन बात।
परमहंसों का देश वे, ''वे नाम'' सब्द से बनती बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' कहते हैं सच्ची बात।।

1824 बड़ी दूर से आत्म आई प्यारो, मन माया के पास।
साहिब पुकार पर पुकार हैं देते, चले आओ साहिबन के पास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक में हंसों का कैसा वास।।

1825 वेद चारों करत नहीं प्यारो, अमर लोक सत्यपुरूष की बात।
औंकार भी भेद देते नहीं, ''वे नाम'' सतगुरू परमहंसा की सुन ले बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार सब्द'' दात से ही बने सब बात।।

1826 तीन लोक विस्तार में प्यारो, सतगुरू से बड़ा ना कोये।
यत्न से कोई पार ना, 'वे नाम' सतगुरू सूं सब होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यत्न से पार ना कोये।।

1827 सुरति निरति सब्द स्वांसा संग प्यारे, उर्द मुखि कर डाल।
गंगा और जमुना के घाट पर प्यारो, सुरति का घेरा डाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तन मृतक एक डाल।।

1828 देवी देवल की पूजा प्यारो, सब जग करता जान।
इन की पूजा से कोई पार ना प्यारो, सच्ची पूज सतगुरू की तूं जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू पूजा में सब की पूजा जान।।

1829 प्रेम सत्य आनंद प्यारो, सब हंसों का सच्चा दरबार।
दुख उदासी वहां ना प्यारो, परमहंसों का सच्चा परिवार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहज ही तिन लोक से पार।।

1830 तीन लोक से भिन्न पसारा, चांद सूर्य से न्यारा।
अमरलोक 'वे नाम' का प्यारा, पूर्ण मोक्ष द्वारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक हंसों का घर द्वार।।

1831 ''वे नाम'' सब्द सतगुरू सूं पाओ, क्षर अक्षर से पारा।
अब साधक साहिबन का प्यारा, सतगुरू की आंख का तारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अब भया सब परमहंसों का प्यारा।।

1832 सत्संग ही सत्यपुरूष का संग प्यारो, कौन पल विराट महान।
आत्म साक्षात्कार जब हुआ, सागर में समाई बूंद महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्संग की महिमां महान।।

1833 'वे नाम' सजीव सुरति प्यारो, इसे अक्षर शब्द मत जान।
आत्म को चेतन करे प्यारो, सुरति चेतन नाम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग बनावे महान।।

1834 तीन लोक में प्यारो, काल भगवन सिर उपर ले जान।
हाथों में लिये कमाल प्यारो, सुरति सब्द नाम से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे कोई नहीं तीन लोक से पार।।

1835 'वे नाम' बिना प्यारो, सुरति चेतन मत जान।
जब लग सुरति 'वे नाम' बिना, काल का खावे बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम से छोड़ सकल जहान।।

1836 कौटि नाम जगत में प्यारो, मुक्ति से कौसों दूर।
''वे नाम'' सब्द गुप्त प्यारो, करे काल सूं कौसों दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पावे अमर लोक अति दूर।।

1837 तीन लोक राह प्यारो, त्रिकुटि विश्राम स्थान।
पांच तत्व सब एक रस, सुरत कमल निवास ले जान स्थान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य सब्द ही ''वे नाम'' सब्द महान।।

1838 ''वे नाम'' सब्द को पाकर प्यारे, कर्म फांस से मुक्त ले जान।
पाप पुण्य का संग गया, सुरति सब्द स्वांसा में ध्यान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पावे पूर्ण मोक्ष महान।।

1839 निरंकार निरंझन मन ही प्यारो, तीन लोक विस्तार महान।
इस के आगे विस्तार सत्य लोक का, सीमां रहित ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसों का सच्चा घर ले जान।।

1840 हंसा चलता बिनु पग प्यारो, बिन काना शब्द एक साथ।
कर बिनु हर काम है करता, बिन पग चले एक साथ।
अमृत रस का पान है करता, सुरति का संग भी साथ।
तन बिन परस, नैने बिन दर्श एक साथ।
यह सब सुरति चेतन से प्यारो, हंसा की महिमां सब गुण साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति संग महां चेतन सुरति का साथ।।

1841 जैसे पानी का बुदबुदा प्यारो, तैसे मानुस सुरति का साथ।
सुरक्षित एक ना जानिये प्यारो, मन माया का झूठा साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब शैतानी बल के हाथ।।

1842 सतगुरू हाथ में डौर प्यारो, उन्हीं का पकड़ो हाथ।
मन मान से बचना कठिन प्यारो, पा ले सतगुरू का साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मत कर काल का साथ।।

1843 अमर महल में सदा आनंद प्यारो, पास बैठ वे नाम करें ध्यान।
परमपुरूष तहां आव विराजें, 'वे नाम' दास करत प्रणाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रकाश ही प्रकाश प्रकटाये ध्यान।।

1844 आज ईर्ष्या का युग प्यारो, निज को खाली दूसरे की वस्तु महान।
दूसरे के सुख पर दुखी प्यारो, निज संतुष्टा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन कारण दुख सहता जग महान।।

1845 सतगुरू कृपा से प्यारो, सब काम होता ले जान।
करते केवल सत्यपुरूष प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' का होता मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष की महिमां जान महान।।

1846 संतत्व की धारा प्यारो, साहिबन भरोसे कृपा से चलती जान।
कमाई कैसी कौन करे प्यारो, दुखी बेबस जान हंसा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में हर नर दुखी ले जान।।

1847 पुण्य कर्मों से प्यारो, मिलती 'वे नाम' चरण में ठौर।
ऐसा सुखदायक स्थान कहीं नहीं प्यारो, तीन लोक में कहिं और।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मिले ना कहिं और।।

1848 नर जग में सभी क्रियाऐं प्यारो, करता केवल पाने धन।
आत्म ज्ञान चाह नहीं प्यारो, क्यों पावे यह धन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर जन्म में चाहा पाना केवल धन।।

1849 पूर्ण मुक्ति का भेद प्यारो, कैसे जाने बिन सच्ची चाह।
आलस निंदरा में रहना ही प्यारो, मिटावे सच्ची भक्ति की चाह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन पूर्ण सतगुरू कौन जगावे मुक्ति की चाह।।

1850 आत्म ज्ञान बिना नर प्यारो, भटक रहा काशी मथुरा की राह।
बंधन रहित कैसे कोई प्यारो, जब तक ना पावे सच्ची राह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण मोक्ष बिन कैसे मिले आनंद की राह।।

1851 ''वे नाम'' सब्द की खोज करो प्यारो, जिहं सुमिरत नर होये उभारा।
स्वांस स्वांस में सुरति धारा, सतगुरू संग उतरो भवजल पारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात बिन कोई नहीं कोई पारा।।

1852 असंख्य कमल जहां परमपुरूष दरबारा, संग सात पंखुरी कमल प्यारा।
जो कोई उस घर को जाये, देखे तहां यह सुंदर कमल प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सात सुरति का खेल ये सारा।।

1853 बड़े पुण्य कर्मों से प्यारो, 'वे नाम' सुरति में ठौर।
ऐसी दात औंकार पास नांहि, अमरपुर में मिलती ठौर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरण में पा ले ठौर।।

1854 गर्भ योगेश्वर शुकदेव प्यारो, उनकी महिमां जाग ना जानी।
तप के तेज से प्यारो, बैकुंठ धाम की महिमां जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, गुरू की महिमां विष्णु से जानी।।

1855 विष्णु कहे ऋषि गुरू कैसा प्रवेश, गुरू विहोना नर मुझे ना भावे।
यहां विश्राम कैसे कोई पाये, गुरू का पाना मुझ को भावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जनक विदेह से बात बनी जावे।।

1856 गुरू वे ही जो सत्य दे जावें, बिन सत्य कोई काम ना आवे।
पूर्ण सतगुरू मिले प्यारो, ''वे नाम'' दात दे सत्यपुरूष से मिलावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, देह में ही विदेह दर्शावे।।

1857 जब ही परमपुरूष प्यारो, सार सब्द सुरत सब्द दात मोहे दीनी।
जब ही 'वे नाम' आज्ञा अनुसार प्यारो, तबही 'वे नाम पृथ्वी पर दात है दीनी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दास की सुरति महां चेतन कर दीनी।।

1858 ''वे नाम'' सब्द बिन मन माया प्यारो, सुरति सूं अलग मत जान।
लाखों यत्न करो जे प्यारो, मन के आवर्ण से सुरति पार मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ह्रदय मन का अंग ले जान।।

1859 सुरति चेतन से काज प्यारो, चेतन सुरति का खेल महान।
मन से रचयो संसारा, सुरति चेतन से मन का संग छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ह्रदय की शुद्धि से सुरति का लेन ना देन।।

1860 'वे नाम' पाये जो जन प्यारो, काग से हंसा ले जान।
ऐसा सब्द सत्यपुरूष से प्यारो, आत्म से हंसा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति के मेल से हंसा ले जान।।

तन तजने वाले का भेद

1861 मल द्वार प्राण जब जाये प्यारो, नर्क स्थान में वासा ले जान।
मल द्वार नर्क का द्वार प्यारो, तन तजते समय मल का बाहिर आना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में रह कर कुछ अच्छा किया मत जान।।

1862 नाभि द्वार (मूत्र द्वार) से प्राण निकासा, जलचर योनी में वासा ले जान।
मछली मैंढक कछुआ आदि का प्यारो, जल में जन्म पाता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भक्ति भाव उत्पन्न हुआ मत जान।।

1863 मुख द्वार से प्राण निकासा, अन्न खन में वासा ले जान।
अनाज के कीड़े सुसरी सुंढी आदि, में वासा पहचान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में जीवन व्यर्थ गंवाया ले जान।।

1864 स्वांस द्वार से प्राण निकासा, अण्डज खान में वासा ले जान।
आत्म सुरति अण्डज खानी में प्यारो, पक्षी की योनी में वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द हर नर बंधन में जान।।

1865 श्रवण द्वार से प्राण निकासा प्यारो, प्रेत देह तत्काल पाता ले जान।
प्रेत की आयु हज़ार वर्ष से कम ना प्यारो, शरीर देख भय होता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ''वे नाम'' दात से पार ले जान।।

1866 नेत्र द्वार से जब प्राण निकासा, मक्खी आदि का तन मिलता ले जान।
मक्खी मच्छर तन मिलता प्यारो, आखें खुली की खुली रह जाती ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यह सब काल का खेल ले जान।।

1867 दशम द्वार से प्राण निकासा प्यारो, स्वर्ग लोक में वासा पाना ले जान।
सुरति निरति प्राण दसवें द्वार से प्यारो, सुन्न महांसुन्न में वासा ले जान।
फल भौगने पर जग में राजा प्यारो, प्रसन्न चेहरा दिखता ले जान।

1868 दसवें द्वार से उपर प्यारो, ग्याहरवां सुरत कमल सतगुरू द्वारा।
ताका भेद 'वे नाम' सतगुरू ने जाना, अमर हमारा सतलोक द्वारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरलोक हंसों सच्चा देश प्यारा।।

1869 नौ द्वार संसार प्यारो, दसवां योगी द्वार।
अंदर की खिड़की जब खुले, मीन पपील चाल से जुड़ जाये तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां इन से पार।।

1870 ग्यांहरवें द्वार से हंसा जब जाई, साहिबन संग अमरलोक वासा ले जान।
हंसा सदा सदा के लिये प्यारो, अब सागर से पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात से पूर्ण मोक्ष पाना ले जान।।

1871 ग्याहरवां द्वार दसवें द्वार से, उपर सुरत कमल ले जान।
यह भक्ति केवल पूर्ण संत ही जाने, सगुण निर्गुण से आगे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परा भक्ति की महिमां महान।।

1872 भृंगी सब्द की महिमां जो गई, सुरति निरति एक हो जाई।
हंसा रूप में ध्यान में जाई, सुरत कमल से निजघर को जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष की दात कोई सच्चा हो पा जाई।।

1873 'वे नाम' सुमर ले मेरे भाई, पल में काल जाल छूट जाई।
सुरति की देखी सत्यगुरू सूं प्यारो, निःसब्द दात से पार हो जाई।
चेतन सुरति सूं सुरति जागे, महां सुरति पाई पार हो जाई।।

1874 दसों दिशा में करौना की लगी आग, जग वासी कहां जायें भाग।
''वे नाम'' सब्द सुरति ध्यान से, पल में किटानूं जायें भाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सूं आपदायें जा भाग।।

1875 नाम विदेह से ध्यान विदेह प्यारो, चेतन सतगुरू में जाई समाये।
सुरति उंची चेतन सुरति से तानो, सत्यपुरूष आन संग समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्यपुरूष पाये निजघर को जाये।।

1876 मन जाता है जाने दे प्यारे, जोड़ ''वे नाम'' सब्द से सुरति को तार।
उतर मन सुरति कमान से प्यारो, अब क्या कर सकता मन तीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' कमान सूं छूटा तीर।।

1877 जब मन सूक्ष्म रूप में प्यारो, रहता मूल सुरति अंदर महान।
तब सुरति आत्म रूप प्यारो, देती मन माया की मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां ले जान।।

1878 जब मूल सुरति 'वे नाम' से प्यारो, जग जाती ले जान।
तब संसार स्वपन केवल प्यारो, पूर्ण सतगुरू का काम महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पल में भवनिधि पार ले जान।।

1879 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, अजर अमर दात महान।
केवल साहिबन वासा सब्द में, परमपुरूष प्रकाश महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज रूप में समाना काम महान।।

1880 सदा आनंद निजघर में प्यारो, दुख दर्द की बात वहां ना।
श्वेत स्वरूप सब्द फूले तहां प्यारो, हंसा परम हंसा बने महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भव निधि तरो बनो महान।।

1881 गुरू राह बताने वाला प्यारो, सतगुरू करता भव पार।
सब करता ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सतगुरू सार सब्द से भव पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां अपरम्पार।।

1882 सुरति निरति के मेल से प्यारो, मूल सुरति बने महान।
यह सब काम सतगुरू सुरति सूं, निज की सुरति चेतन महान।
सतपुरूष परमसुरति से प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति महान।।

1883 निःशब्द नाम सत्यपुरूष सूं आया, सतगुरू में आन समाये ले जान।
जग लग वाणी शब्द सूं प्यारो, तहां लग काल का वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वाणी परे ''वे नाम'' सब्द महान।।

1884 जो कोई पूर्ण सतगुरू पावे प्यारो, पावे पहुंचे ठौर ठिकाना।
विचार से बात बने ना प्यारो, सुरति का सच्चा खेल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन 'वे नाम' सतगुरू कौन बने महान।।

1885 चेतन सुरति से प्यारो, देख सखी निज देश।
अंदरत की आंख निःशब्द से चेतन जब प्यारो, सुरति देखे वे देश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जित देखूं तित देश।।

1886 सुरति मन में समाई रहती प्यारो, निरति पवन में समाई ले जान।
दोनों के मेल से प्यारो, मूल सुरति बनना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सुरति हो हंसा रूप महान।।

1887 साहिब नाम में प्यारो, नाम में 'वे नाम' ले जान।
नाम स्नेहि 'वे नाम' प्यारो, 'वे नाम' साहिबन संग मिलाता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, महां चेतन सुरति 'वे नाम' में ले जान।।

1888 तीर्थ जप तप जग में प्यारो, करें अनेकों रे।
बिन 'सार नाम' ''वे नाम'' रूपा, छूटे ना लेखा रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू मिलने से खत्म होता लेखा रे।।

1889 जिन जिन जग में प्यारो, निःअक्षर दात को पाया रे।
हंसा रूप को पल में पाकर, कर्म फांस से मुक्त हो जाता रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पाप पुण्य की आस छोड़ उदास ही रहता रे।।

1890 सच्चा सेवक सेवा में रहे, सब्द सुरति एक स्वांसा में।
सब में जाने सोये, सुरति निरति एक साथ सेवा में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल साहिबन को पावे निज में।।

1891 ''वे नाम'' सब्द बिन जग प्यारो, सोया हर नर नार ले जान।
''सार सब्द'' दात बिन मूर्ख नर प्यारो, पाप पुण्य के चक्र में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार नाम'' बिना सब विधि सूं हीन।।

1892 सार नाम बिन प्यारो, मन मान सूं छूटा मत जान।
बारंबार नर्क में जावे, काल का फेरा छूटा मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू सूं पा लो दात महान।।

1893 सार नाम पान के वास्ते प्यारो, मत खोजो सकल संसार।
कहें 'वे नाम' जग वासियो, 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा सूं पा लो सार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात सूं पहुंचो साहिबन दरबार।।

1894 ''वे नाम'' सब्द जब डालो सुरति में, काल भी आन नवावे माथ।
इसी नाम से प्यारो, मन माया का छूटा साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर एक से करो प्यारा एक साथ।।

1895 सांच झूठ मन माया का खेल प्यारो, सुरति से लेन ना देन।
सत्य प्रेम आनंद सुरति धार प्यारो, सच्चे सतगुरू की करी पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत्य प्रेम आनंद का भेद ले जान।।

1896 जग में पल पल मरना हो रहा, सच्चा मरना जाना ना एक।
ऐसी मरनी ना मुआ, जिस ने पाया प्यारा एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा ही पाये प्यारा एक।।

1897 तुम भी निज को सतगुरू पर, छोड़ कर तो देखो।
आशा तृष्णा भाग जाते, ''वे नाम'' दात एक बार पा कर तो देखो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति धार देखो।।

1898 सुश्मिन मध्य वासा निरंकार का, दसवां द्वारा मूधा डाला प्यारो।
उपर मकरतार चड़ना कठिन, सुरति सब्द स्वांसा एक करो प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं दसवां द्वार पार करो प्यारो।।

1899 जीवित मृतक होय के पाना, संतों की रीत पुरानी है।
सब्द सुरती से स्वांसा उर्दमुखी होती, सतगुरू संग की आवश्यक्ता पड़ती है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू संग बात नहीं बनती है।।

1900 गगन की गुफ़ा को प्यारो, पवन स्वांसा से साफ़ करो।
बिन सतगुरू सब्द बात बने नहीं, सुरति स्वांसा जब एक करो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द में ध्यान धरो।।

1901 पवन को पलटते पलटते, शून्य में घर कर जाना है।
सतगुरू संग पहुंचते ही, चरणों में साहिब के शीष दे जाना है।
सोलहं सूर्य की जोत देकर, तुझे संग संग निजघर ले जाना है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन दर्श पाना है।।

1902 सतगुरू कृपा से प्यारे, आज्ञा चक्र मध्य किया साहिबन दीदार।
संग संग सहस्त्रसार पार किया, पहुंचे सुरत कमल दरबार।
सतगुरू चरण कमलों पे सर रख दिया, संग पहुंचा अमरलोक दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू रूप धारें साहिबन सरकार।।

1903 निज खो गया प्यारो, सहज संग सहज होना ले जान।
अब तो और कुछ पाना नहीं, मन माया का खो जाना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ईक सतगुरू ही पूर्ण सहज जग में ले जान।।

1904 नर तन की खातिर सब कुछ करता, निज की ना सोच विचार।
ताहि से काल जाल ना छूटे, पूर्ण मोक्ष का नहीं विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, माया बंधन जागने में करो तुम विचार।।

1905 जन्म मरन के चक्र में पड़कर, आत्म भूली सच्चा साहिबन दरबार।
मन मान द्वंद में खोया, भूली सार सब्द की सुरति धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सब्द की चेतन सुरति धार।।

1906 मेरा मेरी का चक्र प्यारो, नर को मोह ने किया बेहाल।
अपनी तो कोई होश नहीं, कैसे किस से पावे सच्चा माल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग बेचे खरीदे कर्मण जंजाल।।

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :-

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास-दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

1907 'वे नाम' रसायन प्रेम रस, पावे साधक महान।
पूर्ण सतगुरू पाना दुर्लभ है, मांगे शीश का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, छेः तन 'वे नाम' के जान।।

1908 वैराग सुरति में रचि रहै, प्रेम की जोत जगाये।
''वे नाम'' सब्द प्रेम रस एक करे, सुरति चेतन कर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, विरह वैराग़ बिन प्रेम खो जाये।।

1909 वस्तु अगोचार पाये के, छेः तन कर तूं पार।
अमृत पावे प्रेम सूं, ''वे नाम'' सब्द करावे पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द की महिमां अपार।।

1910 यह तत वह तत तो एक, एक प्राण दुई सत्यपुरूष दात।
अपनी सुरति सूं जानिये, सतगुरू सुरति की बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति सूं चेतन सुरति की बात।।

1911 अमृत बाणी सतगुरू तेरी, सुनी संगत निहाल।
दिव्य शक्तियां हर ओर चलें, पाई पाई संगत होत निहाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति ध्यान से निहाल।।

1912 मन बुद्धि चित पहुंचे नहीं, सुरत सब्द सार सब्द महान।
धन धन सतगुरू प्यारे, साधक को देते मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निज की कर पहचान।।

1913 जहां जहां बुद्धि का वास है, तहां तहां माया तूं जान।
ईन्द्रियां मन की का अंग प्यारो, सार सुरत सब्द ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन सूं देख महान।।

1914 तीनो बंध सूं बात बने, निःअक्षर सूं ले काम।
सुरत समाधि स्वांसा सब्द संग, क्षर अक्षर सूं मत ले काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति करे सब काम।।

1915 नहीं मन नहीं माया, सुरति करे सब काम।
सार सुरत सब्द में ध्यान जब, पल में बनें सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सजन सजनी से मत ले काम।।

1916 चलहु सखी निज देस हमारे, जहां दिवस ना रात।
चांद सूरज तहां ना देखो, तो भी तहां ना रात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अमर लोक की सच्ची बात।।

1917 पाप पुण्य तहां ना कोई, मन माया नहीं काम।
नहीं सजन नहीं सजनी, परमहंसा रूप में काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द करे सब

1918 जहां जहां डोलो अंदर बाहिर, सो सदगुरू परिक्रमा जान।
जो जो करों सुरति संग में, सो सब सदगुरू सेवा जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सदगुरू की महिमां जान।।

1919 सुरति सूं बोलें सतगुरू जगत में, सुरति सूं ध्याओ ''वे नाम'' सब्द को।
सुरति में हर कार्य खाना पीना सोना जागना, रखो संग सब्द को।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति में सभी काम सतगुरू सेवा में हों।।

1920 सार सुरति की महिमां जानो, सहज अवस्था को पाना महान।
सहज अवस्था जब तुम धारो, वासनाओं का टूटे बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, वासनाओं का संग छूटा जान।।

1921 आत्म हंसा रूप ना, मन माया का संग साथ।
''वे नाम'' सब्द दात पास तेरे जब, पल में छूटे मन माया का साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, काल जाल मन माया साथ।।

1922 सार सब्द सुरत सब्द सत्यपुरूष दात प्यारो, ता में वासा साहिबन जान।
सतगुरू कृपा सूं परख भई, वचन साहिबन मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सार सब्द सुरत महिमां महान।।

1923 पारख बिन परचै नहीं, बिन सत्संग ना होत ज्ञान।
दुविधा तजो निर्भय रहो, सोई संत सुजान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन सत्संग कोई ना जागा जान।।

1924 सोच विचार छोड़ प्यारे, सुरति से निर्णय करो महान।
सब हंसा रूप दिखें प्यारो, ता को पारखी लो जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बन पारखी सब लगें हंसा महान।।

1925 देह मान अभिमान तज, निरअहंकारी जो जन होये।
वर्ण कर्म कुल जाति तजे, हंस न्यारो होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कोई जात धर्म से पार ना होये।।

1926 कर्म धर्म विलास देह को, प्यारो करो विचार।
सेवा सुमिरण सुरति सूं, निज जानन का करो विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष महिमां का करो विचार।।

1927 पूर्ण मोक्ष गति काहु ना जानी, सोया हर एक जीव कित कहऊँ बखानी।
नर सोया मुख होये जीभ दस लाखा, क्षर अक्षर की करऊं बखानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, क्षर अक्षर तजो पाऊं निःअक्षर वाणी।।

1928 जल में कुंभ, कुंभ में बाहर जल भीतर नहीं समात।
फूटा कुंभ जल जल में समाना, यही ज्ञान महान।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा तन मन में लिप्त ना जान।।

1929 अविगति की गति का कहीं, जा के गांव ना ठांव।
गुण बिहुना पेखना, सुरति सूं लीजिये नांव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, काल का झूठा गांव और ठांव।।

1930 कुल मर्यादा खोई के, जीवत मुवा नांहि होये।
सुरति से जिसे देखिया, अदृष्ट कहावै सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मर्यादा खोई ही जागा होई।।

1931 सुरति चेतन से फल पावै, जोड़े 'वे नाम' सतगुरू सूं सुरति तार।
जागा वही नर जानिये, निसि दिन हर पल ''वे नाम'' सब्द में सुरति धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सार नाम सुरत नाम सूं जोड़ो तार।।

1932 अमृत वस्तु नर जाने नहीं, कर्म धर्म में ध्यान।
कहें 'वे नाम' बात बन जाये, जे हो जीवत मरने की अवस्था महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, तन मरता ध्यान में जान।।

1933 मीरां विरह में डूबी प्यारो, कहै सखियन सूं रोये।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी, त्यों त्यों भारी होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' सब्द जीव शांत ना होये।।

1934 यह जाग लिपटा हर एक की निंदा में, अंध में सबै कोये।
कहा 'वे नाम' का कोई माने ना प्यारो, काल भेद ना जाने कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, काल शांत करे ना कोये।।

1935 सुमिरन करो सदगुरू 'वे नाम' का, छाड़हु दुख सुख आस।
यह जग सोया है पड़ा, करे ना 'वे नाम' का साथ।
कल मानें ना ''वे नाम'' सब्द महिमां को, कल पर हर एक की आस।।

1936 अदभुत पंथ 'साहिब', वे नाम' वर्णन क्या जाई।
भूला नाम भूली भक्ताई, चेतह रे नहिं तो काल संग ले जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सार (अमर) दात से पार हो जाई।।

1937 संशय सूं भरा शरीरा, संग ही खेल जुआरि।
ऐसा घायल बापुरा, जीव जीव ही मारे झारि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन जागे मरो गौ झरि।।

1938 ''वे नाम'' अमृत जो पिये, शीश दक्षिना 'वे नाम' चरणन देय।
मन माया संग शीश ना दे सके, पल पल दुख ओरों को देय।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, शीश पल पल 'वे नाम' चरणन में देय।।

1939 जो है जाको भावता, पल पल दर्शण पायें।
मन भाव सुरति सौं पिये, वह ही 'वे नाम' सतगुरू कहलाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सब तजे एक पूर्ण मिल जाये।।

1940 सार सुरति में सहना सुगम, सुगम चेतन सुरति की धार।
नेह विरह एक रस, महा कठिन क्षर अक्षर की वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, विरह का दर्द नाम बाण सूं पार।।

1941 प्रीति पुरानी ना होत है, जो पूर्ण सतगुरू सूं लाग।
पत्थर बरसों जल में रहे, छोड़ सके ना आग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, हंसा जान प्रेम की आग।।

1942 प्रीति झूठी मन की प्यारो, जग में नाना विधि की सोये।
उत्तम प्रीति सुरति सूं जानिये, सतगुरू संग जो होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू प्रेम सम ना कोये।।

1943 प्रेम पंथ में पग धरै, पल पल मन डराये।
सपने मोहे वयापे नहीं, काल का ग्रास बन जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, प्रेम सुरति व्यापे मन शांत हो जाये।।

1944 सज्जन स्नेहि बहुत जगत में, सुख में मिलें अनेक।
विपति पड़े दुख किस संग बांटिये, सो सतगुरू प्यारा एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जान सुख दुख मन के अंग।।

1945 छिनहीं चढ़े छिन उतरे, यह सब मन आधार।
जो घट प्रेम में पिंझर बने, सुरति प्रेम कहावे सोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, प्रेम सुरति जगे तो होये।।

1946 जब मन था तो मैं मन संग गया, सुरति जगी सतगुरू हैं मन नांहि।
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो ना समाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति बिन सब काल के मांहि।।

1947 आत्म घट में सुरति प्रेम है, मन का घर नांहि।
शीष उतारे भुईं धरे, तांहि पहुंचे घर मांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति की महिमां गाहि।।

1948 गोता मारा ''वे नाम'' सब्द संग सुरति में, देखे मोती लाल भंडार।
वह क्या मोती पायेगा, जिस संग मन की तार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द दात बिन रहे काल द्वार।।

1949 सत्यपुरूष ''वे नाम'' सब्द में, कमी काह की नांहि।
बंदा पहचान ना पावी, चूक मन तरंग के मांहि।
यह भेद 'वे नाम' सतगुरू परमहंस जी देते है, हंसा सत्यपुरूष के मांहि।।

1950 शीलवन्त ''वे नाम'' सब्द दात प्यारो, अति चेतन सुरति होये।
सतगुरू चेतन सुरति सूं, साधक सुरति चेतन होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति चेतन सूं कोमल हृदय होये।।

1951 ''वे नाम'' सब्द ता को दीजिये, सेवादार जो होये।
सिर उपर मन की मार सहे, सांचा सेवक होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सेवक हर पल ''वे नाम'' सब्द में होये।।

1952 योग यज्ञ तप मन मान पसारा, दान पुण्य जान कर्मण पसारा।
''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष कहाया, या से छूटे काल पसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन के सब कार्य काल पसारा।।

1953 सेवक स्वामी एक मत, सत्य में सत्य एक हो जाये।
चतुराई रीझौ मन सूं नांहि, रीझे सुरति के पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू वे नाम सत्यपुरूष में रहें समाये।।

1954 गुरूमुख सतगुरू चितवन रहे, जैसे मणिहिं भुजंग।
कहें 'वे नाम' सुरति में रहो, यह गुरूमुख के संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, गुरूमुख सुरति सत्यपुरूष अंग।।

1955 फल कारण सतगुरू सेवा करे, सुरति चेतन सूं परखें संत।
कहें 'वे नाम' सो सेवक नहीं, कुछ हाथ ना आवे अंत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति से सेवा प्यारो पूर्ण मोक्ष है।।

1956 'वे नाम' केवल सत प्रेम आनंद, क्या पास क्या दूर।
जा की सुरति चेतन सुरति में बसे, सो कैसे हो दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द सूं जान सतगुरू हुजूर।।

1957 सतगुरू आज्ञा माने नहीं, चले अटपटी चाल।
प्रेम भक्ति दोनों गये, काल का देख कमाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम सब्द का देख कमाल।।

1958 सतगुरू आज्ञा उलंधि के, जो साधक कहु जाये।
जहां जाये तहं काल प्यारो, सुरति में सतगुरू सुरति पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द दात पाई निज घर जाये।।

1959 सुरतिवान अभिमानी नहीं, मान अभिमान मन देन प्यारो।
सत्यवान परमार्थी आदर भाव, सुरति के अंग ले जान प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जानो सभी एक समान प्यारो।।

1960 सत की नाव खेवेटिया सतगुरू, भवसागर तर आयो।
मीरा के सतगुरू संत रवि दासा, हरित हरित जस गायो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''सार नाम'' ही सत की नाव।।

1961 सुरति कोस भर वास सत्यपुरूष का, वहीं सब हंसों का गांव।
तहां से आया तहां है जाना, जागे पा लो गांव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कर पहचान निज का गांव।।

1962 सतगुरू 'वे नाम' बिन प्यारो, कौन चलावे सत्त की नाव।
''वे नाम'' सब्द जहाज है, सुरति सब्द स्वांसा संग गांव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, वे ही हम सब हंसों का गांव।।

न नानक नाम जहाज है, जो चढ़े सो उतरे पार।
जो श्रद्धा कर सेवदे, गुरू पार उतारन हार।
यह भेद नानक जी देते हैं, बिना सतगुरू बने ना बात।।

1963 जिस का पूर्ण लिखया, पावे ''वे नाम'' सब्द की दात।
निरंकार भी साथ देत प्यारे, मान ले 'वे नाम' की बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिना सतगुरू बने ना बात।।

1964 'वे नाम' हर एक को प्यारो, चेतन सुरति का पूरा रंग देत महान।
तन मन बुद्धि चित्त प्यारो, समाविष्ट कर देत महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू की महिमां जान।।

1965 ''वे नाम'' सब्द हर योग एको प्यारे, सब्द सदगुरू सब्द ही चेला रे।
अंदर सतगुरू बाहिर चेला, देवे लेवे सब साहिबा तेरा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, हर सुरति निरति में वासा तेरा।।

1966 ''वे नाम'' सब्द में सुरति लागी, मलिन वासना का हुआ त्याग।
स्वांस स्वांस में कबहु ना टूटे, ऐसी तारी सुरति सूं लाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सब्द बाण सूं मन माया दे त्याग।।

1967 नाम खुमारी सुरति में, चढ़ी रहे हर स्वांस।
ज्यों ज्यों ''वे नाम'' सब्द सुरति में चले, त्यों त्यों प्रीति हर स्वांस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति नाम ही जहाज संग स्वांस।।

1968 सतगुरू भीतर सुरति में बैठे, आश तृष्णा का करें त्याग।
सत्यपुरूष भी हर स्वांस स्वांस में प्यारो, जब सुरति सब्द में लाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं होत सब तृष्णाओं का त्याग।।

1969 युग युग से नाविक जग आते हैं, प्यारे प्यारे घाट भव पार कराते हैं।
जो डूबन को प्यार खड़े, संग डूब के भाव पार कराते हैं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मिटने से हंसा होते हैं।।

1970 तूं भूला प्रेम की रीत प्यारे, तभी तो दूर ही रहता है।
वे तुझ में हर पल रहता, तो भी तो इस में रहता है।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, तुम जागो वे भी संग समाता है।।

1971 मन कारण गर्व ना कीजिये, रंक ना हंसिये कोये।
अजहुं नाव समुंद्र में, बिन सब्दे सब कुछ खोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, एक पाये सब खोये।।

1972 मन माला सर्प शरीर में, पल पल काटन आई।
बिरला कोई कोई बांचि है, जो सतगुरू शरणी जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन निज पहचान मन नांहि जाई।।

1973 तीनों लोक संशय में प्यारो, जाने ना मन का सच्चा राज।
मन बड़ाई ना तजे, कैसे जाने पूर्ण सतगुरू का राज।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन पहचान ही भक्ति का राज।।

1974 मन माया की कोठरी, तन संशय का कोट।
विष हर मंत्र माने नहीं, काल की जान सब चोट।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' सूं बचा लो सुरति जोत।।

1975 मानुष जान अति पापिया, निःअक्षर सब्द का ना लेता दान।
बार बार 'वे नाम' जी आवाज देत हैं, पर सोया जीव ना धरे ध्याण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन की सेना सर्प समान।।

1976 मानुष विचारा क्या करे, मन के वश सुरति शरीर।
आत्म मन के वश पड़ी, क्या कर सकता शरीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' सूं जागे सुरति शरीर।।

1977 आत्म संग तन के दुर्लभ है, जुड़े ना दूजी बार।
''वे नाम'' सब्द जब संग जुड़ा, मन मान संग ना दूजी बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, पूर्ण सतगुरू जग में कभी कभार।।

1978 सत्यपुरूष एक कहौं तो जग है नहीं, दोय कहों तो गारी।
निराकार जगत में दो नहीं, निज जाने बिना सब गारी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष की महिमां न्यारी।।

1979 एक ते अनंत भयो, अनंत एक सूं आया।
'वे नाम' से परिचय भई उस एक ते, अब अनंत एकै मांहि समाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, एक की महिमां किसी प्यारे ही पायो।।

1980 एब सब्द 'वे नाम' जी का, ता का अनंत विचार।
याके मुणि जन पंडिता, वेद क्तेब ना पावें पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द सूं पार।।

1981 मन माया के वश हर नर नार है, सब के वश यह दो नांहि।
जीव की एक ना चले, बिन ''वे नाम'' दात मन वश नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''मूल नाम'' बिन कोई छूटे नांहि।।

1982 बलिहारी वह दूध को, जा में बसत घी।
कठिन काम घी पावना, यही विधि सुरति पीव।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निःअक्षर दात ही सुरति पीव।।

1983 काल का चक्र देख के, 'वे नाम' नैन दिये हैं रोये।
तीन लोक के बीच में, हंसा हुआ ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष को जाने 'वे नाम' बिन ना कोये।।

1984 बलिहारी सत्यपुरूष की, जो हैं प्यारे परखन हार।
मोह दीन्ही दात ''वे नाम'' सब्द की, कैसे बुझे सोया गंवार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष की महिमां अपरम्पार।।

1985 जब जीवित मरना आ गया, 'वे नाम' सब्द अमृत की फूटे धार।
जो मृत्यु से पल पल डर रहा, इस के संग मन माया की धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' दात बिन कुछ हो नहीं सकता।।

1986 निज को मिटाये बिना, उसे पाया जा नहीं सकता।
बिन इस पल में रहने, स्वयं को मिटाया जा नहीं सकता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' दात बिन कुछ हो नहीं सकता।।

1987 संगीत लक्ष्य है जीव का, सुरति संगीत पैदा होने दो।
बिन पूर्ण सतगुरू संगीत नहीं, ''वे नाम'' सब्द दात आने दो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति से सुरति संगीत होने दो।।

1988 जो तुम हो वह पहले थे, आगे भी है होना।
''वे नाम'' सब्द दात पा लो, जे भव सागर पार है होना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे कोई पार ना होना।।

1989 निज को पूर्ण सौंप दो सतगुरू को, मन माया संग छूट जाता।
यह तेरे अपने नहीं मन की दोलत, तेरा अपना तो तेरे पास रहता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म से हंसा 'वे नाम' कृपा से होता।।

1990 है जिस में आत्मनंद दिखता, वे आनंद हो नहीं सकता।
जब तुम नहीं होते, निजरूप ही आत्मानंद होता।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आनंद सूं हंसा रूप पहचान होता।।

1991 जब से दया भई सतगुरू की, अमरधाम प्यारो घर पायो।
काम क्रौध की डौरी टूटी, ममता मोह बहायो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू मन मान मिटायो।।

1992 जिस की कोई मांग नहीं बाकी, उसी में आन समाते।
वे हर पल देखते तुझ को, खाली हो तो आते।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, खाली होने को कहते।।

1993 सत्यपुरूष सुरति रूप में हृदय में रहते, निरति रूप में स्वांसा में जान।
अंदर बाहिर दोनों में संग, हर जीव भूला ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष का संग जान महान।।

1994 आपा तजै हरि ना भजै, नख सिख तजै विकार।
सब जीवों से निबैर रहै, ''वे नाम'' सब्द की पकड़े पतवार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' सब्द नहीं कोई पार।।

1995 भेद भाव के कारणे, मन मान में सुरति भुलान।
निर्पक्ष होये के ''वे नाम'' सब्द भजै, सोई साधक जान महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष की महिमां महान।।

1996 बड़े गये बड़ाई में, रोम रोम हंकार।
''वे नाम'' सब्द की महिमां बिना, चारों वर्ण चमार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मान बड़ाई तज डाल।।

1997 माया तजी तो क्या तजा, जे मान तजा नांहि जाये।
इस मन जीव मुणिवर सभी ठगे, सब जग रहा भरमाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से बात बन जाये।।

1998 पंडित पीर मुणिवर, एकहि मार्ग ले जान।
उंची घाटी सतगुरू नाम की, चढ़ि गये 'वे नाम' दास महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' दास की कर पहचान।।

1999 जैसे मन पानी पे, वार नहीं दिखा पाये।
ऐसी सुरति नर नार की, ''वे नाम'' सब्द को पकड़ ना पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द सुरति की चेतन कर जाये।।

2000 जो जन डाले सुरति में ''वे नाम'' सब्द, दुख ना उपझे कोये।
अनुभव शांत भाव से परखिये, दुख सुख भेद ना कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जानो सब में एको सोये।।

2001 'वे नाम' सतगुरू की मर्यादा ना धरई, लख चौरासी कुण्ड में परई।
''वे नाम'' सब्द ना सुने अज्ञानी, भव सागर डूब मरई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मान तजे बिना पार ना कोई।।

2002 सतगुरू को दिखावे मान अभिमाना, ता को मिले नर्क निधाना।
'वे नाम' सतगुरू सूं पावे अमृत नामा, संग ले जायें निजधामा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द में ही निजधामा।।

2003 सेवक सेवा से महिमां महान, मन मान जाये जागे सुरति महान।
कहैं 'वे नाम' सेवा बिना, पार मत किसे ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सेवा सूं पूर्ण मोक्ष पाना ले जान।।

2004 संतन पूर्ण ज्ञान ''वे नाम'' सब्द मेटि, मत थापो शब्द काल महिमां प्यारो।
तीन लोक सड़े वह पापी, धरती भार जानो ताहि प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द महिमां महान प्यारो।।

2005 कौटि तीर्थ भ्रम आवे, कुछ भी सत्त का हाथ ना आवे।
'वे नाम' चरणन में शीष निवावे, भव सागर तर जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, संतन चरणन में मोक्ष पा जावे।।

2006 नाम वंत ज्ञान वंत जग अनेक हैं, सुरति वंत 'वे नाम' जग आया एक।
सुरति वंत ही सतगुरू वंत प्यारो, तीन लोक जगावे मिलावे एक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सब का दाता सत्यपुरूष एक।।

2007 चिंता करो केवल सतगुरू सतनाम की, सो ही जानो 'वे नाम' दात।
जो कोई चितवे ''वे नाम'' बिन, जानो काल की दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द ही जग में सच्ची दात।।

2008 सतगुरू सेवा बिना जग द्वंद अंधेरा धोखा जान।
सतगुरू सेवा बिना काल की ना टूटे तार, मन मान में खोया जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू सेवा से निजघर जाना ले जान।।

2009 सतगुरू सेवा बिन कौन जो तारे, झूठे जग में सब झूठा ले जान।
सतगुरू सेवा बिनु कछु ना सरी, महां अंध कूप में पड़ा जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू सेव बिन जग में दुख ही दुख जान।।

2010 सतगुरू सेव सूं कटे दुख पापा, जन्म जन्म का मिटे संतापा।
सतगुरू सेव सुरति सूं कीजिये, जग आने का खेल सफल करि लीजै।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जग में सत्यपुरूष कार्य करि लीजै।।

2011 शीष उतारी सतगुरू चरणन धरे, कुछ मांग नहीं साथ।
सुरति सतगुरू चरणन में, ''वे नाम'' सब्द स्वांसा सुरति साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति से सुरति चेतन संग साथ।।

2012 सतपुरूष दर्शन 'वे नाम' जब पाई, गूंगा बनाये सुरति मेरे भाई।
हर पर सुरति उनमें समाई, जग का भूला अच्छा बुरा मेरे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति चेतन से सुरति चेतन मेरे भाई।।

2013 भेड़ चाल सकल संसार, नर पामर को यह व्यवहारा।
सब कोई कहे सच्चा मेरा धर्मा, मेरा गुरू कहता मेरा सच्चा व्यवहारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अंधे जग में अंधा व्यवहारा।।

2014 कर्म धर्म कुछ काम ना आवे, नामवंत जाने भेद यह सारा।
चले अंध के पीछे अंधा, बिन विचार के धंधा सारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अंधे के गांव में अंधा धंधा सारा।।

2015 दुर्बल सब की आंख में, तुछ नर ले जान।
सोया जग नहीं जानता, उसका प्यारा बड़ा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, दुर्बल प्यारे का प्यारा महान।।

2016 हंसा रूप बिन पग चले, सुने बिन काला ले जान।
कर बिन कर्म करे, विधि नाना ले जान।
आनन रहित सकल भौगी, बिन वाणी वकता बड़ योगी ले जान।।

2017 हंसा रूप तन बिन परस, नैन बिन सुरति सूं दरसे ले जान।
हंसा रूप गहे सुरति सूं प्यारो, शेष विशेष मन माया ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा सुरति की महिमां तूं जान महान।।

2018 सुरति सूं हर काम प्यारो, भरम में जान मन का काम ले जान।
मन भव लहर सम्मान प्यारो, सुरति ''वे नाम'' सब्द से चेतन महान ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मनसा लहर को सुरति से जान।।

2019 बिन पूर्ण ज्ञान के सतगुरू नहीं, जे करना भवसागर पार।
परख निरख सूं प्यारो, पाओ ''वे नाम'' सब्द उतारे भव पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द की महिमां अपार।।

2020 ''वे नाम'' सब्द दात का दान लिया, 'वे नाम' ना सत्यपुरूष सूं आप।
आत्म से हंसा बना, किया संग सत्यपुरूष का एक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, दात पाई पहुंचो निजघर संग साथ।।

2021 चन्द्रमां हिम की शीतलता, 'वे नाम' सतगुरू की शीतलता का मेल ना।
सार नाम सुरत नाम शीतलता के अंग प्यारो, सत्यपुरूष की शीतलता महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यलोक शीतलता की खान।।

2022 निरालम्भ राम बुलावा भेजिया, और लिया संग साथ।
''वे नाम'' सब्द की दात दी, जगाऊं जीव लाऊं निजधाम संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जिन पाया साहिबन दर्शन एक साथ।।

2023 जग के लिय सब प्यारे नहीं, अपने ही लगते प्यारे।
हंसा नाता एक सा, कौन नहीं है साहिबन प्यारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, एक से आये एक से प्यारे।।

2024 सुरति से सब्द पवन को घेर ले प्यारे, फेर उलटा एक साथ।
धर और अधर विच ध्यान लगवे, जीवित मरना होत एक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति की आंख देखे एक साथ।।

2025 साधना में सुरति संग प्राण, एक साथ उपर उठने का आभास।
तन है नांहि पर है प्यारो, निजरूप आभास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन मपान नष्ट का आभास।।

2026 तन गया मन गया, पर निजरूप आभास।
प्राणों का संग साथ प्यारो, शुन्य महां शून्य में भी निज आभास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अपना आप नष्ट होने का आभास।।

2027 आपा खोवे तन मन मिटने से, तब मिले ठौर ठिकाना।
निजरूप में आ गया, निज की होई पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन मान बह गया हुई निज पहचान।।

2028 चेतन सत्ता हंसा कहावे, मैं हूं अनुभव अभिमान।
तन मन दोनों गये, अब केवल हंसा महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आत्म तत्व को जान।।

2029 आत्म फांसी तन मान में, संग छूटत कठिनाई।
आत्म सुरति से पल पल दूर है, निज की पहचान कठिनाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से बात बन जाई।।

2030 आत्म तन की उरझी गांठ, ये तो सुरझत नहीं सुरझाई।
ज्यों ज्यों करत यत्न छूटन की, त्यों त्यों होय आत्म तन दृढ़ताई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आप को आपहि दृढ़ताई।।

2031 दुर्लभ जग में मानव तन पाया, जा से निज में निज पावे द्वार।
सतगुरू दात से बात बन जाये, पहुंचे निजघर निजधाम मोक्ष द्वार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से मोक्ष द्वार।।

2032 जन्मना मरना इस जग अंदर, असहनीय कष्ट पीड़ा का कारण।
शैश्ब नर्क से अधिक पीड़ा, बार बार जग आने का कारण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन माया प्रीत आने का कारण।।

2033 कौन से सुख तीन लोक में, माया लिया भरमाये।
संसार दुख का असीम सागर प्यारो, मोह लिया भरमाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, देवता भी मन कारण गये भरमाये।।

2034 लाखों जन्म का काल संग साथ था, सतगुरू पल में काटे बंधन बनाये।
गुण ना देखे अवगुण ना देखे, निज हंसा दिया बनाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन पल पल देत भरमाये।।

2035 भृंगा सब्द ही ''वे नाम'' सब्द है, सतपुरूष लोक की दात महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जान 'वे नाम' सतगुरू महिमां महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू आगे समर्पण करना ले जान।।

2036 तीन लोक में कुछ है नहीं, जा से 'वे नाम' सतगुरू महिमां महान।
यहां धरति पानी आदि नष्वर जान तूं, कौन लिखे किस से लिखी जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कोई सत्यपुरूष प्यारा ही जान पाये।।

2037 कल पर मत कुछ छोड़िये, कल तो नाम है काल का।
आज नहीं इसी पल करो, यह पल साहिब सत्यपुरूष का।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जो कुछ छोड़ा कल पर वह सब काल का।।

2038 पल्ले खर्च मत बांध प्यारे, जो देवे उसी का जान कर पाये।
'वे नाम' ता के पीछे फिरे, फिरे कैसे दुख पाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द पाने से बात बन जाये।।

2039 चाह गई चिंता गई, मन माया का टूटा बाण।
वे ही उस का हो गया, जिस की सुरति चेतन ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द की महिमां जान।।

2040 'वे नाम' समान जग सतगुरू परमहंसा नहीं, जिस के दर्शन महान।
तीन लोक की संपदा, सत्यपुरूष सों आई जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, तीन लोक का दान संगत का जान।।

2041 जब तक मिले ना सतगुरू सांचा, तब तक काल संग साथ।
आशा तृष्णा जब ही मिटें, अमृत सब्द दात संग साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' सतगुरू का पा ले साथ।।

2042 सत्यपुरूष प्रेम पुजारी सदा, सब कुछ 'वे नाम' सतगुरू हाथ।
जब मांगे मिलता नहीं, सुरति सूं देख सदा निज साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, साहिबन सुरति बास।।

2043 एक ही हम सब एक ही शरीर, एक ''वे नाम'' सब्द भक्ति के धीर।
दूसरा भाव नहीं है आसा, हमरा प्यारा एक ही पीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सबद ले भवसागर तीर।।

2044 काया में सुरति की धारा, सब घट समाया साहिब प्यारा।
''वे नाम'' सब्द निज सत्यपुरूष की धारा, जा का चार लोक पसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति की धार से पार।।

2045 काशी काबा एक से, ऐको जान रहीम राम।
अमर लोक से हम सब आये, तहां नहीं रहीम राम।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, त्रिलोकि से आगे निरालम्भ राम।।

2046 सत्य युग में मनुष्य ईक्किस हाथ ऊँचे, त्रेता युग मनुष्य चौदहं हाथ।
सत्य जाये बहुत कुछ, जाता जान एक साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से सत्य प्रेम संग साथ।।

2047 कलियुग ''वे नाम'' सब्द, कोई बिरला पाई।
साधु ठग और मस्करा, जग में पावे मान दान बड़ाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मान बड़ाई क्या दे जाई।।

2048 सत्य सब्द कोई प्यारा पावे, विरला ही जाने ''वे नाम'' सब्द महान।
दुनियां अजब दिवानी संतो, मेरी कही एक ना मानी जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष की दात महान।।

2049 देवी देवल जगत में, जीव पूज रहा संग मांग।
निःअक्षर दात महिमां जाने नहीं, हर पल मांग पे मांग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, नर भूला बैठा पूर्ण मोक्ष की मांग।।

2050 ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं जानो, पूरे सतगुरू की महिमां जान।
सार सुरत नाम 'वे नाम' सूं पाओ, हंसा बन सत्यपुरूष की महिमां जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जागे बने हंसा महान।।

2051 सतगुरू वचन पर चलना जानो, प्रेम भाव से सेवा ठानो।
''वे नाम'' सब्द सुरति में ध्याओ, इसी सब्द में सतगुरू जानो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द में दोनों का वासा जानो।।

2052 साहिब गागर में सागर भरें, मूर्ख जानत ना।
देखन में छोटा दिखें, बाण की धार को जानत ना।
यह दात 'वे नाम' जी देते हैं, मूर्ख सुरति की धार जानत ना।।

2053 सो ही भवपार उतारी है, जिन केवट से करी प्रीत।
जब सच्चा 'वे नाम' केवट मिले, गये भव जल जीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, केवट सूं कर सच्ची प्रीत।।

2054 सोई सतगुरू सतनाम सूं, सत्यलोक अमरपुर वास करे।
नहीं कहुं आवे नहीं जावे, 'वे नाम' में सुरति वासा करे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, स्वांस स्वांस में सुरति ध्यान करे।।

2055 जीव दया सुरति में धरे, तजे अभक्ष्य अहार।
साधक दया धरि नाम गहि, उतरे भव जल पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द करावे भव साग़र पार।।

2056 कर्म भर्म सूं न्यारा होई, सतगुरू पद राखे सुरति समोई।
बहु विधि ज्ञान सदगुरू ते पावे, तीन लोक फंदा कट जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणी भव पार ले जाई।।

2057 सत्य नाम है सार अनूपा, प्रेम प्रीति सदगुरू दरस सरूपा।
निश्चय सत्य पर रहै समाई, हर एक सूं प्रीति हंस सरूपा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू साहिबन तदरूपा।।

2058 कहें 'वे नाम' जा के सदगुरू अमरलोक के, जन्म मरन संग छूटे।
धन्य भाग उस नर के, जा के कर्म धर्म सब छूटे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं जग भ्रम मिटे।।

2059 'वे नाम' दाता दुख भंझन, सब की करो सम्भार।
तुम ही केवट बन आये हो, करो भवसागर से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' साध की करें सम्भार।।

2060 'वे नाम' जी हम से बिसरे, लाख और मिल जाहिं।
हम से बहुत तुम्हरे साहिब जी, तुम सम जग कोई नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी तुम सम कोई नाहिं।।

2061 तिल तिल का अपराधी तेरा, कण कण का चोर।
पल पल का दोषी गुनहि तेरा, बख्शो औगुण मोर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' साहिब जी तुम बख़्शनहार।।

2062 'वे नाम' जी अनादि पुरूष कृपा करो, मन माया छूटि जाहिं।
जन्म जन्म का बिछड़ा तुझ से, राखो चरण कमल की छाहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी सब भ्रम मिटाहीं।।

2063 'वे नाम' जी कुपा करो इस दास पर, तुमहि दीना नाथ।
हाथ जोड़ मांगू यही, मम सुरति चेतन तुम्हारे हाथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द अमर चेतना साथ।।

2064 'वे नाम' दीन दयाल जी, आप तक सुरति दोड़।
जैसे हर कण कण इस लोक का, सुझत और ना ठौर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध ही पाये 'वे नाम' सुरति ठौर।।

2065 जो 'वे नाम' शरणी रहे, ताको कुछ करना रहे ना शेष।
चरणों की शरणागति जो पड़े, अब कुछ पाना रहा ना शेष।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू दें सत संदेस।।

2066 जग में वेद शास्त्र और गीता, हर कोई पढ़ता ले जान।
तीन लोक संतुष्ट मन, सुरति चेतन मत ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन चेतना जग भ्रम में जान।।

2067 'वे नाम' कहें गुरू के रूठते, सदगुरू शरणी जाये।
प्यारो सतगुरू डौर पकड़ी रहो, एक दिन निजघर जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणी निजघर ले जाये।।

2068 'वे नाम' पूर्ण जन जन पाया, जन्म जन्म पाप कष्ट बह गये।
धन्य भाग अटल सुरति के, 'वे नाम' धारा में मन मान बह गये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' धारा सुरति जगावे।।

2069 औगुण मेरे 'वे नाम' जी, आप की सुरति में बह गये।
दास जैसा है तेरा है लाल, रखना तुझ पे रह गया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी संग मै मेरी मिट गया।।

2070 सुरति करो इस दास पर, जो पड़ा भव जल माहिं।
आप ही आप में खो जायेंगे, आप ने जो पकड़ी बाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वो साध बड़ा चले जो 'वे नाम' राही।।

2071 सुनो 'वे नाम' जी विनती मेरी, आप ही हो दीन दयाल।
पतित पावन 'वे नाम' जी, मुझ पर राखो नज़र निहाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात पा साध मालामाल।।

2072 मैं मंद बुद्धि मोह वश, मन माया वश पड़ा अन्जान।
'वे नाम' जी मोहे मत बिसरहु, दीन बंधु सतगुरू महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी मिटावें भ्रम अज्ञान।।

2073 किस मुख सुरति से विनती करूं, क्या लाज ना आवत मोहे।
कैसे अपने औगुण तजुं, कैसे किस विध भजुं मैं तोहे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्रद्धा प्रेम से भजुं सतगुरू तोहे।।

2074 'वे नाम' जी ''वे नाम'' सब्द का, मोहे दीजिये सुरति दान।
उसी में सब कुछ पाऊँगी, निस दिन तेरी सेवा भक्ति महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द चेतन सुरति महान।।

2075 मैं था अपराधी जन्म जन्म का, सुरति संग मन विकार।
सतगुरू दाता ''वे नाम'' दात के, मुझे करो भवसागर से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू साध को करे भव पार।।

2076 'वे नाम' जी केवट आप बन आये, भव साग़र पार उतारी।
साधक को आत्म से हंसा करो, हरो मेरी व्याधि सारी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति तारनहारी।।

2077 'वे नाम' सूं मांग यही, मोही प्रेम प्यार ही देहु।
दूर मन माया कीजिये, मोहे नन्हां ही करि लेहु।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति में लेहू।।

2078 शरणागत विश्वास, सत भक्ति का प्रमाण लो जान।
शरणागति अति भक्ति गुण से, निज को पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू तारनहार करो प्रणाम।।

2079 'वे नाम' को सत्य नाम, सूर्य रूप में अंदर साक्षात देख।
आत्म में साहिब ही जाने, निज को हंसा रूप में देख।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति में साहिबन देख।।

2080 अभय ज्ञान आत्म कल्याण, ''वे नाम'' सब्द से ले जान।
वन्दना आरती सूं प्यारो, फल मोक्ष मिलता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू आरती वन्दना से चेतना महान।।

2081 परमपुरूष के परम अचल पद पाओ, 'वे नाम' चरणों में अर्पित होकर।
'वे नाम' सुरति की धार सूं, मोक्ष प्राप्ति भाव से आरती प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्रेमी में साहिबन प्रेम भाव प्यारो।।

2082 सब गुणों का गुण शरणागति, सुरति भाव स्वयं ले जान।
हर अवस्था आप आ जायेगी, समस्त पापों का नाष ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, समर्पण प्रेम में सब पायो जान।।

2083 शरणागति से सब गुण, 'वे नाम' भक्ति से तेहि माहिं समावै।
सकल पाप ता के जरि जावै, जब 'वे नाम' की शरण में आवै।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सुरति सर्वगुण समावै।।

2084 'वे नाम' दात को पाकर, सत्य सेवा भाव का विचार।
सतगुरू चेतन सुरति में सुरति डाल, सत्य असत्य का नहीं विचार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति सत्त आधार।।

2085 बिन विचारे जो गुरू करे, सो पाने पर पछताये।
हर गुरू गुरू–नहीं होता प्यारो, मूल दात कहां से कौ बताये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी ही गुप्त भेद समझायें।।

2086 प्यारो हरि कृपा तब जानिये, ले मानुष रूप अवतार।
'वे नाम' महिमां तब जानिये, ले छुड़ावे तीन लोक काल पसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' शरणी से निजघर द्वार।।

2087 हरि कृपा से बात बने ना, छूटे ना माया जाल संसार।
सतगुरू कृपा से जग पार है, पावे निजघर अमरलोक को छूटे यह संसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे छूटे ना भ्रम जाल संसार।।

2088 सदगुरू भक्ति अति कठिन प्यारो, ज्यों छूटना काल संसार।
बिन ''वे नाम'' दात पहुंचे नहीं, बिन सुरति की धार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' कराये भव सागर पार।।

2089 सदगुरू कृपा करूणा का सागर, हित शुभ से जोड़ता संग।
सुरति से सुमिरन शुभ, सुमिरन छूटने से अशुभ का संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, भीतर कर सब्द सुरति का संग।।

2090 सुमिरत सुरति की रीत प्यारो, मन माया का छूटे संग।
सुरति में रहने से आत्म चेतन प्यारो, भीतर सुरति निरति का संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति निरति के मेल से हंसा साहिबन संग।।

2091 तीन लोक मन सतावै, ब्रह्म विष्णु पार ना पावैं भेद काया।
सत्यपुरूष तब 'वे नाम' जगायो, जीव उभारन निःअक्षर दात को पाया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कैसे ''वे नाम'' दात को पाया।।

2092 प्यारो मन मान तजे बिना, सांच जग पाता नाहीं।
सांच प्रेम आनंद सुरति के अंग हैं, मन यह भेद पाता नाहीं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सोये नर में प्यारो मन मान झूठ बिन कुछ नाहिं।।

2093 निजधाम 'वे नाम' सुरति सूं, होत हर पल मेरे प्यारो।
ऐसे सच्च को सुना और जाना, सत्यपुरूष महल सूं उठती सुरति धार प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निज सुरति चेतन की महिमां जान प्यारो।।

2094 प्यारो जो सत्यपुरूष सतलोक रहाई, तीन को सब कोई चीन्हों भाई।
''वे नाम'' सब्द बिन दुखी तीनों देवा, जिन की गण गंधर्व सेवा करें भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' जी सब्द महिमां गुण गाई।।

2095 जग के देव सब निरंकार अधिना, बजे सोई जिन नाम को चीन्हां।
''वे नाम'' सब्द बिन एक ना पारा, तीन लोक में काल जग चीन्हां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, उतरे पार जीव ''वे नाम'' सब्द जाग चीन्हां।।

2096 भव तारण सामर्थ ''वे नाम'' सब्द प्यारा, ताको नांहि पावे संसारा।
छेः योगेश्वर वह गति नहीं पाई, नर नार को कौन सुने संसारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' दात कोई ना उतरे पारा।।

2097 त्रिगुण भक्ति है जग की, परा भक्ति जाने ना कोई।
सर्गुण भक्ति है जग की, परा भक्ति जाने ना कोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द भक्ति हर घर होये।।

2098 कर्म फल यह देहि प्यारो, ''वे नाम'' सब्द बिन छूटे नाहिं।
मन मान ग्रंथि जान आत्म में, बिन पूर्ण सतगुरू दात छूटत नाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' दात बिन पार कोई नाहिं।।

2099 प्यारो भक्ति करो भरमो नांहि, सच्ची भक्ति ले जान।
पूर्ण सतगुरू सूं अमृत दात पाकर, निज की होत पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निअक्षर दात से निज की पहचान।।

2100 कहें 'वे नाम' सुरति से गाये के, सुनो प्यारो मम सुरति ज्ञान।
नीचे त्रिलोकि वास प्यारो, उपर सत्यपुरूष सुरति धाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्य लोक सब हंसों का देश ले जान।।

2101 ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष ही जानो, ''वे नाम'' बिना सब जग झूठ जानो।
निर्गुण सर्गुण ते नाम न्यारा, जो पावे सो साहिबन का प्यारा जानो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' की महिमां जानो।।

2102 'वे नाम' सतगुरू मारा तानि के, सुरति सब्द का बाण।
मन माया का संग जाये, सुरति जगाये सुरति बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति सूं हर पल करो 'वे नाम' चरणन ध्याण।।

2103 जो देता सार नाम सुरत नाम की दात है, उसे ही ''वे नाम'' ले जान।
सत्यपुरूष जिन जानेया, ताहि को सतगुरू मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

2104 अकह नाम ही''वे नाम'' प्यारो, लिखा पढ़ा ना जाई सुरति में रहे समाई।
अकह नाम ''वे नाम'' है सतपुरूष, चेतन सुरति से सुरति चेतन हो जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन ''वे नाम'' सब्द निजघर ना कोई जाई।।

2105 तीन लोक में पूर्ण भक्ति ना, पूर्ण मुक्ति पूर्ण 'वे नाम' सतगुरू पासा।
ये भेद 'वे नाम' सूं जानो, जिन पाई दात सत्यपुरूष पासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, पूर्ण मुक्ति दात जा पासा।।

2106 सत्यपुरूष महिमां लिखी ना जाये, पढ़ी नहीं जाये।
नहीं उपझे नहीं विनशे प्यारो, कोई सत्यपुरूष ''वे नाम'' सा प्यारो पा जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निज को जानी बात बन जाये।।

2107 जिस का पीजिये दूध, तिसको कहिये माये।
उसकी महिमां महान है, उसकी सेवा कोई कोई पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सेवा से मेवा पा जाये।।

2108 ''वे नाम'' बिना कोई पावे नहीं, तीन लोक से उसे पार।
'वे नाम' शरणी आये के, ''वे नाम'' दात सूं पहुंचे निजघर उस पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, बिन सतगुरू कोई होत ना पार।।

2109 मन ही देव सरूपी, आप ही निरंझन उसे जान।
हर जीव हंसा रूप प्यारो, औंकार की कैद में ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निज की कर पहचान।।

2110 गण गंधर्व ऋषि मुणि अरू देवा, सब ही करत औंकार की सेवा।
तीन लोक का आप है दाता, सेवा सों जन्म मरन का मेवा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू सेवा सूं ही मिलता मोक्ष मेवा।।

2111 ब्रह्म जी उत्पति करन को, विष्णु जी पालनहार संसारा।
शिवजी संहार कर्ता, तैतीस करोड़ देवी देव परिवारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सब ही निरंकार परिवारा।।

2112 भजन ध्याण अखंडित सुरति सब्द सूं, जैसे तेल की धार।
सतगुरू को सुरति से दंडवत करो, जानी साहिबन बारम्बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू महिमां अपरम्पार।।

2113 बूझी विचारी सदगुरू कीजिये, करे कर्म काण्ड से न्यारा।
कर्म बंध हरि धुरि है, फांसे विच मंझधारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, पाओ पूर्ण मोक्ष 'वे नाम' द्वारा।।

2114 ज्यों विष त्यों अमृत है, अस्तुति सो निंदा होई।
शत्रु मित्र दोऊ एक हैं, कौन मुर्दा कौन ज़िन्दा होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जहां विष तांहि अमृत प्रकट होई।।

2115 यह संसार झूठ है भाई, आत्म का नाष ना होई।
निजघर को हर जीव है भूला, 'वे नाम' बिन भेद ना जाने कोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कैसे आत्म से हंसा नर होई।।

2116 सुरति सब्द अमृत जड़े, जहां सुरत कमल स्थान।
उल्टि स्वांसा लेत उस देश, जहां सतगुरू स्थान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, उर्दमुखि स्वांसा की महिमां महान।।

2117 ''वे नाम'' सब्द दात आनई, जा पासा सोहि सत्यपुरूष चेरा।
वे गुरू गुरूवों का सिरताज, सत्यपुरूष का सच्चा चेरा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जग में पहचान सत्यपुरूष का प्यारा चेरा।।

2118 सत असत जिनके नहीं, नहीं पाप पुन्य का ताला।
'वे नाम' सब्द दात संग में, जान जीवन मुक्त 'वे नाम' के लाला।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, खोलो चेतन सुरति से सुरति ताला।।

2119 जोग भोग जिनके नहीं, नहीं सुरति के त्यागी।
मन मान एकौ नहीं, सत्य सब्द सूं सुरति लागी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जागे तो चेतन सुरति सूं सुरति लागी।।

2120 जिन्होंने ''वे नाम'' सब्द विचारिया, तिन्हीं तुच्छ जाना संसार।
वे आये पड़े 'वे नाम' सत्संग में, सब डारी दिया सिर भार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, ''वे नाम'' सब्द से डारी दे सिर भार।।

2121 'वे नाम' से मान ना कीजै सजनी, सजनी हठ तजी दीजै।
जो तू सुरति से प्यारे को चाहे प्यारी, ''वे नाम'' सब्द भज लीजै।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति से चेतन सुरति में समाना जान लीजै।।

2122 ''वे नाम'' सब्द 'वे नाम' में आने से, सूरज उगिये नैन खुले भरपूर।
सोये अंधों ने देखा नहीं, उनसे 'वे नाम' अति दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, अंदर की आंख से दिखता नूर।।

2123 जन्म अकारथ 'वे नाम' बिन, भावै दूर या पास स्थान।
जन्म मरन सब औंकार का, काल के वस जान प्राण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति से जोड़ डौर प्राण।।

2124 नाना पंथ जगत, निज निज सुर में गावें।
सच्ची बात एक ना माने, 'वे नाम' कैसे मार्ग लावें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मान कोई एक छोड़ ना पावें।।

2125 हाड मांस की देह हमारी, देख ले मन की प्रीति।
ता सूं आंधि हरि प्रीति, बिन नामें कैसी प्रीति।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन माया छूटें जागे प्रीति।।

2126 प्यारी गांठि दाम ना राखी, नारी सूं कैसा नेह।
संत 'वे नाम' की सुरति हैसी जागी, पूर्ण जग सूं जाग नेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सुरति सूं सुरति का लेह।।

2127 सुख में सुमिरन ना किया, दुख में दुख हर पल याद।
याद मालिक की कौन है करता, दुख ही आता याद।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, कौन करता सतगुरू याद।।

2128 साहिबा हम सब कलियुग भव सागर में, कामी क्रौधी मखा गुरू कहाये।
हर कोई उनकी पूजा करे, काल भवसागर में गोता खाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आशा तृष्णा त्याग साधक निजघर जाये।।

2129 ''वे नाम'' सब्द दात बिन, मूर्ख चारों ओर ले जान।
सब विधि सो होना जान उसे, काल के जाल में हर पल उसे जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, जीव हर पल मन मान में रहता जान।।

2130 सत्य नाम आहार 'वे नाम' का, भक्ति भजन सत्संग साहिबन बन पाया।
मानुष से 'वे नाम' किया, दिया जग जगने का दान ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आज्ञा में रहना काम महान ले जान।।

2131 ''वे नाम'' सब्द बिना नर मूर्ख जान, पापी हो जग काम करे।
हीन बुद्धि नर ले जान, बारम्बार नर्क में दुख देने का काम करे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, आत्म जाने बिना ज्ञानी काम कैसे करें।।

2132 बलिहारी 'वे नाम' आपने, जिन दिया सत्य सब्द का दान।
मानुष से हंसा किया, जब ''वे नाम'' का दिया दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, निज संग निजघर महान ले जान।।

2133 'वे नाम' निर ईच्छा, केवल संगत सेवा का काम करे।
संगत सेवा बिन कैसे जीना, साहिब जी 'वे नाम' कौ विधि करे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, 'वे नाम' का सत्संग अहम संहारे।।

2134 'वे नाम' सत्यपुरूष एकै रूप प्यारो, वे ''वे नाम'' में 'वे नाम' ले जान।
''वे नाम'' सत्यपुरूष सुरति सब्द, 'वे नाम' सतगुरू दासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सतगुरू में सत्यपुरूष महान।।

2135 खेल ब्रह्माण्ड का पिंड में देखो, जो अंदर सो बाहर देखो।
बिन 'वे नाम' ये भेद ना मिलता, सार नाम सुरति सब्द में देखो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, हर एक में आत्म देखो।।

2136 'वे नाम' सदगुरू देत पुकार हैं, सुरति सब्द महान।
आपा खोय निज को पहचाने, तब पहुंचे निजधाम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सत्यपुरूष सुरति सब्द महान।।

2137 प्यारो कुछ करनी करो, हर पल सदगुरू चरणन ध्याण।
दोनों मिल जब एक हों, मिले मोक्ष का दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, सदगुरू महिमां महान।।

2138 हर नर अपराधी जन्म जन्म का, हंसा से आत्म रूप हुआ आप।
'वे नाम' दाता मोक्ष दात का, पार लगावे आप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, दुख भंजन दाता आप।।

2139 चरणन 'वे नाम' सतगुरू के पड़े रहो, सेवा में तन सुरति लगाओ।
वे तो ग़रीब निवाज़ पालनहार हैं, पल में पार लगायें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति सूं सुरति लगाओ।।

2140 ''वे नाम'' सब्द आत्म औषधि्, 'वे नाम' सतगुरू दी बताये।
औषध खाये संग सुरति धरे, वाको वेदन जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम सुरत नाम औषध दी बताये।।

2141 पाप कर्मों में मन मलीन है रहता, सुरति जगना ले जान।
''वे नाम'' सब्द सदगुरू का, आत्म से हंसा कर दीन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति पड़ी मन अधीन।।

2142 'वे नाम' दास सा जग में कोई सेवक नहीं, ''वे नाम'' सूं सुरति जागी जान।
मोक्ष दात देय दाता 'वे नाम', दात पा जग पार करना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू के खेल महान।।

2143 जीवन का सौंप दिया, सब भार 'वे नाम' के हाथों में।
अब जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति धार सतगुरू हाथों में।।

2144 प्यारो ना दुख हाल में मज़ा, ना सुख हाल में मज़ा।
जिस हाल में सतगुरू राखे, उसी हाल में जान मज़ा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागो तो दुख सुख में एक सा मज़ा।

2145 सतगुरू दर्शन कर कर जीवाँ, रहो चरणन माहिं।
इन बिन भव निधि तरई ना कोई, रहो सुरति के माहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध सतगुरू चेतन सुरति समाहिं।।

2146 आत्म से हंसा करे, सत्यलोक से सुरति आई।
आप सत्यपुरूष वासा इस में, जो पाये पार हो जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां कहि ना जाई।।

2147 सतलोक आनंद धाम प्यारो, लोभ मोह आशा तृष्णा संग तंह कहां।
हंसा को पुरूष दरस प्यारो, अमृत फल तहां बिन और कहां।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब ओर अमरपुर वहां झूठ सच कहां।।

क जैसे लागी और से, दिन दिन दूनी प्रीत।
'वे नाम' कबीर ना छाड़िये, भावें हार होये के जीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागे की हार ही में जीत।।

क बिन बादल जहां बिजली चमके, बिना सीप के मोती।
कहैं कबीर सुनो भाई साधु, निरखूं निर्मल ज्योति।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साधु ही निर्मल ज्योति।।

2148 सब्द स्वरूपी नाम साहिबन का, 'वे नाम' नाम दासन का।
वे ही मेरे मात पिता हैं, 'वे हूं' दास साहिबन का।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग का हर जीव हंसा साहिबन का।।

2149 महां शूण्य के ऊपर परम धाम है, 'वे नाम' भेद को पाया।
जो 'वे नाम' कहें कोई कोई माने, 'वे नाम' निजधाम को हो कर आया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' कई कई बार साहिबन दरस पाया।।

2150 ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष ही जानौ, बिन नामे सब झूठ जग जानौ।
निर्गुण सर्गुण से नाम प्यारा, जो पावे तीन लोक पार उसे जानौ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द की महिमां जानौ।।

2151 मन चले चारों ओर प्यारो, इस के पांव अनेक।
मन ओर पच्चीस प्रकृत्तियां, इनके पांव अनेक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द काटे मन प्रकृत्तियां अनेक।।

2152 'वे नाम' सेवक प्रमार्थी, शीतल सुरति स्वांसा सब्द प्रवेश।
तपन बुझावे मन मान की, सुरति सब्द संग निज घर प्रवेश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इस पल में पावे निज देश।।

2153 पारस सुरति 'वे नाम' के पासा, जा में विशेष शक्ति ऊर्जा ले जान।
ध्यान हंस आत्मां प्यारो, मन मान आशा तृष्णा से छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ध्यान की महिमां महान ले जान।।

2154 सतगुरू चेतन सुरति से मन मान जाये, केवल हंसा सुरति ही रह जाये।
भौतिक शरीर छूट जाये प्यारो, सुरति से निरति का मेल सार सब्द कराये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति मोक्ष पद दे जाये।।

2155 सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य की सुरति महान ले जान।
चेतन सुरति सुरति मिल एक करे, सुरति एक रूप ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू – सत्यपुरूष एक ले जान।।

2156 सदा प्रेम आनंद उस देश, जहां प्रवेश किया 'वे नाम' सेवादार।
यह चौथा लोक जम पारा, छूटे काल द्वारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरपुर सच्च देश हमारा।।

2157 धरति आकास पवन नहिं पानी, नहीं तहां मोह और माया।
ब्रह्मां विष्णु महेश नहीं उस घर प्यारो, जा घर से जीव है आया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमृत दात वे नाम तहां पाया।।

2158 ज्ञान ध्यान मूल सब्द बिना, जीव जम ले जाई।
मूल सब्द से 'वे नाम', अजर अमर घर ले जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से अजर अमर घर जाई।।

2159 ''वे नाम'' सब्द ही सत्य सब्द प्यारो, अभय लोक ले जाई।
सत्य नाम 'वे नाम' सतगुरू सूं पाई, निज घर संग में जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सब्द से बात बन जाई।।

2160 सत्य नाम पर दृढ़ विश्वास ले आवे, कल और कल का छूटे संग।
बूंद सिंधु में जा समावे, काल का छूटे संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति का प्यारा संग।।

2161 एक बार जो निजघर को जाई, हंसा रूप पा जाई।
काल जाल का संग छूटे, अमर देस का हो जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, घी दूध में कैसे समाई।।

2162 ध्यान करना निज को जानना है प्यारे, यह काम ''वे नाम'' सब्द से होई।
मन हंसा को आत्म कर दीना, प्यारी हंसात्मां मन के वश होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब की आत्म मन वश होई।।

2163 सतगुरू कुम्हार समान प्यारो, शिष्य कुभ ले जान।
पल पल संग सतगुरू का, शिष्य को करे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करे हर शिष्य महान।।

2164 सतगुरू की आध्यात्म किरणें, पल पल सुरति चेतन करे।
निरंझन धर्म छोड़ प्यारे, चले सतपुरूष धर्म की ओर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चले सुरति चेतन सुरति की ओर।।

2165 ''वे नाम'' सब्द पुरूष शक्ति प्यारो, शिष्य में सत्यपुरूष वासा महान।
'वे नाम' पूरे रंगरेज़ प्यारो, मेरी चुनरी रंग दें महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात सम्मान कोई पदार्थ नहीं जान।।

2166 ''वे नाम'' सब्द जा पास प्यारे, मन मान संग साथ गया प्यारो।
काल भी आ माथ नमावे, सब सब्द आधार प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग छुड़ावे ''वे नाम'' आधार प्यारो।।

2167 मन ही निराकार निरंझन जानिऐ, जो देता घौर शब्द झँकार।
ज्याति निरंझन का जग काल पसारा, सिद्ध साधु ना पावत पारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द कोई ना पावत पारा।।

2168 सुरति निरति स्वांसा सब्द के जोड़ते, खुलें सुरत कमान किवाड़।
पल में देखे जगमग जगमग हो रहा, साहिबन दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ले चलें साहिबन दरबार।।

2169 अमर लोक अजर अमर एक लोक प्यारो, तीन लोक भी अंग ले जान।
तीन में निराकार है राजा, सत्यलोक पुरूष विदेहि का लोक ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति संग चढ़ि लो जान।।

2170 ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष सुरति जानौ, ''वे नाम'' बिन सब झूठ ही मानो।
निर्गुण सर्गुण ते ''वे नाम'' न्यारा, सुरति सूं ''वे नाम'' सूं पार ही जानो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जन्म मरन से पार निज जानो।।

क पुष्प वास से पातला, वायु से अति झीन।
पानी से उतावला, दोस्त साहिबन कीन।
यह भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सत्यपुरूष की महिमां महान।।

2171 फूलों की वास से सूक्ष्म, वायु की गति से तीव्र चाल।
पानी से भी झीना, ऐसी परम पुरूष की विहंगम चाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा चले विहंगम चाल।।

2172 सुरति आत्म रूप में प्यारो, हर घट साहिबन ले जान।
''वे नाम'' सब्द की दात से , सुरति निरति मेल से प्रगट ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू की महिमां ले जान।।

2173 सुरति कमल सतगुरू का वासा, सुरति डोर से पासा।
तन छूटा मन छूटा, सुरति सब्द में वासा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वहां पूर्ण 'वे नाम' का वासा।।

ब ना रब्ब में तीर्थां दीठया, ना रोजा नमाजे।
बुल्ले शाह नू मुर्शिद मिल्या, अंदरो रब लखाया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंदर से मालिक (सतपुरूष) ले जान।।

क उधरा वह द्वारा, वाह सतगुरू परिवारा।
चढ़ गई चंग पतंग संग, जयों चांद चकौर निहारा।
सुरति सारे जोर ज्यों खोलत, कुण्झी कुलफ किवारा।
सुरति धाई धंसों ज्यों धारा, पैठि निकसि गई पारा।
आठ अटा की अटारी मझारा, देखा पुरूष न्यारा।
निराकार आकार ना ज्योति, नहीं वहां काल पसारा।
वे साहिब सब संत पुकारा, और पाखंड पसारा।
सतगुरू चीन्ह दीन्ह यह मार्ग, नानक नज़र निहारा।।

2174 जा को सुरति अनुराग़ है, सच्चा साधक सोये।
बिना अनुराग़ ना पावई, मन माया संग होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द अनुराग़ जगाये।।

2175 लम्बा मार्ग दूर घर, मन माया अंदर बाहिर।
कृपा बिन नांहि पाईये, पूर्ण सतगुरू दीदार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन दर्स सूं पार।।

2176 बंदे भज ''वे नाम'' सब्द को, तबहि पावे तूं दीदार।
पाना मानुष जन्म का, प्रलयः में केवल सात ही बार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति साहिबन दरबार।।

2177 ''वे नाम'' सब्द बराबर जग कुछ है नहीं, सुरति से ले इसे तोल।
हीरे मोती की बात तूं मत कर, ''वे नाम'' सब्द का मोल ना तोल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति अनमोल।।

क कबीर मेरा कोई नहीं, हम काहु के नाहीं।
पार पहुंची नाव ज्युं, मिली कै बिछुरी जाहिं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज जाने बिन मुक्ति नाहिं।।

क जा सुख को मुनिवर रटैं, सुर नर करें मिलाप।
सो सुख सहजे पाईया, सतगुरू संगति आप।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू रूप साहिबन आप।।

2178 जाति ना पूछो 'वे नाम' की, पालो ''वे नाम'' सब्द की दात।
बिन मोल की दात है, मान लो सतगुरू की बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू वाणी सत सुरति बात।।

2179 सतपुरूष के घर कौन कमी, सत सुरति आनंद हर ओर जी।
हंसा मन मान सूं पार प्यारो, हंसा प्रेम प्रीति सच्चा रूप जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष आनंद सुरति प्रीत प्रेम जी।।

2180 सुख दुख भी सब परिक्षायें प्यारो, उनसे गुज़र कर कुंदन होना जान।
'सत सब्द' सुरति से बोलें, तन मन पल में छूटा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत सुरति में परम शांत होना जान।।

2181 नर गहै सब्द जब सुरति लाई, पल में काल से लेत छुड़ाई।
आशा तृष्णा का संग ना कोई, ''वे नाम'' सब्द संग हंसा घर जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं निजघर समाई।।

2182 ''वे नाम'' सब्द है सुरति प्रीत, सुरति लेत जगाई।
सब्द सुरति स्वांसा एक कर, सतगुरू संग निजघर जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति संग निजघर जाई।।

2183 सतगुरू ध्यान में, सुरति सब्द में समाती जाती।
साधक सब्द का रूप प्यारो, हंसा रूप महां सुरति बन जाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द प्रेम जोत जगाती।।

2184 सत्यपुरूष सूं सब सीख कर, आये जग में 'वे नाम' सतगुरू बन दास।
ये जग संदेश ना मानि, तो भी करें कार्य 'वे नाम' बन दास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोक्ष दात बांटो बन के दास।।

2185 तीन लोक स्वपन बिन, कुछ और मत तूं जान।
पग पग पे धोखा खा रहा, मन मान का खेल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन मान में फंसा जहान।।

2186 मृत्यु लोक में 'वे नाम' रथ से, सतगुरू कर सारथी हंसा ले जावे पार।
हंसा को रथ में बिठा कर, सतगुरू सुरति करावे मृत्यु लोक पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू शरणी कोई ना पार।।

2187 ''वे नाम'' सब्द में सतगुरू सत्यपुरूष मिलें,सुख दुख सूं कोसों दूर।
मन माया का जाल काट कर, ले चलें साहिबन दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सुरति संग साहिबन सरकार।।

2188 शुभ कर्म हर एक को हैं करने, सार नाम बिन पूर्ण मोक्ष ना जान।
तीन लोक में सुरति वासा ना, अमरलोक ही सुरति लोक महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन लोक निराकार मन वासा जान।।

2189 स्वांसा सब्द सुरति संग, सुश्मिन को सम कर लें।
तन मन को मृतक कर दिया, अर्द और उर्द में स्वांसा सुरति चले।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं स्वांसा सम चले।।

2190 पूर्ण मोक्ष नहीं तीन लोक में, मन माया से धोखा जान।
दर्शन श्रद्धा विश्वास से, मन माया का टूटा बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द में धरो ध्यान।।

अनिल पक्षी

2191 अनिल पक्षी का जीवन प्यारो, चेतन सुरति का काम न्यारा रे।
अनिल पक्षी की गति न्यारी, हर पक्षी से न्यारा रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अनिल पक्षी सब जीवों से न्यारा रे।

2192 सारा जीवन वह रहे आकाश, हर पल पवन की आशा रे।
दृष्टि भाव संभोग प्यारो, यहि विधि गर्भवति माता रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संकल्प से जीवन संचार रे।।

2193 निर्मल पवन सुरति पक्षी की प्यारो, धरती की ओर चले अण्डा।
मार्ग मांहि पुष्ट हो अण्डा, मार्ग माहिं बिहर भा खण्डा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भाव निर्मल तो निर्मल पिण्ड ब्रह्मडा।।

2194 मार्ग मांहि चक्षु तिन पावा, मार्ग मांहि पंख पर भावा।
महि ढिग आवा सुधि भई ताहि, इहां मोर आश्रय नहीं पावा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू जग भटका खावा।।

2195 सुरति सम्हार चले पुनिः तहंवा, मात पिता को आश्रय जहा वे।
अनिल पक्षी तेहि लेन ना आवे, उलट चीन्ह निज घर ही सिधावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सूं निजघर जावे।।

2196 अनिल पंछी सुरति धारा में प्यारो, रह कर करता सब काम।
हर पल रहता आकाश में प्यारो, बादलों से ऊपर रह करे सब काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति करे हर काम।।

2197 पवन में रहता सोता प्यारो, दृष्टि भाव गर्भ धारता जान।
अण्ड भी पवन के संग प्यारो, मार्ग में फूटता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति से हर प्राणी चेतन होत जान।।

2198 तन पाता आंखें पर इक साथ, सुरति से उपर को उड़ता जान।
मात पिता मिलन की सुरति, तीव्र चेतना जगाती ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति आत्म को हंसा बनाती ले जान।।

2199 मात पिता भी सुरति सूं प्यारो, पल में बच्चे को लेते पहचान।
यह काम सुरति सूं होता प्यारो, चक्षु करते काम ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा चेतन सुरति ही सबै कार्य कर्ता ले जान।।

2200 अनिल पंछी सा पंछी ना जग में, सुरति में रहता जीव ले जान।
यह विधि जो नर चेते साहिबन को, छूटे काल सतलोक वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्दे सुरति जग में फंसी ले जान।।

2201 जो सुरति पूर्ण से प्यारो, करता सतगुरू का ध्याण।
विदेह नाम को पाकर प्यारो, आज्ञा में रहता पल पल ले जान।
विदेह नाम ही वे नाम प्यारो, मुक्ति का पाता दान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मुक्ति का पाता दान।।

2202 ''वे नाम'' सब्द दात मिली, मन माया का छूटा संग।
सतगुरू चेतन सुरति सूं सुरति चेतन होई, सुरति सब्द जब संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया सूं पार सुरति का संग।।

2203 बहु पक्षी जग मांहि रहावें, अनिल पक्षी सम नहीं कहावें।
अनिल पक्षी जस पंछी ना जग में, अस बिरले जीव नाम कहावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिरला जीव अनिल पक्षी कहावे।।

2204 शब्द सब्द में अति भेद प्यारो, सच्चा सब्द विदेही रे।
यह सब्द तो गुप्त प्यारो, जाने विरला कोई सतगुरू प्यारा रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द भेदी सत्यपुरूष प्यारो रे।।

2205 कहें 'वे नाम' जहां सब्द ना प्यारो, दृघ जीवन सो जीवे रे।
अजरपुरूष एको अमरलोक में प्यारो, सोहि सच्चा पिता हमारे रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब हंसो के पिता साहिबन मूल हमारे रे।।

2206 नाम स्नेहि कोई बिरला जग में, नाम जपे सुरति स्वांसा की धारा रे।
धुन में ध्यान लग रहे प्यारो, विश्वास से पावे पारा रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम स्नेही भव पारा रे।।

2207 सतगुरू सब्द सहाये हंसा प्यारे, सतगुरू सब्द सहाई रे।
संग सब्द के तन रोग ना व्यावे, काम क्रौध मिट जाई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द भव पार कराई रे।।

2208 इस संसार में बगुलों की कतारें प्यारो, हंसों का कौन गुण गावे रे।
कहें 'वे नाम' छूटे यम बंधन प्यारो, पाप ताप मिट जाई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वे नाम संगति जन्म मरन मिटाई रे।।

2209 यह विधि जो जीव चले जग मांहि प्यारो, मिटि काल सतलोक सिधाई।
जीव चले अनिल पक्षी के मांहि, सतगुरू दात सूं पार हंसा जाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' दात हंसा भवपार कराई रे।।

2210 जो सुरति संग ध्यान सतगुरू का, आज्ञा सदगुरू की पल पल निखरे रे।
मुक्ति सब्द की दात सूं प्यारो, संग चले निजधाम रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब सतगुरू ले चले हंसा धाम रे।।

2211 ''वे नाम'' दात के अमृत मोती, साहिब बिखेरें सुरति की गली।
ले लो रे भाई ले लो रे, ''वे नाम'' सब्द की लहर चली।
यही बड़ाई सब्द की प्यारो, सुरति को संग ले निज घर को चली।
बिन ''वे नाम'' सब्द कोई जाग ना पावे, हर ओर काल की पुकार पे पुकार चली।।

अनिल पक्षी

अनिल पक्षी इस धरा पर अत्यंत दुर्लभ विलक्ष्ण प्राणी है तथा मानव के लिये अत्यंत प्रेरणादायक प्राणी है। दुर्लभ गुणों से युक्त यह विलक्ष्ण पक्षी अपना सम्पूर्ण जीवन सदूर गगन की ऊंचाईयों में विचरते विचरते ही व्यतीत कर देता है। गगन की ऊंचाईयों में ही यह उत्पन्न होता, वहीं जीता और अंततः वहीं पर ही अपने प्राण त्याग देता है, यह दुर्लभ परिस्थितियों में ही कभी कभार धरती पर प्रकट होता है, अधिकांश्ता अनिल पक्षी तो गगन की गहरी ऊंचाईयों में ही सारा जीवन व्यतीत करते हैं। इसी कारण इस पक्षी का वर्णन ग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों में बहुत कम ना के बराबर ही मिलता है। इस संसार में सब से तीव्र दृष्टि् गिद्ध पक्षी की होती है जो 80 योजन कौस तक देखने की क्षमता रखती है परन्तु अनिल पक्षी 160 योजन कौस तक देख लेता है।

यह असाधारण अदभुत गुणों से युक्त प्राणी मन माया से ग्रसित संसार से दूर होने के कारण मन तरंगो के प्रभाव से मुक्त चेतन सुरति में ही अपना जीवन व्यतीत करता है। इस प्रजाति के सभी पक्षी नील गगन में सदा गमन करते हुऐ झुण्डों में उड़ते और विचरण करते हैं। इस प्रजाति का एक महत्वपूर्ण गुण इनकी संरचना प्रजनन प्रक्रिया है जैसे : अनिल पक्षी नर–मादा गगन में विचरण करते हुए वातावरण से ही पौषक तत्वों और जल को ग्रहण कर लेते हैं और उसी की ही ऊर्जा से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इन गहरी ऊंचाईयों में उड़ते उड़ते ही ये नर–मादा बिना एक दूसरे को स्पर्श किये मात्र एक दूसरे में प्रेम भाव से युक्त दृष्टि् ही डाल कर मादा गर्भ धारण कर लेती है। इस निराले व विचित्र संयोग उपरांत मादा पक्षी गगन में विचरते विचरते ही अण्डे दे देती है जो तीव्र गति से धरती की ओर गिरने लगते हैं। अत्यंत वेग से नीचे गिरने के कारण इन पक्षियों के अण्डे वातावरण की गर्माहट के कारण फूटना प्रारम्भ हो जाते हैं और देखते ही देखते इनमें से नन्हें जीवे वातावरण में फड़फड़ाने लगते हैं। अण्डों के फूटते ही चंद ही पलों में इन के पर निकल आते हैं, सृष्टि् के इस अदभुत कृत को देखें कि कैसे ये नन्हें जीव अपने मूल सुरति के खिचाव के कारण पुनः उपर की ओर उड़ना प्रारम्भ करते हैं और सैंकड़ों मील लम्बे सफर को तय करके अपने मां बाप से जा मिलते हैं। सुरतिवान होने के कारण ये जीव मन माया से परे रिश्ते नातों और गृह (घौंसलों) के बंधनों में नहीं बंधते।

ठीक इसी प्रकार मानव भी तो जन्म जात सुरतीवान ही होता है परन्तु संसारिक बंधनों के महांपाष के कारण वह मन तरंगों से बच नहीं पाता है और अपने मूल गणतव्य को भूल कर माया में ही उलझ कर रह जाता है। सुरतिवान होने पर भी अनिल पक्षी और जीवात्मां संसार के बंधनों से मुक्त होकर पूर्ण मोक्ष को प्राप्त नहीं कर पाते। बिन सम्पूर्ण संत सतगुरू की शरण में जाये और सार नाम की दात को पाये जीव कभी भी मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकता। विदेह दात ''वे नाम'' सब्द में साहिब सत्यपुरूष जी और सुरति का वास होता है। इस दात को सुरति से सिमरते ही जीव चेतन सुरति को प्राप्त होकर मोक्ष की ओर अग्रसर हो जाता है अर्थात बिन सतगुरू सब्द कोई नहीं भव पार हो सकता।

2212 ''वे नाम'' सब्द ना मानहि मूर्ख प्यारो, सुरति सूं ना सुने विचार।
सब्द का खोजी बना नाहिं, सौ कैसे पावे साहिबन दरबार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सूं पाओ साहिबन दरबार।।

2213 परमात्म तत्व अवर्णिय प्यारो, सब्द सुरति से होत पहचान।
गुप्त भयो है संग सभी के, उसी की कर पहचान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सच्चे सतगुरू की करो पहचान।।

2214 कारण तन हर एक में अंश प्यारो, बैठे कहीं जाते कहीं ये सुरति का काम।
मन कहीं भी ले जाता प्यारो, दूर के विचार स्थान पाने का करता काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, योग साधना का सब काम।।

2215 चार प्रकार की मुक्तियां प्यारो, सामिप्य सालोक्य सोशिप्य सायुज्म महान।
इन में पूर्ण मोक्ष ना प्यारो, कर्मों के क्षीण होने पर वापिस आना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चार मुक्तियों में आंशिक मन साथ जान।।

2216 चार मुक्तियों का भेद प्यारो, वेद शास्त्रों में आता ले जान।
पूर्ण मुक्ति का भेद प्यारो, अमरलोक का भेद वेदों में मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वेद शास्त्र ना जानें हंसा लोक महान।।

2217 आंखों का आनंद लेने के लिये, सुन्दर दृष्य वस्तु का होना ले जान।
कानों का आनंद पाने के लिये, शब्द का संगीत का होना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ईन्द्रिय भौग के लिये सारा जहान।।

2218 जीव्हा स्वाद लेने के लिये प्यारो, भौजन की ज़रूरत ले जान।
त्वचा मज़ा लेने के लिये प्यारो, स्पर्श की आवश्यकता ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ईन्द्रियों से मन भी परेशान।।

2219 नासिका का मज़ा लेने के लिये प्यारो, सुगंधित पदार्थों का होना ले जान।
पंच ईन्द्रियों को प्यारे, अन्य पदार्थों पर निर्भर ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जगत पदार्थों की भौगी ईन्द्रियां ले जान।।

2220 हर जीव माया वश पड़ा मेरे भाई, हर अंग से बंधनों मर्कट की नाई।
बंदर को बाजीगर बांधयों, आत्म बंधी मन के न्याईं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वार्थों में जीवात्मां भ्रमाई।।

2221 बंदर खुद फंदे में फंसा प्यारो, तोता भी नलनी को पकड़े ले जान।
आत्म को किसी ने ना पकड़ा प्यारो, तन को अपना मान फंसी ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म निजरूप को भूली ले जान।।

2222 सब्द ही 'वे नाम' दात प्यारो, निःअक्षर में सुरति दो पठाई।
निःअक्षर से जब परिचय प्यारो, सतलोक में जा समाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' ने निःअक्षर दात गुण गाई।।

2223 सात द्वीप नव खण्ड में प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू सूं बड़ा ना कोये।
सतपुरूष आप कुछ करे नाहिं, सतगुरू जो करे सो होई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही भव पार लगाई।।

2224 सतगुरू सब्द सुखदायी प्यारो, जैसे भृंग की भूं भूं ध्वणि में स्पंदन जान।
भृंग जब कीट की आवाज सुनाता, संशय आया छूटा क्रिया स्पंदन जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द ही चेतन सुरति स्पंदन जान।।

2225 परिवर्तित भूं भूं से ना हुआ, पूर्ण समर्पित हुआ मत जान।
जब तक समर्पित होत नाहिं, परिवर्तन हो पाना मत जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्रद्धा समर्पण से परिवर्तन होता ले जान।।

2226 कीट का सब्द सुन लेना ही प्यारो, काम महान ले जान।
शब्द सुनाना काम भृंग का, कीट पकड़े तो भृंग बनना ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सब्द करे आप समान।।

2227 कीट कीड़े की प्यारो, उड़ने की क्षमता मत ले जान।
जब शब्द की दात मिले, उड़ना काम करे महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बृहंगा सब्द करे कीट बृहंगा समान।।

2228 घूं घूं की आवाज़ प्यारो, बड़ी तीव्र ध्वणि ले जान।
सतगुरू भवसागर से प्यारो, दें ''वे नाम'' सब्द करावें पार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द ही मोक्षदायी तूं जान।।

2229 कोई कीट पहली आवाज़, कोई दूसरी और कोई तीसरी सुरति जगाती जान।
जो तीसरी आवाज़ ना पकड़ सके, कीट का कीट ही रहता जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति आत्म हंसा करती जान।।

2230 सुरति दात से पहले प्यारो, हर हंसा काल पुरूष अधीन।
तीन लोक काल पसारा, कर्म धर्म मन अधीन।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्द सुरति नर मन अधीन।।

2231 सहज भक्ति ही सच्ची भक्ति जगत में, भृंग मता इसे ले जान।
मन वाणी से पार सब्द, सुरति निरति का खेल महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सहज सतभक्ति महान।।

2232 सतगुरू के दर्शन करने को जाईये, दिन में कई कई बार।
स्वाति बूंद की धार भी, करे हर ओर उपकार ही उपकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति चेतन सुरति धार।।

2233 'वे नाम' खड़ा तीन लोक में, बिखेरे सुरति की धार पे धार।
नांहि किसी से दोस्ती, नां ही किसी सूं वैर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो ''वे नाम'' सब्द धारे वो पार।।

2234 सब हंसा साहिबन प्यारे हैं, भूले बैठे निज का देस।
किस को पकड़ो किसे छोड़ो, जाना है निज के देस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग नर भूला निज देस।।

2235 सार सब्द सुरत सब्द ना जानिया, जा में वासा साहिबन महान।
निरंकार का बाण खा कर, हंसा की मन मान हाथ कमान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति तोड़े मन मान कमाण।।

2236 ''वे नाम'' सब्द देता, नया जन्म है मिलता प्यारो।
झूठ छल कपट का संग गया प्यारो, सुरति का संग मन सूं छूटा प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति नव जीवन प्यारो।।

2237 जग में आने के भेद को प्यारो, मन मान से बने ना काम।
चेतन सुरति सूं सुरति को प्यारो, पल पल चेतन करने का काम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागो तो बनें सब काम।।

2238 सच्ची भक्ति भूला जगत, करता मन माया का सब ध्यान।
बांझ हिलावे पालना, मन मान का चलाया बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति बाण की महिमां महान।।

2239 जग में अपना कोई नहीं, काया का कोई अंग ना जोड़े संग।
जग का सब ही जाता, तन नारी भी छोड़े संग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार सुरति का कर ले संग।।

2240 एक बूंद के कारणे, जग में हा हा कार।
अनेक बूंद खाली गयो, कोई ना करे पुकार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोह का बंधन करे पुकार।।

2241 विराग तेल बाती बने, बिन दिया जोत जग जाये।
निःअक्षर दात सुरति में समा कर, स्वांसा पार कराये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति धारा अष्टम चक्र से पार कराये।।

2242 'वे नाम' सृजेता बना ''सार सब्द–सुरत सब्द'' निज अंश।
परम सृजेता के रूप, जिन दिया परम सुरति का अंश।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निरति साहिबन अंश।।

2243 मनवा गर्व ना कीजिये, क्या राजा क्या रंक।
मृत्यु भूमि पर आ लिटायेगी, हर अंग का छूटे संग क्या राजा क्या रंक।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, खाक के तकिया ओ बिछोने का संग।।

2244 जीवत मरना ही भला, जो मरे जाने सोये।
मरनी पहले जो मरे, अजर अमर सो होये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा ही अमर होये।।

2245 मन माया ही निरंकार, निरंजन जानिये प्यारो।
आत्म पल पल भरमाई रहे, मानो 'वे नाम' की बात प्यारो।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जग जीव जगाये प्यारो।।

अल्प मुक्ति से पार मौक्ष द्वार

2246 सार सुरत सब्द ही सच्चे सब्द प्यारो, 'वे नाम' सूं पालो सच्ची दात।
'सतपुरूष' 'वे नाम' की सुरति में डाला, पूर्ण मोक्ष अनमोल दात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' जी बांटे मोक्षदायी दात।।

2247 सगुण भक्ति करत संसारा, निर्गुण योगेश्वर आधार।
इन दोनों के पार प्यारो, सच्चा देश हमार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ले चलें हंसा द्वार।।

2248 सतगुरू को पाने पर मिलती, पूर्ण मोक्ष की दात।
मनाने रूठने का अंग मन प्यारो, ''वे नाम'' दात सूं बनती बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरण आने से बनती बात।।

2249 सतगुरू गूंगे बांवरे, पल पल कर लो उनका साथ।
'वे नाम' सतगुरू जग के दासा, कर ''वे नाम'' सब्द का साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति संग जोड़ें साथ।।

2250 ध्यान तो सतगुरू नाम में, अक्षर को ना चितवे दास।
सुरति स्वांसा हर पल ''वे नाम'' सब्द में, छूटे मन माया की फांस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर अक्षर जानो मन माया फांस।।

2251 'वे नाम' आये जगाने संसार को, पल्ले खर्च क्या बांधना।
सत्यपुरूष हर पल संग में, फिर किस को क्या है बांधना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोये नर को क्या बांधना।।

2252 'वे नाम' समान जग कोई है नहीं, सुरति धारा में जब विश्वास।
''वे नाम'' सब्द सुरति सूं प्यारो, जगायें भक्ति प्यास।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्द जीव की बुझे ना प्यास।।

2253 जग नर संग कंई युगों से, संग तमन्ना और हवस।
''वे नाम'' सब्द का ठिकाना कहां, जब अंग अंग में तृंग हवस।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नर की मिटे ना विषय भौग की हवस।।

2254 चाह तमन्ना हवस का द्वार बंद कर, कुछ उठे ना मांग।
सतगुरू पल पल संग साथ हैं, तज दे हर ईक मांग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा ही तजे हर मांग।।

2255 तन मन सतगुरू को सौंप दे, मन भी जान शरीर।
हर पल सुरति का संग रहे, तन मन में चलता सुरति का तीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध का मन सोया सुरति तीर।।

2256 अंधे फूल फल पत्ते और डाल, अंधे का आय में है सब माल।
कैसे जानेगा सच्चा सौदा, अंध चले अंधे की चाल।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सोया नर ना जाने जीवन अनमोल।।

2257 स्त्री को सुन्दर रूप दिया भगवन ने, नर का इसमें योग ले जान।
सागर मोतियों से सोना खानों से, स्त्री को सुन्दर रूप देत महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भगवान की हर रचना अति महान।।

2258 हर मूरत में रंग आप भरता, पांच तत्व का संग महान।
इन ही की पहचान से प्यारे, हर तन छूटे बने महान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच तत्व जीव काया महान।।

2259 सच्ची भक्ति की सीढ़ी, सत्यपुरूष भक्ति ले जान।
महां निर्वाण मोक्ष को पावे, जन्म मरन से मुक्त सदा के लिये जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष भक्ति सर्वश्रेष्ठ तूं जान।।

2260 सुन्न गगन से शब्द उठत है, वह सब्द बोला सुना जावे।
निःसब्द ही सच्चा सब्द प्यारो, ना लिखा पड़ा ना सुना जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःसब्द ही चेतन सुरति जगावे।।

2261 ऋषि मुणि सिद्ध साधक योगेश्वर, पांच शब्द में अटके ले जान।
जोति निरंझन औंकार, सोहं सत्त ररंकार ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच शब्द भक्ति काल में वासा ले जान।।

2262 चाचरी भूचरी अगोचरी उनमुणि, खेचरी में ध्यान की महिमां जान।
स्वर्ग सुन्न और महांसुन्न में, महां ध्यानी का वासा ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पांच मुद्रायें निरंकार भक्ति ले जान।।

2263 तीन लोक संग छूटे ना, काल का चक्र भंयकर जान।
सच्ची भक्ति पूर्ण निर्वाण, पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' सूं जान।
सत्यपुरूष के अंश हम हंसा, अमरलोक की महिमां महान।।

2264 परा भक्ति सहज मार्ग, सच्ची भक्ति की महिमां महान।
अमरलोक निजघर हमारा, जहां रहता सच्चा पति महान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू जग आत्माओं का पीव महान।।

2265 सतपुरूष सुरति से अमरलोक पहुंचे, कबीर मीरा नानक रे दास महान।
'वे नाम' संग बहुते गये, और भी जाने को तैयार ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आओ चलें 'वे नाम' जी संग अमरपुर धाम।।

2266 पांच तत्व का देश वह नांहि, नां वहां निरंकार आध शक्ति महान।
जन्म मरन का चक्र तहां ना, सत्यपुरूष का संग मिले महान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आनंद सुरति का हंसा देस महान।।

2267 सूर्य चांद तारे तहां ना, ना वहां वेद विचार।
हर हंसा सुरति में रहता, दुख सुख से सब पार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर थां चेतन सुरति पसार।।

2268 सुरति का तहां खेल सब सारा, मन सूं लेन ना देन।
सतपुरूष की आज्ञा में रहते, तहां प्राण का ना हो पहचान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परम हंसों का सुरति भेद महान।।

2269 योग मत में प्यारो, काया की महिमां नामों की कुण्झी से जान।
पांच तत्व से तन बना, पांच मुद्राओं की महिमां महान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द प्रेम प्रीत की खान।।

2270 चाचरी भूचरी अगोचरी, अनमुणि खेचरी पांच मुद्रायें ले जान।
पांच शब्द चाबियां प्यारो, पांच तालों को खोलना ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच मुद्राओं की कुण्झी 'वे नाम' सूं लो जान।।

2271 पांचों शब्द लिखने पढ़ने में आवें, पांच तत्वों से तन बना ले जान।
पंच तत्वों से रचियो त्रिलाकि, निजधाम बिन तत्व ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच तत्व बिन सतलोक तूं जान।।

2272 अनहद धुणों की महिमां प्यारो, परमात्मां रूप ले जान।
मन माया के जोड़ से प्यारो, धुणों का उठना ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुश्मिना उपर अनहद धुनों की खान।।

2273 योग मत्त में करनी, कमाई की महिमां महान।
सुरति शब्द का अभ्यास, शब्द मुख से बोलना ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत सब्द काया से परे ले जान।।

2274 गुरू का काम कुछ है नांहि, पांच चक्र पांच शब्द अभियास बिन कुछ नांहि।
दसवें द्वार तक सीमा बद्ध प्यारो, ग्यारहवें द्वार का भेद कुछ नांहि।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ग्याहरवें द्वार प्रवेश बिन चेतन सुरति नाहिं।।

2275 कमाई अनुसार सब चक्र प्यारो, फल खत्म होने पर जन्म लेने बिन कुछ नाहिं।
वेद शास्त्रों अनुसार सब हो रहा, बिन आत्म ज्ञान कुछ नाहिं।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्म फल बिन जग कुछ नाहिं।।

2276 वेद शास्त्र बैसाखियां औंकार की, उनको साक्षी मान होत ना पार।
ऋद्धि सिद्धि और दिव्य शक्तियों की प्राप्ति, आत्म हंसा ज्ञान बिन नांहि पार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ऋद्धि सिद्धि दिव्य शक्तियों से नाहिं मन पार।।

2277 अन्दर की भक्ति प्यारो, काल पुरूष के अधीन।
पांच शब्द और पांचों मुद्रा, सभी काल अधीन।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच शब्द भक्ति जानो मन अधीन।।

2278 काया नाम सभी गुण गावें, विदेह नाम की महिमां महान।
विदेह नाम साहिबन वासा, जो पावे वो बने महान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विदेह नाम की महिमां ले तूं जान।।

2279 जिस ने स्वयं मृत्यु से छुटकारा पाया नहीं, विदेह नाम की दात जाने नाहिं।
मुक्ति भेद 'वे नाम' सूं प्यारो, जन्म मरन की बात कुछ नाहिं।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन ''वे नाम'' सब्द सम्पूर्ण मुक्ति नाहिं।।

2280 मुक्ति भेद सुनो सुरति सूं, संसार ना जाने भेद।
बहु आनंद उस देश प्यारो, दस मूंह से नांहि भेद।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दशानंद कबहु ना पायो मुक्ति भेद।।

2281 पांच शब्द और पांचों मुद्रा, मन का खेल महान।
उसके आगे सतपुरूष प्यारे, जान सतलोक देस महान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, त्रिलोकि से पार हंसा लोक महान।।

2282 सुरति योग का भेद 'वे नाम' से, सुरति सब्द से लेन ना देन कोई।
यह सब पायेगा सोई, जा का सतगुरू 'वे नाम' सम होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से भव पार होई।।

2283 सतगुरू दर्शन को जाईये, दिन में कंई कंई बार।
आसूय का मेह ज्यों, बहुत करे उपकार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दरस अपरम्पार।।

2284 आसूया के मेह में प्यारो, स्वाति की मिलती बूंद।
सीपी के पेट में प्यारो, मोती बन जावे बूंद।
वही बूंद जब बांस में पड़ती, बंस लोचन बनाती बूंद।
जब वह बूंद पत्थर पर पड़ती, पारा बनाती बूंद।
जब वह बूंद हाथी के कान में पड़ती, गज मुक्ता बनाती बूंद।
जब केले के पात पर पड़ती, कपूर बनाती बूंद।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्म को हंसा करती ''वे नाम'' सब्द की बूंद।।

2285 सत्संग में आस्था का वास प्यारो, करे स्वीकार अंतःकरण सुरति धार।
सत्संग सुनो सुरति सूं प्यारो, सतगुरू की परख करे सुरति की धार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द सुरति अनमोल मुक्ति धार।।

2286 शीष उतारें भुईं धरें प्यारो, ता पर रखे पाओं।
कहें साहिब संसार को, ''वे नाम'' सब्द को पाओ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द पा मोक्ष पाओ।।

2287 सहज सब्द से सहज होना, सहज में जा समाना।
मान औंकार सूक्ष्म माया तजी ना जाये, प्रेम धैर्य स्वभाव शील सहज समाना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहज सब्द में सहज सतपुरूष समाना।।

संत मत्त की महिमां

2288 तन मन विचार विष समान प्यारो, ''वे नाम'' सब्द अमृत की खान।
विश्वास भरोसा कर सतगुरू सूं पायें, हर ओर सुख ही सुख ले जान।

ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द प्रेम प्रीत की खान।।

त वंदऊँ सत्तगुरू पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महां मोह तमपुँझ, जासु वचन रवि कर निकर।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति धार।।

जग में सतगुरू कृपा के सिंधु हैं, मनुष्य के रूप में सतपुरूष हैं, मोह का घौर अंधकार विनाष करने के लिये, जिनके वचन सूर्य किरणों के समूह के समान है, उन सतगुरू देव के चरण कमल की में वंदना करता हूं :—

स कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
सतगुरू संगति करो, पूर्ण मोक्ष का फल दीन।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संगति छुड़ावे मन मान।। (संत वाणी)

2289 जैसे बीज तूं बो रहा प्यारे, वैसे फूल उगात।
जब बीज ही फैंका मोत का प्यारे, फिर फूल भी मोत का पात।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से बनती बात।।

2290 ''वे नाम'' सब्द सार है प्यारो, 'वे नाम' की सच्ची वडियाई।
छेः सौ साल बीतने पर, 'वे नाम' सतगुरू ''वे नाम'' दात पाई ।
बिन सब्द निजधाम ना कोई, यत्न से कोई काज ना होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द हंसा कर निजघर ले जाई।।

2291 दूध में माखन एक समान प्यारो, ऐसे निरंकार सत्पुरूष जीव में।
बिन सतगुरू भेद मिले ना कोई, जीव की सुरति में सत्यपुरूष ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार त्रिलोकि सतलोक भीतर बूंद समान।।

2292 विदेह नाम ही ''वे नाम'' सब्द, निजधाम से आया जान।
शीष से सवा हाथ उपर प्यारो, ध्यान करना ले जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल मोक्ष द्वार ले जान।।

2293 अक्का नाम ''वे नाम'' सब्द प्यारो, जो है सब्द विदेह।
लिखा ना जाये पढ़ा ना जाये, सुना और सुनाया ना जाये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर दात ''वे नाम'' सब्द प्यारे।।

2294 सहज मत्त में प्यारो, आत्म का ''वे नाम'' सब्द से काम।
पांच शब्द योग मत में, उनसे नहीं कोई काम।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पंच शब्द से स्वर्ग ''वे नाम'' सब्द सूं निजधाम।।

2295 आत्मां निज में परिपूर्ण प्यारो, सतगुरू कृपा सूं सब काम।
सतमार्ग भृंग मत्ता प्यारो, सुरति को चेतन करना सच्चा काम।
सतगुरू सतपुरूष का जीवत ''वे नाम'' सब्द, करे आत्म जगाने का काम।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द मोक्षदायी सुरति नाम।।

2296 संत मत्त की महिमां न्यारी, करे ग्यारहवें द्वार की बात।
सुरति में जा का वासा प्यारे, अमरलोक पाने की बात।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संतन धारा ''वे नाम'' सब्द की दात।।

2297 ''वे नाम'' सब्द अमरलोक ले जाता, सतगुरू कृपा से सब काम।
आवागमण से मुक्त प्यारो, हंसा रूप पाने से अमर होने का काम।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में हंसा लोक निजधाम।।

2298 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा प्यारो, निज अनुभवों की करते बात।
किसी के लिखे की बात नाहिं, जो देखा उसी की करते बात ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' सुरति वाणी हंसा देस की बात।।

2299 इस मत्त में जीव को प्यारे, चेतन सुरति से हंसा रूप।
ता से आध्यात्मिक शक्तियों से होता, दर्श साहिबन अनूप।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में देखें सतपुरूष अनूप।।

2300 सतगुरू में ध्यान है करना, सुरत कमल संग साथ।
सोलह सूर्य की ज्योति को पाना, दसम द्वार से निजघर साथ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन सतगुरू दर्श ईक साथ।।

2301 ''वे नाम'' सब्द ही विदेह सब्द प्यारो, सत्यपुरूष से आया।
सतपुरूष का वासा जिसमें, सतगुरू में आन समाया।

ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन दर्श पाया।।

2302 सतगुरू में प्यारो, सत्यपुरूष का वासा जान।
साधक संग में तीन, निज संग सतगुरू सत्यपुरूष का वासा जान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साध जाने सतगुरू में समाये सतपुरूष महान।।

2303 सतगुरू वे ही जो दात सत्यपुरूष सूं पावे, पूरा सतगुरू सोई लखावे।
पूरा सतगुरू अमरपुर हो आवे, तभी ''वे नाम'' दात को पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सोई जो गुप्त दात सतपुरूष सूं पावे।।

2304 ईक्कतर पीढ़ी तेरी संग तेरे, तेरी भक्ति का गुणगान करें।
तुम आगे तो वो पीछे हैं, सतगुरू जहाज तुम्हें पार करे।
वे सुरति सूं हर पल संग तेरे, निज संग तीन लोक से पार करें।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही जग का उद्धार करें।।

2305 वेद चारों जानत कहां, अमरपुर का सच्चा भेद रे।
उन में चौथे लोक तक भेद प्यारो, औंकार भगवन दिया ना भेद रे।
यह भेद 'साहिब जी' देते हैं, मन मान से पार सच्चा देस रे।।

2306 सुरति वाको दीजिये प्यारो, जा का मोह माया विषय नाहिं रे।
जो भय लालची कामी प्यारो, मन मान से पार मत जान रे।
यह भेद 'साहिब जी' देते हैं, इक रंग में रहना जान रे।।

2307 निजधाम में मन माया का प्यारो, खेल दिखे नहीं जानो रे।
वहां हंसा रूप में है जाना, परमहंसा कललाता जान रे।
यह भेद 'साहिब जी' देते हैं, निजघर की कर पहचान रे।।

2308 देवी देव तहं ना प्यारो, मन्दिर मस्जिद गि़रजाघर का लेन ना देन रे।
सूर्य चांद तारे तहां ना, हर ओर उजियारा जान रे।
यह भेद 'साहिब जी' देते हैं, सुख दुख से वहां लेन ना देन रे।।

2309 हर हंसा की अपनी पहचान प्यारो, बिन तन मन के ले जान रे।
हर एक रूप पहचाना जाता, प्रेम सत्त आनंद में रहते जान रे।
यह भेद 'साहिब जी' देते हैं, बिन बादल होती वर्षा जान रे।।

2310 वह अमर देस कहलाता प्यारो, पंच तत्व से लेन ना देन रे।
जमने मरने का कुछ भेद तहां ना, अमर आत्म तत्व हंसा जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, काम क्रौध का वहां लेन ना देन रे।।

2311 केले के पात पात में प्यारो, पात भीतर पात ले जान रे।
अमरलोक के भेद में भेद, 'वे नाम' सूं तूं ले जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, अमरपुर की महिमां महान जान रे।।

2312 अमरपुर जे तुझे जाना प्यारो, तन मन से पार होना जान रे।
आप अपना डारी के प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू चरणन में ध्यान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू की महिमां महान रे।।

2313 सतपुरूष सूं ''वे नाम'' दात पाई प्यारो, करि साहिबन भक्ति विवेक रे।
सब्द सुरति निरति त्रिधारा बने प्यारो, आगे महां सागर एक रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, प्रेम सत्त आनंद से हंसा एक रे।।

2314 अमर दात पाने के वास्ते प्यारो, साधक सतगुरू को सर्वस्व देय।
सतगुरू भी ऐसा चाहिये, शिष्य का एक पैसा भी ना लेय।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, चेतन सुरति सतगुरू पल पल देय।।

2315 जैसे हंसात्मां मन चाकर प्यारो, ऐसे साधक सतगुरू को सर्वस्व देय।
जैसे सुरति सतगुरू समाये, तैसे साधक तन मन सतगुरू को देय।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, साधक पल पल में सब लेय।।

2316 प्रतक्षः प्रेम प्रीत प्रार्थना ही प्यारो, पूर्णतः सुरति में लाती जान रे।
समय आप में ही प्रतक्षः प्यारो, प्रेम की पीड़ा पार लगाती जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज संग निजघर ले जाते जान रे।।

2317 शब्द तो मन माया का जोड़ प्यारो, निःसब्द सुरति निरति का जोड़ ले जान रे।
शब्द का संग तीन लोक से प्यारो, निःसब्द से अमरपुर द्वार खुलता ले जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निःसब्द पूर्ण मोक्ष का दान रे।।

2318 सब्द पाना सतगुरू के निकट आना प्यारो, सतपुरूष सूं मिलाप जान रे।
वस्तुतः सतगुरू के निकट आये बिन प्यारो, निज के निकट आया मत जान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निःअक्षर सब्द की महिमां महान रे।।
2319 जो निज के निकट आ गया प्यारो, नया जन्म पा जाता जान रे।
संसार में इसी के लिये प्यारो, लाखों जन्म जग में पाये जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निजघर संग ले लेते जान रे।।

2320 अनंत प्रतीक्षा अनंत को पाने की प्यारो, प्रत्युत्तर का प्रतक्षः सतगुरू से जान।
परम पिता के पथ पर प्यारो, अनंत परीक्षा ही ध्यान से जान।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू प्रतक्षः महान ले जान।।

2321 सतगुरू प्रेम पल पल देता प्यारो, कोई प्यारा हंसा लेने देने वाला महान।
प्रेम देना सब देना प्यारो, स्वंय को खो कर ही सब मिलता जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सुरति चेतन से सब मिलता जान।।

2322 गण गंधर्व ऋषि मुणि प्यारो, ना पायो सुरति का भेद रे।
पीर पैगम्बर कुतुब ओलिया, सभी को मन माया भटकाये रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, मन माया का भेद ना जाना रे।।

2323 परा–भक्ति सर्गुण निर्गुण भक्ति से प्यारो, दूर दूर से भी दूर जान रे।
ये भक्ति की अनन्य सुरति धारा प्यारो, सतपुरूष की भक्ति जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, पारस सुरति 'वे नाम' से ले जान रे।।

2324 'वे नाम' निर्लोभी सत्यवान प्यारो, निर्वासना सारगृहि सर्वज्ञ ले जान।
सुरति को चेतन सुरति से प्यारो, चेतन कर्ता ले जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू 'वे नाम' पल पल जगाता जान रे।।

2325 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, कमाई साधना योग का सब्द मत जान।
ये सब्द सतपुरूष सूं आया प्यारो, इसे पारस सुरति तूं जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निजसंग निजघर ले लेता जान।।

2326 परा–भक्ति में प्यारो, सतगुरू ही केन्द्र ले जान।
सतगुरू सतपुरूष से प्यारो, महां चेतन सुरति ले जान।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू सतपुरूष तदरूप ले जान।।

2327 सतगुरू को पूर्ण मान दीजिये, हर बात उनकी लें मान।
मन मान का संग गया प्यारो, चार लोक के मालिक जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू अमृत दात का देते दान।।

2328 ''सतपुरूष सुरति सब्द'' से प्यारो, ''निरंकार'' प्रकटे ले जान।
''निरंकार'' ने शब्द उच्चारे, जिनसे सारी त्रिलोकि प्रकटी ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निरंकार भक्ति से पूर्ण मोक्ष ना मिले जान।।

2329 शब्द ''सत्त'' से प्यारो, पृथ्वी तत्व उत्पन्न हुआ ले जान।
शब्द ''औंकार'' से प्यारो, जल तत्व उत्पन्न हुआ ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू की महिमां अति महान।।

2330 शब्द ''ज्योति निरंझन'' से प्यारो, अग्नि तत्व हुआ ले जान।
शब्द ''सोहंग'' से प्यारो, वायु तत्व उत्पन्न हुआ ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तीन लोक से पार होना तूं जान।।

2331 शब्द ''ररंकार'' से प्यारो, आकाश तत्व उत्पन्न हुआ ले जान।
इन्हीं पंच तत्वों से प्यारो, भगवन ''मन'' ने तीन लोक रचे ले जान।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, ''निरंझन'' आप आकाश सुन्न में समाया जान।।

2332 नौ द्वारे जगत प्यारो, दसम योगियों का द्वार ले जान।
योग मुद्रा व शब्द ''ओइम'' से प्यारो, सूक्ष्म कोशिकायें खुलती ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सिद्धि और शक्ति का स्त्रोत्र ले जान।।

2333 ऋषि मुणि त्रिदेव भी प्यारो, पंच शब्दों में अटके ले जान।
माता के गर्भ में प्यारो, बारम्बार जन्म लेते ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, त्रिदेव भी आवागमण सूं छूटें मत जान।।

2334 साकार और निराकार भक्ति में भी प्यारो, गुरू का महत्व महान ले जान।
आत्म मुक्ति परा–भक्ति से प्यारो, तीन लोक से पार मोक्ष पाना ले जान।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत्त भक्ति खर अक्षर से पार ले जान।।

2335 भय के कारण सत्त भक्ति छोड़ना प्यारो, डगमगाना मत जान।
ईच्छाओं लोभ मोह मान का त्याग, ''वे नाम'' सब्द से पार ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, ''वे नाम'' सब्द पाने से पार ले जान।।

2336 तीन लोक प्रलयः तर आई प्यारो, हंसा मन मान में अटका जान।
चोथा लोक अमरपुर जान प्यारे, सत्यपुरूष आप ही वह देस ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज देस की कर पहचान।।

2337 मन मान की कैद में आत्म हंसा प्यारो, छूटन का उपाये एक ले जान।
सतगुरू 'वे नाम' सूं दात को पाकर प्यारो, सच्चे घर में जाना जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निजघर की कर तूं पहचान।।

2338 ''वे नाम'' सब्द मन माया का प्यारो, नशा उतार देता जान रे।
सुरति को पल पल चेतन रखता, मन माया का संग छूटा जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, मन मान का बाण चीर चीर होता जान रे।।

2339 सतगुरू आज्ञा मान सब लीजिये प्यारो, सत्त असत्त विचार मत कीजै रे।
'मै' का संग छूट जाता प्यारो, सुरति चेतन से लेते काम रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, मन पर नकेल सुरति का काम रे।।

2340 निराकार निर्गुण ब्रह्म संग प्यारो, पूर्ण ब्रह्म काल रूप ले जान।
हरि खुदा औंकार प्यारे, सभी ने नर को अंधकार में रक्खा जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज की कर तूं पहचान रे।।

2341 अनादि काल से प्यारो, नर निज की नहीं कर रहा पहचान रे।
सतगुरू का कोई भेद ना पावे प्यारो, जन्मों जन्मों से सोया जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, हर नर भटका जान रे।।

2342 सतगुरू कृपा से प्यारो, साधक स्वयं सुरति में सच्चा समर्पण जान रे।
सतगुरू सच्चा पात्र पाकर प्यारो, साधक को सब दे देता जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज की कर तूं पहचान रे।।

2343 तीन लोक प्रलयः तर आई, अमरलोक अमरदेस ले जान।
तीन लोक काल है राजा, अमरलोक सतपुरूष ही जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू सूं गुप्त भेद को जान।।

2344 जग नाशवान अनित्य पदार्थों को प्यारो, भक्ति आस्था का साधन ले जान।
विरोधी ताकतों का जग में प्यारो, बोल बाला ले जान।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, ''वे नाम'' सब्द से निर्विचार होना ले जान।।

2345 खोजी बनने से नहीं प्यारो, खो जाने से सतगुरू मिलता जान।
सत सुरति की धार में प्यारो, निर्विचार निर्विषय सुरति में झांकना जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सुरति चेतन से सत हो जाना जान।।

2346 जिस स्वर्ण पात्र से सुरति निरति ढकी प्यारो, वह हमारा अहंकार ले जान।
''वे नाम'' सब्द से प्यारो, मिटो खो जाओ सुरति चेतन लो जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सुरति निरति चेतन में सत्य को जान।।

2347 मांग रहित खर अक्षर से रहित प्यारो, सतगुरू चरणों में समर्पण ले जान।
प्रबल प्यास जगती प्यारो, संकल्प से उस पार होना ले जान।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, संकल्प से उस पार ले जान।।

क मन ही आहे काल कराला, जीव नचाये करे बेहाला रे।
जीव के संग मन काल रिहाई, अज्ञानी नर जानत नहीं रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, देव निरंझन सकल शरीरा रे।।

2348 आत्म हंसा अज्ञान की परतों में प्यारो, चारों ओर से ढकी जान रे।
आत्म से मन काम लेता प्यारो, कभी चैन से रहने देता मत जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, मन क्रूर ताकत का आवरण आत्म पे जान रे।।

2349 सकल संसार कालपुरूष भक्ति में प्यारो, राम कृष्ण भी गर्भ में आये जान रे।
पांच चारे हर जीव साथ प्यारो, कुटुम्भ जाल में घिरा जान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, जन्म पाया दुख सुख संग साथ रे।।

2350 परमपुरूष सतपुरूष का प्यारो, मन प्राण विस्तार से लेन ना देन रे।
वह केवल हंस आत्मां को प्यारो, इस सृष्टि से मुक्त कराने सतगुरू भेजें रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, अजर पुरूष अजर लोक हंसों का जान रे।।

2351 हरि तन संग रोग भौग उरझाये, सतगुरू 'वे नाम' दात दे पार लगाये रे।
हरि भय कर्म भरम में भरमाये, सतगुरू आत्म रूप लखायो रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू भव सागर पार लगाये रे।।

2552 सतगुरू पूर्ण सुरक्षा प्रदान करते प्यारो, आत्म को चेतन सुरति दे हंसा करते रे।
सतगुरू 'वे नाम' पर तीन लोक वारूं, जिन से पूर्ण मोक्ष दात पाई रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, दात काल सूं आन छुड़ाई रे।।

2553 काल भगवन ही दानव असुर औंकार प्यारो, स्वयं जीवों को दुख दे सताता जान रे।
देवत सुर रूप में आकर प्यारो, ऋषि मुणि तपस्वियों के दुख हरता भी जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, आप ही असुरों का संहारकर्ता जान रे।।

2554 सच्चा सामर्थ सतगुरू जिन पाया प्यारो, उन्हीं में सतपुरूष दिखता रे।
काल सृष्टि में भय संशय आसार प्यारो, स्वयं आत्मां को जीव देख कर सब में समाता रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, साधक सम दृष्टि हो जाता रे।।

2555 घट घट सतपुरूष बसें हैं प्यारो, बिन ''वे नाम'' दात ना दिखें रे।
अनुभव अंदर चेतन सुरति जब होई, आत्म ज्ञान प्रकटे जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतपुरूष की महिमां जानो महान रे।।

2556 सब्द ''वे नाम'' से प्यारो, सुरति जागी मलीन वासना गई त्यागी रे।
स्वांस स्वांस में सब्द सुरति प्यारो, स्वांसा चले ईक धार रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, परम सुरति सूं आत्मां जागे रे।।

2557 योगी यत्ति तपस्वी प्यारो, भिन्न भिन्न मत्त मत्तांतरों में उलझे जान रे।
कर्म धर्म में हर एक प्यारो, स्वर्गों नर्कों में अटका जान रे।

यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, कोई कोई प्यारा ''वे नाम'' सब्द को जाने रे।

2558 हम सब हंसा प्यारो, वासी अमरपुर देस के जानो रे।
महां चेतन सुरति प्यारो, महां ज्योत दीपक अग़म जलता जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, दीपक झरे बिन बाती बिन तेल रे।।

2559 हम हंसा वासी उस देस के प्यारो, जहां परम हंसा ही सच्ची पहचान रे।
सब्द सुरति स्वांसा निरति मिलाप से प्यारो, तन मन मिलता मत जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, बिन सूर्य उजियारा तहं जान रे।।

2560 तहं बिन बादल बिजुरि चमके प्यारो, सूर्य चांद तारों बिन उजियारा जान रे।
बिन सीप मोती बरसें प्यारो, सुर ताल बिन सब्द सुरति धारा जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, कोई पारखी होये तो सुरति भेद जाने रे।।

2561 सत भक्ति सतगुरू के प्यारो, चारों ओर घूमती जान रे।
सतगुरू चेतन सुरति में प्यारो, परमपुरूष 'वे नाम' का गूढ़ रहस्य जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू द्वार सुरतकमल से निजघर जाना जान रे।।

2562 सच्चा लोक अमरलोक पाना प्यारो, पुनः निरंझन लोक में आना मत जान रे।
तहां कोई ईच्छा नाहिं प्यारो, अभिलाषाओं का भी प्रकटना मत ले जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, आस्था से मुक्ति का मार्ग मत जान रे।।

2563 आत्म सतपुरूष रूप प्यारो, निःअक्षर नाम धारण कर सुन्न में सिमरन जान रे।
''वे नाम'' सब्द सुरति में समाया प्यारो, सुरति योग विदेह सब्द जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सब्द पंच तत्व तीन गुणों से करता पार रे।।

2564 सत्य भक्ति में प्यारो, आध्यात्मिक शक्ति सतगुरू सूं मिलती जान रे।
ये शक्ति दृष्टि स्पर्श वाणी श्रवण ध्यान से प्यारो, साधक को मिलती जान रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति से ऊर्जा किरणे जान रे।।

2565 सुरति चेतन सूं देखो प्यारो, सच्चा अमरलोक हंसों का देस रे।
तहां नहीं जप अजपा प्यारो, निःअक्षर महांचेतन धारा का देस रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, 'वे नाम' सतगुरू सा प्यारा वहीं से आया रे।।

2566 सर्वप्रथम परमपुरूष प्यारो, सुरति सूं ईक निःसब्द उच्चारा रे।
ता से अदभुत श्वेत प्रकाश उठा प्यारो, सो प्रकाश अनंत सीमा रहित फैला रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतपुरूष की महिमां जानो महान रे।।

2567 वह प्रकास जग प्रकाश से भिन्न प्यारो, अति अदभुत प्रकासा जान रे।
ता का एक एक कण प्यारो, करोड़ों सूर्यों को लज्जा देता जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतपुरूष परमपिता की महिमां महान रे।।

2568 अमर लौ ही सतलोक बेगमपुर प्यारो, परमपुरूष अविनाषी पुरूष जान रे।
अमरलोक में हंसा का प्रकास प्यारो, सौलहं सूर्य का सा जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, अमरपुर सच्चे देस की महिमां महान रे।।

2569 वहां एक एक रोम का प्रकास प्यारो, करोड़ों सूर्यों को मात देता जान रे।
परमपुरूष की महिमां का प्यारो, ब्खान करना असंभव जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, 'वे नाम' से निजघर की कर पहचान रे।।

2570 परमपिता हमारा एको प्यारो, हम सुंई की नोक से भी छोटे अंश जान रे।
उस पिता की पहचान प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू सूं तूं जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतपुरूष की कर पहचान रे।।

2571 सतपुरूष निःसब्द सूं प्यारो, निरंकार भगवन उपझे जान रे।
सतपुरूष सुरति सूं प्यारो, आद्यशक्ति कन्या उत्पत्ति करि जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, 'वे नाम' सतलोक की देते पहचान रे।।

2572 अष्ट भुजाऐं आद्यशक्ति की प्यारो, बल से युक्त दौ जान रे।
बेटी कह कर पुकारा शक्ति को प्यारो, हंसात्मायें संग सौंप दी जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत्यपुरूष की महिमां अति महान जान रे।।

2573 भेद निरंझन का आद्यशक्ति प्यारो, निरंझन संग मिल तीन लोक विस्तारा जान रे।
सत्य सृष्टि का वितरण संत करि प्यारो, जैसी अमरपुर सृष्टि जान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत्यपुरूष आज्ञा नहीं मानी जान रे।।

2574 शब्द सब्द बहु अंतर प्यारो, ईक खर अक्षर दूजा निःअक्षर जान रे।
खर से तन मन का खेल प्यारो, निःअक्षर से पूर्ण मोक्ष पाना जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तीन लोक से पार होना सच्चा काम रे।।

2575 पवन ना पानी पुरूष ना नारी प्यारो, हद अनहद का खेल तहां ना जान रे।
तीन देव की छाया तहां ना प्यारो, ना ही दस ईन्द्रियों का प्रपंच रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज की कर तूं पहचान रे।।

2576 तन मन का संग तहां ना प्यारो, रोग सोग तहां ना देखा रे।
ऊंच नीच आश्रम वर्ण आदि प्यारो, ना देखे सुने ना जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तहां स्त्री पुरूष वासा मत जान रे।।

2577 नाद बिंद तहां वाणी नहीं प्यारो, तहां सृष्टि चौरासी मत जान रे।
ना पिण्ड ब्रह्मण्ड का विस्तार प्यारो, तहां तीन लोक की कोई बात मत जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तहां हर्ष शौक मत जान रे।।

2578 चल हंसा सतलोक को प्यारे, छोड़ो काल पसारा रे।
ये संसार काल का देशा, तहां यम का क्लेशा मत जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, अमरपुर देस निजघर जान रे।।

2579 सत्य को भ्रमित दृष्टि से देखना प्यारो, भ्रमित विचारों को समाप्त करना जान रे।
तीन प्रकार की भावनाओं से प्यारे, पार होना सत्य की दिशा मिलती जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सुख दुख से तटस्थ होना ही पार जान रे।।

2580 भ्रांति विचारों के समाप्त होने पर प्यारो, विष्मताओं का अंत होना भी जान रे।
अज्ञान ही समस्त दुखों का प्यारो, कारण जग में तूं जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, वहां ना कोई भ्रांति ना अज्ञान जान रे।।

2581 तहां नहीं प्रलयः का खेल प्यारो, बिन मोह माया का देस जान रे।
ज्ञान ध्यान तहां ना लेखा प्यारो, पाप पुण्य तहां ना जान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सुख दुख छाया मत तूं जान रे।।

2582 आत्म हंस पूरी सुरक्षा में प्यारो, तन पिण्ड कष्ट तहां मत जान रे।
वह अदभुत देस प्यारो, उसे सदा अजर अमर जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तहां सदा एक सा मोसम जान रे।।

2583 तहां ना ज्योति निरंझन वासा प्यारो, खर अक्षर तहां ना बोला जान रे।
काम क्रौध मद्य लोभ तहां ना प्यारो, मन माया का वासा वहां मत जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, हर्ष शौक तहां ना जान रे।।

2584 प्रेमी होये सो भेद को जाने प्यारो, सुरति चेतन धार का देस हमारा रे।
अमर बेगमपुर सतलोक प्यारो, सत्य प्रेम आनंद का देस हमारा रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, पूर्ण सुरति का देस हमारा रे।।

2585 दीन दुखी तहां कोई ना प्यारो, तहां ऊच नीच कुल की मर्यादा मत जान रे।
ना हीं धर्म अधर्म तहां प्यारो, ना संयम नियम अचारा रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, ऐसा प्यारा देस हमारा रे।।

2586 जिस चोथे देस की बात करते 'वे नाम' जी, तहां ज्योति प्रकाश का काम ना रे।
वहां एक ही साहिब सतपुरूष प्यारो, सत्य प्रेम आनंद चेतन सुरति जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत्य और झूठ में बड़ो अंतर जान रे।।

2587 झूठ संसार का तहां काम ना प्यारो, अगमदेस में अगमपुरूष का वासा जान रे।
ये संसार सांच झूठ में प्यारो, सांच झूठ का वहां कोई लेन ना देन रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, झूठ कपट का तहां ना कोई काम रे।।

2588 रचना बाहर सच्चा देस प्यारो, तहां हर एक से होत पहचान रे।
कोई ना दिखता गैर तहां प्यारो, सतपुरूष भी आते पहचान में रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, अगमपुरूष का संग जानो महान रे।।

2589 तहां ना ब्रह्म जीव तत्व की छाया प्यारो, तहां कर्म ज्ञान ईन्द्रियां मत जान रे।
मन बुद्धि चित्त से पार प्यारो, हर परमहंसा चेतन सुरतिवान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, वह देस मोह माया से पार रे।।

2590 इस देस में आत्म चाकर प्यारो, यहां आत्मां लुप्त हो गई जान रे।
यहां पर हर कोई प्यारो, इक सुन्दर जीव वस्तु पर अटका जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, यहां पर प्रेम केवल नाम से जान रे।।

2591 यहां हर एक प्रेम का रोगी प्यारो, सच्चे प्रेम की ना की पहचान रे।
काम क्रौध लोभ मोह की आग में प्यारो, सारा संसार जल रहा जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सच्चे देस की ओर भर उड़ान रे।।

2592 तीन लोक में जो कुछ दिखता प्यारो, ईक दिन नष्ट होना जान रे।
तप लोक स्वर्ग लोक का भी प्यारो, मिटना तूं ले जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, कुछ भी ना स्थाई तूं जान रे।।

2593 जब कोई ना रहेगा प्यारो, एक ही हर ओर पुरूष लोक जान रे।
'वे नाम' सा संत प्यारो, खबर सतपुरूष की देता रहेगा जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत की राह बताते जान रे।।

2594 जहां लोभ की धारा प्यारो, तहां मत जान है कोई अपना रे।
हर ओर लूट मार में प्यारो, उस ओर बह जाता जगत सारा रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, जग एक घड़ा ज्युं नीर का फूटा रे।।

2595 सच्चा अपना देस छूटा प्यारो, आ पहुंचे परदेस रे।
विद्वानों की समझ से पार प्यारो, वेद शास्त्रों की सीमा से भी उपर जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, मृत्यु लोक से टूटा नाता जान रे।।

2596 तहां बुद्धि कल्पना की पहुंच ना प्यारो, सुरति चेतन से काम बनता जान रे।
अजर अमर वह देस प्यारो, स्वर्ग नर्क से कोई लेन ना देन रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जान तीन लोक पत्ता जैसे डार से टूटा रे।

2597 चांद सूर्य तारों का आभास भी प्यारो, बिन स्वपन्न और कुछ मत जानो रे।
स्वर्ग नर्क में रहने वाले प्यारो, वह भी स्वपन्न में रहते जानो रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिस अवस्था में जीव रहता वह स्वपन्न तूं जान रे।।

2598 ओहम सोहम भी स्वपन्न प्यारो, पिण्ड ब्रह्मण्ड बिन स्वपन्न और मत जान रे।
आत्म मन मान के कारण स्वपन्न में प्यारो, औंकार भगवन भी स्वपन्न जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, समस्त तीन लोक भी स्वपन्न तूं जान रे।।

2599 ईक सतगुरू स्वपन्न नाहिं प्यारो, चेतन सुरति में महांचेतन सुरति धारा जान रे।
सतगुरू सतपुरूष का तदरूप प्यारो, दौ से एक ही जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू 'वे नाम' की महिमां जान रे।।

2600 'वे नाम' ही सतनाम प्यारो, ताका वासा सतपुरूष अमरलोक में जान रे।
'वे नाम' साहिबन महांचेतन सुरति प्यारो, अजर अमर तूं जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू महिमां का गुणगान महान रे।।

2601 निजघर में मन का वासा ना प्यारो, भय आशा तृष्णा से पार जान रे।
रोग सोग तहां ना व्यापें प्यारो, वह तो प्रेम सत्य आनंद का देस रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सत्य प्रेम आनंद से नाता जान रे।।

2602 ब्रह्मां विष्णु महेश का प्यारो, वासा तहां मत जान रे।
तहां नाहिं काल का क्लेश प्यारो, वहां वैरी ईक भी मत जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, प्यारो छोड़ो ये संसारा रे।।

2603 कौटिक जन देवी देवों की पूजा करते प्यारो, पार ईक भी मत जान रे।
सतगुरू की पूजा किजै प्यारो, सब की पूजा हुई तूं जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू सतपुरूष का तदरूप जान रे।।

2604 मन दिया तन भी दिया प्यारो, तन मन एको ही जानो रे।
अब देने को क्या प्यारो, सुरति पाने को अधीर जानो रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, झुका के रख शरीर रे।।

2605 सतगुरू का कहा प्यारो, मान लेना और चलना दाम रे।
सेवा सुमिरन सत्संग प्यारो, इस पल में रहना जान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, ये दाम के अंग ही जान रे।।

2606 नाम से पहले यह मन काग़ा था प्यारो, करता था जीवन घात रे।
अब यह मन मूल सुरति में प्यारो, मोती चुनने में सहायक जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू सूं बनते सब काम रे।।

2607 बड़े बड़ाई में निज को प्यारो, साधक तो छोटे सेवादार जान रे।
साग़र बड़ा पर खारा जल प्यारो, कोई प्यासा कुऐं का मीठा जल पीता जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, मोती से रत्न निकालना जान रे।।

2608 सतगुरू वाहि की चाहत सभी को प्यारो, सतपुरूष की चाह सूं कौसों दूर रे।
मान बड़ाई वाले अनेक प्यारो, घड़ा कभी ना भरता जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, निज की कभी ना होत पहचान रे।।

2609 जिन के ह्रदय में प्यारो, मान बड़ाई की आग प्रबल जान रे।
कूकर से करते प्रेम प्यारो, मुख चटाई जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, वैर से हानी जान रे।।

2610 बड़ी बड़ाई विपत्ति में प्यारो, नन्हा विपत्ति से दूर ले जान रे।
सूर्य चांद को ग्रहण लगे, तारे ग्रहण से दूर जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तारों का सच्चा जीवन जान रे।।

2611 बगुले ज्ञानी ध्यानी जन, स्वार्थी मिले अनेकों रे।
मन मान से रहित प्यारो, लाखों में मिले कोई एक रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, संतन से परे अनेक रे।।

2612 ''वे नाम'' सब्द मूल सब्द प्यारो, बिरला संत पाता जान रे।
पूरी परख पर जो उतरे प्यारो, दात सतपुरूष सूं पावे रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, मन मान से पार उसे जानो रे।।

2613 सुरति सूं 'वे नाम' सुमिर ले प्यारे, मन मान को जग में लड़ता जान रे।
कोई कुछ कहता कहने दे प्यारे, सुरति अपनी सब्द स्वांसा डार रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, तूं नाम सुमिरन में सुरति डार रे।।

2614 ''वे नाम'' सब्द चर्चा जहां ना प्यारो, उस स्थान को छोड़ दे रे।
जिस बारात में नहीं दूल्हा प्यारो, उसे बारात मत जानो रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, प्रेम भक्ति बिन नाहिं पार रे।।

2615 सतगुरू भक्ति छोड़ प्यारो, देवी देवों की भक्ति से पार ना रे।
मरघट तक सब जायें बाराती प्यारो, फिर हंस अकेला जात रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू ही पार करावनहार रे।।

2616 चौरी चारी माया जोड़ी प्यारो, काम ना अपने आई रे।
कर्मों का बंधन संग प्यारो, सुरति कैद में जानो भाई रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू चेतन सुरति करावे पार रे।।

2617 दिव्य शक्तियां और आध्यात्मिक शक्तियां प्यारो, हर नर में जान रे।
ध्यान में जाना प्यारो, आनंद प्रेम की धार बहना जान रे।
चित्त पूरा नियंत्रण में रहता प्यारो, सुरति धारा चेतन जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, झूठ से रहते कौसों दूर रे।।

2618 हृदय झूठ ना पकड़ता प्यारो, ना बोलता जान रे।
झूठ में हृदय की दिशा प्यारो, पल पल बदलती जान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, झूठ भक्ति में बाधा जान रे।।

2619 ईक ही सच्चा दाता जग में प्यारो, तीन लोक कंगाल रे।
अमृत दात से पात्र भरता प्यारो, जन्मों जन्मों से जो खाली रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, सतगुरू ही भरता पात्र रे।।

2620 पहले सेवक भरौसा किया प्यारो, तन मन धन अर्पण किया जान रे।
तन धन वापिस किया प्यारो, मन को वापिस किया नहीं जान रे।
दूजे सतगुरू साहिबन रूप प्यारो, 'वे नाम' चेतन सुरति का दिया दान रे।

यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, साधक का मन मान मिटाया जान रे।।

2621 अब पूर्ण अधिकार पा लिया प्यारो, जिन 'वे नाम' सूं चौथे लोक को पाया रे।
यह तुम्हारी सुरति की धारा में प्यारो, पूर्णतः निजघर का होया रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, बिन सतगुरू कोई निजघर ना पाया रे।।

2622 'वे नाम' सतगुरू परमहंस ने प्यारो, लेखा औंकार भगवन के तीन लोक में रे।
तुम कैसे और क्युंकर कहते, प्यारो उसे आलेख रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सतपुरूष संग प्रणाम किया भगवान को रे।।

2623 भगवान ही औंकार प्यारो, सारा संसार उसी में अनुरक्त जान रे।
सत्यपुरूष नूर न्यार प्यारो, ''वे नाम'' सब्द पाई दरस पाओ रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, साहिबन तो केवल ईक दूजा कहा ना जाये रे।।

2624 साहिब सतपुरूष प्यारो, सब्द प्रकासी स्वरूप जान रे।
वे तो केवल एक हैं प्यारो, ईक ईक रोम की महिमां महान रे।
यह भेद 'साहिब वे नाम जी' देते हैं, उनके समान कोई दूजा मत जान रे।।

2625 'वे नाम' कहता सुरति अखियन की देखी प्यारो, तूं कहता काग़द की लेखी रे।
तूं मन के भाव कहता प्यारो, 'वे नाम' सुरति से महांचेतन सुरति देखी रे।
यह भेद 'वे नाम जी' देते हैं, सुरति चेतन से महांचेतन सुरति मेला रे।।

इति श्री